

बहुजन समाज

मोहनदास नैमिशराय

टश की आजादी के बाद 'बहुजन समाज पार्टी' का उभरना दलित, पिछडो ओर अल्पसख्यको के द्वारा जोरदार दस्तक के रूप मे भी जाना जा सकता है। विशेष रूप मे दलितो ने इस क्षेत्र मे जबदस्त पहल की ओर राजनीति मे हिस्सेदारी नही बल्कि पावर सिबल बनकर उनकी आवाज देश के कोने-कोने मे गूँजी। भारत के सबसे बडे राज्य उत्तर-प्रदेश मे बहुजन समाज पार्टी की सरकार बनना निश्चित ही सफलता मानी जा सकती है। ऐसा बहुत से लोगो का मानना हे, पर कुछ समीक्षक राजनीति का विश्लेषण करते हुए भाजपा की मदद से सत्ता मे आना ठीक नही मानते हे। पर युद्ध, प्यार ओर अब राजनीति मे सब कुछ जायज हे।

लेखक का लबे समय से दलित राजनीति के साथ दलित नेताआ से भी रिश्ता रहा है। पिछले ढाई दशक मे जो उन्होने देखा ओर महसूस किया, उनका सटीक विश्लेषण इस पुस्तक मे पाठक पाऐँगे। लेखक ने बहुजन समाज पार्टी से पूव की सामाजिक और राजनेतिक परिस्थितियो से 'बहुजन समाज' नाम से इस पुस्तक मे शुरुआत की है।

बाद के अध्यायो मे सत्ता के लिए घमासान होने के चित्रो की अधिकता है। दलित पिछडो, अल्पसख्यको के बीच गठबधन, साथ ही खुलती परत-दर-परत। पुस्तक मे भारतीय समाज मे हाशिये पर रहने वाली जातियो के सघष की सशक्त कथा इसमे मिलेगी। जिन्होने राजनीति मे अपना वजूद कायम कर दिखलाया है।

बहुजन समाज

मोहनदास नैमिशराय

नीलकंठ प्रकाशन

नई दिल्ली–110030

ISBN 81-87774-27-4

मूल्य 200 00

प्रथम सस्करण 2003

प्रकाशक **नीलकठ प्रकाशन**
1/1079 इ, महरोली, नइ दिल्ली-110030

शब्द-सयोजन कम्प्यूटेक सिस्टम, दिल्ली-110093

मुद्रक विशाल प्रिटस नवीन शाहदरा, दिल्ली

BAHUJAN SAMAJ by Mohandass Namishray

सामाजिक न्याय

के सघर्ष को आगे ले जाने वाले

साथियो को समर्पित

विषय-क्रम

दो शब्द

भगरत मे बहुजन राजनीति के उद्भव ओर विकास का अध्ययन हम बतलाता हे कि बहुजन राजनीति की शुरुआत बहुजन समाज के बीच समग्र चतना का ही परिणाम हे। भारत के दबे-पिसे वग के भीतर यह चेतना शताब्दियो पुरानी रही हे। सत साहित्य इस चेतना का महत्त्वपूण स्रोत रहा हे। सता की वाणियो ने जहॉ दश के दलित पिछडो को उठना सिखाया वही उनकी फटकार ने उन्ह विपमता पर वार करने की ताकत भी दी।

आधुनिक युग मे देखे तो केरल म आयकाली, आन्ध्रप्रदेश मे भाग्य रेड्डी वर्मा, महाराष्ट्र मे ज्यातिबा फुले, मद्रास मे रामास्वामी नायकर एक सशक्त आदोलन के रूप म बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर से पूव स्थिति मे मिलते है। डॉ अम्बडकर पहले व्यक्ति थे जिन्होने दलितो की चेतना को राजनीति से जाडकर सत्ता के बद ताले को खोला था। आजाद भारत मे बहुजन राजनीति को विकसित होने मे पूरा-पूरा परिवेश मिला। देश की जमीन इस मामले मे पहले से ही उपजाऊ रही हे।

आजादी के पूव भी कॉग्रेस की परपरागत राजनीति को चुनोती देने वाली बहुजन राजनीति ही थी, जो अलग-अलग पार्टियो तथा सगठनो के रूप मे जनता के बीच आइ। और बाद मे चलकर देश-भर मे बने कॉग्रेस के साम्राज्य को ध्वस्त करती चली गई थी। 1967 मे सविद सरकारो का प्रयोग सफल माना जा सकता है। जब जनता पार्टी की सरकार अस्तित्व मे आइ और फिर मडल की ऑधी ने ऐसा बवडर मचाया कि राजनीति के बडे-बडे स्तभ ढहते चले गए। उस समय बहुजन समाज पार्टी नयी रचनात्मक राजनीति के रूप मे भारतीय मतदाताओ के सामने आई।

अब जबकि बहुजन समाज पार्टी को एक दशक से भी अधिक समय दलित-पिछडो के हक मे लडाइ लडते हुए हो गया है तब जरूरी हो जाता है कि पुस्तक के माध्यम से बसपा के द्वारा छेडे गए सामाजिक तथा राजनैतिक आदोलन / सत्ता से जुडाव / उपलब्धियॉ / तथा उसके सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष का निष्पक्ष रूप से आकलन किया जाए।

इस बीच राष्ट्रीय तथा अतराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओ के साथ क्षेत्रीय तथा गेर-हिदी

समाचार-पत्रा म बसपा क उद्भव ओर विकास तथा राजनैतिक प्रतिद्वद्विता के साथ काशीराम ओर मायावती दोनो के व्यक्तिगत और सामाजिक सरोकारो पर अधिकतम छपा हे। इतना कि विश्व म अब तक किसी राजनेतिक पुरुष पर इतने लेख, साक्षात्कार आर रपट आदि प्रकाशित नही हुइ होगी। यह अपने-आपमे सच ही है कि 14 अप्रेल, 1984 तक यानी वामसेफ और डी एस फोर के सगठनात्मक गतिविधियो के दौरान एक लाइन भी किसी देनिक/पाक्षिक/या साप्ताहिक मे नही छपी थी। जबकि प्राय हर पखवाड तथा माह म राष्ट्रीय स्तर पर काशीराम के नेतृत्व मे सामाजिक / सास्कृतिक कायक्रम हाते रहत थ। कभी-कभी दस-दस हजार कार्यकर्ता इन कार्यक्रमो मे शामिल हात थ पर राष्ट्रीय प्रेस दो चार पक्तिया का स्थान भी नही देती थी।

वह समय काशीराम आर मायावती क साथ अम्बेडकरवादियो के लिए सघर्ष का था। उस सघप की उपलब्धि 14 अप्रेल, 1984 के बाद से होनी आरभ हुई, तब बसपा ने ससद आर विधान सभाओ के दरवाजो पर दस्तक दी। पर जितना भी मीडिया म छपा, वह अपने-आपम भ्राति से पूर्ण रहा। उसका कारण यह रहा कि अधिकाश पत्रकार शाध नही करते। बस सतही तौर से पाठको के सामने वह सब परास दते हे।

सक्षप म कहा जाए तो इस पुस्तक मे उन सभी सवाला को सिलसिलेवार उठाया गया ह, जो काशीराम / मायावती / तथा बसपा के बारे मे सामाजिक तथा राजनैतिक कायकनाआ क मन मे उभरे हांगे, आर उन सवालो के जवाब ढूँढने की जद्दोजहद म व उद्वलित भी हुए हाग। यानी रिपब्लिकन पार्टी से लेकर बहुजन समाज पार्टी की लबी राजनतिक यात्रा के सामाजिक सराकारो और राजनैतिक विवशताओ पर गभीरतापूवक प्रकाश डाला गया है। इसकी विशेप आवश्यकता थी, जो कार्य अतत पूरा भी हुआ।

इस पुस्तक को लिखन मे जिन साथियो से सहयोग मिला उनमे योगेन्द्र यादव, पुष्पेन्द्र जी, कवल भारती ओर अभय कुमार दुबे प्रमुख हे। विकासशील समाज अध्ययन पीठ के साथ बहुजन सगठक तथा आप्रेस्ड इण्डियन के पुराने अको से भी मदद मिली। समय-समय पर कुछ साथियो से साक्षात्कार भी लिये। जिनके हम आभारी है।

बी जी-७ए/30-बी पश्चिम विहार
नइ दिल्ली-110063

मोहनदास नैमिशराय

बामसेफ से पूर्व दलित समाज की सामाजिक तथा राजनैतिक स्थिति

देश की आजादी ने दलितो को व्यापक रूप म आगे बढने क अवसर प्रदान किए थे। हालॉकि दलितो की स्वतत्रता जिन जातियो, वर्गो समूहो ओर समुदाया का रास नही आइ उन्होने उनकी प्रगति क रास्ते म बाधाएँ उत्पन्न करने के साथ उत्पीडन की प्रक्रिया को भी जारी रखा। यह उत्पीडन गुलाम भारत मे सवर्णो क लिए अधिक सहज था, क्योकि दलित समाज गुलामो का गुलाम था ओर सवण समाज म कुछ गुलामो मे प्रतिक्रियावादी ॲग्रेज हुक्मरानो के सकेतो पर काय करने के आदी थे। इसलिए कि वे सुविधाभोगी गुलाम थे। पर यह स्थिति अधिक दिना तक चलन वाली नही थी। देश भर मे आम आदमी करवटे ले रहा था।

आजादी का सूरज उगते-उगते बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर की प्रेरणा से दलिता के भीतर भी चेतना का सूरज ओर अधिक तेजी से उगने लगा था। हालॉकि चेतना उनमे पहले भी थी, पर समय-समय पर वह सनातनिया द्वारा कुद कर दी जाती थी। दलित समाज के लोग क्षुब्ध हो जाते थे, कुठित हो जाते थे। ओर उनमे से कुछ थक-हार कर अपने नसीब को कोसने लगते थ। बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के जन्म के बाद दलितो मे खास तरह की ऊर्जा आई थी। उनकी सोच मे परिवतन आया था। वे एकजुट होने का प्रयास करने लगे।

इस तरह भारत मे जहॉ तेजी के साथ दलितो मे जुझारुता आ रही थी वही उनके भीतर राजनैतिक महत्त्वाकाक्षाएँ भी उभरने लगी थी। मानवीय अधिकारो के लिए वे प्रतिबद्ध थे और परपराओ को ठुकरा रहे थे। साथ ही राज्य स्तर पर नये-नये सामाजिक सगठन बन रहे थे, जिनका तेजी से विस्तार हो रहा था। बीसवी सदी को दलित चेतना का चरमोत्कृष भी कहा जा सकता है। विशेष रूप मे जब तक पूना पेक्ट के तत्कालीन ज्वलत विषय को लेकर बाबा साहेब के नेतृत्व मे दलितो ने अपने अधिकारो के लिए सघप के आदोलन की राष्ट्रीय आधार पर शुरुआत की थी। उस काल को सवण बुद्धिजीवियो ने नवजागरण (रेनेसा) भी कहा है, पर असल

मे यह पुनजागरण था, पर सही मायनो मे देखा जाए तो वह समय दलितो का अपनी अस्मिता से रू-ब-रू होने का भी था। यह भी सच है कि ब्रिटिश भारत मे दलित समाज के लोगा को अपनी बात कहने का बल भी मिला था। राजनैतिक ही नही सामाजिक ओर सास्कृतिक गुलामी से मुक्ति की भाषा पूर्व की नही पश्चिम की ही दन थी, जिससे दलितो को जीने के अर्थ का पता चला।

वेसे आजादी से बहुत समय पूर्व दलित-पिछडो के बीच सामाजिक- सास्कृतिक आग राजनतिक हवा बहने लगी थी। आज जिन्हे हम पिछडा वग कहते हे, उनकी गिनती शूद्रो मे होती थी। उनम भी अनगिनत जातियाँ थी। डॉ अम्बेडकर ने इन्हे सछून (Touchable) कहा हे। सछूत यानी जिन्हे छुआ जा सके। हालॉकि तब के शूद्रा आर आज क पिछडी जातिया के लोगो की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति वहुत अच्छी नही थी। पर वे अपने-अपने गॉव, कस्बो, शहरो मे खुशफहमी का शिकार थ। व सभी अपने-आपको हिदू कहते थे, पर सवण हिदू दलितो के साथ उन्हे भी दूसरी श्रेणी का मानते थे।

मद्रास ओर बिहार दो ही सूबे ऐसे थे जिनमे दलित ओर पिछडो ने सयुक्त रूप स मुक्ति की लडाई लडी थी। वह बात अलग है कि इसमे दलितो से कही अधिक फायदा पिछडो को हुआ। मद्रास मे ‘द्रविड आदोलन’ ओर बिहार मे ‘अर्जक सघ’ ओर ‘त्रिवेणी सघ’ के मच पर दलित पिछडे ब्राह्मणवाद के खिलाफ एकजुट हुए थे। अन्य राज्यो मे दलितो ने गुलामी से मुक्ति की लडाई अपने दम पर ही लडी थी, बल्कि अगर कहा जाए कि कही-कही दलितो का पिछडी जाति के सामतो तथा जमीदारो से भी टकराव हुआ था तो गलत नही होगा।

उदाहरण के लिए पजाब मे आदिधर्मी आदोलन, बगाल मे नमोशूद्र आदोलन, मध्यप्रात मे रामनामी-सतनामी आदोलन, आध्र प्रदेश मे आदिशूद्र आदोलन, उत्तर प्रदेश मे जाटव आदोलन तथा केरल मे पोलाया-इजावा आदि आदोलन दलितो के द्वारा चलाए जा रहे थे। इसके साथ ही राजस्थान मे रैगर महा सम्मेलन के माध्यम से दलितो मे चेतना लाने के प्रयास हो रहे थे। इनके साथ ही अन्य राज्या मे भी दलितो के भीतर चेतना उभर रही थी।

आजादी के पहले दशक मे देखे तो राष्ट्रीय स्तर पर दलितो की चार-पॉच सामाजिक सस्थाएँ ही कार्यरत थी। इनमे डॉ अम्बेडकर द्वारा स्थापित ‘अखिल भारतीय दलित वग फेडरेशन’, भारतीय दलित वर्ग सघ, भारतीय दलित जाति सघ तथा अखिल भारतीय सफाइ मजदूर सघ विशेष थी। इनमे पहली दो सस्थाएँ राजनेतिक पार्टियो के रूप मे भी चुनाव लड रही थी। भारतीय दलित वर्ग मघ का बाबूजी ने गठन किया था।

आजादी के बाद दलित समाज मे जेसे-जैसे चेतना आ रही थी वैसे-वैसे ही उन पर उत्पीडन की घटनाएँ ओर अधिक होने लगी थीं। विशपतोर पर दलित महिलाओ

पर बलात्कार की घटनाएँ बढ रही थी। महिलाओ की इज्जत स छडछाड का अथ उसकी जाति के पुरुषो की अस्मिता पर चोट। इसलिए दनित महिलाओ पर वार किया जाता था।

उदाहरण के लिए, तमिलनाडु राज्य के तजार जिल के किलयनमणि ग्राम म दिसबर, 1969 मे सवण-जाति के लोगा ने 42 दलित मजदूरा का जिनम अधिकाश महिलाएँ व बच्चे थे, जिदा जला दिया था। गुजरात क रणमलपुग गॉव म सवर्णो के कुएँ से पानी लेन का प्रयास कर रहे दलिता का मारा-पीटा गया। उनकी झापडियॉ जला दी गइ। आध्र प्रदश के काचिका-चरला गॉव म एक दलित लडके को खभे से बाधकर, मिट्‌टी का तेल छिडक, जिदा जला दिया गया। उत्तर प्रदेश मे बाकेयर पुलिस स्टेशन के इचाज ने तो हेवानियत से भी आगे का कुकृत्य कर डाला। उमने रामचरन नाम के दलित मजदूर के घर दोड डाली तथा उसकी अधेड पत्नी व किशोर पुत्र को लाखना कस्बे के चेयरमेन के घर ले गया। वहॉ उन दानो का नगा किया गया तथा मॉ को जमीन पर लिटा कर पुत्र को उससे बलात्कार करन पर मजबूर किया गया।

बिहार के सहरसा जिले के मधुबनी गॉव मे सवण जाति का बारह वर्षीय लडका साप के काटने से मर गया था। लडके के अधविश्वासी परिवार ने समझा कि दलित जाति की एक महिला ने जादू-टोन स उसे मार दिया। बस क्या था, उस महिला के परिवार की चार महिलाओ को सावजनिक रूप से गॉव मे नगा कर उन्हे मारा-पीटा गया ओर मृतक लडके को जिदा करने के लिए कहा। बाद मे लोहे की सलाखो को गम कर चारो महिलाओ के हाथ-पैर व गुप्तागो को दागा गया। उत्तर प्रदेश के एक जिला केद्र पर अगस्त, 1973 मे, मदिर मे एक पुलिस इस्पेक्टर ने दलित महिला के साथ बलात्कार किया। यही नही देश की राजधानी मे भी दुव्यवहार की घटना हुई।

दिल्ली के बापा नगर मुहल्ले की प्रेमलता नाम की दलित छात्रा ने अपनी प्रधानाध्यापिका द्वारा 'कृष्ण जन्माष्टमी' का प्रसाद फेक देने पर किए गए अपमान स्वरूप कुएँ मे छलाग लगाकर आत्महत्या कर ली। बाद मे इसी घटना को लेकर कई दिनो तक दलित समाज द्वारा आदोलन किया गया था।

विदर्भ मे गवई बधुओ की ऑखे निकाल ली गई। महाराष्ट्र के ही बावडा या ब्राह्मण गॉव मे बौद्धो पर जो अन्याय हुआ, उससे आक्रोशमय हुए उन्ही लोगो की बस्ती वाले लेबर कैप (माटुगा) के दो युवको ने ही प्रथम विधान सभा मे आग बरसाई। उस समय मराठी दलित लेखक राजा ढाले ने कहा था—**"किसी महिला की इज्जत से किसी राष्ट्रध्वज के कपडे का सम्मान कैसे अधिक हो सकता है? अगर महिलाओ के कपडे फटते रहे तो हमें राष्ट्रध्वज से क्या लेना?"**

दलित उत्पीडन की यह घटनाएँ इस बात का सबूत रही थी कि जहा दलितो

क भीनर उनके अपन अधिकारो के लिए जागरुकता आ रही थी। वही उन्हे आहत कर उत्तजित भी किया जा रहा था। परिणामस्वरूप सामाजिक और सास्कृतिक जागरण क पश्चात् अगल चरण म वे राजनेतिक सत्ता के बद दरवाजो पर दस्तक भी देने लग थ।

9 जुलाइ 1972 का दलित पेथर की स्थापना के बाद दलित आदोलन महाराष्ट्र भर म फलन लगा था। दलित तरुण समाज पथर की तरफ तेजी से आकषित होने लगा था। यह प्रवृत्ति इतनी प्रवाहमयी और मुग्ध करने वाली थी कि तमिलनाडु मे द्रमुक की मत्री सत्यवाणी मुथ्थु ने मत्री पद का त्याग करके दलित पेथर जेसे जुझारू सगठन म प्रवश किया था।

दलित पेथर को जन्म दिया महाराष्ट्र के उन युवा मराठी दलित साहित्यकारो न जिनक मन म दलितो के शोषण एव उत्पीडन के खिलाफ शोले भडक रहे थे। अमरिकी नीग्रा आदोलन 'ब्लेक पेथर' इनका प्रेरणा-स्रोत बना। न केवल महाराष्ट्र, बल्कि उसक बाहर भी गुजरात, तमिलनाडु, कनाटक, आध्र प्रदेश, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश मे भी इसका तेजी के साथ विस्तार हुआ। जो भी गरीब है, दलित है बाबा साहब की इस मूलभूत व्यापक भूमिका को लेकर दलित आदोलन मे प्राण फूॅकने क लिए आगे आए उनके नामदेव ढसाल, ज वि पवार, आदि खडे हो गए थे। असल म य ही सवप्रथम दलित पेथर की स्थापना मे शामिल हुए थे।

जिस समय गवई बधुओ की ऑखे निकालने का अत्याचार दलितो पर ढाया गया उस समय दलित पेथर के चार-पॉच सौ युवको ने ही प्रदर्शन किया था। उसी समय रा सु गवई उपसभापति के पद को सॅभालते हुए चुप रहे। लगभग यही हाल मत्री पद पर बैठे हुए दादा साहेब रूपवते का भी था। कहा जाता है कि मत्री होने के बावजूद उनको अलग बरतन मे पानी पीना पडता था, फिर भी मत्री पद का लोभ उनसे छूटता न था। शाहजीराव के भाई शकरराव बाजीराव पाटिल के स्वरो मे स्वर मिलाते हुए रूपवते नाइक मत्रिमडल मे चुपचाप बैठे रहे। तब दलित समाज के मत्री चुप रहते थे ओर समाज के युवाओ के स्वर आसपास के परिवेश को गुजायमान करने मे लगे थे।

वेस दलित पेथर निष्क्रिय हुए रिपब्लिकन नेतृत्व को झटका देने वाली स्वत स्फूर्त प्रतिक्रिया थी। जिन युवको के हाथ मे दलित पैथर का नेतृत्व था, उनके पास बौद्धिक शक्ति तो थी, लेकिन दूरदर्शिता की कमी थी। कवि, लेखक स्वभाव का यह युवा नेतृत्व व्यावहारिक राजनीति मे कच्चा था। बाद के दिनो मे वामपक्षीय आदोलन की इसमे घुसपैठ से दलित पैथर के कार्यकर्ताओ के बीच मतभेद पैदा हुए। रही सही कमी को पूरा किया कॉग्रेस ने।

अनुसूचित जाति एव अनुसूचित जनजाति आयुक्त शकरराव माने ने 1975 मे अपनी एक रिपोर्ट मे कहा था कि यदि समय रहते न चेता गया तो दलित समाज

भीषण विद्रोह करेगा। महाराष्ट्र मे दलित पथर वनने का भी यही उद्देश्य भी था। नब दलितो पर अत्याचारा के सवाल पर रानीतिज्ञा का ध्यान खीचन क लिए महाराष्ट्र विधान सभा की दशक-दीघा से हवा म मुँह स मिट्टी का तल छाडकर आर उम माचिस की तीली से भडकाकर **'गवले-मोइले'** नाम के दा बाद्ध युवका न आग वरसाट थी। उनके इस काय स हालॉकि किसी का चोट नही पहुँची थी, पर इम घटना न समूच महाराष्ट्र के दलित नवयुवको का जुल्म आर अत्याचार स निपटन क लिए भरपूर प्ररणा दी थी। पर उस समय किस यह सब मालूम था कि राजनीतिना का अत्याचारा की ओर ध्यान खीचते-खीचत दलित पेथर जसा जुझारू सगठन भी स्वय एक दिन राजनीतिज्ञो की गोद मे बठ जाएगा। बशक समूच दलित पथर सगठन के कायकताआ ने हथियार डालकर अपन-आपका अवसरवादी राजनीतिज्ञा के हवाल नही किया था लकिन ऐस अधिकाश कायकताआ क बीच मतभद उभरन लग थ। दलित पेथर की दस्तक स जेसे-जसे दलित मानव जागता गया वेस-वसे उस महसूस हुआ कि उसे जगान वाल सगठन म राजनेतिक समीकरण उभरन लग ह। इसलिए दलित पेथर के बाद के दिना मे उतना दम-खम नही रहा था।

यह सवाल अकेले दलित पेथर का नही, वल्कि दलिता की अस्मिता आर पहचान के नाम पर बनन वाली हर दूसरी राजनेतिक पार्टी का था, जिन्ह शीष पर बठ राजनीतिज्ञो ने हर उत्पीडन की घटना के बाद राजनीति करना सिखा दिया था। उनमे से बहुत कम को यह मालूम होगा या जानकारी लेने का प्रयास किया होगा कि उत्पीडन मे सहयोगिया या उत्पीडको को सजा मिली भी या नही या किसी विशेष केस के निणय मे कितना ममय लगा। ऐसे मुकदमो को अधिक लबा खीचे रखने म कितना ओर कहाँ से राजनेतिक दबाव पडा ओर सेशन कोट से हाइकोट तक कस का आने मे स्वय पीडित पक्ष को कितने पापड बलने पडे।

वेसे भी काफी पहले से ही राजनेतिक चुनाव से दलित उत्पीडन का रिश्ता सीधे-सीधे जुड गया। वह चाहे बिहार के भोजपुर का दनवार-बिहटा गॉव हो या गुजरात का बनासकाठा ससदीय क्षेत्र। आध्र प्रदेश के नालगोडा जिले म आदिवासियो की बस्तियॉ हो या उत्तर प्रदेश का छपरोली क्षेत्र हो। चुनाव मे सामतो के सकेत मात्र पर उनकी पार्टी या उम्मीदवार को वोट न देने का अजाम हिसा और बलात्कार की घटनाएँ आम बात हो गई। यही नही चुनाव के बाद अगर किसी प्रदेश के मुख्यमत्री या उसकी सरकार को गिराना है तो वहॉ दलित हत्याकाड करा दिया गया यही नही अपनी तमाम नैतिकता को भुलाकर राजनीतिज्ञो की शह पर दलित महिलाओ पर सामूहिक बलात्कार भी हुए। उनका राजनीतिज्ञो के उत्थान और पतन मे भरपूर इस्तेमाल हुआ।

यहॉ यह सवाल उठता है कि काशीराम ने ही आखिर क्यो इस सगठन को बनाने मे रुचि ली? करोडो लोगो मे कोई बिरला ही धधकती हुइ आग मे कूदता

क भीतर उनके अपने अधिकारो के लिए जागरुकता आ रही थी। वही उन्हे आहत कर उत्तजित भी किया जा रहा था। परिणामस्वरूप सामाजिक और सास्कृतिक जागरण क पश्चात् अगल चरण म वे राजनतिक सत्ता के बद दरवाजो पर दस्तक भी देने लग थ।

9 जुलाइ, 1972 का दलित पेथर की स्थापना के बाद दलित आदोलन महाराष्ट्र भर म फलन लगा था। दलित तरुण समाज पथर की तरफ तेजी से आकर्षित होने लगा था। यह प्रवृत्ति इतनी प्रवाहमयी और मुग्ध करने वाली थी कि तमिलनाडु मे द्रमुक की मत्री सत्यवाणी मुथ्थु ने मत्री पद का त्याग करके दलित पेथर जेसे जुझारू सगठन म प्रवश किया था।

दलित पेथर को जन्म दिया महाराष्ट्र के उन युवा मराठी दलित साहित्यकारो न जिनक मन मे दलिता के शोपण एव उत्पीडन के खिलाफ शोले भडक रहे थे। अमरिका नीग्रा आदालन 'ब्लेक पथर' इनका प्रेरणा-स्रोत बना। न केवल महाराष्ट्र बल्कि उसक बाहर भी गुजरात तमिलनाडु, कनाटक, आध्र प्रदेश, दिल्ली तथा उत्तर प्रदश म भी इसका तजी के साथ विस्तार हुआ। जो भी गरीब हे, दलित हे, बाबा साहब की इस मूलभूत व्यापक भूमिका को लेकर दलित आदोलन मे प्राण फूँकने के लिए आगे आए उनके नामदव ढसाल, ज वि पवार, आदि खडे हो गए थे। असल म ये ही सवप्रथम दलित पेथर की स्थापना मे शामिल हुए थे।

जिस समय गवइ बधुओ की ऑखे निकालने का अत्याचार दलितो पर ढाया गया, उस समय दलित पेथर क चार-पॉच सौ युवको ने ही प्रदशन किया था। उसी समय रा सु गवइ उपसभापति के पद को सॅभालते हुए चुप रहे। लगभग यही हाल मत्री पद पर बेठे हुए दादा साहब रूपवते का भी था। कहा जाता है कि मत्री होने के बावजूद उनको अलग बरतन मे पानी पीना पडता था, फिर भी मत्री पद का लोभ उनसे छूटता न था। शाहजीराव के भाई शकरराव बाजीराव पाटिल के स्वरो मे स्वर मिलाते हुए रूपवते नाइक मत्रिमडल मे चुपचाप बैठे रहे। तब दलित समाज के मत्री चुप रहते थे ओर समाज के युवाओ के स्वर आसपास के परिवेश को गुजायमान करने मे लगे थे।

वेस दलित पेथर निष्क्रिय हुए रिपब्लिकन नेतृत्व को झटका देने वाली स्वत स्फूर्त प्रतिक्रिया थी। जिन युवको के हाथ मे दलित पैथर का नेतृत्व था, उनके पास बौद्धिक शक्ति तो थी, लेकिन दूरदर्शिता की कमी थी। कवि, लेखक स्वभाव का यह युवा नेतृत्व व्यावहारिक राजनीति मे कच्चा था। बाद के दिनो मे वामपक्षीय आदोलन की इसमे घुसपैठ से दलित पैथर के कार्यकर्ताओ के बीच मतभेद पेदा हुए। रही सही कमी को पूरा किया कॉग्रेस ने।

अनुसूचित जाति एव अनुसूचित जनजाति आयुक्त शकरराव माने ने 1975 मे अपनी एक रिपोट मे कहा था कि यदि समय रहते न चेता गया तो दलित समाज

भीषण विद्रोह करेगा। महाराष्ट्र म दलित पेथर बनन का भी यही उद्देश्य भी था। जब दलितो पर अत्याचारा के सवाल पर राजनीतिज्ञा का ध्यान खीचने क लिए महाराष्ट्र विधान सभा की दशक-दीघा से हवा म मुँह स मिट्टी का तेल छोडकर आर उस माचिस की तीली से भडकाकर **'गवले-मोइले'** नाम क दा बाद्ध युवका न आग बरसाइ थी। उनके इस काय स हालॉकि किसी का चोट नही पहुँची थी पर इस घटना न समूच महाराष्ट्र क दलित नवयुवको का जुल्म आर अत्याचार स निपटन क लिए भरपूर प्रेरणा दी थी। पर उस समय किस यह सब मालूम था कि राजनीतिज्ञो का अत्याचारो की आर ध्यान खीचते-खीचत दलित पथर जेसा जुझारू सगठन भी स्वय एक दिन राजनीतिज्ञो की गोद मे बठ जाएगा। बेशक समूचे दलित पथर सगठन के कायकताआ ने हथियार डालकर अपन-आपका अवसरवादी राजनीतिज्ञा क हवाल नही किया था, लकिन ऐसे अधिकाश कायकताआ के बीच मतभद उभरन लग थे। दलित पेथर की दस्तक स जेसे-जेसे दलित मानव जागता गया वस-वेसे उस महसूस हुआ कि उसे जगाने वाल सगठन म राजनेतिक समीकरण उभरने लग ह। इसलिए दलित पेथर के बाद के दिना मे उतना दम-खम नही रहा था।

यह सवाल अकले दलित पथर का नही, बल्कि दलितो की अस्मिता ओर पहचान के नाम पर बनन वाली हर दूसरी राजनेतिक पार्टी का था, जिन्हे शीष पर बठ राजनीतिज्ञा ने हर उत्पीडन की घटना के बाद राजनीति करना सिखा दिया था। उनमे से बहुत कम को यह मालूम होगा या जानकारी लेने का प्रयास किया होगा कि उत्पीडन मे सहयोगियो या उत्पीडका को सजा मिली भी या नही या किसी विशष केस के निणय मे कितना समय लगा। ऐसे मुकदमो को अधिक लबा खीचे रखन मे कितना और कहॉ से राजनेतिक दबाव पडा ओर सेशन कोट से हाइकोट तक कस को आने मे स्वय पीडित पक्ष को कितने पापड बेलने पडे।

वैसे भी काफी पहले से ही राजनेतिक चुनाव से दलित उत्पीडन का रिश्ता सीधे-सीधे जुड गया। वह चाहे बिहार के भोजपुर का दनवार-बिहटा गॉव हो या गुजरात का बनासकाठा ससदीय क्षेत्र। आध्र प्रदेश के नालगोडा जिले मे आदिवासियो की बस्तियॉ हो या उत्तर प्रदेश का छपरोली क्षेत्र हो। चुनाव मे सामतो के सकेत मात्र पर उनकी पार्टी या उम्मीदवार को वोट न देने का अजाम हिसा ओर बलात्कार की घटनाएँ आम बात हो गइ। यही नही चुनाव के बाद अगर किसी प्रदेश के मुख्यमत्री या उसकी सरकार को गिराना है तो वहॉ दलित हत्याकाड करा दिया गया यही नही अपनी तमाम नेतिकता को भुलाकर राजनीतिज्ञो की शह पर दलित महिलाआ पर सामूहिक बलात्कार भी हुए। उनका राजनीतिज्ञो के उत्थान ओर पतन मे भरपूर इस्तेमाल हुआ।

यहॉ यह सवाल उठता है कि काशीराम ने ही आखिर क्यो इस सगठन को बनाने मे रुचि ली? करोडो लोगो मे कोई बिरला ही धधकती हुइ आग मे कूदता

हे। हालॉकि यह बात अपने-आपमे सही भी है। क्योकि अपने सगे बाप से विप्लवी का खिताब लेने वाल युवा काशीराम ने 'ख्वासपुर' को फिर कभी पीछे मुडकर नही दखा था।

1957 म उन्होन सर्वे ऑफ इडिया मे ज्वाइन किया लेकिन प्रशिक्षण के दौरान ही यह नौकरी छाड दी। बाद मे डिफस रिसच एड डवलपमेट आर्गनाइजेशन मे वेज्ञानिक क पद पर उनकी नियुक्ति हुई। आर पुण के पास किर्की मे एक्सप्लोसिव रिसच एड डवलपमट म उनकी पोस्टिग हुइ। पर उस विभाग मे वे अधिक दिनो तक नही रह। 1964 मे ही उन्होन इस्तीफा दे दिया। इस्तीफे का कारण जैसा बतलाया जाता ह। उक्त विभाग मे उस वष अम्बेडकर जयती और बुद्धा जयती दोनो अवकाश समाप्त कर दिए गए थे। कुछ साथियो ने विभाग के उच्च अधिकारियो की इस सवण मानसिकता का खुल रूप मे विरोध किया। परिणामस्वरूप उन्हे सस्पेड कर दिया गया। बाद म काशीराम ने उन्हे कानूनी सहायता जुटाने के लिए स्वय भी इस्तीफा दे दिया।

शायद काशीराम के मन पर उन दिनो बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के महत्त्वपूर्ण दशन का ही प्रभाव था।

जरूरी बात है कि एक महत्त्वपूण पद से इस्तीफा देने के बाद काशीराम को भी असुविधा हुइ होगी। पहले सवर्णो से और फिर दलितो के छुटभेये नेताओ से दास्तो और रिश्तेदारो से। तीखी बाते सुनने को मिली होगी। उन सबके उल्लेख करने का यहॉ कोई ओचित्य नही हे। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि उनके उद्वेलित मन मे कुछ ओर अधिक करने के दुस्साहस का भाव पेदा हुआ होगा।

जेसा कि स्वय काशीराम लिखते हे, "इस वर्ग के मनोभावो को ध्यान मे रखते हुए ओर इस वग की सामाजिक जिम्मेवारी को देखते हुए पुणे मे हम कुछ लोगो ने इन शिक्षित कमचारियो को सगठित करने का निर्णय लिया, जिसका ध्येय है समाज को दासता से मुक्ति दिलाना। उसी समय शिक्षित कर्मचारियो को अखिल भारतीय स्तर पर और पक्के तोर पर सगठित करने का भी निर्णय लिया गया कि ऐसे सगठन के माध्यम से अपने विचार को मूर्त रूप प्रदान किया जाए।

इसी तरह की परिस्थितियो के बारे मे 27 अक्तूबर, 1991 को इटावा के जी आइ सी स्कूल के मेदान मे बी एस पी के लोकसभा चुनाव उद्घाटन करते हुए काशीराम ने भाषण के रूप मे अपने जो विचार रखे थे, हम उन्हे ज्यो का त्यो दे रहे है–

हमने निर्धन समाज मे से ही उनके हितो के लिए धन पैदा किया

"साथियो, इन्होने बहुजन समाज को निर्धन समाज बनाकर रखा हे इसलिए इनको एसा लगता हे कि धन तो हमारे पास है, तो फिर ये कौन से धन से ये अपना कारोबार चलाते है। मेने इसके ऊपर गौर किया है ओर गौर तो अब नही वर्षो पहले

किया हे। 1971 म मे इस नतीज पर पहुँचा था कि हमे अपना काराबार बढान क लिए कुछ धन की जरूरत पडगी। हमाग कारोबार जो बाबा साहब अम्बडकर चलाया करते थे, उनके जान क बाद वो धीमा क्या पडा हे। धन की कमी एक बडी कमी उसमे नजर आइ। इसलिए मन सोचा कि भाइ धन तो हम दूसरा के मुकाबल म बहुत कम लगेगा, लेकिन कुछ न कुछ ता जरूर लगेगा उतना धन ता हम पदा करना ही हागा। तो मेरी निगाह अपने समाज क चारो तरफ गइ आर मुझे एसा लगा कि इस निधन समाज मे हमार बुजुर्गो की कोशिश के कारण खासकर बाबा साहब अम्वेडकर की कोशिश क कारण जो शड्यूल्डकास्ट शड्यूल्ड ट्राइब्स क लोगा का आरक्षण की सहूलियत मिली हे, पढने-लिखने का मोका मिला, आर इसक बाद आरक्षण की सहूलियत मिली, उसका फायदा लकर शेड्यूल्डकास्ट, शेड्यूल्ड ट्राइब्स क 26 लाख पढे-लिखे कमचारी नजर आते हे ओर इनकी तनख्वाह 10 हजार करोड रुपये से ज्यादा हे, हमे तो ज्यादा-स-ज्यादा 10 करोड की जरूरत पड सकती ह। जिसमे जिस समाज का एक अग सूझबूझ वाला पढा-लिखा 10 हजार करोड रुपया कमाता हो तो क्या वो 10 कराड रुपया इकट्ठा नही कर सकता हे मने सोचा की 10 कराड की जरूरत ही तब पडगी जब हम इस दश के शासक बनने जाएँग। पहल तो एक करोड से ही काम चल जाएगा, लाखा मे ही चल जाएगा तो इसलिए सबसे पहले मेने इन 26 लाख पढे-लिख कमचारिया का सगठित करना जरूरी समझा। ताकि हम निर्धन समाज मे से कुछ धन ढूँढकर हम इस समाज को, गिराए गए समाज को अपने पेरो पर खडा कर सके। हमारा लक्ष्य था, गिराए हुए समाज को अपन पेरो पर खडा करना। तो फिर हमे दिमाग की जरूरत चाहिए, उससे भी हमे हुनर चाहिए इसके लिए पेसा चाहिए, तो मुझे ये पढाइ-लिखाई, ये हुनर, ये पेसा इन 26 लाख पढे-लिखे कमचारियो मे मुझे नजर आया, और इस समाज के लोगो की तरफ ही बाबा साहेब ने इशारा किया था, आरक्षण दिलाने के बाद वो कहते थे कि आरक्षण मै इसलिए चाहता हूँ कि जब इस समाज के लोग मार्के की जगह पर जाएँगे तो इस समाज के साथ हो रहे धोखे को रोक सकेगे। यह बात दूसरी है कि पढे-लिखे कमचारी काम नही कर पाए है, लेकिन जिस बाबा साहेब अम्बेडकर के सघर्ष के कारण हमारे समाज मे पढाइ-लिखाई का प्रचार-प्रसार हुआ, उससे ही बात आग बढी, जिन लोगो को इजाजत नही थी पढने के लिए उन्हे मौका मिला, मौके के बाद सहूलियते मिली।

इसलिए साथियो, मुझे ऐसा लगा कि हमारे समाज को इन्होने नीबू की तरह से निचोडा है, बुरा किया है, हमारे समाज के साथ धोखा किया है। नीबू मे रस नही छोडा है, लेकिन फिर भी किसी कोने मे मुझे रस नजर आया, ये पढे-लिखे कमचारियो का कोना था जो रस से भरा हुआ नजर आया, और ऐसा लगा कि रस इसमे बढता जा रहा हे। जब मैने यह काम शुरू किया था उस वक्त 15 लाख पढे-लिखे

कमचारी थ, आर आज 26 लाख से ज्यादा हे। इन पार्टियो को मै कहना चाहता हूँ कि हम अपने समाज मे से जितना हमे इस समाज को अपने पेरो पर खडा करने के लिए आगे बढान के लिए, दोड मे उतारने के लिए और दौड मे इतना तेज दौडाने के लिए कि हम मुट्ठी भर लोगो को पछाड सके, इसके लिए हमे जितना धन चाहिए हम अपन समाज मे से पेदा कर सकेगे। इसी तरह से मुझे ऐसा लगा कि अगर पढ लिख कमचारी अपनी जिम्मेदारी निभा पाएँगे तो भी कोइ घबराने की बात नही हे। बहुजन समाज 70-75 करोड लोगो का समाज हे। 70-75 करोड लोग निचोडे गए ह उनमे रस नही रहा हे, लेकिन फिर भी जिदा है ओर जिदा रहने के लिए उनका सही खाना नही मिलता है, भूखे मरते है, लेकिन जो कुछ भी खाते है ऐसा लगता ह कि एक व्यक्ति एक दिन मे तीन रुपये का तो जरूर खा जाता होगा। भूखा मरना मरता भी तीन रुपये का जरूर खा जाता है, ऐसा सरकार का अनुमान ह। तो 70 करोड लोग 200 करोड रुपये का हर रोज खाना खाते है। 200 करोड रुपय का हर राज हम लोग खाना खाते है। भाई दूसरो के कारण तो हम लोग भूखा मरत ह दूसरो के लिए हम भूखे मरते है, अगर एक दिन अपने लिए हम भूखे रह जाएँ ता हम 200 करोड रुपया अपने समाज का तैयार करने के लिए बचा सकते हे। यह बात हमारे उन भाइयो को, जो हमारी तरफ उगली उठाते है उनको इस बात का एहसास होना चाहिए, मुझे लगता है इस बात का उन्हे एहसास जरूर है।"

काशीराम का यह भाषण दलित समाज के पढे-लिखे कर्मचारियो की ओर सकेत करता हे, जिन्हे उन्होने धन इकट्ठा करने का माध्यम भी बनाया इस प्रकार 1973 के आसपास सामाजिक उपयोगिता की धारणा के रूप मे बामसेफ जैसे सगठन बनाने का विचार पैदा हुआ। इसकी ज्यादा सिद्धि के लिए 6 दिसबर 1973 को बामसेफ की योजना अवधारित की गइ और हम मुट्ठी-भर लोग पुणे और दिल्ली से पॉच दिन के लिए दिल्ली मे एकत्र हुए इसके पॉच वर्ष बाद बामसेफ को जन्म देने का निणय लिया। इस तरह ठीक पॉच वर्ष बाद 6 दिसबर, 1978 को दिल्ली के 'बोट क्लब' मैदान मे बामसेफ का जन्मोत्सव मनाया गया। बामसेफ यानी "द ऑल इडिया बैकवड (एस सी, एस टी, ओ बी सी) एड मायनारिटी कम्युनिटीज इपलाइज फेडरेशन" नाम का सामाजिक साहित्यिक और सास्कृतिक गैर-राजनैतिक सगठन अस्तित्व मे आया। इसके सस्थापक अध्यक्ष काशीराम स्वय थे। उस समय काशीराम के साथ मुट्ठी-भर साथी थे ।

बामसेफ सगठन की स्थापना और उसके विकास ने बहुत सारी सभावनाओ को जन्म दिया था। यह उक्त सगठन की विशेषता ही कही जा सकती थी कि कम समय मे ही प्रतिबद्ध अम्बेडकरवादी कार्यकर्ताओ की मेहनत और लगन से देश के विभिन्न शहर तथा कस्बो मे तेजी के साथ इसका प्रचार-प्रसार होने लगा था। समता सेनिक दल के बाद शायद पहली बार देश मे इस तरह के महत्त्वपूर्ण सगठन की

स्थापना हुइ थी।

6 दिसबर, 1978 को बामसेफ का गठन हुआ। आर चार-पॉच सालो मे पचास हजार सदस्य बनाए जा चुके थे। यह एक मिशन की सफलता थी। 14 जून, 1979 को दिल्ली मे बामसेफ का सम्मेलन हुआ, जिसमे रामविलास पासवान एस डी सिह चोरसिया आदि सासदो ने भाग लिया था। 6 दिसम्बर 79 का इसका नागपुर मे सम्मलन हुआ। नवम्बर 1980 मे दिल्ली म रामलीला मदान म तथा अक्तूबर 1981 को चडीगट मे सम्मलन हुए।

बामसेफ चूकि शिक्षित कमचारियो का सगठन था। इसलिए अलग-अलग विभागो मे दलित, आदिवासी एव पिछड वर्गो के कमचारियो पर हा रहे उत्पीडन के खिलाफ सस्था के माध्यम स आग सम्बन्धित अधिकारिया से सपक किया जाता था। लेकिन शेप समाज की आर भी ध्यान दिया जाना था। उक्त सगठन का धीर-धीरे जन आधार बनता चला जा रहा था। सगठनात्मक गतिविधियो का बढाने के लिए कुछ प्रयोग भी किए गए थे। जिनमे सफलता भी मिली थी।

सस्था की गतिविधियो के प्रचार-प्रसार के लिए बामसेफ सस्था की ओर से दस-बारह पत्र-पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होने लगे थे। नइ दिल्ली स हिदी साप्ताहिक 'बहुजन सगठक' तथा अँग्रेजी मासिक 'द आप्रेस्ड इडियन' के साथ-साथ शेप अन्य नागपुर, पजाब, गुजरात आदि स्थानो से प्रकाशित होते थे।

अगले एक-दो वर्षो मे बामसेफ के माध्यम से तेज गति से कार्य होने लगा था। सस्था के विभिन्न कायक्रमो मे विभिन्न राजनीतिज्ञो को आमत्रित किया जाने लगा था। इस बीच कुछ राजनीतिज्ञ ऐसे थे जिन्हे बार-बार बामसेफ के कायक्रमो मे बुलाया जाता था। उन सबमे सबसे ऊपर रामविलास पासवान का नाम था। अन्य मे एस डी सिह चौरसिया (राज्यसभा सदस्य) रामलाल कुरील (लोकसभा सदस्य), उत्तर प्रदेश आर पी आई के उपाध्यक्ष एडवोकेट छेदीलाल साथी, एडवोकेट गुरु प्रसाद मदान, आगरा से पूव विधायक एडवोकेट खेमचद सोगत, पूर्व विधायक ओर आर पी आई के नेता मान सिह, खुर्शीद आलम खॉ, सासद तथा अल्पसख्यक सेल के सयोजक, श्री जी एस रेड्डी, सासद और ऑल इडिया केथोलिक यूनियन के पूव अध्यक्ष, भोला पासवान शास्त्री, सासद, तथा अनुसूचित जाति एव जनजाति आयोग के चेयरमेन के साथ अन्य सासदो मे महीलाल (उत्तर प्रदेश) जे एस आनद (पजाब) कृष्णामूर्ति (आध्र प्रदेश) गगाराम निवाण (जो 1989 मे हुए लोकसभा की करोलबाग क्षेत्र से बी एस पी के टिकट पर चुनाव लडे।) हीरालाल परमार (गुजरात से इका के टिकट पर लोकसभा मे आए थे।) जयपाल सिह कश्यप तथा जगपाल सिह (दोनो उत्तर प्रदेश से सासद) भोला पासवान, कर्पूरी ठाकुर तथा महाराष्ट्र से कॉग्रेस के सासद ओर पूव न्यायविद् श्री आर आर भोले, उत्तर प्रदेश से चुने गए सासद, श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री आदि। 1977 तक कॉग्रेस और लोकदल के टिकट पर चुने गए सासद

बामसेफ ओर काशीराम मे अच्छी-खासी रुचि लेते थे। बाद मे जब जनता पार्टी सत्ता मे आइ तो उक्त पार्टी के सासद ओर विधायको का जमघट बामसेफ सस्था के कार्यक्रमो मे खूब होता था।

उस दोरान बामसेफ मे मायावती का स्थान उतना प्रभावूपण न था पर बीच क कुछ समय मे मेहनत कर मायावती ने नबर दो का दजा प्राप्त कर लिया था। उस समय तक वह प्राइमरी स्कूल म पढाती थी। यूँ मायावती के साथ-साथ अन्य महिलाएँ भी बामसेफ म सोशल-वकर के रूप मे काय करती थी। पर मायावती के तवर उन सबमे अलग थे तथा उन्ही को पीछे ढकेलकर स्वय आगे आ जाने मे सक्षम चरित्र भी था मायावती का। अन्य महिलाओ मे, शकुतला राजौरा, कातामोर्य (जो बाद मे कम्युनिस्ट पार्टी की फुल टाइम सोशल वर्कर बन गइ) कृपा गौतम, रजनी आदि-आदि। कुछ महिलाएँ अप्रत्यक्ष रूप से बामसेफ की सरचना मे सहयोग देती थीं। लेकिन उनके मन मे राजनीति मे आने की लालसा बिलकुल न थी। उन दिनो मायावती के चेहरे पर राजनीतिक महत्वाकाक्षाए साफ तोर पर पढी जा सकती थी। जा बाद म चलकर तन के साथ मन पर भी उभरी।

दिल्ली मे बामसेफ का पहला सम्मेलन 6, 7 ओर 8 दिसबर, 1978 को बोट क्लब पर हुआ। जिसमे दो हजार के लगभग प्रतिनिधियो ने भाग लिया। 14 जून, 1979 को दिल्ली मे ही एक ओर सम्मेलन किया गया। जिसमे रामविलास पासवान, एस डी सिह चारसिया आदि सासदो ने भाग लिया। 1980 मे फिर एक और सम्मेलन दिल्ली के रामलीला ग्राउड मे आयोजित हुआ। इसी दोरान यानी 1977 से 1980 के बीच देश-भर म बहुत से कार्यक्रम बामसेफ सस्था की ओर से आयोजित हुए। इन सबके पीछे कुछ अन्य कारण भी थे।

जिस समय बामसेफ का गठन हुआ, उन दिनो दलितो के बीच निराशाजनक वातावरण था। लगता था जेसे दलित समाज का आम व्यक्ति अपने ही वर्ग के उथले नेतृत्व से ऊब चुका था। युवा मन मे महज छटपटाहट थी। महाराष्ट्र से दलित राजनीति की शुरुआत हुइ थी और वही सबसे पहले बिखराव के लक्षण भी वही देखे गए थे। अधिकाश दलित नेताओ के बीच स्वार्थ के लिए आपाधापी मची थी। इन सबका पूर्ण रूप से फायदा कॉग्रेस को ही मिला था। 1968 मे महाराष्ट्र मे जिला परिषद् ओर नगरपालिका के चुनाव हुए। पहली बार कॉग्रेस का रिपब्लिकन पार्टी से राजनैतिक स्तर पर समझौता हुआ। जिसका आर पी आई को कोई विशेष फायदा न हो सका। बल्कि नुकसान अवश्य हुआ। पार्टी की अब तक बनी हुइ साख टुकडे-टुकडे हो गई थी। अधिकाश दलित मतदाताओ ने यह समझ लिया कि जैसे सवर्ण नेता ऐसे ही उनके अपन नेता भी है। बाद मे दलित पैथर उन दलितो-शोषितो के आदोलन के रूप मे उभरा जो रिपब्लिकन पार्टी और उसके नेताओ से निराश हो चुके थे। पर जल्दी ही दलित पेथर का भी वेसा ही हश्र हुआ।

1977 म केद्र मे जनता पार्टी क सरकार म आन क बाद दलित उत्पीडन की घटनाओ मे वृद्धि हुइ। बेलछी, बेलापुरम आगरा ओर देहुली काड न ता दलित मानस को झकझार कर रख दिया। बिहार क बलडीहा गॉव म सट्रल रिजव पुलिस क जवाना द्वारा दिसवर 1978 को आदिवासी युवतियो क साथ सामूहिक बलात्कार की घटना हुइ। चाइबासा तथा सिहभूम मे भी इसी से मिलती-जुलती घटनाएँ हुइ। महाराष्ट्र क शिदखेडा तहसील क अलाठ गॉव म भूपतिया न दलित आदिवासिया का मारा-पीटा तथा उनकी इज्जत से खिलवाड किया। वही हरियाणा क खुद गॉव मे दलिता की बुरी तरह पिटाइ हुई। देश भर म ताबडतोड तरीके स दलित उत्पीडन की घटनाए हुइ।

जनता पार्टी के शासन मे इसी तरह की दलित उत्पीडन की घटनाआ स बाममेफ के कायकताआ के तेवर म परिवतन आया। इन सभी अत्याचार की घटनाआ तथा इनस जन्म लेते सवालो का हल करने क लिए बामसेफ क कायकताआ न दश-भर मे सभाएँ की तथा दलित सवाला पर गोष्ठियॉ आयोजित की। दिल्ली म (कास्टीट्यूशन क्लब) 11, 12, 13, 14 जून 1979 को **'बिल अम्बेडकरिज्म रिवाइव ओर सरवाइव'** विषय पर समीनार आयोजित किया गया। इसी विषय पर देश-भर क लगभग 10 स्थाना पर भी अन्य सेमिनार आयोजित किए गए। उदाहरण के लिए, 29 अप्रेल 79 को भोपाल, 21-22 अप्रेल को चडीगढ, 6 मइ को अहमदाबाद, 9 मइ का बबइ, 20 मइ को बगलोर, 27 मइ का हैदराबाद, 3 जून को नागपुर ओर 6 जून को कलकत्ता मे एस ही सेमिनार आदि का आयोजन किया गया।

इसी बीच त्यागी बिल ससद मे आया, जिसका उद्देश्य दलितो को ईसाइ बनने से रोकना था। 1978 मे यह बिल ओ पी त्यागी ने ससद पटल पर रखा था। जिसके परिणामस्वरूप ईसाइ समाज मे आक्रोश फूटा। इसाइयो की कुछ सस्थाओ ने बबइ मे विशाल जलसे का आयोजन किया। इन्ही दिनो मुस्लिमो पर भी अत्याचार की घटनाएँ हुइ। अलीगढ, मेरठ आदि स्थानो पर दगे हुए। इन सबका परिणाम यह हुआ कि मुस्लिम ओर इसाइ समाज के कुछ नेता काशीराम अथवा बामसेफ से जुडे। दिल्ली की तुकमान गेट के नजदीक एक मस्जिद मे बामसेफ के कार्यकर्ताओ की मीटिग मुस्लिम कायकर्ताओ के साथ हुई। जिसमे काशीराम जी के साथ अन्य सहयोगी मोजूद थे।

उन्ही दिनो दलित, पिछडो तथा अल्पसख्यको के बीच एक-दूसरे के नजदीक आने की भावना का विकास हो रहा था। उसका सबसे बडा कारण रहा कि अपनी-अपनी सुरक्षा बैल्ट को मजबूत करना। देश मे विकसित नये तरह का ब्राह्मणवाद दलित-पिछडो पर ही हावी न था, बल्कि अल्पसख्यको पर भी भारी पडता था। दूसरे दलित राजनीति उदासीनता के लबादे मे लिपटी किसी विकल्प के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। बामसेफ का उदय भी कुछ ऐसी ही परिस्थितियो के आसपास हुआ था।

यह भी कहा जा सकता है कि बामसेफ जैमी सामाजिक और सास्कृतिक जुझारू सस्था ने ठहरे हुए पानी मे कपन पेदा किया था। समझौते ओर सामजस्य की राजनीति को कुछ नया करने का प्रयास किया था। बामसेफ के अतगत कार्यकताओ के देश-भर म दारे हुए। अतराज्यीय तथा अतर-भाषा स्तर पर सभा सम्मेलन हुए। और हिदू धम तथा विपमतावादी व्यवस्था के खिलाफ देश-भर के दलितो, पिछडो तथा अल्पसख्यका का मगठित होने के लिए प्ररित किया। परिणामस्वरूप बामसेफ क सदस्या की सख्या मे विस्तार हुआ।

1980-81 आत-आते काशीराम की चचा दलित आदिवासी तथा पिछडे वर्गो के बुद्धिजीवी वग के बीच होने लगी थी। सच बात तो यह थी कि काशीराम चर्चा का विषय बन गए थे। बामसेफ सस्था द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओ ने उन्हे और भी चचा का विषय बनाया था। बामसेफ का कार्यकता इस दौरान दलित समाज के हर तीसरे घर पर दस्तक देता था ओर सस्था के साथ-साथ काशीराम के व्यक्तित्व को बाबा साहेब डॉ अम्बडकर के समानातर बतलाते हुए अगला दरवाजा खटखटाने के लिए वहाँ से आगे चल देता था।

बामसेफ द्वारा समता-समानता के लिए छेडा गया आदोलन 1980-81 मे चरम सीमा पर था। रह-रहकर यह बात दलितो के बीच उत्पन्न होती थी कि उनकी समस्याओ के निवारण के लिए उनका एक राजनेतिक मच होना चाहिए। जिसके माध्यम से वे अपनी बात कह सक। सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रो मे उन्हे उनके अधिकार मिल सके। काशीराम के मन मे भी यही बात बार-बार उठती थी, पर उन्हे अवसर की तलाश थी ओर 1980-81 मे उन्हे वह अवसर मिल भी गया। इस सदर्भ मे सबसे पहले उन्होन 1981 मे **दलित शोषित सघर्ष समिति** (डी एस फोर) ओर उसके बाद अप्रैल, 1984 मे बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की।

'बामसेफ' इसके पूरे नाम **'दी ऑल इडिया बैकवर्ड (एस सी , एस टी , ओ बी सी) एड मायनारिटी, कम्युनिटीज एम्पलाईज फेडरेशन** दिल्ली का सक्षिप्त रूप है। यह तीन मुख्य वर्गो (1) अनुसूचित जाति, (2) अनुसूचित जनजाति एव (3) अन्य पिछडे वग को समाहित किए हुए एक व्यापक नाम हे। बामसेफ मे प्रयुक्त शब्द 'अल्पसख्यक' को केवल धामिक अल्पसख्यको यथा—मुसलमान, ईसाई सिख, बौद्ध एव पारसी आदि क सीमित अर्थ मे लिया गया हे।

पिछडा वर्ग एव अल्पसख्यक समुदाय के शिक्षित कर्मचारियो को सगठित करने के पीछे जो उद्देश्य हे वह है—उस पददलित एव शोषित समाज, जिसमे वे पैदा हुए है, को दासता से समग्र रूप से मुक्त करना। बामसेफ मे कर्मचारियो का तात्पर्य केवल शिक्षित कमचारियो से है। इन पिछडे वर्गो एव अल्पसख्यक समुदाय के केवल शिक्षित कमचारियो को ही सगठित करने का निणय लिया गया। क्योकि हमारे ज्ञानार्जन एव अनुभव के आधार पर तथा सर्वोत्तम निणय की दृष्टि से इन समुदायो के शिक्षित

कर्मचारी अपने शोषित पीडित समाज मे पयाप्त लाभान्वित होने वाले दिखाइ पडते हे। अतएव, हमारे निणयानुसार, उनके अपने ही भाइयो, जिनके बीच उन्होने जन्म लिया है, के प्रति अपने सामाजिक दायित्व का निवाह करने क लिए दलित शोपित समाज की मुक्ति हेतु यथाशक्ति त्याग करना अनिवाय होना चाहिए।

पिछडे वर्ग एव अल्पसख्यक समुदाय के ही कमचारी क्यो?

बामसेफ के झडे के नीच दलित, शोषित समाज को दासता से मुक्ति दिलाने क लिए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछडा वग एव अल्पसख्यक समुदाय क शिक्षित कमचारियो को सगठित करन का निणय लिया गया हे। केवल ऐसे ही कमचारियो को सगठित करने की धारणा हमारे इस दृढ-विश्वास से पेदा होती हे कि **बिना स्वाभिमान के कोइ भी आदोलन नहीं चलाया जा सकता**। भारत की सामाजिक व्यवस्था मे पिछडा वग ओर अल्पसख्यक समुदाय इसका पूणत शिकार बना हुआ दिखाइ दता है। अतएव, जो इस व्यवस्था का शिकार हो चुके है, उन्हे अपनी गिरी हुई दशा मे आवश्यक सुधार लाने ओर उनके साथ होन वाले अन्याया को समूल नष्ट करने के लिए अपने-आपको एक सूत्र मे बॉधना होगा।

हमारा सविधान भी इस तथ्य को स्वीकृति प्रदान करता हे कि पिछडे वर्गो एव अल्पसख्यक समुदायो पर सदियो से अन्याय होता आया हे। इसी तथ्य को ध्यान मे रखते हुए हमारे सविधान मे इन समुदायो के अधिकारो और हितो की सुरक्षा का प्रावधान किया गया हे। सविधान मे ऐसे प्रावधानो को रखे होने के बावजूद सरकार इन समुदायो के अधिकारो ओर हितो की रक्षा करे या न करे, यह उस पर निर्भर करता है। अतएव, इन समुदायो को अपने अधिकार और हितो की रक्षा के लिए अपने-आपको सगठित करना अनिवार्य हो जाता है।

देखा यह भी गया कि आजादी के बाद से लेकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछडा वर्ग तथा अल्पसख्यक वर्गो के सबध मे अलग-अलग आयोगो का गठन भी किया गया, लेकिन इन आयोगो से कुछ विशेष लाभ नही हुआ।

अतएव, शासक वर्ग के उदासीन रवैए तथा असफलता के परिणामस्वरूप इन वर्गो के एक मच पर साथ-साथ आने की सभावनाओ को ध्यान मे रखते हुए यह आवश्यक समझा गया कि जो वर्ग सामाजिक व्यवस्था के शिकार है, वे अपने हितो और सवैधानिक अधिकारो की रक्षा के लिए अपने-आपको सगठित करे। यदि ये सभी वग (अनु जाति, जनजाति पिछडी जातियॉ और अल्पसख्यक समुदाय) अलग-अलग सगठित होते है तो न अपने हितो को सुरक्षित रख सकने योग्य होगे और न अपने दुखो का निदान कर सकते है। यही कारण है कि इन समुदाय के शिक्षित कर्मचारियो को बामसेफ के झडे के नीचे सगठित करने का निर्णय लिया गया।

काशीराम लिखते है कि आज की वास्तविक स्थिति मे हम पाते है कि एक

यह भी कहा जा सकता ह कि बामसेफ जैमी सामाजिक और सास्कृतिक जुझारू सस्था न ठहरे हुए पानी मे कपन पेदा किया था। समझौते ओर सामजस्य की राजनीति को कुछ नया करने का प्रयास किया था। बामसेफ के अतगत कार्यकर्ताओ के देश-भर म दार हुए। अतराज्यीय तथा अतर-भाषा स्तर पर सभा सम्मेलन हुए। और हिदू धम नथा विपमतावादी व्यवस्था के खिलाफ देश-भर के दलितो, पिछडो तथा अल्पसख्यका को मगठित होने क लिए प्ररित किया। परिणामस्वरूप बामसेफ क सदस्या की सख्या मे विस्तार हुआ।

1980-81 आते-आते काशीराम की चचा दलित, आदिवासी तथा पिछडे वर्गो क बुद्धिजीवी वग के बीच होने लगी थी। सच बात तो यह थी कि काशीराम चर्चा का निपय बन गए थे। बामसेफ सस्था द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओ ने उन्हे और भी चचा का विषय बनाया था। बामसेफ का कार्यकता इस दौरान दलित समाज के हर तीसर घर पर दस्तक देता था ओर सस्था के साथ-साथ काशीराम के व्यक्तित्व का बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के समानातर बतलाते हुए अगला दरवाजा खटखटाने के लिए वहॉ स आगे चल देता था।

बामसेफ द्वारा समता-समानता के लिए छेडा गया आदोलन 1980-81 मे चरम सीमा पर था। रह-रहकर यह बात दलितो के बीच उत्पन्न होती थी कि उनकी समस्याओ के निवारण के लिए उनका एक राजनेतिक मच होना चाहिए। जिसके माध्यम से वे अपनी बात कह सके। सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रो मे उन्हे उनके अधिकार मिल सके। काशीराम क मन मे भी यही बात बार-बार उठती थी, पर उन्हे अवसर की तलाश थी आर 1980-81 मे उन्हे वह अवसर मिल भी गया। इस सदर्भ मे सबसे पहले उन्होने 1981 मे **दलित शोषित सघर्ष समिति** (डी एस फोर) ओर उसके बाद अप्रैल, 1984 मे बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की।

'बामसेफ' इसके पूरे नाम **'दी ऑल इडिया बैकवर्ड (एस सी , एस टी , ओ बी सी) एड मायनारिटी, कम्युनिटीज एम्पलाईज फेडरेशन** दिल्ली का सक्षिप्त रूप है। यह तीन मुख्य वर्गो (1) अनुसूचित जाति, (2) अनुसूचित जनजाति एव (3) अन्य पिछडे वग को समाहित किए हुए एक व्यापक नाम हे। बामसेफ मे प्रयुक्त शब्द 'अल्पसख्यक को कवल धामिक अल्पसख्यको यथा—मुसलमान, ईसाई, सिख, बौद्ध एव पारसी आदि के सीमित अर्थ मे लिया गया है।

पिछडा वग एव अल्पसख्यक समुदाय के शिक्षित कर्मचारियो को सगठित करने के पीछे जो उद्‌देश्य हे वह है—उस पददलित एव शोषित समाज, जिसमे वे पैदा हुए है, को दासता से समग्र रूप से मुक्त करना। बामसेफ मे कर्मचारियो का तात्पर्य केवल शिक्षित कमचारियो से है। इन पिछडे वर्गो एव अल्पसख्यक समुदाय के केवल शिक्षित कमचारियो को ही सगठित करने का निणय लिया गया। क्योकि हमारे ज्ञानार्जन एव अनुभव के आधार पर तथा सर्वोत्तम निणय की दृष्टि से इन समुदायो के शिक्षित

कमचारी अपने शोषित पीडित समाज मे पयाप्त लाभान्वित होने वाले दिखाइ पडते है। अतएव, हमारे निणयानुसार, उनके अपने ही भाइया जिनक बीच उन्होने जन्म लिया है, के प्रति अपने सामाजिक दायित्व का निवाह करने के लिए दलित शोपित समाज की मुक्ति हेतु यथाशक्ति त्याग करना अनिवाय होना चाहिए।

पिछडे वर्ग एव अल्पसख्यक समुदाय के ही कर्मचारी क्यो?

बामसेफ के झडे के नीचे दलित, शोषित समाज को दासता से मुक्ति दिलाने क लिए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछडा वग एव अल्पसख्यक समुदाय क शिक्षित कमचारियो को सगठित करन का निणय लिया गया हे। केवल ऐसे ही कमचारियो को सगठित करने की धारणा हमारे इस दृढ-विश्वास से पेदा होती हे कि **बिना स्वाभिमान के कोई भी आदोलन नहीं चलाया जा सकता।** भारत की सामाजिक व्यवस्था मे पिछडा वग ओर अल्पसख्यक समुदाय इसका पूणत शिकार बना हुआ दिखाइ दता हे। अतएव, जो इस व्यवस्था का शिकार हो चुके हे, उन्हे अपनी गिरी हुइ दशा मे आवश्यक सुधार लाने ओर उनके साथ होने वाले अन्यायो को समूल नष्ट करने के लिए अपने-आपको एक सूत्र मे बॉधना होगा।

हमारा सविधान भी इस तथ्य को स्वीकृति प्रदान करता हे कि पिछडे वर्गो एव अल्पसख्यक समुदायो पर सदिया से अन्याय होता आया हे। इसी तथ्य को ध्यान मे रखते हुए हमारे सविधान मे इन समुदायो के अधिकारो और हितो की सुरक्षा का प्रावधान किया गया हे। सविधान मे ऐसे प्रावधानो को रख होने के बावजूद सरकार इन समुदायो के अधिकारो ओर हितो की रक्षा करे या न करे, यह उस पर निर्भर करता है। अतएव, इन समुदायो को अपने अधिकार और हितो की रक्षा के लिए अपने-आपको सगठित करना अनिवार्य हो जाता हे।

देखा यह भी गया कि आजादी के बाद से लेकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछडा वग तथा अल्पसख्यक वर्गो के सबध मे अलग-अलग आयोगो का गठन भी किया गया, लेकिन इन आयोगो से कुछ विशेष लाभ नही हुआ।

अतएव, शासक वग के उदासीन रवेए तथा असफलता के परिणामस्वरूप इन वर्गो के एक मच पर साथ-साथ आने की सभावनाओ को ध्यान मे रखते हुए यह आवश्यक समझा गया कि जो वर्ग सामाजिक व्यवस्था के शिकार है, वे अपने हितो और सवैधानिक अधिकारो की रक्षा के लिए अपने-आपको सगठित करे। यदि ये सभी वग (अनु जाति, जनजाति, पिछडी जातियॉ और अल्पसख्यक समुदाय) अलग-अलग सगठित होते है तो न अपने हितो को सुरक्षित रख सकने योग्य होगे और न अपने दुखो का निदान कर सकते है। यही कारण है कि इन समुदाय के शिक्षित कर्मचारियो को बामसेफ के झडे के नीचे सगठित करने का निणय लिया गया।

काशीराम लिखते है कि आज की वास्तविक स्थिति मे हम पाते है कि एक

ओर दलित शोपित समाज के तथाकथित नेतागण ओर विधायक देश के राजनीतिक तत्र के व्यवस्थापक उच्च हिदुओ के यहॉ बधुवा और टहलुवा बना हुआ है ओर दूसरी तरफ शिक्षित कमचारियो का एक विशाल वर्ग समान रूप से स्वार्थी ओर अपने-आप म ही कद्रित बना हुआ हे। अपने जीवन काल मे डॉ बी आर अम्बेडकर इस वर्ग क व्यवहार को देखकर बहुत दुखी हुए थे। 18 माच 1956 का आगरा के रामलीला मेदान म दलिता शोपितो क विशाल जनसमुदाय को सबाधित करत हुए शिक्षित कमचारिया के अपने उन भाइयो के प्रति जिनके बीच वे पेदा हुए हे, उपेक्षापूण रवैये का दखकर उनकी निदा ही नही, बल्कि भर्त्सना भी की।

इस वग के जनक के उपयुक्त मनोभावो को ध्यान मे रखत हुए ओर उनकी सामाजिक जिम्मेवारी को देखते हुए पूना मे हम कुछ लोगो ने इन शिक्षित कमचारियो का सगठित करने का निणय किया जिसका ध्येय है समाज को दासता से मुक्ति दिलाना था। उसी समय शिक्षित कर्मचारियो को अखिल भारतीय स्तर पर ओर पक्के तार पर सगठित करन का भी निणय लिया गया कि ऐसे सगठन के माध्यम से अपने विचार का एक मूत रूप प्रदान किया जाए।

सगठन की सरचना

समझदार ओर परिपक्व लोग अपनी शत के अनुरूप सगठन का निमाण करते ह। जहॉ तक बामसेफ की सरचना का सबध है वह दलित, शोषित समाज की आवश्यकताआ और शर्तो के अनुरूप हे ओर उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए है जिसके लिए सगठन का निमाण किया गया हे। ठीक किसी अन्य मिश्रित सगठन की तरह बामसेफ क अगो का भी गठन किया गया है ओर पुन इन्हे एक प्रभावशाली और कल्याणकारी सगठन का रूप देने के लिए अच्छी प्रकार से जोड दिया गया है। यहॉ बामसेफ के 10 मुख्य ओर अत्यत अगो का सक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है ताकि बामसेफ नाम के सगठन का वास्तविक चित्र लोगो के समक्ष उपस्थित हो सके। ये 10 प्रमुख अग इतने महत्त्वपूर्ण ह कि इनके बिना सगठन समुचित ढग से काम नही कर सकता। सगठन को अत्यत आधुनिक और परिष्कृत रूप देने के लिए उसमे नये-नये विकल्पो ओर अन्य छोटे-छोटे अगो को समय-समय पर जोडा जा सकता है।

ऐसा भी महसूस किया गया कि ये एक लाख कर्मचारी भारत के चालीस प्रमुख शहरो मे आसानी से सगठित किए जा सकते है। इस तरह की सरचना के पीछे प्रयास यह भी था कि हम देश के हर कोने मे छा जाएँ।

इस सगठन मे कुछ सदस्यो को कैडर पर आधारित कार्यकर्ता बनाने की योजना रखी गइ। इसके पीछे तर्क यह था कि किसी भी सगठन को जन आधारित और वृहद आकार का बना लेने के उपरात भी वह सगठन प्रभावशाली ढग से काम नही कर सकता। इसलिए इन तीन तत्त्वो यथा—जन आधारित वृहदाकार एव कैडर पर

आधारित के समुचित सगठन के लिए सुव्यवस्थित ओर मजबूत ढॉचा तेयार करने की योजना रखी जाए।

जेसा उन दिनो काशीराम मानते थे कि बहुजन समाज की आवश्यकताओ के अनुरूप कुल सदस्य सख्या मे से 5 प्रतिशत केडर होना बामसेफ की अनिवायता हागी। यह केडर कुछ जगहो पर केद्रित नही होने चाहिए, बल्कि पूरे भारत मे समान रूप से फेले हुए रहने चाहिए।

ऐसा भी ध्यान मे रखा गया कि बामसेफ का मुख्य काय (क) नियमो, विनियमा एव कानूनो को क्रियान्वित कराने, (ख) पिछडे ओर अल्पसख्यको के हिताथ विभिन्न प्राधिकरणो द्वारा तेयार की गड योजनाओ, कायक्रमो, परियोजनाओ ओर बजट को पूणत निष्पादित कराना होगा। इसलिए यह आवश्यक हो जाता हे कि बामसेफ का अपना सचिवालय हो। इस सचिवालय का आकार पूरे भारत मे फेले हुए दलित समुदाय के कार्यो को कराने के लिए उनके अनुरूप होगा। इसक अलावा सचिवालय से यह अपेक्षा रखी जाएगी कि वह कमचारियो, विद्यार्थियो, युवक-युवतिया तथा श्रमिको की सेवा करे।

आरभिक चरण मे बामसेफ के सगठनात्मक ढॉचे का प्रारूप कद्र से राज्य ओर राज्य से जिला तक बनाया गया था। जिसका व्यावहारिक स्तर पर पालन भी हुआ था। क्योकि शुरुआती दोर मे किसी भी सस्था या सगठन की पहुँच शहरो तथा महानगरो मे रहने वालो तक ही होती हे। लेकिन बाद के समय मे उक्त सस्था को जिले की बुनियादी इकाई से निचले स्तर पर पहुँचते हुए तालुका / तहसील ओर फिर प्रखड ओर गॉव तक की परिकल्पना की गइ थ्री। शायद इसीलिए बामसेफ भ्रातृ सघ ओर बामसेफ दत्तक ग्रहण की योजना बनाई गइ। बामसेफ भ्रातृ सघ का सबध भारत की सपूण शहरी जनसख्या से जोडा गया ओर बामसेफ दत्तक-ग्रहण का ग्रामीण जनसख्या से।

बामसेफ के इन दो प्रमुख अगो पर प्रकाश डालने के पहले निम्नलिखित तीन पहलुओ को समझ लेना अत्यत आवश्यक है।

(क) पृथक् अधिवास (ख) दुखद प्रवसन एव (ग) सुखद प्रवसन

(क) पृथक् अधिवास

लगभग 40 वष पहले जब बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर दलित शोषित समाज के इन दलित वर्गो विशेषकर अनुसूचित जातियो की बहुमुखी समस्याओ को सुलझाने मे गभीरतापूवक व्यस्त थे, उन्होने उनके लिए एक योजना तैयार की, जिसे पृथक अधिवास के रूप मे जाना जाता है। एक सुदीर्घ ओर गभीर चितन एव सघन प्रयासो के उपरात बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर नागपुर मे जुलाई, 1942 मे इस योजना का विवरण प्रकाश मे लाए। जो लोग इस योजना का पूरा विवरण जानना चाहते है उन्हे सबधित पत्रो ओर बाबा साहेब के ग्रथो का अध्ययन करना चाहिए। फिर भी तात्कालिक उद्देश्य

आर दलित शोपित समाज के तथाकथित नेतागण और विधायक देश के राजनीतिक तत्र क व्यवस्थापक उच्च हिंदुओ के यहाँ बधुवा ओर टहलुवा बना हुआ है ओर दूसरी तरफ शिक्षित कमचारियो का एक विशाल वर्ग समान रूप से स्वार्थी ओर अपने-आप म ही कद्रित बना हुआ है। अपने जीवन काल मे डॉ बी आर अम्बेडकर इस वर्ग क व्यवहार को देखकर बहुत दुखी हुए थे। 18 माच 1956 का आगरा के रामलीला मदान म दलिता शोपिता क विशाल जनसमुदाय को सबोधित करत हुए शिक्षित कमचारिया के अपने उन भाइयो के प्रति जिनके बीच वे पेदा हुए हे, उपेक्षापूण रवेये को दखकर उनकी निदा ही नही, बल्कि भर्त्सना भी की।

इस वग के जनक के उपयुक्त मनोभावो को ध्यान मे रखते हुए ओर उनकी सामाजिक जिम्मेवारी को देखत हुए पूना मे हम कुछ लागो ने इन शिक्षित कमचारिया का सगठित करने का निर्णय किया जिसका ध्येय है समाज को दासता से मुक्ति दिलाना था। उसी समय शिक्षित कर्मचारियो को अखिल भारतीय स्तर पर और पक्के तार पर सगठित करन का भी निणय लिया गया कि ऐसे सगठन के माध्यम से अपने विचार को एक मूत रूप प्रदान किया जाए।

सगठन की सरचना

समझदार आर परिपक्व लोग अपनी शत के अनुरूप सगठन का निमाण करते हे। जहॉ तक बामसेफ की सरचना का सबध है वह दलित, शोपित समाज की आवश्यकताआ ओर शर्तो के अनुरूप हे और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए है जिसके लिए सगठन का निमाण किया गया हे। ठीक किसी अन्य मिश्रित सगठन की तरह बामसेफ क अगो का भी गठन किया गया है और पुन इन्हे एक प्रभावशाली और कल्याणकारी सगठन का रूप देने के लिए अच्छी प्रकार से जोड दिया गया है। यहॉ बामसेफ क 10 मुख्य और अत्यत अगो का सक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है ताकि बामसेफ नाम के सगठन का वास्तविक चित्र लोगो के समक्ष उपस्थित हो सके। ये 10 प्रमुख अग इतने महत्त्वपूण है कि इनके बिना सगठन समुचित ढग से काम नही कर सकता। सगठन को अत्यत आधुनिक ओर परिष्कृत रूप देने के लिए उसमे नये-नये विकल्पो ओर अन्य छोटे-छोटे अगो को समय-समय पर जोडा जा सकता है।

ऐसा भी महसूस किया गया कि ये एक लाख कर्मचारी भारत के चालीस प्रमुख शहरो म आसानी से सगठित किए जा सकते है। इस तरह की सरचना के पीछे प्रयास यह भी था कि हम देश के हर कोने मे छा जाऍ।

इस सगठन मे कुछ सदस्यो को कैडर पर आधारित कार्यकर्ता बनाने की योजना रखी गई। इसके पीछे तर्क यह था कि किसी भी सगठन को जन आधारित और वृहद आकार का बना लेने के उपरात भी वह सगठन प्रभावशाली ढग से काम नही कर सकता। इसलिए इन तीन तत्त्वो यथा—जन आधारित वृहदाकार एव कैडर पर

आधारित के समुचित सगठन के लिए सुव्यवस्थित ओर मजबूत ढॉचा तेयार करने की योजना रखी जाए।

जेसा उन दिनो काशीराम मानते थे कि बहुजन समाज की आवश्यकताओ के अनुरूप कुल सदस्य सख्या मे से 5 प्रतिशत कॅडर होना बामसेफ की अनिवायता होगी। यह केडर कुछ जगहो पर केद्रित नही होने चाहिए, बल्कि पूरे भारत म समान रूप से फेले हुए रहने चाहिए।

ऐसा भी ध्यान मे रखा गया कि बामसफ का मुख्य काय (क) नियमा, विनियमा एव कानूनो को क्रियान्वित कराने (ख) पिछडे और अल्पसख्यको के हिताथ विभिन्न प्राधिकरणो, द्वारा तेयार की गइ योजनाओ, कायक्रमो, परियोजनाआ ओर बजट को पूणत निष्पादित कराना होगा। इसलिए यह आवश्यक हो जाता ह कि बामसेफ का अपना सचिवालय हो। इस सचिवालय का आकार पूरे भारत मे फेले हुए दलित समुदाय के कार्यो को कराने के लिए उनके अनुरूप होगा। इसके अलावा सचिवालय से यह अपेक्षा रखी जाएगी कि वह कमचारियो, विद्याथियो, युवक-युवतिया तथा श्रमिको की सेवा करे।

आरभिक चरण मे बामसेफ के सगठनात्मक ढॉचे का प्रारूप केद्र से राज्य ओर राज्य से जिला तक बनाया गया था। जिसका व्यावहारिक स्तर पर पालन भी हुआ था। क्याकि शुरुआती दोर मे किसी भी सस्था या सगठन की पहुॅच शहरो तथा महानगरो मे रहने वालो तक ही होती हे। लेकिन बाद के समय मे उक्त सस्था को जिले की बुनियादी इकाई से निचले स्तर पर पहुॅचते हुए तालुका / तहसील और फिर प्रखड ओर गॉव तक की परिकल्पना की गइ थी। शायद इसीलिए बामसेफ भ्रातृ सघ ओर बामसेफ दत्तक ग्रहण की योजना बनाई गइ। बामसेफ भ्रातृ सघ का सबध भारत की सपूण शहरी जनसख्या से जोडा गया और बामसेफ दत्तक-ग्रहण का ग्रामीण जनसख्या से।

बामसेफ के इन दो प्रमुख अगो पर प्रकाश डालने के पहले निम्नलिखित तीन पहलुओ को समझ लेना अत्यत आवश्यक है।

(क) पृथक् अधिवास (ख) दुखद प्रवसन एव (ग) सुखद प्रवसन

(क) पृथक् अधिवास

लगभग 40 वर्ष पहले जब बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर दलित शोषित समाज के इन दलित वर्गो विशेषकर अनुसूचित जातियो की बहुमुखी समस्याओ को सुलझाने मे गभीरतापूवक व्यस्त थे, उन्होने उनके लिए एक योजना तैयार की, जिसे पृथक अधिवास के रूप मे जाना जाता है। एक सुदीर्घ ओर गभीर चितन एव सघन प्रयासो के उपरात बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर नागपुर मे जुलाई, 1942 मे इस योजना का विवरण प्रकाश मे लाए। जो लोग इस योजना का पूरा विवरण जानना चाहते है उन्हे सबधित पत्रो ओर बाबा साहेब के ग्रथो का अध्ययन करना चाहिए। फिर भी तात्कालिक उद्देश्य

क लिए इस योजना से सबधित दो मुख्य पहलुओ की जानकारी देना ठीक रहेगा। ये दो पहलू इस प्रकार से दिखाई पडते है

(1) भारत के गॉवो मे अनुसूचित जातियो कि अत्यत निराशापूर्ण, पराश्रयी ओर शोचनीय दशा।

(2) भारत के लगभग सभी गॉवो मे अनुसूचित जाति के लोगो का अल्पसख्यक स्वरूप।

इन दो पहलुओ को ध्यान मे रखते हुए अनुसूचित जाति की दशा को सुधारने के लिए ओर पृथक् अधिवास मे बहुसख्यक प्रतिनिधित्व प्राप्त करने के लिए, जो कि प्रजातात्रिक व्यवस्था मे पयाप्त अनिवाय है, इस योजना को अमल मे लाना निहायत रूप से अनिवार्य था। यद्यपि यह योजना भारत की अनुसूचित जातियो के लिए अनिवार्य ओर लाभदायक थी, परतु बहुत से कारणो से इसे मूर्तरूप नही दिया जा सका, जिसमे से एक विशेष कारण था 15 अगस्त, 1947 को ॲग्रेजो का भारत की धरती से बहिगमन।

(ख) दुखद प्रवसन

पृथक् अधिवास हुआ या नही, परतु सच यह हे कि गरीब और सतप्त अनुसूचित जाति क लोगो ने वृहद सख्या मे गॉवो को छोडना शुरू कर दिया। ये गरीब लोग राजधानी वाले शहरो मे भागने लगे, ताकि उत्पीडन और भूख की ज्वाला से अपने को बचा सके ओर कुछ हद तक अपने भविष्य को सुधार सके। इन अकिचन और उत्पीडित प्रवासियो ने भारत के गॉवो से महानगर अथवा शहरी केद्रो और औद्योगिक सस्थानो की गदी जगहो, गदे नदी-नालो, ऊबड-खाबड पत्थरो को हटाकर बसना आरभ कर दिया। गरीब और सतप्त भारतीयो विशेष रूप से दलित पिछडो का इस प्रकार का प्रवसन दु खद प्रवसन के रूप मे परिभाषित किया जा सकता हे।

(ग) सुखद प्रवसन

सवेधानिक प्रावधानो, विशेष कर अनुच्छेद क्र 15(4) एव 16(4) का लाभ लेकर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोग भारी सख्या मे नौकरशाही व्यवस्था मे प्रवेश पा लिए। सवेधानिक प्रावधानो के इन लाभ भोगी लोगो की मॉग शहरी केद्रो और औद्योगिक प्रतिष्ठानो मे भी कमचारियो की पूर्ति के लिए और वहॉ के कार्यो की व्यवस्था के लिए बहुतायत रूप से होने लगी। इस प्रकार के प्रवसन को सुखद प्रवसन के रूप मे पारिभाषित किया जा सकता है। यद्यपि दुखद प्रवसन की सख्या करोडो की थी, परतु सुखद प्रवसन भी पर्याप्त मात्रा मे हुए, जो मोटे रूप से तालमेल करने पर 20 लाख व्यक्तियो से ज्यादा निकल सकते है।

अब हम बामसेफ भ्रातृ सघ ओर बामसेफ दत्तक ग्रहण की ओर मुडे अर्थात्

भारत की शहरी ओर ग्रामीण जनसख्या पर विचार करे तो उपयुक्त तीना पहलुओ की जानकारी बामसेफ के दो प्रमुख अगो के अध्ययन मे काफी सहायक सिद्ध होगी। भ्रातृ सघ का सबध दलित समाज के शहरी खड से हे। इस अग की पहली आवश्यकता उन दलित भारतीया का एक जगह लाने की ह जो दुखद ओर सुखद दानो ही प्रकार के प्रवसनो के परिणामस्वरूप शहरी केद्रा म आधार प्राप्त कर चुक ह। इन दा प्रकार के प्रवासियो को एक-दूसर के नजदीक लाने पर ओर भ्रातृ सघ कद्र स्थापित कर लेने पर हमारा प्रारभिक काय पूरा हा जाता ह। परतु हमारा प्रमुख काय यदि पूरा हो सकता ह तो कवल (1) नियमा, विनियमा ओर कानूनो के क्रियान्वयन करान आर (2) समाज के गरीबो के लिए योजनाआ, कायक्रमा ओर बजट प्रावधाना को पूणत ओर इमानदारी पूवक निष्पादित कराने स ही हो सकता है। सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने क लिए हमे नियमो, विनियमो कानूनो याजनाओ, कायक्रमा, परियोजनाओ ओर विभिन्न सबधित प्राधिकरणो द्वारा तेयार किए गए बजट प्रावधाना के विवरण एव सार सग्रह तेयार करना नितात अनिवाय हे। इस प्रकार का मिला-जुला ओर पेचीदा काय केवल शिक्षित कमचारियो द्वारा ही पूरा किया जा सकता हे। अन्यथा हमारे समाज क उन दलित शापित, जो करोडो की सख्या मे शहरी क्षेत्रो की गदी दमघोटू बस्तिया मे निवास कर रहे है, को बिना स्पश किए हमारी सभावी योजनाएँ केवल कागज पर ही रह जाएगी।

काशीराम लिखते ह कि जब हम अपने विशाल देश के आर-पार फेले हुए 5,76,000 गॉवो की ओर दृष्टिपात करते हे तो ज्ञान होता है कि बामसेफ एडाप्शन का कार्य कठिन ही नही, बल्कि दूभर भी हे। दूसरे भारत के गॉवो मे शिक्षित कमचारियो के अभाव के कारण यह काय ओर भी दुरूह हो जाता हे। अतएव, हमारे पास एक जिले मे कुछ एक ग्रामीण केद्रो को ही गोद लेने का विकल्प शेष रह जाता है। इसी कारण इस अग का नाम दत्तक ग्रहण (एडप्शन) रखा गया।

इस तरह से भारत के दलितो तथा पिछडो को एक सूत्र मे बाधने उनके लिए बेहतर विकल्प तलाशने तथा उन्हे उनकी क्षमतानुसार जीवन के हर क्षेत्र मे प्रतिभावान बनाने के सकल्प को लेकर बामसेफ की शुरुआत की गई थी।

कचन चद्रा अपने शोध के दौरान लिखती है कि रतन राम इमारती काम मे ईटो की चिनाई करने वाले एक राज-मजदूर का बेटा हे। अपने घर मे पढाइ-लिखाइ करने वाला वह पहला व्यक्ति था। स्थानीय सरकारी स्कूल से निकलने के बाद उसने व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया ओर एक सरकारी सस्था मे क्लर्क की नौकरी करने लगा। रतन राम और उसके पिता के सोच मे फर्क यह था कि पिता को इटो की चिनाइ करके रोजी-रोटी कमाकर तसल्ली हो जाती थी, लेकिन शैक्षणिक अवसरो और बेहतर नौकरी के बावजूद रतन राम के दिल मे आग लगी रहती थी। जब मै 1997 मे उससे मिली तो उसने नोकरी के दौरान कई प्रकरण सुनाए, जिनमे उसे 'मेरिट' की कमी के कारण अपने साथियो के कटाक्ष झेलने पडे थे या एक खास जाति का

होने के कारण उसे पदोन्नतियो से वचित किया गया था। 1978 मे रतन राम के हाथ **ऑप्रेस्ड इडियन** नामक पत्रिका लगी जिसे काशीराम सरकारी कर्मचारियो के लिए निकालते थे। उस लगा कि पत्रिका उसी की भावनाओ का प्रतिनिधित्व करती है इसलिए उसने पत्रिका के दफ्तर से सपर्क किया। साल भर बाद रतन राम ने एक 'कायकत्ता शिविर' मे हिस्सा लिया जहॉ उसे काशीराम ने प्रशिक्षण दिया। इस तरह वह **बामसेफ** का सदस्य हो गया ओर होशियारपुर (पजाब) मे **बहुजन समाज पार्टी** की स्थापना करने वाले शुरुआती कायकत्ताओ मे से वह एक सक्रिय सदस्य बना।

यह एक साधारण कितु प्रभावपूर्ण प्रक्रिया थी। बामसेफ से अब तक लाखो अम्वेडकरवादी जुड चुके थे। वे अलग-अलग प्रदेशो से थे। उनकी भाषा, पहनावा भी अलग-अलग था, पर विचार एक था। वे सभी अम्बेडकर के सघषपूर्ण दर्शन के तहत जुड रहे थे, एक-दूसरे के नजदीक आ रहे थे। उनमे अधिकाश जुझारू थे। बावजूद इसके कि वे सरकारी कमचारी थे। उन सभी के मन मे बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के सपनो को पूरा करने की भावना थी।

मेकूराम जी के विचार मे बामसेफ सस्था की उद्भव ओर विकास होना एक महत्वपूण ऐतिहासिक घटना थी। जिसके माध्यम से देशभर के दलित, आदिवासी, पिछडो तथा अल्पसख्यक समुदायो के लोगो को जोडा गया। जिस प्रयास की उपलब्धि भी हुइ।

सदभ एव टिप्पणी

- काशानाथ कावलकर नान ब्राह्मण मूवमट इन साउथन इडिया (1873 1949) शिवाजी यूनीवसिटी पब्लिकशन काल्हापुर 1979
- कपचम लाल भारत म सामाजिक क्राति किताब मच अमरनाथ रोड पटना 1993
- मुशा एन ग्ल खाब्रागड मध्‍ प्रात म दलित आदोलन का इतिहास बालाघाट मध्य प्रदेश 199[illegible]
- निभय पथिक अम्बडकर मा बडाला बबइ 15 मइ 1988
- बामसेफ एक परिचय आनद साहित्य सदन अलीगढ 1981 पष्ठ 4
- वही पृष्ठ 5
- वहा पृ 7
- वही पृ 8
- वही पृ 10
- वही पृ 11
- वही पृ 12
- कचन चद्रा ट्रासफार्मेशन ऑव इयनिक पॉलिटिक्स इन इंडिया दि डिक्लाइन ऑव कॉग्रेस एड राइज ऑव बहुजन समाज पार्टी इन होशियारपुर *दि जनरल एशियन स्टडीज 59* अक 1 फरवरी 2000 पृ 35 36
- 5 मइ 1979 को नई दिल्ली के बिहार भवन मे मैकूराम उपमहानिदेशक बिहार पुलिस से बातचीत के आधार पर। इस मुलाकात मे सुश्री मायावती भी साथ मे थी।

बामसेफ से बहुजन समाज पार्टी

बामसेफ का अगला चरण डी एस फार था। यह एक जुझारू सगटन था। डी एस फोर का सदस्यता शुल्क उस समय तीन रुपए वापिक था। इसम आर बामसफ मे बुनियादी फक यह था कि बामसेफ का कोइ सदस्य सरकारी क्मचारी राजनीतिक प्रचार मे भाग नही ले सकता था। लेकिन डी एस फार को इसी मकसद स बनाया गया था। डी एस फार म कइ विग्स (मोर्चो) बनाए गए। आर क सिह बतात हे कि आदोलन के सचालन के लिए काशीराम ने इसम दस विग्स बनाने की योजना बनाइ। पहले तीन विग्स जागृति विग, महिला विग ओर छात्र विग बनाए गए। जागृति माचा काफी सक्रिय हुआ। उसने भाषण, गीत-सगीत ओर नुक्कड नाटको क जरिए उत्पीडता मे चेतना पेदा करने का काम किया। महिला विग की सयोजक मायावती का बनाया गया। डी एस फोर न ग्रामीण ओर शहरी इलाको मे व्यापक कायक्रम किए आर दलित व पिछडो मे काशीराम क विचारो का प्रचार किया। साइकिल प्रचार यात्राएँ निकाली आर जनसभाएँ आयाजित की।

डी एस फार का सबसे बडा कायक्रम दक्षिण मे कन्याकुमारी स शुरू किया गया साइकिल माच था। इसी के साथ डी एस फोर के अतगत उत्तर-पूव मे कोहिमा से, पश्चिम मे पोरबदर से और पूव मे पुरी से साइकिल यात्राएँ की गइ। य चारो यात्राएँ एक सो दिन तक चली। 6 दिसबर, 82 से शुरू होकर यह कायक्रम 15 मार्च, 1983 तक चलता रहा। फिर दिल्ली पहुँचकर करीब तीन लाख लोगो की एक विशाल रेली हुइ। इन यात्राओ मे समता ओर सम्मान के सघर्ष का नारा दिया। जिससे अभिभूत होकर लोग जुडते चले गए।

डी एस फोर ने उत्तर प्रदेश मे शराब विरोधी कार्यक्रम भी किया। उसके स्वयसेवक राज्य भर म साइकिलो से घूमे ओर दलित व पिछडे समुदायो की बस्तिया मे शराब की दुकाने खोलने का विरोध किया। डी एस फोर के कायकता दलित ओर पिछडो की प्रत्येक बस्ती मे जाते ओर तत्कालीन सरकार की कथनी ओर करनी की दोगली नीति पर चोट करते। काशीराम का कहना था कि सरकार एक तरफ गाँधी क सिद्धातो की बाते करती हे। साथ ही दूसरी तरफ दलित ओर पिछडो की बस्तियो

मे शराब की दुकानो मे बढोत्तरी करती है। इस तरह से गरीबो को सरकार और भी मजबूर तथा विवश कर रही है। बामसेफ के सदस्यो ने डी एस फोर के पीछे रहते हुए उसके कायक्रमो को आगे बढाया। डी एस फोर के माध्यम से काशीराम ने बसपा बनाने से पहले ही चुनाव की मशीनरी की रूपरेखा बना ली थी। काशीराम का कहना था कि उन्होने डी एस फोर का निमाण कल की लडाई के लिए कमजोरो को तैयार करन क लिए किया है। उन्हाने उस समय कहा था, "मे अपने प्रतिद्वद्वियो को पूरी आजादी देता हूँ कि वे बहुजन समाज को जितना बॉट सके, बॉटे। लेकिन यह मेरा अधिकार हे कि म उन्हे उनका हक दिलाने के लिए सगठित करूँ।"

1983 की दिल्ली मे हुई रैली ने उनके सामने बहुजन समाज आदोलन के लिए एक राजनीतिक दल की जरूरत को साफ कर दिया। इस तरह अपनी योजना के तीसरे चरण मे डॉ अम्बेडकर के जन्मदिन 14 अप्रैल, 1984 को दिल्ली मे बहुजन समाज पार्टी के गठन की घोषणा की गइ। 22, 23 ओर 24 जून को पार्टी का पहला राष्ट्रीय सम्मेलन लाल किले के मैदान मे हुआ। पार्टी को चुनाव आयोग मे पजीकृत कराया गया। इस तरह बसपा के माध्यम से काशीराम ने **गुरु किल्ली** की खोज शुरू की।

2 'गुरु किल्ली' की ओर

जिन दिनो काशीराम बामसेफ ओर डी एस फोर के दौर से गुजर रहे थे, अर्थात् स्वय उनक शब्दो मे पॉच हजार जातियो मे बॅटे **'बहुजन समाज में एकता पैदा करने का अभियान'** चला रहे थे, उनकी तरफ बहुत कम लोगो ने ध्यान दिया। बामसेफ की प्रभावकारिता ओर सगठन शैली स्वत स्पष्ट थी, लेकिन उसके पीछ की दूरदेशी को कोइ नही पकड पाया। बामसेफ के बाद डी एस फोर फिर बसपा के निर्माण का यह क्रम उन्हे नियोजित और गहरे उद्‌देश्यो वाला नही लगा। शायद ही किसी प्रमुख बुद्धिजीवी या समाजशास्त्री ने उस समय काशीराम को गभीरता से लिया हो। दलितो मे काम करने वाली वामपथी शक्तियॉ उस जमाने मे कुछ-कुछ व्यग्य के साथ ही साइकिल पर घूमते रहने वाले काशीराम के बारे मे चर्चा करती थी। समाचार पत्रो मे भी डी एस फोर की साइकिल यात्राएँ खबरो के हाशियो पर ही रह गई। पत्रकार ओर अन्य प्रेक्षक काशीराम की बढती हुई लोकप्रियता और 'जय भीम' के अभिवादन का नया मर्म नही समझ पाए।

स्तभकार ए एस अब्राहम के अनुसार बामसेफ और डी एस फोर पत्रकारो के लिए सिर्फ शाब्दिक फामूले भर थे। उन्होने पत्रकारो को केवल मनोविनोद की सामग्री प्रदान की ओर बदले मे पत्रकारो ने इन शब्दो को उपहासपूर्ण सहिष्णुता के साथ ग्रहण कर लिया। यही नही बसपा ने गठन के बाद जब चुनावो मे तुरत कोई उल्लेखनीय जीत हासिल नही कर पाइ तो उसे एक ओर जातिवादी जमावडा कहकर खारिज कर दिया गया जो ऐसे पत्रकारो की टिप्पणी लगभग यही हाती थी 'बसपा उतनी

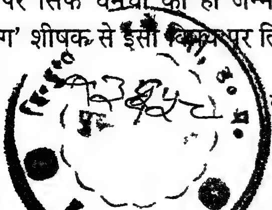
जल्दी तिरोहित हो जाएगी जितनी जल्दी उसका फलाव हुआ हे।' कॉग्रेस न उसे ःनीतिक शरारत करार दिया ओर 'मोसमी पार्टी' कहकर उसकी अल्पजीविता की भविष्यवाणी कर दी।

ऊपर से देखने मे बसपा ओर उसके पूववर्ती सगठनो क पास काइ राजनीतिक तामझाम था भी नही। बामसेफ आर डी एस फार के पास दफ्तर क नाम पर लखनऊ क उदयगज इलाके मे कुरील महोदय की कोठरी थी। दिल्ली मे काशीराम रगरपुरा की घनी बस्ती के एक मामूली से कमरे को अपना कद्र बनाए हुए थ। बसपा के पास प्रचार का मुख्य साधन साइकिल थी ओर काशीराम की अपने कायकत्ताआ का सलाह थी कि बीस कि मी तक पदल चलो ओर इसके बाद साइकिल का इस्तेमाल करो। ऐसी साधनहीन पार्टी को भला राजनीतिक ताकते क्यो मुँह लगाती, जा जीपा ओर कारो के काफिलो के साथ जनता के बीच मे जाती थी। दूसरे, काशीराम ने रणनीति भी ऐसी ही बनाइ थी कि चुपचाप तेयारी करो ओर चुनाव क समय उभर कर सामने खडे हो जाओ।

यह थी काशीराम की योजना। उस योजना के तहत आग के कदम उठाए गए। जिसने लबे अरसे क बाद दलित राजनीति की पहचान कगइ। हालॉकि यह अब तक **बहुजन राजनीति** मे परिवर्तित हो चुकी थी। वह अलग सोच थी ओर कार्य करने की प्रणाली भी अलग थी। इसे दलित राजनीति के विराटता की ओर बढते कदम भी कहा जा सकता है।

बकोल अभय कुमार दुबे भीमराव अम्बेडकर ने कभी सोचा भी नही होगा कि अनुसूचित जातियो को नोकरियो मे मिल आरक्षण के गभ से दलितो के लिए किसी राजनीतिक परियोजना का जन्म हो सकता हे। आरक्षण के प्रावधान की परिकल्पना तो दलितो पर वणव्यवस्था द्वारा सदियो से आरोपित सामाजिक ओर शेक्षणिक पिछडेपन के प्रभाव को मद करने के लिए की गई थी। उस समय अम्बेडकर के लिए भविष्य मे झॉककर यह देख लेना शायद नामुमकिन था कि आजादी के चालीस साल बाद दलित सरकारी कर्मचारी एक ऐसे राजनीतिक दल को जन्म देगे जो उन्हे प्रतीक के रूप मे अवश्य अपनाएगा, लेकिन उसे न तो उनके वैचारिक मर्म मे दिलचस्पी होगी ओर न ही उनकी राजनीतिक-सागठनिक विरासत मे।

कभी पूना मे किर्की स्थित एक्सप्लोसिव रिसर्च एड डवलपमेट लेबोरेटरी मे अनुसधान सहायक की नोकरी करने वाले जिन काशीराम को बहुजन समाज पार्टी का सस्थापक ओर सर्वेसवा माना जाता हे, उन्होने अपनी विचारयात्रा पूना मे हुए 1932 के गॉधी-अम्बेडकर समझौते की कटु आलोचना से शुरू की थी। काशीराम ने किसी वाग्जाल का सहारा लिए बिना दावा किया था कि पूना समझौते ने दलित नेताओ के नाम पर सिफ चमचो को ही जन्म दिया। काशीराम ने अपनी एकमात्र पुस्तक 'चमचा युग' शीषक से इसी विषय पर लिखी। दरअसल, यह पतली-सी किताब



अम्बेडकरयुगीन दलित राजनीति की व्यर्थता को आक्रामक शैली मे पेश करने के अलावा कुछ नही है। इसीलिए काशीराम और महाराष्ट्र के कुछ दलित नेताओ ने मिलकर जब 1978 मे **आल इडिया बैकवर्ड एड माइनारिटी कम्युनिटीज एपलाईज फेडरेशन** (बामसेफ) का गठन किया तो उनका इरादा धीरे-धीरे एक ऐसी पार्टी के निमाण की तरफ बढना था जिसे मदिर प्रवेश से लेकर मनुस्मृति जलाने ओर धमातरण तक दलिता द्वारा अपनाइ गई अतीत की किसी भी अम्बेडकरवादी सामाजिक मुहिम म काइ रुचि नही हो सकती थी। उसे रिपब्लिकन पार्टी ओर दलित पेथरो द्वारा चलाए गए नामातर सरीख आदोलनो मे अपना समय खराब नही करना था। अछूतो के सामाजिक आर जातीय स्रोत के बारे मे अम्बेडकर की वेचारिक ओर मानवशास्त्रीय स्थापनाआ को दरकिनार करते हुए इस पार्टी को अपनी विचारधारात्मक भित्ति **आर्य बनाम अनाय** की ज्योतिबा फुले द्वारा प्रवर्तित अवधारणा के आधार पर बनानी थी।

बसपा के उभार के पहले ज्योतिबा फुले के विचार आर दलितो, पिछडो, आदिवासिया ओर अल्पसख्यको का गठजोड बनाने का दावा करने वाली बहुजन थीसिस उत्तर भारत म प्रचलित नही थी। आर्य बनाम अनार्य के इस नस्ली सिद्धात को ठुकराने वाल अम्बेडकर ने मनु को जातिवाद का सस्थापक मानने से भी इनकार कर दिया था। लकिन बहुजन समाज पार्टी के माध्यम से देश की राजनीति मे **मनुवाद** नामक राजनीतिक अभिव्यक्ति लोकप्रिय होनी थी जिसे न केवल ब्राह्मणवाद का नया नाम बन जाना था वरन जिसके माध्यम से ब्राह्मणवाद के स्रोत की आधुनिकतावादी सीमाओ का प्राचीन भारतीय अतीत तक विस्तार हो जाना था। बहुजन समाज पार्टी को एक ऐसा राजनीतिक दल बनना था जिसे अम्बेडकर की भॉति दलितो को आधुनिक अर्थो मे मजदूर वग के अग के रूप मे देखने का प्रयोग करने की फुरसत नही मिल सकती थी ओर न ही ग्रामीण समाज मे खेतिहर मजदूरो के रूप मे दलितो की राजनीतिक गोलबदी का कोई कार्यक्रम उसके एजेडे पर होना था। जाहिर है कि आर्थिक शोषण की बजाए इस पार्टी का जोर आत्मसम्मान और अस्मिता के प्रश्नो पर होना था। इस पार्टी को तो चुनावी राजनीति और निर्मम जोड-तोड के जरिए सिर्फ **'चाबियों की चाबी'** की सीधी तलाश मे व्यस्त रहना था। उसे अगर किसी पहलू से अम्बेडकर की अनुयायी बनना था, तो वह केवल यही था। अम्बेडकर ने दलितो के लिए राजसत्ता को चाबियो की चाबी अर्थात् 'मास्टर की' करार दिया था ओर जिसे काशीराम ने अपनी पजाबी जुबान मे **गुरु किल्ली** कहा था।

बामसेफ की स्थापना के ठीक तीन साल बाद प्रचारात्मक उद्देश्यो से **दलित शोषित समाज सघर्ष समिति** (डी एस फोर) का गठन हुआ ओर फिर उसके तीन साल बाद **बहुजन समाज पार्टी** बनी। बामसेफ कमचारियो का सगठन होने के बावजूद ट्रेड यूनियन की तरह पजीकृत नही था ओर डी एस फोर भी फुटकर चुनाव तो लडता था, लेकिन चुनाव आयोग मे रजिस्टर्ड नही था। दूसरी ओर बसपा को शुरू से ही आयोग

मे पजीकृत कराया गया। उसके शुरुआती चुनावी अनुभव काफी उत्साहवधक रह। तथ्य बताते है कि बामसेफ के बुनियादी ओर डी एस फोर के प्रचारात्मक काम ने एक स्तर की बहुजन एकता की पृष्ठभूमि तेयार कर दी थी। खास बात यह थी कि इस एकता के शीप पर दलित राजनीतिक हित थे। बसपा को अपने प्रभाव वाले इलाका मे दलित समाज के उन हिस्सो का निविवाद समथन मिला जा आरक्षण ओर सरकारी नोकरियो के माध्यम से अपेक्षाकृत साधन-सपन्न हो गए थ। बसपा ने पिछड वर्गो मे अनिपिछडी जातियो का उल्लेखनीय समथन जीतने म कामयाबी हासिल की आर मुसलमाना मे भी उसके प्रति पयाप्त आकषण देखा गया। बसपा के उभार ने दलित मतदाताआ को कॉग्रेस के वोट बेक की मातहत हैसियत से निकालकर एक स्वतत्र राजनीतिक शक्ति के रूप मे स्थापित कर दिया। बसपा ने दलितो को यकीन दिला दिया कि कॉग्रस उनका वोट तो लेती है, लेकिन बदले मे उन्हे सगठन ओर सत्ता म आनुपातिक नुमाइदगी नही देती। बसपा ने दावा किया कि केवल वही दलितो को सत्ता के नजदीक पहुँचा सकती हे। अपनी राजनीतिक गतिविधियो से उसने साबित किया कि बसपा के जरिए दलित समाज किसी एक पार्टी को बहुमत न मिलने की सूरत मे सत्ता मे अपनी वास्तविक शक्ति से ज्यादा हिस्सेदारी की मॉग कर सकता है ओर यदा-कदा अनुकूल परिस्थितियॉ होने पर अल्पकाल के लिए ही सही, पर सत्ता प्राप्त कर सकता हे।

अपने गठन के दस वष के अदर-अदर बसपा ने उत्तर प्रदेश मे समाजवादी पार्टी के साथ मिली-जुली सरकार बनाइ और फिर इस गठजोड को तोडकर भारतीय जनता पार्टी की मदद से दो बार फिर सरकार बनाने मे सफलता हासिल की। बसपा को चुनाव आयोग से 1999 मे राष्ट्रीय पार्टी की मान्यता मिली। राष्ट्रीय मतदान मे बसपा का हिस्सा 1996 मे 4, 1998 मे 4 7 ओर 1999 मे 4 3 फीसदी रहा, जबकि 1991 मे उसे केवल 1 6 फीसदी वोट ही मिले थे। ससद मे भले ही बसपा के पास उल्लेखनीय सीटे न हो, लेकिन वोटो के लिहाज से वह कॉग्रेस, भाजपा ओर माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के बाद देश की चौथे नबर की पार्टी बन चुकी थी। इस तरह से देखा गया कि दलितो का सघर्ष और मेहनत रग लाया बकोल छेदीलाल साथी नीला रग भगवा रग पर भारी पडा।

इस पार्टी पर विस्तृत अनुसधान करने वाले विद्वानो और स्वय बसपा का भी दावा है कि वह सिर्फ दलित की नही, बल्कि बहुजनो की पार्टी है। इस दावे के मुताबिक बसपा कोशिश करती है कि चुनाव के लिए उम्मीदवार बनाते समय बहुजन समीकरण का ध्यान रखा जाए। 1996 के उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव मे उसने तीस फीसदी टिकट पिछडे वर्गो, (जिनमे से आधे से ज्यादा टिकट अति पिछडो को), 29 फीसदी अनुसूचित जातियो और सोलह फीसदी टिकट मुसलमानो को दिए थे। उपरोक्त ऑकडो और तथ्यो के आधार पर मोटे तोर पर बसपा को एक सफल राजनीतिक दल कहा जा सकता है।

लेकिन बसपा की इस जोरदार सफलता का एक दूसरा पहलू भी है जो पिछले दो-तीन वर्षो से उभरकर सामने आ रहा हे। 1996 और 98 के चुनावी ऑकडे बताते हे कि बसपा ने हरियाणा, पजाब, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश मे सात से लेकर बीस फीसदी वोट हासिल किए हे। जाहिर है कि बहुजन दायरे मे टिकट वितरण करके और करीब सोलह फीसदी टिकट ऊँची जातियो के बीच बॉटकर भी बसपा प्रादेशिक आर राष्ट्रीय स्तर पर गुरु किल्ली प्राप्त करने के निकट नही दिखती। चूँकि वह कई प्राता म चुनाव लडती हे ओर हर जगह उसके उम्मीदवार **बहुजन व्यूह रचना** के कारण कुछ-न-कुछ वोट हासिल कर ही लेते है, इसलिए उसे राष्ट्रीय मान्यता लायक वोटो का प्रतिशत तो उपलब्ध हो जाता है, लेकिन माकपा, भाजपा या कॉग्रेस की तरह या उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी की तरह वह किसी भी प्रदेश मे नबर एक की पार्टी बनने मे नाकाम रहती है। ससद मे उसकी उपस्थिति काफी कम है और उत्तर प्रदेश विधानसभा मे उसके विधायको की सख्या कभी सत्तर तक नही पहुँची। मतदाताओ ओर समथन आधार के झुकावो के कई अध्ययन बताते है कि बसपा दलित मतदाताओ की प्रमुख लेकिन एकमात्र पसदीदा पार्टी नही है। पर बाद के दोर म दलितो का झुकाव महसूस किया गया।

सवाल यह है कि बसपा की यह सीमा बहुजन आधारित चुनावी व्यूह रचना का परिणाम ह या उस रणनीति पर अमल न कर पाने का नतीजा है? एक प्रश्न यह भी हे कि क्या चुनावी राजनीति के हिस्सा-बॉट के माध्यम से बहुजन समाज को एक राजनीतिकृत ओर एकताबद्ध समुदाय के रूप मे उपलब्ध किया जा सकता है? सामाजिक-आथिक रूप से उत्पीडित और शोषित तबको के लिए राजसत्ता उपलब्ध कराने का दावा करने वाली एक सभावनाशील पार्टी के रूप मे बसपा के अतीत, वर्तमान और भविष्य का यह अध्ययन दलित-बहुजन राजनीति के उन पहलुओ की शिनाख्त करने का प्रयास करेगा जिनके कारण बसपा की प्रकट सफलताएँ अपने अतर्गत मे कई तरह की सीमाओ से ग्रस्त लगती है। इस अध्ययन मे वर्णन-प्रधान शैली को अपनाया गया हे। इसके पीछे मुख्य भावना यह हे कि बसपा के बारे मे आमतौर पर तथ्य उपलब्ध नही है। यह एक ऐसी पार्टी है जिसने अपने राजनीतिक ओर सामाजिक महत्त्व के अनुपात मे समाज विज्ञानियो का ध्यान अपनी ओर नही खीच पाया है। इस पार्टी के सगठन, विचारधारा, नेतृत्व ओर रणनीति का बहुत कम अध्ययन हुआ है।

बसपा के राजनीतिक और सागठनिक जीवन का यह अध्ययन बताता है कि उसके सस्थापक काशीराम की निगाह मे बामसेफ और डी एस फोर की गतिविधियो के केद्र मे बहुजन समाज की एकता के प्रयास थे ओर जब उन्हे लगा कि अब इस एकता को चुनावी समीकरण मे बदला जा सकता है तो उन्होने ऐलान कर दिया कि उनकी दिलचस्पी किसी रिपब्लिकन या नामातर मूवमेट मे न होकर सिर्फ **'पावर मूवर्मेट'** मे हे। इससे स्पष्ट होता है कि बसपा के बनने से पहले का दौर राजनीतिक

कम आर मामाजिक आदोलन का ज्यादा था। दूसरे शब्दो मे, वह राजनीतिक उद्‌दश्या से किया गया सामाजिक कम था। बसपा के गठन के बाद स्थिति म परिवतन हो गया ओर यह मुहिम पूरी तरह बहुजन एकता के सीधे राजनीतिकरण के माध्यम से एक राजनीतिक समुदाय बनाने की कोशिशो मे बदल गइ। ठास रूप स देख तो लगता ह कि बसपा एक स्तर पर दलितो के आतरिक विभेदो से पर जाते हुए पूरे दलित समाज के आर-पार एक तरह की एकीकृत दलित राजनीतिक एकता की रचना करना चाहती हे ओर फिर इस एकता के नेतृत्व म पिछडी अतिपिछडी जातियो अल्पसख्यको ओर आदिवासियो का चुनावी मोचा बनाना चाहती हे। इसके लिए उसन **सौ फीसदी राजनीति** का पद्रह वर्षीय सिलसिला चलाया हे ओर तकरीबन मान लिया हे कि सामाजिक आदोलन का चरण पूरा हो गया है ओर अब सत्ता म ज्यादा-स-ज्यादा हिस्सेदारी हासिल करके दलित अस्मिता के सवालो पर केद्र करते हुए यह प्रक्रिया काफी दूर तक चलाई जा सकती हे। सवाल यह हे कि क्या बसपा की यह मुहिम पूर्ववर्ती दलित आदोलन की उपलब्धियो को सुरक्षित रखत हुए उनमे कोइ योगदान कर पाइ हे? दूसरा सवाल यह हे कि नोकरशाही के दलित हिस्से के बुनियादी प्रयास से बनी इस पार्टी को राजसत्ता मिलने पर बहुजन समाज की चुनावी एकता के उन प्रयासो पर क्या असर पडा? क्या इस तरह की चुनावी एकता किसी स्थायी अथवा कुछ हद तक टिकाऊ राजनीतिक समुदाय के निमाण का आधार बन सकती हे? एक महत्त्वपूण आकलन का विषय यह हे कि दलित-बहुजन नेताओ ने **'चाबियो की चाबी'** को केसे इस्तेमाल किया? इन सवालो का जवाब पाने क लिए इस अध्ययन को तीन हिस्सो मे बॉटा गया हे?

बहुजन एकता की तलाश

रतन राम का उदाहरण साफ करता है कि बसपा की विचारधारा, सागठनिक व्यूह रचना और समथन आधार की तुलना देश के किसी भी राजनीतिक सगठन से नही की जा सकती। इस पार्टी के पास न कोइ लिखित घोषणा पत्र हे ओर न ही कोइ सुसगत आथिक-राजनीतिक नीति वक्तव्य। यह एकमात्र पार्टी हे जिसका आथिक दर्शन न किसी को पता है ओर न ही इसके नेता या नेताओ ने उसे पेश करने की कभी जहमत उठाई है। उसकी विचारधारा न तो पूँजीवाद के किसी खाने मे फिट होती हे ओर न समाजवाद के खाने मे। उसे उदारतावादी दायरे की पार्टी बताने वालो को भी ऐसा करने के लिए काफी जोखिम उठाने पड सकते हे। क्योकि बसपा अक्सर हित-आधारित लोकतात्रिक राजनीति की स्थापित परपराओ का उल्लघन करती रहती है। बसपा के इस अनूठेपन के कारण उसके बारे मे जानकारी पाने के सिफ दो व्यावहारिक स्रोत रह जाते है—इनमे पहला है उसके नेता काशीराम का विकट जीवन, छुटपुट रचनाएँ, भाषणो और वक्तव्यो का लबा सिलसिला, और दूसरा है इससे निकलने

वाले निष्कर्षो की पुष्टि करने के लिए रतन राम सरीखे काशीराम द्वारा प्रशिक्षित किए गए कार्यकर्त्ताओ के जीवन का राजनीतिक पाठ। काशीराम और उनके शिष्य रतन राम के उदाहरण बताते हे कि बसपा आरक्षण के माध्यम से सरकारी नौकरी प्राप्त करने वाले उन सरकारी कर्मचारियो की राजनीतिक परियोजना का परिणाम हे जो सरकारी दफ्तरो मे सामाजिक-प्रशासनिक भेदभाव के शिकार होते रहे हे और जिन्ह सामान्य कमचारी ट्रेड यूनियन राजनीति क माध्यम से उन्ह कभी न्याय नही मिला। इसलिए इन कमचारियो को अपना अलग सघ बनाना पडा। चूँकि यह सघ सरकारी कमचारियो का था इसलिए इसकी राजनीति जनादोलनकारी प्रवृत्तियो से क्तराने वाली ही होनी थी। काशीराम को उनके निजी तजुर्बो ने सिखाया था कि कानूनी माध्यमो मे अपनी मॉगे मनवाने लायक गुँजाइशे है ओर कानून तोडने की कोइ जरूरत नही है। यह अलग कमचारी सघ सीधे किसी राजनीतिक दल से जुडने के लिए तेयार नही था, क्योकि उसका मकसद आगे चलकर स्वय एक राजनीतिक दल को जन्म देना था। सभवत यही कारण था कि बामसेफ को सगठन के रूप म कही पजीकृत नही कराया गया। उसका ढॉचा भी अनोपचारिक ही रहा।

बैकवर्ड एड माइनारिटी कम्युनिटीज इपलाइज फेडरेशन (बामसेफ)

देश क किसी भी क्षेत्र मे बसपा के उदय की परिघटना का अध्ययन किया जाए तो उसके पीछे बामसेफ की छाया उपस्थिति नजर आती है। सामने आए बिना बामसेफ के मदस्य प्रशासन मे अपनी हेसियत का कुशलतापूवक इस्तेमाल करते हुए बसपा के लिए बीज डालने का काम करते है ओर ससाधन जुटाते हे। बामसेफ अपने-आप मे एकदम नए तरह का विचार था। शुरू मे बडे दलित अफसरो ने हमदर्दी होते हुए भी इस सगठन से सुरक्षित दूरी बनाए रखी। सवर्ण अफसरो की जातिवादी ज्यादतियो के खिलाफ सघर्ष चलाते मॅझोले ओर निचले दलित कर्मचारियो के बीच इसके पैर जम गए, लेकिन इसकी मजिल कर्मचारियो की यूनियन के रूप मे सीमित हो जाना नही था। काशीराम चाहते थे कि यह शिक्षित कर्मचारियो का सगठन तो बने, लेकिन शिक्षित कर्मचारियो के लिए ही काम न करता रहे। इस सगठन के शिक्षित कर्मचारियो से उम्मीद की जाती थी कि वे उत्पीडित समाज के अन्य सदस्यो की मदद करेगे और इस तरह बहुजन समाज आदोलन के लिए **'ब्रेन बैक', 'टैलेंट बैक'** और **'फाइनेशियल बैक'** बन जाएँगे। बसपा के समर्थको का दावा है कि स्थापना के थोडे दिन बाद ही बामसेफ से पॉच सो पीएचडी, तीन हजार एमबीबीएस / एमएस / एमडी, पद्रह हजार वैज्ञानिक और सात हजार अन्य स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री धारी कर्मचारी जुड गए। अधिकाश सदस्य महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश के थे और अनुसूचित जाति के थे। इस सगठन मे पिछडे वर्ग के कर्मचारियो की सख्या सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश से थी।

कर्मचारियो की अपनी सरकारी श्रेणी (ओहदा) बामसेफ मे आकर खत्म हो

जाती थी। वहॉ सभी सदस्य बराबर होते थे। बामसेफ के सदस्य छह से बारह रुपए तक सदस्यता शुल्क देते थे और समय पडने पर आदोलनो के लिए धन जमा करना उनके कायभारो मे महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था। हर सरकारी दफ्तर मे बामसेफ का खजाची होता था, जिसके पास धन जमा होता था। यह स्थायी नही, बल्कि बदलता रहता था। जिले या मडल का सयोजक इसकी नियुक्ति करता था। खजाची जमा धन जिले के सयोजक के हवाले कर देता था। सयाजक इसे काशीराम तक पहुँचा देता था। इस सयोजक की निउुक्ति काशीराम क हाथो मे होती थी। व काय कुशलता और निष्ठा को ध्यान मे रखते हुए उसका चयन करते थे। सयोजक पसे की व्यवस्था के अलावा नए सदस्य भी बनाता था काशीराम के निर्देशो को सगठन मे पहुँचाता था और हर महीने के अतिम रविवार को जिले-भर मे बामसेफ कायकत्ताओ की बठक आयोजित करता था।

मडल स्तर ओर प्रात स्तर पर भी काशीराम सयोजक नियुक्त करते थ। मडल सयोजक प्रात और जिले के बीच कडी का काम करता था। प्रात सयोजक सभी सयोजको क बीच तालमेल रखता था। काशीराम ने बामसेफ सदस्यो को चुनाव प्रचार म भाग लेने के लिए कभी उत्साहित नही किया। ओर न ही बामसफ का सदस्य होन के लिए बसपा को वोट देना जरूरी माना—लेकिन बामसेफ के गठन का अतनिहित तक था ही ऐसा कि उसके सदस्य बसपा के राजनतिक उपादान बने बिना नही रह सकते थे। बामसेफ ने बसपा के विकास मे भारी योगदान किया। पार्टी का खच निकालना ओर प्रतिभाशाली कायकत्ता सप्लाई करते रहना कोइ छोटी-मोटी जिम्मेदारी नही थी। काशीराम ने बामसेफ के पीछे अपनी अवधारणा की व्याख्या इन शब्दो मे की

> बामसेफ के पीछे धारणा है—'समाज को वापस देना।' अतएव, यह बसपा के लिए दिमाग, प्रतिभा और कोष जुटाता है। लेकिन 1985 मे मेने इसे छाया सगठन मे बदल दिया। अब इसका सार तत्त्व केवल मेरी निगाह मे है ओर केवल मै ही इसका पदाधिकारी और सदस्य रह गया हूँ। देश के करीब चार सौ सर्वोच्च सिविल सर्वेट बसपा के ब्रेन बेक है। बामसेफ के 26 लाख अनुसूचित जाति-जनजाति के कमचारी कायकत्ता सारे देश मे फैले हुए हे। उनकी शुद्ध आय दस हजार करोड सालाना है। वे बसपा को कोष सप्लाई करते हे। आखिरकार बसपा का मासिक खर्चा एक करोड रुपये है।

काशीराम के इस कथन से दो बातो का अदाजा लगता है—उनके आदोलन मे आरक्षण के जरिए नौकरी पाए कर्मचारियो का महत्त्व कितना ज्यादा हे और उन कर्मचारियो पर काशीराम की व्यक्तिगत पकड कितनी मजबूत है। 1984 मे बसपा के निमाण के बाद काशीराम ने बामसेफ को पूरी तरह पृष्ठभूमि मे धकेल दिया। यह सगठन लगभग ऑखो से ओझल हो गया, लेकिन इसका वजूद नही मिटा।

वाले निष्कर्षो की पुष्टि करने के लिए रतन राम सरीखे काशीराम द्वारा प्रशिक्षित किए गए कार्यकर्त्ताओ के जीवन का राजनीतिक पाठ। काशीराम ओर उनके शिष्य रतन राम के उदाहरण बताते हे कि बसपा आरक्षण के माध्यम से सरकारी नौकरी प्राप्त करने वाले उन सरकारी कर्मचारियो की राजनीतिक परियोजना का परिणाम हे जो सरकारी दफ्तरो मे सामाजिक-प्रशासनिक भेदभाव के शिकार होते रहे हे और जिन्हे सामान्य कमचारी ट्रेड यूनियन राजनीति के माध्यम से उन्हे कभी न्याय नही मिला। इसलिए इन कर्मचारियो को अपना अलग सघ बनाना पडा। चूँकि यह सघ सरकारी कमचारियो का था इसलिए इसकी राजनीति जनादोलनकारी प्रवृत्तियो से कतराने वाली ही होनी थी। काशीराम को उनके निजी तजुवा ने सिखाया था कि कानूनी माध्यमो मे अपनी मॉगे मनवाने लायक गुॅजाइशे हे ओर कानून तोडने की कोई जरूरत नही है। यह अलग कमचारी सघ सीधे किसी राजनीतिक दल से जुडने के लिए तेयार नही था, क्योकि उसका मकसद आगे चलकर स्वय एक राजनीतिक दल को जन्म देना था। सभवत यही कारण था कि बामसेफ को सगठन के रूप मे कही पजीकृत नही कराया गया। उसका ढॉचा भी अनोपचारिक ही रहा।

बेकवड एड माइनारिटी कम्युनिटीज इपलाइज फेडरेशन (बामसेफ)

देश के किसी भी क्षेत्र मे बसपा के उदय की परिघटना का अध्ययन किया जाए तो उसके पीछे बामसेफ की छाया उपस्थिति नजर आती है। सामने आए बिना बामसेफ के सदस्य प्रशासन मे अपनी हैसियत का कुशलतापूर्वक इस्तेमाल करते हुए बसपा के लिए बीज डालने का काम करते है ओर ससाधन जुटाते हे। बामसेफ अपने-आप मे एकदम नए तरह का विचार था। शुरू मे बडे दलित अफसरो ने हमदर्दी होते हुए भी इस सगठन से सुरक्षित दूरी बनाए रखी। सवर्ण अफसरो की जातिवादी ज्यादतियो के खिलाफ सघर्ष चलाते मॅझोले ओर निचले दलित कमचारियो के बीच इसके पैर जम गए, लेकिन इसकी मजिल कर्मचारियो की यूनियन के रूप मे सीमित हो जाना नही था। काशीराम चाहते थे कि यह शिक्षित कर्मचारियो का सगठन तो बने, लेकिन शिक्षित कमचारियो के लिए ही काम न करता रहे। इस सगठन के शिक्षित कर्मचारियो से उम्मीद की जाती थी कि वे उत्पीडित समाज के अन्य सदस्यो की मदद करेगे और इस तरह बहुजन समाज आदोलन के लिए **'ब्रेन बैक', 'टैलेट बैक'** और **'फाइनेंशियल बैक'** बन जाएॅगे। बसपा के समर्थको का दावा है कि स्थापना के थोडे दिन बाद ही बामसेफ से पॉच सौ पीएचडी, तीन हजार एमबीबीएस / एमएस / एमडी, पद्रह हजार वैज्ञानिक और सात हजार अन्य स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री धारी कमचारी जुड गए। अधिकाश सदस्य महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश के थे और अनुसूचित जाति के थे। इस सगठन मे पिछडे वर्ग के कर्मचारियो की सख्या सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश से थी।

कर्मचारियो की अपनी सरकारी श्रेणी (ओहदा) बामसेफ मे आकर खत्म हो

जाती थी। वहाँ सभी सदस्य बराबर होते थे। बामसेफ के सदस्य छह से बारह रुपए तक सदस्यता शुल्क देते थे और समय पडने पर आदोलनो के लिए धन जमा करना उनके कायभारो मे महत्त्वपूण स्थान रखता था। हर सरकारी दफ्तर म बामसेफ का खजाची होता था, जिसके पास धन जमा हाता था। यह स्थायी नही बल्कि बदलता रहता था। जिले या मडल का सयोजक इसकी नियुक्ति करता था। खजाची जमा धन जिले के सयोजक के हवाले कर दता था। सयाजक इसे काशीराम तक पहुँचा देता था। इस सयोजक की नियुक्ति काशीराम के हाथा मे हाती थी। व काय कुशलता और निष्ठा को ध्यान मे रखते हुए उसका चयन करते थे। सयाजक पेसे की व्यवस्था के अलावा नए सदस्य भी बनाता था, काशीराम के निर्देशो का सगठन मे पहुँचाता था और हर महीन के अतिम रविवार को जिले-भर मे बामसफ कायकत्ताओ की बेठक आयोजित करता था।

मडल स्तर ओर प्रात स्तर पर भी काशीराम सयाजक नियुक्त करते थे। मडल सयोजक प्रात ओर जिले के बीच कडी का काम करता था। प्रात सयोजक सभी सयोजको के बीच तालमेल रखता था। काशीराम ने बामसेफ सदस्यो को चुनाव प्रचार मे भाग लेने के लिए कभी उत्साहित नही किया। ओर न ही बामसेफ का सदस्य हाने क लिए बसपा को वोट देना जरूरी माना—लकिन बामसेफ के गठन का अतर्निहित तक था ही ऐसा कि उसके सदस्य बसपा के राजनेतिक उपादान बने बिना नही रह सकते थे। बामसेफ ने बसपा के विकास मे भारी योगदान किया। पार्टी का खच निकालना ओर प्रतिभाशाली कायकर्त्ता सप्लाई करते रहना कोइ छोटी-मोटी जिम्मेदारी नही थी। काशीराम ने बामसेफ के पीछे अपनी अवधारणा की व्याख्या इन शब्दो मे की

> बामसेफ के पीछे धारणा है—'समाज को वापस देना।' अतएव, यह बसपा के लिए दिमाग, प्रतिभा और कोष जुटाता है। लेकिन 1985 मे मेने इसे छाया सगठन मे बदल दिया। अब इसका सार तत्त्व केवल मेरी निगाह मे है ओर केवल मे ही इसका पदाधिकारी और सदस्य रह गया हूँ। देश के करीब चार सौ सर्वोच्च सिविल सर्वेट बसपा के ब्रेन बैक है। बामसेफ के 26 लाख अनुसूचित जाति-जनजाति के कमचारी कायकर्त्ता सारे देश मे फेले हुए है। उनकी शुद्ध आय दस हजार करोड सालाना है। वे बसपा को कोष सप्लाई करते हे। आखिरकार बसपा का मासिक खर्चा एक करोड रुपये है।

काशीराम के इस कथन से दो बातो का अदाजा लगता है—उनके आदोलन मे आरक्षण के जरिए नौकरी पाए कमचारियो का महत्त्व कितना ज्यादा है ओर उन कर्मचारियो पर काशीराम की व्यक्तिगत पकड कितनी मजबूत हे। 1984 मे बसपा के निमाण के बाद काशीराम ने बामसेफ को पूरी तरह पृष्ठभूमि मे धकेल दिया। यह सगठन लगभग ऑखो से ओझल हो गया, लेकिन इसका वजूद नही मिटा।

घुमा-फिरा कर बामसेफ के लोग बसपा से जुड गए। मायावती और राज बहादुर जैसे नेतृत्वकारी कार्यकर्ता बामसेफ से ही निकले। बसपा के चुनाव दफ्तरो का सचालन हो या चुनाव मे खर्च होने वाले पैसे का लेखा-जोखा हो, बामसेफ के लोग ही इन चीजा पर नियत्रण करने लगे। स्थानीय परिस्थितियो के अनुसार चुनावी व्यूह रचना करने का काम भी बामसेफ के अदृश्य हाथ मे चला गया।

लखनऊ म बामसफ के राष्ट्रीय अधिवेशन के सबध म बसपा के प्रदेश अध्यक्ष जग बहादुर पटल न कहा, **''बामसेफ गुजरे हुए जमाने की चीज है। हम लोग काशीराम के साथ आगे बढते जा रहे हे। जो लोग पीछे रह गए है, वे ही निष्क्रिय पडी बामसेफ के बारे में गला फाड रहे हे।''** इस अधिवेशन मे बसपा के किसी नेता या मत्री ने हिस्सा नही लिया था। वेसे उनमे से किसी को बुलाया भी नही गया था।

पटेल ने आगे कहा, ''बामसेफ बनाने का मकसद पूरा हो गया है। बसपा अब बामसफ के टूटे हुए हिस्सो को खुद मे मिलाने मे दिलचस्पी नही रखती।'' पटेल ने बामसेफ की उपेक्षा को अम्बेडकर के प्रसिद्ध कथन का हवाला देकर उचित ठहराया कि ''शिक्षित आर आदालित करने के चरण बामसेफ ओर डी एस फोर बनाकर पूरे हो चुके हे। अब हम समाज के सगठन मे सपा के साथ भागीदारी करते हुए जुटे हुए है।''

बसपा के गठन के समय काशीराम को बामसेफ मे असतोष की कुछ सुगबुगाहट सुनाइ भी दी। इसकी बुनियाद मे बामसेफ के उद्देश्यो की समझ को लेकर कुछ नेताओ के काशीराम के साथ मतभेद थे। बामसेफ के कई सस्थापक सदस्य बसपा के जरिए अपनी बढती हुइ राजनीतिक भूमिका से रोमाचित तो हुए, लेकिन कुछ के मन मे शकाएँ भी पनपी। दूसरी ओर सीधे-सीधे बसपा मे आए पूणत राजनीतिकृत नेताओ ओर कायकत्ताओ ने इस अपजीकृत छाया सगठन की पार्टी पर चौधराहट को नाराजगी से देखा। इस तरह बामसेफ वालो और बसपा के बीच एक तरफ तो गर्भनाल का सबध रहा और दूसरी तरफ अतर्विरोध की बुनियाद भी पडी। शुरू मे ये अतर्विरोध मित्रतापूण रहे, लेकिन बाद मे उन्होने नुकसानदेह स्वरूप भी अख्तियार करना शुरू कर दिया। बसपा वालो का आरोप था कि बामसेफ वालो को फील्ड का अनुभव नही होता ओर जब उन्हे इस बारे मे जानकारी दी जाती है तो भी वे इस पर ध्यान नही देते। बसपा वालो ने कई बार काशीराम द्वारा बामसेफ के सलाह-मशविरे पर ज्यादा ध्यान देने की शिकायत की। बसपा का और ज्यादा विकास होने पर नब्बे का दशक आते-आते बामसेफ की भूमिका उत्तरोत्तर अदृश्य-सी होती चली गई। इस परिस्थिति ने बामसेफ के अदर उसकी अपनी भूमिका पर भी बहस पैदा कर दी। इसके कुछ सस्थापक सदस्यो की राय थी कि उत्पीडित वर्ग को ऐसे बोद्धिको की जरूरत है जो उन्हे सामाजिक-आथिक न्याय दिला सके। इस लक्ष्य की पूर्ति बामसेफ से जुडे अधिकारी वर्ग द्वारा ही सभव है। जबकि काशीराम यह जिम्मेदारी बसपा की ओर स्थानातरित कर देना चाहते थे।

दलित शोषित समाज सघर्ष समिति (डी एस फोर)

जाहिर है कि बामसेफ को एक छाया-सगठन या अर्धभूमिगत सगठन की तरह ही कल्पित किया गया था। इसका नाम स्वय मे एक आवरण था जिसमे बेकवड ओर माइनारिटी शब्द तो मोजूद थे, लकिन दलित या अनुसूचित जाति जेसे शब्द नही थे, जबकि व्यवहार मे इसका सचालन दलित कर्मचारियो के हाथ म ही था। बामसेफ की गतिविधियॉ जेसे-जस सुदृढ होती गइ वसे-वेसे यह राजनीतिक परियाजना अगल चरण की ओर बढी। बामसेफ वाले सरकारी नोकरी मे होने के कारण आदालना मे या राजनीतिक प्रचार मे भागीदारी नही कर सकते थे। इसलिए काशीराम ने 6 दिसबर, 1981 को डी एस फोर नामक सगठन बनाया। इसके नाम मे एक 'डी' ओग चार 'एस' थे—**दलित शोषित समाज सघष समिति**। यह भी बाकायदा राजनीतिक दल नही था, लेकिन इसकी गतिविधियॉ काफी कुछ वेसी ही थी। डी एस फार ने उत्तर प्रदेश, बिहार ओर हरियाणा के किसान नेताओ का ध्यान भी अपनी आर आकपित किया। चरण सिह, देवीलाल ओर कर्पूरी ठाकुरी को इस सगठन मे सभावनाएँ लगी। इस गेर राजनेतिक सगठन ने तीन वर्षो मे ही काशीराम को इतना मजबूत राजनेतिक आधार मिला कि उन्होने सघष ओर जनप्रेरक कार्यक्रमो के लिए राजनेतिक बल के रूप मे डी एस फोर का गठन कर सामाजिक जागृति के कायक्रमो के द्वारा पूरे भारत के राजनेतिक दलो की नीद उडा दी। येवगेनिया युरलोवा ने दावा किया हे कि डी एस फोर को शुरू मे चरण सिह ने राजनीति मे पेर जमाने मे मदद की। युरलोवा का यह कथन ज्यादा सही नही लगता, क्योकि डी एस फोर जिन ताकतो का प्रतिनिधित्व कर रही थी, उनका चरण सिह के अनुयायिया से सामाजिक स्तर पर टकराव था।

डी एस फोर बडे फुटकर ढग से चुनाव लडती थी, इसलिए सामाजिक टकराव होते हुए भी राजनीतिक तालमेल होना मुमकिन नही था। चरणसिह राजनीति मे उभरते हुए उस मजबूत किसान वर्ग की नुमाइदगी करते थे जो सवर्णो की तरह व्यवहार करता था। वह रग-रुतबे के मामले मे सवर्णो से होड कर रहा था और दलितो को कुचलने मे वह कई-कई जगह तो सवर्णो से भी आगे था।

बकौल कवल भारती काशीराम ने 1982 मे अपने राजनीतिक आधार की परीक्षा के तोर पर ही डी एस फोर को पहली बार हरियाणा के विधानसभा चुनावो मे उतारा, जिसे उन्होने एक सीमित राजनीतिक कार्यवाही कहा। 1982 मे ही दिल्ली कोसिल के चुनाव मे डी एस फोर के माध्यम से काशीराम ने चुनावी परीक्षण किया।

जनवरी, 1983 मे दिल्ली मे चुनाव लडा गया। जून, 83 मे जम्मू मे। वहॉ उसने ताकत दिखाई और नवबर, 1983 मे माधवगढ उपचुनाव (उत्तर प्रदेश) मे वह तीसरे नबर पर पहुॅच गई।

इन चुनावो मे डी एस फोर को 57588 वोट प्राप्त हुए थे, जो कुल वोटो का 1 19 प्रतिशत था। यह स्थिति तीन अन्य राजनेतिक दलो सी पी आई (36 639-0 75

प्रतिशत), सी पी आई एम (18,616-0 38 प्रतिशत) और कॉग्रेस (एस) (458-0 01 प्रतिशत) के मुकाबले काफी अच्छी थी। यह चुनाव हरियाणा मे अम्बेडकरवाद की स्थिति को मापने के लिए प्रयोग था। चुनाव जीतना मुख्य लक्ष्य नही था। वरन् काशीराम के सामन मुख्य मुद्दा यह था कि समाज अपने अधिकारो के प्रति कितना सजग ह। वे उस सजगता को महसूस करना चाहते थे।

मानसिह जी एक मुलाकात मे बतलाते है कि काशीराम जी न सोये हुए दलित समाज का जगान ओर उन्हे सजग बनाने म तो सफलता पाई लेकिन सत्ता की राजनीति म सत्ता तक पहुचते-पहुचते व मात खा गये।

सदभ एव टिप्पणी

- आज क नता आलाचनात्मक अध्ययन माला पृ 53
- *इडियन एक्सप्रस* 16 माच 1991
- राष्ट्राय मतदान म बसपा की यह भागादारा आशुतोष वार्ष्णेय के लेख इज इडिया बिकमिग मार डमाक्रटिक? *दि जरनल ऑव एशियन स्टडीज 59* अक 1 फरवरी 2000 पृष्ठ 8 9 स।
- दख गल ऑम्वट दि बहुजन समाज पार्टी *फ्रटियर* अक 44 खड 25 12 जून 1993 पृष्ठ 3 9 आर क्रिस्टाफ जफरलाट दि बहुजन समाज पार्टी इन नॉर्थ इडिया ना लोगर जस्ट ए दलित पार्टी? *कम्परटिव स्टडीज आन साउथ एशिया अफ्रीका एड दि मिडिल इस्ट* 18(1) 1998
- *दनिक भास्कर* 8 जनवरी 1990
- लखनऊ क इन्दिरापुरम निवास पर 7 अगस्त 1987 को अल्पसख्यक आयोग के पूव सदस्य तथा एडवाकट छेदीलाल साथी स बातचीत के आधार पर
- पूना म नाकरा करत समय काशीराम ने **दीना भान** नामक दलित कमचारी के उत्पीडन क खिलाफ सघप किया था। बुद्ध जयती और अम्बेडकर जयती की रद्द छुट्टियॉ बहाल कराने के सवाल पर कानूनी रास्ते स जीत हासिल करने क उनके इस निजी अनुभव ने आगे चलकर बसपा की रणनीति आर कायनाति बनान मे निणायक योगदान किया। इस दिलचस्प ब्यारे के लिए दखे अभय कुमार दुब *काशीराम एक आलोचनात्मक अध्ययन* राजकमल दिल्ली 1997 पृष्ठ 32 33 आबथ राजन *माइ बहुजन समाज पार्टी* एबीसीडीइ प्रकाशन दिल्ली 1996 पृष्ठ 2 3 ओर अभय कुमार दुबे एनाटॉमी ऑव ए दलित पॉवर प्लयर घनश्याम शाह के सपादन मे दलित राजनीति पर सेज दिल्ली द्वारा सद्य प्रकाशित सकलन।
- आम्बेथ राजन उपराक्त पृष्ठ 7
- *सडे आब्जवर* 12 अगस्त 1990
- यवगेनिया युरलावा पॉलिटिकल इमर्जेस ऑव शेड्यूल्डकास्ट इथनो कम्युनिटी *मेनस्ट्रीम* 12 अक्टूबर 1991
- कवल भारती काशीराम क दो चेहरे पृष्ठ 13
- आमप्रकाश अबेडकर शती वर्ष मे बसपा का बिखराव जनसत्ता नइ दिल्ली 22 माच 95
- काशीराम के दा चेहरे पृष्ठ 13
- आगरा क चक्की पाट बुद्ध विहार मे 22 अक्तूबर 2001 का पूव विधायक तथा आर पी आइ नेता मानसिह से बातचीत के आधार पर

बसपा की राजनैतिक यात्रा

दलित समाज के अधिकाश लोगो का मानना रहा हे कि भाजपा आरभ स ही दलित-पिछडे वर्गो को विकास के समान अवसरा से वचित रखने की पक्षधर रही हे। जब-जब भारत मे कोइ आदोलन दलित पिछडे वर्गो की भागीदारी क लिए चला, तब-तब भारतीय जनता पार्टी ने कोई-न-कोइ धामिक आदोलन खडा करक उस दबाने का प्रयास किया। मदिर मुद्दे पर उसकी हिदू राजनीति भी मुख्यत मडल विरोधी रही। बकोल भगवान दास भाजपा दलित-पिछडे वर्गो क भविष्य क लिए नितनी घातक है, उतनी मुसलमानो के लिए नही हे। अल्पसख्यको को सगठन के प्रतिनिधित्व देने क सवाल पर पार्टी मे जो रोष पेदा हुआ था, जिसके कारण वह प्रस्ताव भी निरस्त हो गया, उससे यह आसानी से समझा जा सकता हे कि भाजपा दलित-पिछड वर्गो को समान भागीदारी देने के प्रश्न पर किस कदर विभाजित हो सकती हे? आज यदि वह अविभाजित हे तो इसका अथ अनुशासन नही, बल्कि सवण हितो के प्रश्न पर उसका ध्रुवीकरण है।

यहाँ तक वामपथी दलो का सवाल हे, उनका नेतृत्व भी आरभ से ही सवर्णो के हाथो मे रहा है। इस नेतृत्व ने गरीबी ओर श्रमिको के उत्पीडन के खिलाफ जरूर आवाज उठाइ, परतु जिस ब्राह्मणवादी व्यवस्था से ये दानो चीज उपजी हे, उसे उखाड फेकने की दिशा मे कोइ आदोलन नही चलाया। यही कारण हे कि पश्चिम बगाल मे जहाँ लबे समय से वामपथियो की सरकार बनती आइ है, पूँजीवाद ओर ब्राह्मणवाद दोनो मिलकर दलित-पिछडे वर्गो और आदिवासियो का भरपूर शोषण करते रहे है तथा आज भी उनके लिए स्वतत्रता एक बेमानी शब्द बना हुआ है।

जहाँ तक विश्वनाथ प्रताप सिह के द्वारा मडल आयोग की रिपोर्ट लागू करने की बात हे, उसे कोई सार्थक प्रयास नही कहा जा सकता। वह रिपोर्ट और रिपोट लागू करने वाली नीति अपने-आपमे विरोधाभास का शिकार रही। दलित और पिछडे वग को उससे कुछ विशेष लाभ नही हो सके।

बकौल कवल भारती डॉ अम्बेडकर जब तक रहे, वे कॉग्रेस ओर ब्राह्मणवाद के मिले-जुले षड्यत्र के खिलाफ आवाज उठाते रहे। दुभाग्य से 1956 मे उनका

परिनिर्वाण हो गया। उनके बाद भारतीय राजनीति मे कोइ दूसरा दलित नेता उनका स्थान नही ले सका। रिपब्लिकन पार्टी के नेता भी कॉग्रेस के समथक हो गए। कॉग्रेस दलितो को लुभाती रही और दलित समाज के लोग उस पर विश्वास करते रहे। किंतु लबे समय के पश्चात् 70 के दशक मे जब भारतीय सामाजिक आदोलन के इतिहास मे काशीराम का उदय हुआ और 1982 मे उन्होने डी एस फोर बनाकर पूरे देश मे पूना पेक्ट की स्वण जयती को **धिक्कार दिवस** के रूप म मनाया ता परपरागत राजनीति मे भूचाल आ गया।

कवल भारती न बसपा के अस्तित्त्व मे आने तथा राजनेतिक सघप की शुरुआत का दूसरी आजादी की लडाइ बतलाया हे।

काशीराम ने अपनी बहुजन थीसिस फुले ओर अम्बेडकर के विचारो से निकाली ह। बावजूद इसके उनके राजनीतिक प्रयासो मे कई बार अम्बेडकर से अलग हटकर बनाइ गइ कायनीतियॉ झलकती है। दलित आदोलन के अध्येता डॉ गोपाल गुरु ने काशीराम पर आरोप लगाया है कि उन्होने एक सामाजिक आदालन को पूरी तरह राजमरा के राजनीतिक जोड-तोड मे सीमित कर दिया हे। लेकिन काशीराम की इसी कमी को ब्रिटिश अध्यता एड्रू वेट उनकी खूबी मानते हे—

बसपा पर हमे ध्यान इसलिए देना चाहिए, क्योकि वह दलितो की राजनीतिक मुक्ति के लिए जरूरी हे। बसपा भारतीय राजनीति की मोजूदा हालत को देखने के लिए एक उपयोगी माध्यम भी हे। बसपा के उभार को कई तरीके से व्याख्यायित किया जा सकता हे। इस भारत मे बहुलवादी राजनीति के अच्छे स्वास्थ्य के प्रमाण के रूप मे भी देखा जा सकता हे।

यागेद्र यादव भारतीय राजनीति के नये चेहरे मे बसपा जेसी पार्टियो का स्थान इस तरह रेखाकित करते हे—

एक वर्चस्व वाली मध्यमार्गी सबको साथ लेकर चलने वाली एव विभिन्न तबको को गोलबद कर अपनी प्रमुखता बरकरार रखने वाली पार्टी के पतन के परिणामस्वरूप 'अपने-अपने' तबको के राजनीतिक एजेडो वाली एव दूसरे तबको को बहिष्कृत कर चलने वाली पार्टियो का उदय होना लगा। दलीय प्रणाली के हाशिए पर स्थित बहुजन समाज पार्टी जैसी पार्टियॉ समाज के सारे तबको को प्रभावित करने की कॉग्रेस की घटती क्षमता की उपज हे। इनमे कुछ पार्टियॉ केवल तात्कालिक साबित हो रही है और जितनी जल्दी पैदा हुई है उतनी जल्दी खत्म भी हो सकती है। पर इनमे से कुछ टिकाऊ भी होगी। यह विडबना ही है कि ये अधिकतर राजनीतिक सगठन, जो अब तक लोकतत्र के ओजार के रूप मे काम करते है, स्वय अपने सागठनिक ढॉचे एव कार्य-शैली मे पूरी तरह अलोकतात्रिक है।

बसपा के गठन होते ही 1984 का ससदीय निर्वाचन लडा गया ओर सारे देश मे पार्टी ने 10 05 लाख वोट हासिल किए। पजाब के विधानसभा चुनाव मे उसने

खास करामात दिखाई और कॉग्रेस की झोली से 22 फीसदी वोट निकाल लिए। ये वे दलित वोट थे जिनके मिलने से कॉग्रेस अकालियो को हरा सकती थीं। दिसबर, 1985 मे हुए बिजनौर उपचुनाव मे बसपा ने मायावती को चुनाव मे उतारा। मायावती के सामने बाबू जगजीवन राम की पुत्री कॉग्रेस की मीरा कुमार थी जो भारतीय विदेश सेवा छोडकर राजनीति मे आइ थी। बिजनोर के इस चुनाव से बहुत कुछ तय हाना था। बाबूजी को राजनीति मे किसी दलित द्वारा प्राप्त सफलता का अनिम पयाय माना जाता था। आखिरकार उस समय तक बाबूजी ही एकमात्र दलित थे जिनका नाम प्रधानमत्री पद के लिए चला था। मायावती के जरिए बसपा ने विजनोर की लडाइ मे साबित किया कि कॉग्रेसी दलित नेताआ का जमाना लद चुका ह। अब उत्पीडित वर्ग उनके साथ नही हे। मायावती चुनाव जरूर हार गइ पर परिणाम चोका देने वाले निकले। मायावती ने 61,000 वोट हासिल किए और मीरा कुमार की जीत का अतर पीछे घसीटकर केवल पॉच हजार कर दिया। कॉग्रस उम्मीदवार साल भर पहले ही इस क्षेत्र से 95,000 वोटो से जीता था।

बसपा ने चुनाव के मेदान मे तीसरा प्रयोग हरिद्वार मे किया। 1987 मे मायावती ही यहॉ से लडी। इस बार उनके मुकाबले जनता दल के दलित नेता रामविलास पासवान थे। पासवान बिहार से चुनाव जीतने का विश्व रिकार्ड बना चुके थे ओर उन्हे जगजीवन राम द्वारा छोडे गए शून्य को भरने लायक नेता माना जा रहा था। हरिद्वार मे मायावती ने पासवान को ध्वस्त कर दिया। बसपा को 1 35,225 वोट नसीब हुए। जीत कॉग्रेस उम्मीदवार की हुई, लेकिन केवल 14-15 हजार वोटो से। कॉग्रेस को 1,49,000 वोट मिले। लोकदल और भाजपा के उम्मीदवारो का तो पता ही नही चला। भाजपा को उस समय केवल 4400, कम्युनिस्ट पार्टी को 5000 ओर रामविलास पासवान को 32,000 वोट मिले। चुनाव विश्लेषको के अनुसार अगर पासवान 70,000 वोट पा लेते और भाजपा को कुछ और वोट मिल जाते तो जीत बसपा की होती।

दूसरा उदाहरण देखे, विश्वनाथ प्रताप सिह इलाहाबाद उपचुनाव मे कॉग्रेस के अनिल शास्त्री के मुकाबले उतरे। यह चुनाव राष्ट्रीय राजनीति मे एक महत्त्वपूर्ण मोड था। यह कॉग्रेस की सरकारी ताकत और सयुक्त विपक्ष (23 पार्टियॉ) की एक जुट ताकत का टकराव था। इसके परिणामो का 1989 मे होने वाले आम चुनाव की राजनीति पर असर पडने वाला था। बसपा ने कॉग्रेस ओर सयुक्त विपक्ष के इस सघर्ष मे दलितो की ओर से स्वतत्र दावा किया, ताकि वे स्वय को तीसरी धारा के रूप मे शिनाख्त करा सके। यह आसान काम नही था। बसपा उम्मीदवार को सम्मानजनक वोट मिलने ही चाहिए थे। तभी दलित खुद को समान स्तर की राजनीतिक ताकत सिद्ध कर सकते थे। काफी कुछ दॉव पर था। इसलिए बसपा प्रमुख काशीराम ने किसी और को न लडाकर स्वय को उम्मीदवार के रूप मे पेश किया। इस चुनाव

की पूर्वपीठिका के रूप मे बहुजन समाज पार्टी साल-भर से अपना **सोशल एक्शन कार्यक्रम** चला रही थी। 15 अगस्त, 1987 से प्रदेश-भर मे छुआछूत, अमानवीयता, अन्याय, असुरक्षा ओर असमानता के खिलाफ बसपा के धरने और साइकिल यात्राएँ जारी थी।

खुला पत्र

बसपा ने इस इलाहाबाद चुनाव को अपने प्रचार के स्वण अवसर के रूप मे देखा। काशीराम ने एक खुला पत्र तेयार किया। पहली बार लोगो के सामने बसपा का उद्‌दश्य कमाबेश एक अधिकारिक दस्तावेज के रूप मे आया।

काशीराम क कथन मे मान्यता झलक रही थी कि जाति चेतना का राजनीतिकरण किए बिना न ता जाति के परपरागत रूप टूट सकते है और न ही जाति की बीमारी का इलाज हो सकता हे। यद्यपि उनके बहुजन समाज मे दलित, आदिवासी, पिछडे आर धामिक अल्पसख्यक शामिल थे, लेकिन प्राथमिकता के लिहाज से उनका पहला जोर दलिता पर, दूसरा पिछडो पर ओर तीसरा धर्म परिवर्तन किए हुए अल्पसख्यको पर दिखाइ देता था। अम्बेडकर ने भी अपनी जनवादी क्राति की प्राथमिकताएँ इसी प्रकार निधारित की थी। इस पर्चे से लगता था कि राजनीति मे बसपा के प्रवेश के समय उन्हाने इसके लिए तीन प्रमुख कार्यभार निधारित किए गए थे—दलितो आर पिछडा क लिए सविधान मे अम्बेडकर द्वारा प्रदत्त विशेष सुविधाओ को वास्तव मे लागू करने के लिए सघष, चुनाव सुधारो के लिए दबाव बनाना, ताकि कमजोर वर्ग के लिए मतदान करने लायक माहोल की गारटी हो सके   नमूने के तोर पर कम कीमत मे चुनाव लडने की जनाधारित शैली विकसित करना, ओर मोजूदा शासक वर्ग की राष्ट्रभक्ति पर प्रश्नचिह्न लगाना और बसपा को ज्यादा राष्ट्रभक्त दिखाना।

इलाहाबाद के उप चुनाव मे यह बात एकदम साफ तोर पर उभरकर आई कि विश्व हिदू परिषद्, आर एस एस , बजरग दल, भाजपा और रामजन्मभूमि मुक्ति समिति यानी कट्टरवादी हिदू तथा मुस्लिम लीग, मुस्लिम मजलिस, जमाते इस्लामी, मौलाना बुखारी ओर सैयद शहाबुद्दीन की बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी भी वी पी सिह को जिताने और काशीराम को हराने के लिए कधे से कधा मिलाकर चल रहे थे। वाजपेयी और आडवाणी वहॉ 21 दिन जमे रहे। बनारस के पडो ने वी पी सिह का राजऋषि का खिताब दिया था और तलवार भेट की थी कि यह ब्राह्मणवाद की रक्षा करने वाला सबसे अच्छा इसान है। यहॉ दोनो धर्मो, पक्षो का हित एक ही था। काशीराम के जीतने से सवर्ण हिदू और मुसलमान दोनो को अपनी कुर्सी पर हमला होने की आशका थी। इस चुनाव के बाद जैसा कि काशीराम कहते है कि उन्होने फेसला किया कि मुसलमानो मे हिदुओ की अनुसूचित जातियो से गए लोगो को ही तेयार किया जाए। जो कुल मुसलमानो का 90 प्रतिशत है।

बाद के दोर मे इस बारे मे बहुजन समाज पार्टी म जोर-शोर स काय शुरू हुआ।

जून, 88 को इलाहाबाद ससदीय उपचुनाव हुआ। इस लोकसभाइ क्षत्र की पॉच मे से तीन विधानसभाइ सीटे—बारा, मेजा ओर करछना जमुनापार देहाती इलाके की है। मेजा क्षत्र मे ही वी पी सिह का पुश्तेनी घर माडा नामक गॉव भी रहा हे। यहॉ कोल आदिवासिया की अच्छी तादाद ह जिनम माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी का खासा असर था। इस बार माकपा ने वी पी सिह को अपना समथन दिया था। भग्तगज नाम के कस्बे मे पॉच-छह हजार की आबादी थी। यहॉ कॉग्रस आर बसपा का समथन था। करछना विधानसभाइ क्षेत्र ब्राह्मण बनाम भूमिहार की राजनीति पर टिका था। हवा पूरी तरह वीपी सिह के पक्ष म थी उनक साथ करल, कनाटक, आन्ध्र प्रदेश पश्चिम बगाल ओर हरियाणा के मुख्यमत्री थे। ससाधना क ढेर लगे हुए थ। जबकि काशीराम ने साइकिल ओर उस पर लगे माइक के दम पर चुनाव लडा था। साइकिल पर लगा हुआ हाथी के निशान वाला बसपा का नीला झडा उनक आदालन का प्रतीक बन गया था।

इका के प्रत्याशी सुनील शास्त्री को जितान के लिए कॉग्रस का पूरा अमला यहॉ मोजूद था। जिनमे प्रदेश के मुख्यमत्री वीर बहादुर सिह, गुलाम नबी आजाद, गोपीनाथ दीक्षित, राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी आदि-आदि थे। वी पी सिह को जिताने के लिए भी पूरी-पूरी तैयारी थी। काशीराम के साथ कोइ बडा नेता न था, कवल उनके सहयोगी ओर कायकता ही थे जो उनके चुनाव प्रचार म लगे थ। उनक साथ लोगो का विश्वास था।

काशीराम के अनुसार इलाहाबाद ससदीय क्षेत्र क मतदाताआ की सख्या इस प्रकार थी—कुल मतदाता, आठ लाख, अनुसूचित जाति के करीब ढाइ लाख वोट, कुर्मियो के एक लाख, यादव 50 हजार, ब्राह्मण 60 हजार, केवट आर मल्लाह 50 हजार, ठाकुर 50 हजार, कायस्थ 50 हजार, मुसलमान 60 हजार शष मे अन्य।

इस उपचुनाव मे वी पी सिह जीते। वैसे उनका जीतना पहले से ही तय था। कॉग्रेस को मालूम था कि सुनील शास्त्री नही जीतेगे। महज पचास फीसदी के आसपास वाले मतदान मे करीब आधे वोट विश्वनाथ प्रताप सिह खीच ले गए। सुनील शास्त्री के 92 हजार 221, काशीराम के 68 हजार 836 ओर वी पी सिह के 2 लाख 3 हजार 167 मत थे।

इलाहाबाद से बहुजन समाज पार्टी के उम्मीदवार काशीराम के नामाकन के समय उनकी राजनीतिक उपस्थिति को गभीरता से नही लिया गया था, पर चुनाव के बाद जब परिणाम आना आरभ हुआ तो केवल कॉग्रेस के खेमे मे हलचल नही मची बल्कि एक बार को तो विपक्ष के सयुक्त उम्मीदवार विश्वनाथ प्रताप सिह को भी सोचने पर मजबूर होना पडा था। बारा ओर करछना विधानसभाइ अचलो मे

काशीराम हालाँकि विश्वनाथ प्रताप सिह से पीछे थे, लेकिन सुनील शास्त्री से वे आगे रहे। करछना म काशीराम ने 18117 वोट लिए, जबकि सुनील शास्त्री को 15,396 वोट मिले। बारा मे बारहवी गिनती के अत मे बसपा को 21,600 वोट मिले थे, जबकि इका उम्मीदवार कवल 21,093 वोट ही ले पाया। कोराँव ब्लाक मे कुछ जगहो पर काशीराम, विश्वनाथ प्रताप सिह ओर सुनील शास्त्री दोनो से आगे थे। चुनाव के अतिम नतीजे मे बसपा के उम्मीदवार काशीराम ने 69,000 वोट लेकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। वेसे काशीराम थोडा ओर प्रयास करते तो उनका दूसरा नबर भी हा सकता था।

मिजापुर मध्य प्रदेश और बादा से सटा हुआ पूरा क्षेत्र जिसमे कोराँव ओर बारा पडता ह, काल बहुल क्षेत्र है, जो हालाँकि जनजाति मूल के लोग हे, फिर भी अनुसूचित जातियो मे शरीक किए गए है। बसपा को यहाँ प्रबल समथन मिला। काशीराम क हक मे बडी सख्या मे इन मतदाताओ ने मतदान किया।

हालाकि बहुजन समाज पार्टी के अध्यक्ष काशीराम का राजनीतिक कद हरियाणा म थाडा छाटा हुआ था। इसके बाद के इलाहाबाद उपससदीय चुनाव मे ऊपर उठा। हरियाणा मे उनकी पार्टी को मिले वोटो का प्रतिशत 2 81 था। फिर वही प्रतिशत अचानक 18 तक पहुँच गया। काशीराम ने कॉग्रेस के परपरागत दलित वोटो मे सेध लागाइ, जिससे पार्टी हाइकमान को एकबारगी काशीराम की मोजूदगी पर सोचने के लिए विवश होना पडा।

बहुजन समाज पार्टी के नेता काशीराम का बहु प्रचारित नारा—"ठाकुर, ब्राह्मण, बनिया छोड बाकी सब डी एस फोर था," जिसके कारण राजनेतिक गलियारो मे बहुजन समाज पार्टी की चचा जोर-शोर से हो रही थी। केद्रीय स्तर के कुछ नेता काशीराम ओर मायावती दोनो का केवल मजाक उडाते थे। उन्हे तरह-तरह की उपमाओ से अलकृत करते थे। उनमे सवर्ण और दलित दोनो तरह के नेता शामिल थे। इनमे अधिकाश नेता ऐस थे जो तत्कालीन वस्तुस्थिति से अपरिचित थे या दलितो के बदलते मिजाज से परिचित होना भी नही चाहते थे। लेकिन कुछ राजनीतिज्ञो को दलित मतदाताओ के बदलते हुए रुख का अहसास अवश्य ही होने लगा था। वे नये जुझारु दर्शन की राजनीति से प्रभावित होने वाले दलित, पिछडे और अल्पसख्यक मतदाताओ की भाषा का गभीरतापूर्वक अध्ययन कर रहे थे।

स्वय भारतीय जनता पार्टी के खेमे मे फोर्थ इस्टेट के सवाल पर बहस होती थी। भाजपा के अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी के अपने राजनैतिक फ्रेड्स सरकल मे इसी तरह के सवाल उभरते थे। सवाल पूछने वाले अधिक हुआ करते थे ओर उत्तर देने वाले बहुत ही कम। अरुण सिह ने बबई के सत्र मे एक बार कहा था कि राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो उनका उभरना डिस्टब करने वाला हे। लोकदल के उपाध्यक्ष एच एन बहुगुणा का कहना था कि आप अब उन्हे नजरअदाज नही

कर सकते। उत्तर प्रदेश के एक कॉग्रेसी, जिन्होन बिजनोर के उपचुनाव म स्वय जाकर मायावती की गजना देखी ओर सुनी थी, उन्होने कहा था कि उन्होन ता हमारे मुख्यमत्री वीर बहादुर सिह की छवि का ही कम नही किया, बल्कि उसे धक्का भी पहुँचाया।

राजनीतिज्ञो क बीच इस पर भी चचा हाती कि व कोन ह। कुछ क लिए जवाब आसान था तो कुछ के लिए कटिन ओर गभीर भी। अटल बिहारी वाजपयी और वी पी सिह उन्ह अभी भी पुरान नाम स पुकारत थ। व उन्ह डी एस फार (दलित शोपित समाज सघप समिति), के नाम से बतलात। दलिता क सघप का जा अगला (बामसेफ के बाद) पडाव था। हालॉकि अप्रेल 1984 म बहुजन समाज पार्टी का नियमत गठन हा गया था। लेकिन बहुजना की इस बहुजन समाज पार्टी का स्वीकार करने के हक मे सवर्णो के खेमे मे से अभी कम नेता थ।

आशुतोप मिश्र लिखते हे कि खुद काशीगम "एक ऑख क बदल दा ऑख निकालने ओर 'हिजडा सरकार' से निपट लने की घोपणाएँ अक्सर करते रहते ह। उनके अखबार मे फूलन देवी को प्रतिशोध की देवी के तोर पर पेश किया जाता हे। जिनके काम को हर जगह दुहराया जाना चाहिए।" माच, 1987 के उपचुनावा मे बसपा न इतनी तेजी ओर ताक्त से जातिवादी जहर फेलाया कि रातोरात धुर्वीकरण हो गया। उस दोर मे ही **'ब्राह्मण की बोली, ठाकुर की गोली** ओर **बनिये की झोली'** छीनने का इरादा जाहिर हुआ ओर **'बामन-बनिया-ठाकुर चोर, बाकी सब हे डी एस फोर'** की घोपणा हुइ।

सडे के विशेप अक मे छपी कवर स्टारी के अनुसार काशीराम की तथा विशष तोर पर मायावती की तो सभी राजनेतिक सभाओ मे यह कहा जाता था कि उनकी सभा मे अगर कोइ सवर्ण जाति का व्यक्ति हो तो वह अपने-आप उठकर सभा से बाहर चला जाए। अन्यथा उसे लाठियो और पत्थरो से पीट-पीटकर बाहर कर दिया जाएगा।

इसी पृष्ठ के अगल अध्याय मे नारो के बारे मे लिखा होता हे कि—**तिलक, तराजू ओर तलवार, इन पर मारो जूते चार,** दूसरा नारा देखे, **"राम को फेको नदिया में, भीम को लो कधिया में, वोट हमारा, राज तुम्हारा, नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।"**

अजय भारती जब एक साक्षात्कार मे काशीराम से यह पूछते है कि आपकी बातो से तो ऐसा लगता हे कि आप देश मे वग-सघर्ष छिडवाकर मानेगे, क्या यह एक खतरनाक लक्षण नही है? उत्तर मे काशीराम बतलाते है कि जब दलित मारे जाते है तो लोग मान लेते है कि कुछ कीडे-मकोडे मर गए है। मे सोचता हूँ कि लोकतत्र मे इस डर से चुप नही बैठना चाहिए कि वर्ग-सघर्ष छिड जाएगा। वग-सघर्ष की चिता उनको करनी चाहिए, जिनका वश नाश हो जाएगा। उन लोगो को यह भी सोचना चाहिए कि यदि कुल जनसख्या के 85 प्रतिशत हमारे लोगा मे से 15 प्रतिशत मर भी गए, तो भी 70 फीसदी बच जाएँगे, किंतु यदि वर्ग-सघष मे 15

प्रतिशत सवर्ण मारे गए तो उनका समूल नाश हो जाएगा।

काशीराम इस बात को स्पष्ट करते हुए यह भी कहते हे कि सवर्णो ने क्या कभी यह साचा हे कि जिनका वह अपनी रक्षा के लिए इस्तेमाल करते है वे किन जातिया के ह⸗ उनम से अधिकाश दलित ओर यादव आदि जातियो से सबधित ही हात हे। यदि कल उन्होने सवर्णो के हाथो इस्तेमाल हाने की जगह उनके खिलाफ हथियार उठा लिए तो क्या होगा?

बहुजन समाज पार्टी ने माच, 1991 मे राजधानी के वोट क्लब पर रैली का आयाजन कर चुनावी मुद्दो की रूपरखा रखी। रेली म आए लोगो को सबोधित करते हुए काशीगम ने कहा कि हम समाज व्यवस्था, अथव्यवस्था आदि सभी व्यवस्थाओ म बदलाव लाना चाहते ह ओर जब तक इन नेताओ की कुर्सियॉ नही हिलेगी तब तक बदलाव नही आएगा। वी पी सिह की आलोचना करते हुए उन्होने कहा था कि वी पी सिह सामाजिक न्याय की बात करते है, हम सामाजिक परिवर्तन की बात करत हे लेकिन वी पी सिह सामाजिक न्याय दिला पाऍगे ऐसी उम्मीद नही हे। सामाजिक परिवतन एव आथिक मुक्ति को अपना चुनावी मुद्दा बताते हुए काशीराम न चुनावी नारा दिया कि जो **जमीन सरकारी है, वो जमीन हमारी है।**

अपनी चुनावी रणनीति को लोगो के सामने रखते हुए उन्होने बतलाया कि बहुजन समाज पार्टी सभी 543 सीटो के लिए अपने उम्मीदवारो को चुनाव मैदान मे उतारेगी।

वोट क्लब पर आयोजित इस रैली मे भाग लेने के लिए लगभग सभी राज्यो स डेढ-दा लाख के करीब लोग आए थे। इनमे बडी सख्या म महिलाऍ भी बच्चो समत आई हुई थी। पर रैली मे कुल मिलाकर पजाब, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश बिहार से आए लोगो की सख्या अधिक थी। रेली मे बहुजन समाज पार्टी के 3 सासद व तरह विधायक भी उपस्थित थे।

राजनेतिक दृष्टि से इस रैली का प्रभावपूर्ण असर हुआ। दलित राजनीति मे जहॉ काशीराम ओर मायावती दोनो का कद बढने लगा था। वही अन्य पार्टियो मे दूसरे दलित नेताओ का राजनैतिक वजन घटने लगा था।

सागठनिक ढॉचा और प्रचार की विधि

देखा जाए तो इस चुनावी कामयाबी के पीछे काशीराम का कठोर परिश्रम ओर अपने जनाधार के सतत सपर्क मे रहने की खूबियॉ मुख्य थी। उन्होने निरतर प्रचार यात्राऍ की लोगो से मुलाकात ली ओर आदोलनकारी कायक्रम किए। बहुजन समाज पार्टी की सगठन शैली उन्होने अपने आदोलन की व्यावहारिक जरूरतो के आधार पर निधारित की, न कि पार्टी बनाने की किसी पूवस्थापित शैली के आधार पर।

बसपा का गठन करने हेतु पूरे देश को सौ डिवीजनो मे बॉटा गया। सारे देश

मे माढे तीन हजार से ज्यादा बसपा दफ्तर खोले गए। पार्टी का मुख्यालय दिल्ली मे रहा और काशीराम उसके निर्विवाद प्रमुख बन। शुरू मे कोइ ओर पदाधिकारी था ही नही। सभी पार्टी के कायकत्ता थे। तकनीकी रूप से अध्यक्ष सही, पर काशीराम स्वय को भी कायकत्ता कहना पसद करत थे। प्रातीय ओर स्थानीय स्तर पर पार्टी के प्रमुख कायकत्ता को सयोजक कहा जाता था। शुरू म प्रातीय कायालय नही खोले गए थ, लेकिन बाद म उत्तर प्रदेश जेसे राज्या म आर अन्य कुछ राज्या म प्रातीय कायालय स्थापित हुए। काशीराम के बयान, उनके द्वारा लिखित पर्चो, आदालन के दोरान की गइ घोपणाओ, विभिन्न राष्ट्रीय समस्याआ पर की गइ उनकी टिप्पणिया से ही इन आवश्यकताओ की थोडी-बहुत भरपाइ हो पाती हे। पूरी पार्टी पर काशीराम का कठोर नियत्रण रहता हे।

काशीराम हर मडल को एक मडलीय सयोजक के आधीन रखते थे। इसकी नियुक्ति करते समय काशीराम साफ कर देते थे कि सयोजक की जवाबदही सीधे उनके प्रति होगी। उसे बामसेफ वाला की मदद से अपना काम करना हाता ह। जिला इकाइ का सयोजक भी काशीराम नियुक्त करत हे। वह भी सीध उन्ही के प्रति जवाबदह रहता हे। ओर बामसेफ वालो की मदद से बसपा के लिए नए सदस्य भर्ती करता हे। तहसील ओर ब्लाक स्तर पर भी दफ्तर खोले गए हे। तहसील सयोजक की नियुक्ति करते समय काशीराम जिला ओर मडलीय सयोजक से परामश लेते ह। ब्लाक सयाजक नियुक्त करने का अधिकार मडलीय ओर जिला सयोजक के पास रहता हे।

बसपा की एक अनुसधान शाखा रही। इसके सदस्य कुछ स्थायी ओर अस्थायी रहते हे। जरूरत पडने पर इसकी उप कमेटियॉ भी बनाइ जाती थी। यह नीतिगत निणय लेने या अनुमोदन करने के अलावा जातीय इतिहास की खोज मिथको का निमाण एव इतिहास की व्याख्या और बसपा के साहित्य का निमाण करती थी। इसी प्रकार मडल या जिला स्तर पर भी रिसर्च विग होते हे, जो राष्ट्रीय शाखा के अनुरूप ही काय करते हे। इसमे सदस्यो की नियुक्तियॉ मडलीय सयोजक द्वारा की जाती हे। बसपा के पास अपना एक खुफिया विभाग भी है। यह सूचनाऍ प्राप्त कर पार्टी अध्यक्ष के पास तक पहॅुचाता है। सूचनाऍ जमा करने की मुख्य भूमिका बामसेफ के सदस्य अदा करते है। चोबीस घटे के भीतर अन्य पार्टियॉ या सरकार क्या करती है, हमे इसकी सूचना मिल जाती हे। हमारे आदमी हर विभाग मे हे, जो हमे सूचनाऍ देते रहते है। पार्टी के पास अपने सुरक्षा गाड है। पार्टी सम्मेलनो मे इसी सुरक्षा गार्ड को तेनात किया जाता हे। पुलिस विभाग की सहायता नही ली जाती। पुलिस यदि सुरक्षा की दृष्टि से सम्मेलन के परिसर के अदर प्रवेश कर जाती हे तो उससे पार्टी स्वयसेवक अनुरोध करते है कि वह सम्मेलन क्षेत्र से बाहर चली जाए, क्योकि हम अपनी सुरक्षा खुद कर लेगे। सुरक्षा गाड गारटी देते हे कि कोइ किसी प्रकार से कानून-व्यवस्था भग नही करेगा। पुलिस की सहायता न लेने के पीछे एक मनोवेज्ञानिक

कारण हे। पुलिस की सहायता न लेकर बसपा यह सिद्ध करती है कि उत्पीडित वर्ग मे साहस है, क्षमता है, और वह आत्मरक्षा कर सकता हे।

सुरक्षा गार्ड की स्थापना के पीछे एक उद्देश्य सवर्णो की हिसक कार्रवाइयो का उत्तर देना भी है। सुरक्षा गार्ड का सदस्य बनने की कोई निश्चित योग्यता नही हे फिर भी शारीरिक रूप से पुष्ट तथा साहसपूण व्यक्ति को मडल या जिला सयोजक इसमे नियुक्त करता हे। जिला स्तर पर इस विग का एक प्रमुख हाता हे। जिसकी नियुक्ति सीधे काशीराम द्वारा की जाती हं। गार्डो को दिए गए निर्देशो मे कहा जाता ह कि आप लोग ईट का जवाब पत्थर से दे। सुरक्षा गार्ड नीले रग का पेट तथा सफद शट पहनते है। उनके हाथ मे लाठी होती हे। बदूक किसी सुरक्षा गाड के पास नही होती। सुरक्षा गार्ड सम्मेलन के चारो तरफ हाते हे तथा मच के आसपास घरा बनाए रहते है। काशीराम के सम्मेलन क्षेत्र मे आते-जाते समय सुरक्षा गार्ड मुख्य द्वार से मच तक पक्तिबद्ध ढग से दोनो किनारो पर खडे हो जाते हे। काशीराम उनके बीच आते-जाते हे।

बसपा का सदस्य बनने के लिए पहले समाज या क्षेत्र मे काम करना पडता हे। आवेदक की योग्यता और निष्ठा का परीक्षण किया जाता हे। सदस्य बनन के लिए किसी एक बसपा सदस्य के ओपचारिक अनुमोदन की आवश्यकता होती है। आपचारिक रूप मे सदस्यता जाति निरपेक्ष हे, परतु प्रारभ मे व्यवहारत ऊँची जातियो को पार्टी का सदस्य नही बनाया जाता था। बसपा वालो को उनसे किसी प्रकार का सबध रखने की अनुमति नही थी। **काशीराम कहते थे कि उच्च जाति के लोग पार्टी में शामिल हो सकते है, लेकिन वे नेतृत्व ग्रहण नहीं कर सकते।** नेतृत्व दलितो क हाथ म ही रहेगा, *"उच्च जाति के लोग हमसे कहते है, कि हमको क्यो नही लेते। मे कहता हूँ कि आप सभी पार्टियो मे नेतृत्व कर रहे है। यदि आप हमारी पार्टी मे सम्मिलित होते हं, तो यहाँ आप परिवर्तन को रोक देगे। उच्च जाति के लोगो को पार्टी मे लेन मे मुझे भय हे। वे यथास्थितिवादी होते हें तथा नेतृत्व ग्रहण करने की कोशिश मे सदा रहते हे। इससे वे हमारी व्यवस्था परिवर्तन की प्रक्रिया को रोक देगे। जब भय दूर हो जाएगा, तो उन्हे भी पार्टी मे ले लूँगा।"*

15 अगस्त, 1988 से 15 अगस्त 1989 के बीच काशीराम ने पॉच सूत्रीय सामाजिक रूपातरण आदोलन चलाया। ये पॉच सूत्र थे आत्मसम्मान के लिए सघर्ष, मुक्ति के लिए सघर्ष, समता के लिए सघष, जाति उन्मूलन के लिए सघर्ष ओर विभाजित समाज को भाइ-चारे से जोडने के लिए सघष एव 85 फीसदी भारतीय जनता के ऊपर अस्पृश्यता, अन्याय, अत्याचार ओर आतक थोपने के खिलाफ सघप। काशीराम ने इसके लिए साइकिल यात्राओ की अनूठी विधि निकाली ओर देश के पॉच क्षेत्रो से पॉच साइकिल यात्राएँ निकाली। 17 सितवर, 1988 को कन्याकुमारी से इवी रामस्वामी नाइकर पेरियार के जन्मदिन पर पहली यात्रा शुरू हुइ। दूसरी यात्रा कोहिमा

स चली। तीसरी कारगिल से। चोथी पुरी से आर पॉचवी पारबदर स चली। य सभी यात्राएँ 27 माच, 1989 को दिल्ली पहुँचकर आपस मे जुड गइ। काशीराम न 1989 म पूरे देश म घूम-घूमकर छह सम्मेलन किए। 10 सितबर का मुरादाबाद म पहला सम्मलन हुआ जिसके केंद्र मे मुसलमान थ। 13 का दिल्ली म अनुसूचित जातिया का सम्मेलन हुआ। एक अक्टूबर को कानपुर मे पिछडे वर्गो का सम्मलन आयोजित किया गया। 8 अक्टूबर का लुधियाना म सिखा का सम्मलन हुआ। 15 अक्टूबर का बिलासपुर म अनुसूचित जनजातियो का सम्मलन हुआ ओर फिर बगलूर म बसपा न इसाइयो का सम्मेलन किया। इन सम्मेलना का मुख्य सदेश था कि मुसलमान, दलित, सिख पिछडे, इसाइ ओर आदिवासी कवल बसपा क साथ जुडकर ही सुरक्षा प्राप्त कर सकत ह।

1989 के लोकसभा ओर विधानसभा चुनावा म बसपा न स्वतत्र रूप स उम्मीदवार लडाए ओर तीन सासदा (दो उत्तर प्रदश आर एक पजाब स) आर 15 विधायका को उत्तर प्रदेश ओर मध्य प्रदेश से जिताने म सफलता प्राप्त की। काशीराम ने दावा किया कि उनके उम्मीदवारो न 31 निवाचन क्षेत्रा मे नबर दो पर रहन का श्रय प्राप्त किया हे, इसलिए उसकी जीती हुइ तीन सीटा के आधार पर ही उनकी ताकत का आकलन नही किया जाना चाहिए। वसे 1989 म बसपा की ससद म प्रथम उपस्थिति मानी जा सकती ह। आलाक मोहन अपन लेख म सकेत करत ह कि 1989 के चुनाव मे ही बसपा क हिस्से मे 13 विधायक आए तो उन दला की ऑखा की किरकिरी साबित हुए, जो बसपा स बहुत पहल बने थे। लकिन 1990 म जब पूरे देश मे मध्यावधि चुनाव हुए तो उसमे बसपा की उत्तर प्रदेश मे विधायका की सख्या घटकर भले ही 12 रह गइ हो, लकिन प्राप्त मतो के प्रतिशत मे जरूर वृद्धि हुइ।

इस चुनाव मे काशीराम न एक ओर दिलचस्प प्रयोग किया। व अमठी निवाचन क्षेत्र मे राजीव गॉधी के खिलाफ खडे हो गए। विपक्ष ने राजीव गाधी का मुकाबला करने के लिए महात्मा गॉधी के पोते राजमोहन गॉधी को उतारा। एक बड समाचार पत्र समूह के मालिक ने राजमोहन गॉधी के चुनाव अभियान को चलाने मे विशेष योगदान किया। इलाहाबाद उपचुनाव के बाद यह दूसरा मोका था जब काशीराम अपनी विशिष्ट ताकत को राष्ट्रीय राजनीतिक मच पर पश कर सकते थे। विपक्ष न चुनाव मे बहुत जोर बॉधा और समाचार माध्यमो ने जो छवि पेश की, उससे लगा कि राजीव गॉधी के हारने की सभावना भी हे। इस बिदु पर पहुँचकर काशीराम ने महसूस किया कि अगर राजीव हार गए तो विपक्ष को इसका बहुत ज्यादा लाभ होगा ओर देश मे सत्ता का शक्ति सतुलन गडबडा जाएगा, जिसका नुकसान भविष्य मे बसपा जसी ताकतो को हो सकता हे। उनकी मान्यता थी कि कॉग्रेस ओर विपक्ष मे जितना नजदीकी सघर्ष होगा उतना ही बसपा को लाभ होगा। ऐसे म काशीराम

ने नया पेतरा लिया और अमेठी मे अपनी उम्मीदवारी पर जोड डालना बद कर दिया। एक तरह से उन्हाने राजीव गॉधी को जीतने मे मदद की। उन पर कॉग्रेस से सॉठ-गॉठ का आरोप भी लगा, लेकिन अपनी रणनीति का खुलासा करते हुए उन्हाने सफाइ दी, *"मने अपना पक्ष उभारने के लिए राजीव गॉधी के खिलाफ चुनाव लडा, लेकिन मे उन्हं चुनाव हराना नही चाहता था। क्योकि उससे तो विपक्ष को बहुत ज्यादा फायदा हो जाता।* इलाहाबाद ओर अमेठी क चुनावो मे बसपा की भूमिका क बार मे कहा जा सकता हे कि भारतीय राजनीति मे उस सक्रमणकाल मे उसने पहले कॉग्रेस को हरवाने मे ओर फिर विपक्ष की बढत का रोकने मे भूमिका निभाइ। इलाहाबाद स विश्वनाथ प्रताप सिह की जीत भी प्रतीकात्मक थी ओर अमेठी मे राजमोहन गॉधी की उम्मीदवारी भी। इन दो प्रतीक सघर्षो को चुनकर बसपा ने बहुजन समाज को सदेश दिया कि वह भविष्य म किस तरह की राजनीति करने जा रही हे। यह शक्ति सतुलन की राजनीति की आहट थी जो यह बताती थी कि उत्पीडित वग का वोट अब पहले की तरह इस या उस पक्ष मे नही पडता, वरन भविष्य की समझी-बूझी योजना के मुताबिक ऊँची जातियो का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टिया के आपसी सतुलन से भी खेलता हे।

1990 म बसपा ने अम्बडकर जन्म शताब्दी मनाने के लिए 130 दिन लबी प्रचार यात्रा आयोजित करने का निश्चय किया। यह यात्रा 13 प्रमुख राज्यो से गुजरती थी। इसमे काशीराम जहॉ-जहॉ गए, दलित ओर अतिपिछडो की भीड उनके चारा ओर उमड पडी। 6 दिसबर, 1990 को अम्बेडकर की पुण्य तिथि के अवसर पर काशीराम **'सामाजिक रूपातरण वाहन'** मे सवार हुए। स्थान था भारत का दक्षिणी सिरा कन्याकुमारी। इस वाहन मे एक स्वागत कक्ष एक शयन कक्ष, एक शोचालय ओर एक स्नान घर था। इसमे एक जेनरेटर, प्रकाश प्रणाली और माइक्रोफोन सिस्टम भी फिट था। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर व चडीगढ होते हुए यह प्रचार यात्रा अम्बेडकर के जन्म-स्थान महू पर पहुँची। काशीराम ने 130 दिन लबे इस दौरे का निर्देशन स्वय किया। 15 माच, 1991 को जब यह प्रचार यात्रा नई दिल्ली के वोट क्लब मैदान पर पहुँची तो उसके स्वागत मे जबरदस्त रैली हुई। बहुजन समाज रैली मे उमड पडा। यह एक बहुत बडी कामयाबी थी।

सगठक अपने सपादकीय मे लिखता है—1989 मे बहुजन समाज बडे पैमाने पर तैयार होता नजर आया ओर नारा देने लगा कि 'ससद चलो—अपने पेरो पर चलो' तो कॉग्रेस ने अपनी कमजोरी को महसूस करते हुए कॉग्रेस से ही निकली दूसरी टीम 'राष्ट्रीय मोर्चे' (जद, भाजपा, जनता पार्टी व साम्यवादियों) को यह जिम्मेदारी सोप दी गइ, जिनका नेतृत्व विश्वनाथ प्रताप सिह ने प्रधानमत्री बनकर सॅभाला। ब्राह्मणवादियो को मालूम था कि विश्वनाथ प्रताप सिह इस जिम्मेदारी को लबे समय

तक नही निभा सकेंगे, तो भाजपा को यह जिम्मेदारी सोपने के दृष्टिकोण से उसको अपनी शक्ति बढाने का मोका दिया। भाजपा के प्रति लोगो मे कितनी आस्था हे इस बात को जानने व समझने के लिए 25 सितबर, 1990 को सोमनाथ (गुजरात) स रामरथ यात्रा निकाली, जिसमे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आडवाणी उस रथयात्रा पर सवार होकर 30 अक्टूबर, 1990 को अयोध्या पहुँचने के लिए रवाना हुए और वहॉ पहुँचकर बाबरी मस्जिद-राम जन्मभूमि विवादित स्थान पर राम मदिर बनवाने क लिए कार सवा शुरू करनी थी। भले ही जनता दल के मुख्यमत्री लालू प्रसाद यादव ने 23 अक्टूबर, 1990 को रथयात्रा समस्तीपुर (बिहार) मे ही रोक ली ओर भाजपा ने केन्द्र की सरकार से अपना समथन वापस लेकर 7 नवबर, 1990 को विश्वनाथ प्रताप सिह की जनता दल सरकार गिरा दी, लेकिन उसी जनता दल के अदरूनी सहयोग से बाद मे भाजपा की चार राज्या म सरकार बनवा दी गयी तथा कद्र म फिर कॉग्रेस की सरकार बन गई। इसके बाद कॉग्रेस की कमजोरी का फायदा उठाते हुए भाजपा ने उत्तर प्रदेश म अपनी राज्य सरकार की मोर्चवदी से आखिरकार 6 दिसबर 1992 को बाबरी मस्जिद को ढहाकर लोगो की अपने प्रति आस्था का जायजा लेने का प्रयास किया। इस दोरान कॉग्रेस ने अपने बचाव को ध्यान मे रखते हुए भाजपा के चार राज्यो (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश राजस्थान व हिमालच प्रदेश) की सरकारे भी बखास्त कर दी।'

बहुजन सगठक के इस सपादकीय से इतना ता स्पष्ट ही हे कि तत्कालीन परिस्थितियो मे सवण नेताओ के द्वारा किस तरह की अलोकतात्रिक राजनीति करने की प्रक्रिया जारी थी।

विचारधारा

काशीराम ने पार्टी साहित्य प्रकाशित करने पर काफी जोर दिया। पहले वे **ऑप्रेस्ड इडियन** नामक अग्रेजी पत्रिका निकालते थे। बाद मे उन्होने **बहुजन सगठक** साप्ताहिक निकालना शुरू किया। इनके अलावा अन्य भाषाओ मे क्षेत्रीय स्तर पर भी पत्र-पत्रिकाओ का प्रकाशन आरभ हुआ। प्रकाशन शाखा बसपा का एक मुख्य अग रहा है। इसका मुख्य कायालय दिल्ली मे हे जहॉ से ॲग्रेजी ओर हिदी मे प्रकाशन होता हे। भाषाओ के प्रकाशन का दायित्व भाषावार प्रातो की शाखाओ को सोपा गया। बुद्धिजीवी सक्रिय कार्यकत्ताओ, कम-से-कम स्नातक योग्यता वाले कार्यकर्त्ताओ ओर प्राय एक से अधिक भापाओ का ज्ञान रखने वाले कार्यकर्त्ताआ को प्रकाशन ब्राच से जोडा गया हे। मुख्य सपादक काशीराम हे। एक सपादकीय मडल हे जो सपादकीय लिखने के साथ विषयवस्तु का निर्धारण भी करता हे। क्षेत्रो मे समाचारो के सकलन के लिए इसके अपने पत्रकार ओर छायाकार हे। आमतोर पर ये समाचार काशीराम के भाषण, बसपा तथा उसके अन्य सगठनो से सबधो, तथ्यो, बेठको, इत्यादि

तथा दलित वग की उपलब्धियो तथा उसके उत्पीडन से सबधित होते है। इस पत्र को मडल कायालया तथा जिला कायालयो पर भेजा जाता है। वहाँ से अन्य स्थाना को वितरण होता ह। पत्र डाक द्वारा सीधे मँगाया जा सकता है। आदोलन से सबधित ज ही सदस्य पत्र प्राप्त करने के अधिकारी होते है, जिन्हाने पत्र सदस्यता शुल्क जमा किया हाता हे। पत्र आम बाजार के लिए वितरित नही किया जाता हे।

बहुजन सगठक अपन बारे मे य बाते कहता हे *यह अनुसूचित जाति जनजाति अन्य पिछडा वग एव अल्पसख्यक समुदाय की समस्याओ को उजागर करता तथा समाधान बताता ह। यह समता, स्वतत्रता, बधुत्व एव न्याय पर आधारित सामाजिक व्यवस्था क निमाण मे व्यस्त ह। इतिहास एव खोजपूण तथ्यो द्वारा दलित शोपित समाज म निभाकतापूवक समता साहस स्वाभिमान, साहचर्य सद्गुण एव सद्भाव रहना है। दलित शापित समाज को उनके, अधिकारो एव कत्तव्यो के प्रति सचेत कर राजनीतिक चतना पेदा करता हे। बहुजन समाज के प्रति रचे जाने वाले षड्यत्रा का भडाफाड आर बचाव का उपाय बताता हे। दलित-शोषित समाज को मुक्ति दिलान वाल सता, महात्माओ आर महापुरुषो के सस्मरण छापकर उनकी कृतिया का स्मरण करता ह बहुजन समाज का सपूण पथ प्रदशन करता हे। रूढियो एव पाखडो, छल, दभ द्वपा का छिद्रान्वेपण तथा यथास्थिति का घोर विरोध एव प्रगतिशील विचारा का प्रनिपादन करता ह। लोकतत्र क' प्रचारक हे धमनिरपेक्षता का प्रबल प्रतिपादन करता ह। यह समाचार पत्र नही, विचार पत्र है। महिला मुक्ति का उद्घोषक ह, वतमान आय अनाय सघष मे अनार्यो का शक्तिशाली अस्त्र है।*

***बहुजन सगठक** मे दलितो के सामाजिक इतिहास, ब्राह्मण धम से सबधित अन्यायपूण तथ्या तथा दलितो की दलित स्थिति का, कविता, लेख, कहानी, नाटक के माध्यम से चित्रण भी होता ह। यह अपने-आपमे एक साहित्य हे। ऐसा साहित्य, जिसमे वतमान के अनुभव के साथ भूत का इतिहास तथा भविष्य का आकलन सम्मिलित ह जिसमे ब्राह्मणवाद और गाँधीवाद की कटु आलोचना है, दासता का चित्रण ओर विद्रोह की अपील है, आत्म गोरव ओर अस्मिता पर बल हे। साथ ही इसमे भातिकवाद ओर मानवतावाद की प्रधानता है। **बहुजन सगठक** मे छपने वाले विपय इस प्रकार ह—ब्राह्मणवादी व्यवस्था मे बहुजनो की हानिकारक स्थिति तथा इस व्यवस्था स सघष करने वाले फुले, शाहू महाराज, पेरियार तथा अम्बेडकर के विचारो तथा आदोलनो का वर्णन, काशीराम के विचारो, भाषणो का वर्णन और उनके आदोलन सबधी जानकारी, दलित-शोषितो के उत्पीडन का वर्णन अथवा सवर्णो के अत्याचार सबधी समाचार। बहुजन समाज की विभिन्न जातियो एव वर्गो का गौरवमय इतिहास।*

बकोल अभय कुमार दुबे इस चित्रण मे अधिकाश मिथक होता हे आय-अनाय सघष का वणन, अनार्यो की सभ्यता का वणन तथा मूलनिवासियो की एकता पर

बल। इस सामग्री मे व्यक्तिगत व्यथा की ही अभिव्यक्ति नही होती, बल्कि समाज व्यवस्था के प्रति आक्राश भी व्यक्त होता हे। इसे पढकर लगता हे कि दलित मन का समाज के स्वरूप ओर परिवतन सबधी सेद्धातिक विवेचन ओर विश्लेषण की चाह नही हे। अपने आसपास के समाज के लोग किस प्रकार जीवन भुगतते हे, इसका असली चित्रण वह चाहता हे। **बहुजन सगठक** मे उसके लिए दलित जातियो की वतमान सामानिक-आथिक स्थिति उनकी सामाजिक रूढियॉ ओर रहन-सहन, जाति व्यवस्था आर जातीय कट्टरता एव उत्पीडन, उनकी प्रगति मे बाधक ब्राह्मणवाद के बार म उनका दृष्टिकोण अथवा ब्राह्मणो, सवर्णो अथवा आर्यो का षड्यत्र, दलित महिलाआ की स्थिति, शासन-प्रशासन म दलितो की स्थिति का तथ्यात्मक, यथाथ वणन पश किया जाता ह। कविताआ ओर कहानिया की मूल प्रवृत्ति विद्रोह की हाती ह। भापा म तिरस्कार के भाव प्रबल रहते हे। कहानियो मे सामानिक ओर राजनीतिक प्रश्न अधिक हात ह। जीवन के आलेख की अपेक्षा वतमान जीवन क सघप का अकन अधिक हाता हे। **बहुजन सगठक** की भापा आक्रोश की परिणति मे दलितो को अस्मिताबोध भी कराती ह। उसका लक्ष्य हे कि अस्मिता की खोज दूसरो द्वारा नही, अपनी पहचान अपन-आप हानी चाहिए। इस साहित्य से स्पष्ट हे कि दलित समस्या कवल आथिक समस्या नही ह, अपितु वह सामाजिक-सास्कृतिक समस्या अधिक हे। **बहुजन सगठक** कहता हे कि ''सपूण साहित्य पर थोडे से ब्राह्मण ओर क्षत्रियो का अधिकार रहा हे। शेष बहुजन समाज को इससे वचित रखा गया हे। शिक्षा देना आर पाना इन्ही दानो का अधिकार था। इसलिए स्वभावत उन्ही वर्गी का साहित्य पर एकाधिकार रहा।

जनसाधारण इसलिए जहॉ एक ओर बहुजन साहित्य को सामाजिक परिवतन क लिए अपने-आपको तेयार करता हे वही दलित-शोषित समाज मे सास्कृतिक चेतना जाग्रत कर उसे एक सास्कृतिक आदोलन के लिए भी तेयार करना है। आज दलित-शोपित समुदाय के लोग अपनी उस सास्कृतिक विरासत से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ है जिसने उन्हे हजारो वष पूर्व एकता के सूत्र मे बॉधकर माहनजोदडो-हडप्पा की सस्कृति का निमाण करने मे महत्त्वपूण भूमिका अदा की थी। समाज के सपूर्ण विकास करने के लिए केवल यही आवश्यक नही है कि आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक सगठन शक्तिशाली हो, सास्कृतिक चेतना के बिना ऊँचाइ पर चढने की भावना जाग्रत नही हो सकती।''

इस प्रकार बसपा ब्राह्मण साहित्य के साथ उसके नायको को भी जमीन दिखाने का प्रयास करती हे। प्राचीन काल मे जिन्हे खलनायक या राक्षस कहा जाता था उनके खलनायकत्व और राक्षसत्व को बसपा के साहित्य मे नायक के रूप मे बदल दिया गया हे। बसपा की दृष्टि मे प्राचीन काल का इतिहास यक्ष सस्कृति (आय सस्कृति) एव रक्ष सस्कृति (अनाय सस्कृति) के सघर्ष का इतिहास हे। वाल्मीकि रामायण

आश्वस्त कोइ पार्टी ज्यादा ताकतवर पार्टी के साथ तालमेल करते समय होने की अपक्षा रखती ह। दलित नेताओ को यकीन नही था कि ताकतवर मध्य जातियो के वाट उनके उम्मीदवारा को मिल सकते हे। इसी कारण से काशीराम के सहयोगी ओर पार्टी मुखपत्र के सपादक राम समुझ आर बसपा क वरिष्ठ नता ओर उत्तर प्रदश क सयोजक कुदनलाल गठजोड के विरोध म उठ खडे हुए। य दोनो नेता तथा पार्टी क 13 विधायका म स कम-स-कम पॉच इस पक्ष मे थ कि बसपा न ता किसी के साथ तालमल करे ओर न ही किसी सरकार का समथन कर। खुद काशीराम अभी तक समझोते क खिलाफ बोलते रहे थे। लेकिन मदिर ओर मडल परिघटना क बाद राष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थिति बदल गइ थी।

फिर भी इन घटनाओ ने बसपा का तुरत खुला समझोता करने स रोका। नए दुश्मन जनता दल ओर पुराने दुश्मन कॉग्रेस को कमजार करने क लिए पार्टी ने मुलायम की पार्टी सजपा से एक खुफिया समझोता कर लिया। काशीराम को लग रहा था कि भाजपा हिदुत्व की लहर के कारण अपना वोट प्रतिशत काफी बढा लेगी। इसलिए रणनीति यह बनी कि जनता दल के पिछडे ओर मुसलमान वोट एव कॉग्रस के दलित व मुसलमान वोट बसपा व सजपा के ध्रुव पर जमा हो जाएँ, भले ही भाजपा जीत जाए। बसपा अपने इस मकसद मे कमोबेश सफल ही हो गइ होती अगर कॉग्रेस को राजीव गॉधी की हत्या के कारण उपजी हमदर्दी की लहर का लाभ न मिल गया हाता। लेकिन, उत्तर प्रदेश की राजनीति म उसका यह अनुमान एकदम ठीक निकला ओर भाजपा सत्ता म आ गइ। 1991 के चुनावा से बसपा ने एक ओर बात साबित की कि राम लहर मे भी उसका वोट प्रतिशत उत्तर प्रदेश मे नही गिरा। 12 सीटा के साथ बसपा ने अपना दस प्रतिशत का वोट बेक कायम रखा। अब बसपा के सामने एक तरफ खुशगवार कामयाबी थी ओर दूसरी तरफ चुनावी गठजाडो की जरूरत मुॅह फाडे खडी थी, जिसके कारण पार्टी मे फूट की शुरुआत हो चुकी थी।

1992 की शुरुआत मे काशीराम को यह साबित करने का मोका मिला कि उनकी पार्टी किसी दल से कम देशभक्त नही है और राष्ट्रीय एकता-अखडता मे विश्वास करती हे। नरसिह राव सरकार ने आतकवाद पीडित पजाब मे बहुप्रतीक्षित चुनाव घोषित किए जिसका अकालियो के सभी धडो (काबुल धडे को छोडकर) ने यह कहकर बायकाट किया कि अभी स्थिति चुनाव के लायक नही है। बसपा ने पजाब चुनाव मे हिस्सा लेने का निणय किया। परिस्थितियॉ निश्चित रूप से अनुकूल नही थी। सिख आतकवादियो का मुख्य आधार ताकतवर जाट किसान थे ओर बसपा का आधार मजहबी सिख थे। मजहबी सिख पजाब की आथिक-सामाजिक परिस्थिति मे इतने दबे रहते थे कि जाट सिखो के सामने सिर उठाना उनके लिए मुश्किल था। 1991 खत्म होते-होते आतकवाद के शिकारो ओर पुलिस द्वारा मारे गए लोगो की सख्या बढकर 35,000 तक पहुॅच चुकी थी। इसमे करीब पॉच हजार लोगो की जान

1991 मे ही हो गइ थी। राज्य-भर मे छात्रो, किसानो, सरकारी कर्मचारियो ओर अध्यापको के सगठन लकवाग्रस्त हालत मे पडे हुए थे। लोकतात्रिक राजनीति क लिए गुँजाइशे न के बराबर थी। वामपथियो मे आमतोर पर निष्क्रियता थी। कॉग्रेस का दलिता, किसानो ओर व्यापारियो मे आधार था। भाजपा केवल शहर केद्रित पार्टी थी।

इन हालात मे चुनाव लडकर काशीराम दा काम कर सकत थे मजहबी सिखा का जाट सिखा की धोस से अलग किया जा सकता था ओर इन वोटा को कॉग्रस म जाने स राका जा सकता था। इस प्रक्रिया मे बसपा को पजाब मे अपना आधार आर मजबूत करन का माका तो मिल ही सकता था, साथ ही वह अच्छ राष्ट्रवादा चाल चलन की सनद भी हासिल कर सकती थी। मुश्किले दो थी पहली, अकाला धडा न बसपा म अकाल तख्त क जरिए अपील की कि वह पजाब चुनाव मे भागीदारा न कर ओर दूसरी सिख आतकवादिया न धमकी दी थी कि वोट डालने जा रह लोगा का उनकी गोलिया का सामना करना पडेगा। काशीराम ओर उनके समथका न दाना हालाता का दृढता से मुकाबला किया। उन्हाने अकालियो की अपील ठुकरा दी। बसपा कायकत्ताआ न निभयता स चुनाव प्रचार अभियान चलाया। केवल बसपा ही एसी पार्टी थी जिसका चुनाव अभियान पजाब के तत्कालीन हालात से प्रभावित नही लग रहा था। बसपा क नीले झडे ओर सफद रग के बड-बडे पोस्टर काशीराम ओर चुनाव चिह्न हाथी की तस्वीर के साथ गॉव-गॉव मे दिखाइ दे रह थे। काशीराम न स्वय पजाव का जमकर दारा किया। शहरो की भीड भरी सडको से लेकर गॉवो की गलिया तक काशीराम हर जगह दिखे। इस समय पजाब के हर ससदीय निर्वाचन क्षत्र म बसपा के दफ्तर सक्रिय थ। केवल बसपा ने ही खुली जनसभाएँ की। कॉग्रेस आर भाजपा की ज्यादातर जनसभाएँ घरो के अहातो के अदर हो रही थी। कई जगह तो लग रहा था कि बसपा के अलावा कोइ पार्टी मेदान मे है ही नही।

चुनाव से ठीक पहले आतकवादिया की तरफ स धमकी आइ कि मतदान केद्र पर पहुँचने वाले पहले पॉच मतदाताओ के हाथ काट दिए जाएँगे। लेकिन बसपा कायकर्त्ताओ ने निश्चय किया कि वे सबसे पहले अपने समथको को ही वोट डलवाने ले जाएँग।

मतदान के दिन जाट सिख वोट डालने नही निकले। हिदुओ ने अधिकाशत कॉग्रेस को वोट दिया। बसपा को मजहबी सिखो के वोट मिले। उसने नो विधानसभाई ओर एक ससदीय सीट जीती। बसपा को पूरे पजाब मे पडे मतो का 15 44 फीसदी मिला। 34 विधानसभा क्षेत्रो मे बसपा निकटतम प्रतिद्वद्वी रही। 39 क्षेत्रो मे वह तीसरे नबर पर रही। बसपा के पॉच उम्मीदवारा को पडे मतो का 40 से 50 फीसदी तक मिला। 18 क्षेत्रा मे यही ऑकडा तीस से चालीस फीसदी था। यद्यपि, पजाब मे चुनाव विभिन्न अकाली धडो के बहिष्कार के कारण किसी भी तरह से समुचित प्रतिनिधित्व

वाले चुनाव नही कहे जा सकते थे, लेकिन उनका राजनीतिक महत्त्व था। बसपा विधानसभा मे मुख्य विपक्षी दल बन गइ थी।

इस राजनीतिक सफलता की कीमत कइ बसपा समथको का अपनी जान देकर चुकानी पडी। अगर मुख्य तोर पर बसपा ओर गोड रूप स माकपा, भाकपा, आइपीएफ आर अकाली दल (काबुल) न होते तो आतकवादी पजाब चुनाव को पूरी तरह मजाक आर जनता स कटा हुआ करार दे सकते थ। इसलिए उन्हाने अपनी नाराजगी बसपा पर ही उतारी। चुनाव के तुरत वाद 12 बसपा समथक उनकी गालियो का निशाना बन। काशीराम का खयाल था कि इन हत्याओ मे बसपा के विराध स खुदक खाइ कॉग्रस की शक्तिया का भी हाथ रहा। उन्हाने आराप लगाया कि यह चुनाव कॉग्रेस द्वाग बडे पेमाने पर की गइ धॉधली का शिकार हुआ हे ओग इसके लिए कॉग्रेस न बीएसएफ ओर सीआरपीएफ सरीखे अधसेनिक बला का जमकर इस्तमाल किया ह। बसपा ने चुनाव को 'बीएसपी वनाम बीएसएफ कहकर परिभापित किया। वोटरो को उग्रवादियो की हिसा से वचाने की खातिर उँगली पर लगाइ नाने वाली अमिट स्याही का इस्तमाल न करने क निणय के कारण भी कॉग्रेस का मतपत्रो पर मुहर ठाकने की सुविधा हुइ। फिल्लोर लोकसभा सीट तो वसपा ने जीत ही ली हाती अगर 'आनकवादियो क वेश मे कॉग्रसी गुडा ने बसपा के कायकत्ताओ की हत्याएँ न की होती। बहरहाल, पजाव म आतकवाद से निपटने की जिम्मेदारी किसी लोकप्रिय सरकार को देने की तरफदार मीडिया ने बसपा कायकत्ताआ की शहादत की प्रशमा की। आतकवाद की धमकियो के आगे नीले झडे आर हाथी की निभयता ने सारे देश का ध्यान आकर्पित किया।

1992 के नवबर म इटावा ससदीय सीट पर उपचुनाव हुआ। काशीराम ने बसपा उम्मीदवार के रूप म वहाँ से परचा भरा। मुलायम सिह यादव ने अपने घरेलू क्षेत्र से निवतमान सासद गम सिह शाक्य को खडा किया। कॉग्रेस ओर भाजपा के उम्मीदवार भी मेदान मे उतरे। अब गेद मुलायम सिह के पाले मे थी। काशीराम का अपने गढ से जिताकर ससद मे भेजने की जिम्मेदारी उनकी थी। अभय कुमार दुबे लिखते हे कि जाहिर था कि अगर मुलायम सिह की सहमति न हाती तो काशीराम इटावा से नामाकन क्यो दाखिल करते। पर मुलायम सिह की समस्या यह थी कि उन्ह बरसो के प्रयास से बनाइ गइ मध्य जातियो की वह एकता काशीराम के लिए तोडनी थी जिसके चलते वे इटावा मे बेखटके अपने उम्मीदवारो को जिताते रहे थे। काछी (शाक्य), लोधी, यादव आर गडरिया मतदाताओ को मुलायम विभिन्न ढग से सत्ता मे भागीदारी देकर अपनी ओर कर चुके थे। पर इस बार मुलायम सिह ने शाक्य मतदाताओ को नाराज करने का जोखिम उठाया ओर उनके समथको ने ऐन मोके पर पिछड वर्ग क वाट काशीराम की तरफ स्थानातरित कर दिए। इस तरह दलित (मुख्यत जाटव) ओर यादव वोटो की एकता पहली बार बनी। मुसलमान भी उसके

साथ जुडे। प्रतिक्रिया मे भाजपा और कॉंग्रेस अदर ही अदर एकताबद्ध हो गई। कडा सघष हुआ, लेकिन काशीराम 19 हजार वोटो से जीत कर ससद मे पहुँच गए।

इटावा का यह ससदीय चुनाव कई दृष्टियो से मील का पत्थर साबित हुआ। काशीराम के लिए आसानी हो गइ ओर वे अपने पार्टीजनो को खुल गठजोड के प्रति आश्वस्त कर सक। मुलायम सिह ने परख लिया कि बसपा के साथ उनके ओर मुसलमाना के वोट मिल जाने से जो ताकत बनती हे उसमे चुनाव जीतने की क्षमता हे। इटावा का चुनाव इस मायने मे नमूना बन गया कि पिछडे और दलित वोट एक-दूसर के उम्मीदवारो को जिताने क लिए गोलबद हो सकते है।

ऐतिहासिक गठजोड

1993 मे हुआ समाजवादी पार्टी और बसपा का गठजोड कई मायनो मे ऐतिहासिक था। इसका फोरी ओर चुनावी उद्दश्य हिदुत्व की तेजी से उभरती हुई बढत रोकन से सबधित था। भाजपा के नेता कल्याण सिह बार-बार घोषित कर रहे थे कि 1991 के चुनाव मे जीती गई एक भी सीट अगर हाथ से निकली तो उसे हम अपनी हार मानगे। कल्याण सिह ने इस चुनाव को अयोध्या काड पर जनमत सग्रह की सज्ञा दे डाली। खास बात यह थी कि केवल भाजपा ही सपा-बसपा गठजोड के विरोध मे नही थी, कॉंग्रेस जनता दल और कम्युनिस्ट पार्टियॉं भी इसका विरोध कर रही थी। कम्युनिस्टो की कोशिश यह थी कि मुलायम सिह की समाजवादी पार्टी बसपा से जुडने के बजाय जनता दल से जुडे और साम्यवादियो से मिलकर धर्मनिरपेक्ष मोचा बनाए। माकपा और भाकपा ने इसके लिए मुलायम सिह पर जमकर दवाब डाला। लेकिन मुलायम सिह का विचार था कि जनता दल उत्तर प्रदेश के सदर्भ मे गिरती हुइ ताकत है ओर कॉंग्रेस अपने स्थायी मतदाता खो चुकी है। मुसलमान मस्जिद गिरा दिए जाने के बाद मुलायम के पीछे थे, दलित बसपा के पीछे थे और सवर्ण भाजपा के साथ थे। समीकरण साफ था। भाजपा बनाम सपा-बसपा का ध्रुवीकरण हो सकता था। कम्युनिस्टो की उत्तर प्रदेश मे कोई ताकत नही थी और इस समीकरण मे कॉंग्रेस और जनता दल का दखल ध्रुवीकरण को केवल बिगाड ही सकता था।

जनता दल और कम्युनिस्ट समर्थक मीडिया ने आरोप लगाया कि काशीराम साम्प्रदायिकता विरोधी ताकतो को एकजुट होने से रोक रहे है। दरअसल, काशीराम देख रहे थे कि किस प्रकार भाजपा, वीपी सिह तथा अन्य राजनीतिक ताकतो द्वारा उत्तर प्रदेश मे बसपा के समानातर दलित ताकत तैयार करने की कोशिशे चल रही है। भाजपा पहले से ही अयोध्या मे राम मदिर का शिलान्यास एक दलित के हाथो करवाने के बाद दलितो और सवर्णो के सामूहिक भोज के कार्यक्रम कर रही थी। विश्वनाथ प्रताप सिह ने भी राम विलास पासवान के नेतृत्व मे दलित सेना की शुरुआत करवा दी थी ओर दलित शिक्षा आदोलन का समर्थन करते हुए अम्बेडकर महासभा

की गतिविधियो के साथ खुद को जोड लिया था। इडियन पीपुल्स फ्रट ने उत्तर प्रदेश आधारित सगठन दलित महासभा का गठन कर लिया था। इसलिए न केवल मुलायम सिह के लिए वरन काशीराम के लिए भी जरूरी था कि वे अपने जनाधार को इन प्रयासा स अलग रहने का सदेश दे आर दलितो को स्वतत्र राजनीतिक पहचान कायम करन का सदेश दे।

इस पूरे राजनीतिक काय-व्यापार म सवाधिक सकारात्मक पहलू इटावा चुनाव क नतीजो से निकला मुलायम ओर काशीराम का यह विश्वास था कि पिछडे (अधिकाशत यादव) ओर दलित (अधिकाशत जाटव) वोट एक-दूसर के उम्मीदवारो की तरफ खिसकाए जा सकते ह। मुसलमान वोट मजबूती से मुलायम सिह के साथ थ ही। चुनाव जीतने का समीकरण दिखाइ दे रहा था। ऐस मे दोनो नताआ ने होशियारी दिखाइ ओर कॉग्रस व भाजपा विरोधी विपक्ष के प्रस्तावो का टालते रहे। माकपा के दबाव से बचने के लिए मुलायम कहते रहे कि काशीराम तेयार नही हे ओर काशीराम कहते रहे कि मुलायम तेयार नही हे।

काशीराम ओर मुलायम सिह ने उत्तर प्रदेश म जोरदार चुनावी मुहिम चलाइ। शुरुआत मे ही मुलायम ने दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम मोलाना अब्दुल्ला बुखारी का नसीहत दी कि वे धामिक काम-काज तक सीमित रहे आर राजनीति मे दखल न दे। मुलायम के इस कदम ने सपा-बसपा गठजोड की सच्ची धमनिरपेक्ष छवि बनाने मे मदद की। उनका यह कदम वैचारिक रूप से काशीराम के अनुकूल भी बेठता था, क्योकि काशीराम का मुख्य काय भार **धर्म परिवर्तन करके अल्पसख्यक बने दलितो को गोलबद करना था, न कि शेख, सेयद, मुगल ओर पठान की श्रेणी मे खुद को रखकर गरीब मुसलमानो का शोषण करने वाले 'ब्राह्मणों' जैसे रवैए वाले मुसलमानो को।**

चुनाव नतीजे ने भाजपा के लखनऊ के जरिए दिल्ली के सिहासन पर कब्जा करने के सपने चकनाचूर कर दिए। साथ ही कॉग्रेस और जनता दल की उत्तर प्रदेश मे वास्तविक ताकत को भी सामने ला दिया। भाजपा की सीटे 221 से घटकर 177 रह गइ। कॉग्रेस की 46 से घटकर 28 रह गई और जनता दल 92 से 27 पर आ गया। सपा-बसपा गठजोड ने 178 सीटे जीती (109 सपा ओर 69 बसपा) को मिली। यह सख्या पिछली विधानसभा मे दोनो को मिलाकर जीती गई 46 सीटो की चार गुना थी। गठजोड ने 75 सीटे भाजपा से छीनी, 37 जनता दल से ओर 18 कॉग्रेस से। अगर पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे अजित सिह के नेतृत्व वाला जनता दल भाजपा का मुकाबला कर पाया होता तो भाजपा 177 से भी काफी कम सीटे जीतती।

सरकार बनी। मुलायम सिह मुख्यमत्री बने। *दूरदर्शन पर बसपा प्रमुख ने सभवत पहली बार आम दशको को अपनी शली के दशन कराए। उन्होने जेब मे से अपना पन निकाला और उसे लबवत खडा करके बताया कि यह है ब्राह्मणवादी समाज*

व्यवस्था। फिर नाटकीय ढग से उन्होने पेन को क्षैतिज करके दावा किया कि वे समाज व्यवस्था को ऐसा करने म लगे हुए है। बसपा को सरकार मे हिस्सेदारी मिली।

चुनाव नतीजो का बारीक अध्ययन, चुनाव के बाद काशीराम और बसपा का रवेया अगले साल ओर मइ मे हुए मझनपुर उपचुनाव ने दलित राजनीति मे कुछ खास प्रवृत्तियो का सुराग दिया जो निकट भविष्य मे ओर भी सुदृढ होने वाली थी हम यहा अभय कुमार दुबे का चुनावी विश्लेषण दे रहे हे, जो सही भी रहा ओर सटीक भी

• 1993 का चुनाव पिछले किसी भी चुनाव की अपेक्षा अधिक ध्रुवीकृत था। बसपा का जाटवा आर पासियो के वोट मिले थे—साथ ही मुसलमाना का एक छोटा-सा प्रतिशत भी उसे मिला था। ध्रुवीकरण मे अगर कोई कमी रह गई थी तो सिर्फ इतनी कि कॉग्रेस ने अनुसूचित जातिया के 22 फीसदी वोट बकार कर दिए थे और भाजपा पिछडे वर्गो के 22 फीसदी वाट ले गई थी। अर्थात् मुसलमान ओर ऊँची जातिया का ध्रुवीकरण तो 55 आर 65 फीसदी वोटो के रूप मे जबरदस्त था, लेकिन दलित तथा पिछडे वोट थोडा कम ध्रुवीकृत हुए थे। सभावना यह थी कि आगे जेसे-जैसे ऊँची जाति के वोट भाजपा के पक्ष मे ध्रुवीकृत होगे, वैसे-वेसे दलित वोट बसपा के पक्ष मे झुकगे। मइ, 1994 को हुए मझनपुर (इलाहाबाद) उपचुनाव मे यह रूझान देखन को मिला।

• मुसलमान मतदाता पूरी तरह एक राजनीतिक समुदाय के रूप मे उभर आए। उन्होने मोलाना बुखारी के फतवे की बहुत कम परवाह की और भाजपा के मुख्य विरोधी सपा-बसपा गठजोड को ही वोट दिया। गठजोड मे काशीराम और मुलायम सिह म से उनकी प्राथमिकता मुलायम सिह को ही मिली।

• पिछडो म अतिपिछडो तथा मजबूत पिछडो मे लोधी तथा कुर्मी वोटो के अच्छे-खासे हिस्से ने भाजपा का भी पसद किया। यद्यपि बसपा ने कुर्मियो को अपनी ओर करन के लिए उत्तर प्रदेश मे अपनी पार्टी के अध्यक्ष और महासचिव का पद दो कुर्मी नेताओ (जग बहादुर पटेल ओर सोने लाल पटेल) को दे दिया, फिर भी कुर्मी वोटो मे भाजपा की सेध बनी रही। लोधी वोट तो कल्याण सिह के नेतृत्व के कारण भाजपा के साथ थे ही।

• मझनपुर उपचुनाव और उससे पहले कानपुर मे मुसलमानो के सम्मेलन से यह भी जाहिर हुआ कि चुनाव लडने और जनसपर्क की बसपा की शैली बदल रही है। यह चुनाव साइकिल पर नीला झडा लगाकर घूमने वाले समर्पित बसपा कार्यकर्त्ताओ की दम पर न लडा जाकर पूरे सरकारी तामझाम की शैली मे लडा गया।

• काशीराम ने अफसरो की तैनाती पर विशेष ध्यान दिया। मत्रिमडल बनाने मे उन्होने मुलायम सिह को अपनी घोषणा के अनुसार पूरी छूट दी, पर वे मुलायम सिह पर दबाव डालकर आइएएस और आईपीएस अफसरो को इधर-उधर करवाते

। सभवत उनका खयाल था कि उत्तर प्रदेश मे कायरत अनुसूचित जाति जनजाति 5 112 नाकरशाहो क जरिए व प्रदेश पर ज्यादा अच्छा नियत्रण स्थापित कर लगे। इस काम के लिए उन्होन मायावती को तैनात किया। मायावती की कायशैली से फ़बल मुलायम सिह ही असतुष्ट नही हुए, वरन बसपा के अदर भी काशीराम द्वारा उन्ह मिल रही प्राथमिकता से सुगबुगाहट शुरू हो गइ।

सपा-बसपा सरकार ने शुरुआत अच्छे ढग से की। सत्ता मे आते ही उसने परीक्षाआ म नकल रोकने के लिए लाया गया दडात्मक कानून वायदे के मुताबिक रद्‌द कर दिया। सरकार ने ऐलान किया कि वह किसानो ओर मजदूरा के कल्याण फ़ा प्राथमिकता देगी। गॉव ओर खेती का विकास किया जाएगा। खासतोर से दलितो का शाषण के शिकजे से मुक्त करने पर खास जोर दिया जाएगा। सरकार ने यह भी वायदा किया कि वह किसी तरह का जातिवादी अभियान नही चलाएगी ओर विधानसभा मे सभी पार्टिया की राय लेकर विकास कायक्रम आगे बढाए जाएँगे।

वही सुरश द्विवेदी का मानना है कि मुलायम सिह यादव ने मुख्यमत्री की कुर्सी 5 दिसबर 1993 को बसपा अध्यक्ष काशीराम के आशीवाद ओर बसपा के समथन स सॅभाली थी। लेकिन डेढ महीने बाद से ही काशीराम के बयानो, बसपा-सपा मत्रिया के बीच तालमल के अभाव एव दलितो आर पिछडो के बीच बढते तनाव को लकर सरकार के बारे मे तरह-तरह की अटकले शुरू हो गइ। इन अटकलो के पीछे सच्चाई क्या रही?

सुदेश द्विवेदी लिखते हे—5 दिसबर, 1993 को मुख्यमत्री पद की शपथ लने के बाद मुलायम सिह को सबसे पहल काशीराम के बयान ने परेशान किया। काशीराम न तब यह कहकर इस सरकार के कायकाल की मियाद तय कर दी कि वे नवबर-दिसबर, 1994 तक फिर से चुनाव चाहते हे। उनका कहना था, "हम चाहते हे कि लाकसभा चुनाव के साथ ही विधानसभा के चुनाव भी हा जाएँ। तब तक बसपा की ओर मतदाताओ के ध्रुवीकरण की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। तब हमारी पार्टी न केवल प्रदेश, बल्कि केद्र मे भी विजेता के रूप मे अपना अस्तित्व जमा लेगी।" मुलायम सिह ने उनके इस बयान की बाबत पूछे गए प्रश्न को तब यह कहकर टाल दिया था कि यह काशीराम की निजी सोच हो सकती हे। लेकिन उसी दिन से मुलायम सिह अपनी कुर्सी की खातिर काशीराम से टकराव की स्थिति से बचने की पूरी कोशिश म रहने लगे।

अलग-अलग खेमे

प्रदश मे भले ही सपा-बसपा का गठबधन हो, लेकिन वास्तविकता यह हे कि दोनो पार्टियो के अलग-अलग खेमे रहे। यह स्थिति न केवल बाहर, बल्कि सरकार मे भी थी। बसपा काटे के मत्रियो ने तो अपनी-लाबी बना रखी। सपा के कायकत्ताआ-नताओ

की आम शिकायत है कि बसपा के मत्री उनकी नही सुनते। जिस विभाग मे कैबिनेट मत्री बसपा के हे ओर राज्यमत्री सपा के हें, वहॉ दोनो मे कोई तालमेल नही है।

वरिष्ठ चितक सुरेन्द्र मोहन के विचार मे अलग-अलग खेमो का होना तो कोइ बडी बात नही है, पर सपा और बसपा के शीर्ष नेताआ के द्वद्वो मे परस्पर टकराव हाना सकट और बिखराव का कारण रहा। जिसे रोकने के प्रयास नही हुए।

सदभ एव टिप्पणी

- काशाराम के दा चेहरे पृ 21
- इंडिया टुड नइ दिल्ली 31 जनवरी 1986
- जनसत्ता नइ दिल्ली 13 मई 1998
- सड आनद बाजार पत्रिका प्रकाशन प्रफुल्ल सरकार स्ट्रीट कलकत्ता 13 19 फरवरी 1994 पृ 32
- काशीराम का खुला पत्र आर के सिह *काशीराम ओर बीएसपी* कुशवाहा बुक डिस्ट्रीब्यूटर इलाहाबाद (उत्तर प्रदश) 1996 पृष्ठ 92 93
- यह सागठनिक विवरण आर के सिह की पुस्तक से।
- आम्बथ राजन उपरोक्त।
- *पट्रियट और इडियन एक्सप्रस* मे छपी सामग्री क आधार पर।
- *हिदुस्तान टाइम्स* 6 अप्रेल 1991
- बहुजन सगठक कराल बाग नई दिल्ली 29 मइ 1995
- बहुजन सगठक का यह वर्णन आर के सिह की पुस्तक से।
- *हिदुस्तान टाइम्स* 6 अप्रल 1991
- दख 23 अप्रल 1991 का *इडियन एक्सप्रेस* ओर 29 अप्रेल 1991 का *टाइम्स ऑव इडिया।*
- अभय कुमार दुबे *काशीराम एक आलोचनात्मक अध्ययन* राजकमल दिल्ली 1997 पृष्ठ 82 84
- अभय कुमार दुबे पृष्ठ 84 93
- माया नइ दिल्ली 28 फरवरी 1994
- समाजवादी चितक सुरेन्द्र माहन से 10 जुलाई 1994 को उनके निवास 17 वी पी हाउस रफीमार्ग नइ दिल्ली पर बातचीत के अधार पर।

काशीराम की दक्षिण यात्रा

पी गापाल लिखते हे कि 'काशीराम का दक्षिण राज्यो का दोरा कुछ वेसा ही था, जेस कोइ बादशाह साम्राज्य-विस्तार के अभियान पर निकला हो। उत्तर प्रदेश फतह स उत्साहित होकर काशीराम उन राज्यो मे मुलायमो की तलाश मे जुटे। वैसे भी उत्तर प्रदेश के किले मे सेध लगाने के बाद काशीराम घोषणा कर चुके थे कि उनका उद्देश्य दिल्ली का सिहासन हथियाना हे। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए काशीराम का दक्षिण अभियान आरभ हुआ।'

काशीराम की राजनैतिक यात्रा आध्र प्रदेश से शुरू हुइ। तेलुगू देशम पार्टी के एन टी रामाराव और कॉग्रेस दोनो के लिए ही आध्रा मे काशीराम की यात्रा का अथ तीसरी ताकत का सकेत थी। आन्ध्र प्रदेश मे परपरागत तोर से रेड्डी जाति का दबदबा रहा था। फिर एन टी आर के सत्तासीन होने पर 'कम्मा' के पास ताकत आइ। राज्य के गठन के बाद से ही कॉग्रेस पर हावी 'रेड्डी' ओर तेलुगू देशम पर हावी 'कम्मा' एक के बाद एक सत्ता पर सवारी गॉठ रहे थे। बावजूद इसके कि राज्य की आबादी मे 'कप्पू' समुदाय का अनुपात अधिक है। काशीराम ने कप्पू समुदाय के नेता शिवशकर को अपने साथ लाने की विशेष कोशिशे की। वे उन्हे बहुजन समाज पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष बनाने को भी तैयार थे। जिसकी घोषणा उन्होने कप्पू समुदाय के सगठन **'कपुनाड'** के सदस्यो को सबोधित करने के दौरान की।

तेलुगू देशम के सत्ता मे आने पर कप्पू समुदाय के लोगो ने इस उम्मीद मे उस पार्टी को वोट दिए थे कि वे सभी कप्पू समुदाय के लोगो को पिछडे वर्ग मे शामिल करेगी, पर एन टी आर सरकार इस कार्य मे फेल हो गइ। परिणामस्वरूप 1989 मे उन्होने पुन कॉग्रेस की तरफ रुख किया। लेकिन कॉग्रेस भी उनकी समस्या को हल नही कर सकी थी।

असल मे दक्षिण राज्यो मे केवल आध्र प्रदेश मे ही काशीराम को सफलता मिलने की उम्मीद रही थी। अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछडा वर्ग ओर मुस्लिम को मिलाकर राज्य मे इनकी आबादी 70 प्रतिशत बनती हे। जो काशीराम के लिए एक जखीरा साबित हो सकता था। चूँकि इस राज्य मे काशीराम का मुख्य जोर दलितो

की जगह पिछडे समुदाय 'कप्पू' को आकृष्ट करने पर था। इससे दलितो को निराश होना पडा। स्थानीय स्तर पर दलितो के कुछ नेताओ के साथ सामाजिक कार्यकर्ताओ को इस बात का भी मलाल था कि किस तरह एक दलित नेता वोटो के लिए पिछडी जाति के नेता मे तब्दील हो रहा है। हालॉकि दलित महासभा के अध्यक्ष और 1991 मे गुटुर जिले के 'त्सुदूर' गॉव मे दलित हत्याकाड के विरोध मे मुखर रूप मे आवाज उठाने क लिए चचित हुए **कट्टी पद्म राव** ओर पुराने नक्सली तथा पीपुल्स वार ग्रुप के **सत्यमूर्ति** बसपा मे शामिल हो गए थे। एक तरह से राज्य मे बसपा के उत्कर्ष के लिए इसे सफलता भी माना गया था, लेकिन इन सबका असर बहुत कम हुआ।

जबकि माया की रपट मे सत्यमूर्ति को पुराने नक्सली और पीपुल्स वार ग्रुप मे निष्कासित बतलाया गया है। और पद्मराव को दलित महासभा के नेता और गुजरे जमाने का बुद्धिजीवी बतलाया है। जाहिर बात थी कि उस क्षेत्र मे इनका प्रभाव कम हो रहा था। वे विकट परिस्थितियो मे चमत्कारी सिद्ध नही हो रहे थे।

आध्र की राजनीति मे कट्टी का वाम विरोधी रवैया भी जग-जाहिर हो रहा था। बसपा मे कुछ ऐसे भी आना चाहते थे जो नक्सलवाद से सबध तोडकर भूमिगत जीवन से निकलना चाहते थे। जिन्हे राजनैतिक सरक्षण की जरूरत थी। बसपा की रैली मे जुटी 10,000 की अच्छी-खासी भीड मे यह भी पता चला कि 'पीपुल्स वार' जेसे सगठनो की बहिष्कार की राजनीति के कारण कुछ लोग बसपा मे जा सकते है।

वेसे आध्रा मे काशीराम की यात्रा से इतना तो हुआ कि कॉग्रेस सरकार मे तत्कालीन मुख्यमत्री विजय भास्कर रेड्डी ने आगामी चुनावो मे पिछडे वोट बैक म किसी भी सभावित दरार को रोकने तथा 'कप्पू' समुदाय के लोगो को फुसलाने के लिए तुरता-फुरती मे निम्नलिखित घोषणाऍ कर दी—

- कप्पू समुदाय को पिछडे वर्ग मे लाने के लिए सबधित जॉच कार्य हेतु पिछडा वर्ग आयोग का गठन।
- स्थानीय निकाय के चुनावो मे पिछडे वर्गो का 25 से 33 प्रतिशत आरक्षण बढाने पर विचार।
- राज्य मे विभिन्न राजनैतिक पदो पर कप्पू तथा अन्य कमजोर वर्गो की नियुक्ति मे 60 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा।

काशीराम के आध्र प्रदेश से बगलूर पहुॅचने के आसपास ही कोलार जिले मे स्थानीय कॉग्रेसी नेता वेकटारम्मा गौडा के द्वारा एक दलित को बुरी तरह से पीटा गया तथा जिसे अपनी ही टट्टी खाने पर मजबूर किया गया। इस घटना पर काशीराम की कोई विशेष सोच नही थी। उनके लिए दलित उत्पीडन की यह आम घटना थी और इस साधारण उत्पीडन की घटना के लिए राजनीति के असाधारण रथ को नहीं रोका जा सकता था। अतत उन्होने जनता दल के देवगौडा से समझौता किया। दलित, पिछडे नेताओ की तुलना मे देवगोडा को प्राथमिकता देने के उनके फैसले

से दलितो के बीच अच्छी-खासी नाराजगी होती और वह हुई भी। क्योकि कर्नाटक मे गोडा जमीदार ही जातीय उत्पीडन की मुख्य शक्ति रही है। उनके लिए यह आश्चर्य की बात भी थी कि गौडा बहुजन समाज का हिस्सा कैसे हो सकते है।

वही दूसरी ओर कर्नाटक मे काशीराम की रणनीति का एक हिस्सा यह भी रहा कि वे असतुष्ट कॉग्रेसियो को पार्टी से और भी दूर ले जाना चाहते थे। उदाहरण क लिए, केद्रीय मंत्रिमडल से अलग हुए चिता मोहन ने पार्टी छोडकर बीएसपी ज्वाइन कर ली और वे बगलोर मे काशीराम के साथ रहे।

जनता दल के प्रदेश अध्यक्ष एच डी देवगोडा ने भी काशीराम से समझौता करने मे कोइ आना-कानी नही की। बशर्ते कि मिली-जुली सरकार का उन्हे मुख्यमत्री बनाया जाए। काशीराम के दूसरे साथी एस बगारप्पा रहे। उनकी भी यही शर्त थी कि उन्हे प्रदेश का मुख्यमत्री बनाया जाए। काशीराम के सामने अनगिनत विकल्प थे। अपनी बगलोर यात्रा के दौरान जयन्त मलहोत्रा की मदद से उन्होने वीरप्पा मोइली से भी मुलाकात की। मूल बात यह है कि काशीराम ने कर्नाटक मे राजनैतिक दस्तक देकर सबके लिए दरवाजे खोलकर बात करने की रणनीति अपनाई।

पी गोपाल लिखते है कि पिछडे समाज के नेताओ की तुलना मे देवगौडा को प्राथमिकता देने के उनके फैसले से कई भौहे तन गई, क्योकि कर्नाटक मे गौडा जमीदार ही जातीय उत्पीडन की मुख्य शक्ति रही है। हर किसी को ताज्जुब होता है कि गोडा बहुजन समाज का हिस्सा कैसे हो सकते है। आमतौर पर काशीराम कॉग्रेस की ही तर्ज पर दलित, पिछडो और मुसलमानो के बीच सतुलन बनाने की नीति पर चलते है।

कभी देवराज अर्स पिछडो, दलितो और अल्पसख्यको को गोलबद करने मे कुल मिलाकर कामयाब रहे थे। इसके अलावा अर्स के भूमि सुधार कार्यक्रमो से सामाजिक शक्ति सतुलन मे कुछ तब्दीली आई थी। वैसे प्रदेश मे काशीराम की यात्रा ने सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन के लिए नए दरवाजे भी खोले थे।

कोची केरल मे काशीराम से एस एन डी पी (श्री नारायन धर्म पाटीपालान यागम) के पिछडे 'इझावा' समुदाय के कार्यकताओ की मुलाकात इस मायने मे महत्त्वपूर्ण कही जा सकती हे कि कॉग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओ से विशेष बातचीत न होकर प्रदेश के पिछडे समुदाय से राजनैतिक समझौते के लिए वार्तालाप चला। वैसे वरिष्ठ कम्युनिस्ट नेता गौरी के माकपा से निष्कासन के बाद काशीराम की बातचीत गौरी से भी हुई। हालॉकि स्वय गौरी अम्मा बसपा के साथ तालमेल की इच्छुक नहीं थी और उन्होने स्पष्ट कर दिया कि उनका प्रयोग उत्तर प्रदेश की तर्ज पर नही होगा। केरल मे इस बीच काशीराम ने **इस्लामिक सेवक सघ** के अब्दुल नासिर माहेलहानी से भी बात चला रखी थी।

हमारी राय मे बसपा के सुप्रीमो काशीराम द्वारा दक्षिण राज्यो को छूकर चले

की जगह पिछडे समुदाय 'कप्पू' को आकृष्ट करने पर था। इससे दलितो को निराश होना पडा। स्थानीय स्तर पर दलितो के कुछ नेताओ के साथ सामाजिक कार्यकर्ताआ को इस बात का भी मलाल था कि किस तरह एक दलित नेता वोटो के लिए पिछडी जाति के नेता मे तब्दील हो रहा है। हालॉकि दलित महासभा के अध्यक्ष और 1991 मे गुटुर जिले के 'त्सुदूर' गॉव मे दलित हत्याकाड के विरोध मे मुखर रूप मे आवाज उठाने क लिए चचित हुए **कट्टी पद्म राव** ओर पुराने नक्सली तथा पीपुल्स वार ग्रुप के **सत्यमूर्ति** बसपा मे शामिल हो गए थे। एक तरह से राज्य मे बसपा के उत्कर्ष के लिए इसे सफलता भी माना गया था, लेकिन इन सबका असर बहुत कम हुआ।

जबकि माया की रपट मे सत्यमूर्ति को पुराने नक्सली और पीपुल्स वार ग्रुप मे निष्कासित बतलाया गया है। और पद्मराव को दलित महासभा के नेता और गुजरे जमाने का बुद्धिजीवी बतलाया है। जाहिर बात थी कि उस क्षेत्र मे इनका प्रभाव कम हो रहा था। वे विकट परिस्थितियो मे चमत्कारी सिद्ध नही हो रहे थे।

आध्र की राजनीति मे कट्टी का वाम विरोधी रवैया भी जग-जाहिर हो रहा था। बसपा मे कुछ ऐसे भी आना चाहते थे जो नक्सलवाद से सबध तोडकर भूमिगत जीवन से निकलना चाहते थे। जिन्हे राजनैतिक सरक्षण की जरूरत थी। बसपा की रैली मे जुटी 10,000 की अच्छी-खासी भीड मे यह भी पता चला कि 'पीपुल्स वार' जैसे सगठनो की बहिष्कार की राजनीति के कारण कुछ लोग बसपा मे जा सकते है।

वेसे आध्रा मे काशीराम की यात्रा से इतना तो हुआ कि कॉग्रेस सरकार मे तत्कालीन मुख्यमत्री विजय भास्कर रेड्डी ने आगामी चुनावो मे पिछडे वोट बैक मे किसी भी सभावित दरार को रोकने तथा 'कप्पू' समुदाय के लोगो को फुसलाने के लिए तुरता-फुरती मे निम्नलिखित घोषणाऍ कर दी—

— कप्पू समुदाय को पिछडे वर्ग मे लाने के लिए सबधित जॉच कार्य हेतु पिछडा वर्ग आयोग का गठन।
— स्थानीय निकाय के चुनावो मे पिछडे वर्गो का 25 से 33 प्रतिशत आरक्षण बढाने पर विचार।
— राज्य मे विभिन्न राजनैतिक पदो पर कप्पू तथा अन्य कमजोर वर्गो की नियुक्ति मे 60 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा।

काशीराम के आध्र प्रदेश से बगलूर पहुॅचने के आसपास ही कोलार जिले मे स्थानीय कॉग्रेसी नेता वेकटारम्मा गौडा के द्वारा एक दलित को बुरी तरह से पीटा गया तथा जिसे अपनी ही टट्टी खाने पर मजबूर किया गया। इस घटना पर काशीराम की कोइ विशेष सोच नही थी। उनके लिए दलित उत्पीडन की यह आम घटना थी और इस साधारण उत्पीडन की घटना के लिए राजनीति के असाधारण रथ को नहीं रोका जा सकता था। अतत उन्होने जनता दल के देवगौडा से समझौता किया। दलित, पिछडे नेताओ की तुलना मे देवगौडा को प्राथमिकता देने के उनके फैसले

से दलितो के बीच अच्छी-खासी नाराजगी होती ओर वह हुई भी। क्योकि कर्नाटक मे गोडा जमीदार ही जातीय उत्पीडन की मुख्य शक्ति रही है। उनके लिए यह आश्चर्य की बात भी थी कि गौडा बहुजन समाज का हिस्सा कैसे हो सकते है।

वही दूसरी ओर कर्नाटक मे काशीराम की रणनीति का एक हिस्सा यह भी रहा कि वे असतुष्ट कॉग्रेसियो को पार्टी से और भी दूर ले जाना चाहते थे। उदाहरण क लिए, केद्रीय मंत्रिमडल से अलग हुए चिता मोहन ने पार्टी छोडकर बीएसपी ज्वाइन कर ली ओर वे बगलौर मे काशीराम के साथ रहे।

जनता दल के प्रदेश अध्यक्ष एच डी देवगोडा ने भी काशीराम से समझौता करने मे कोइ आना-कानी नही की। बशर्ते कि मिली-जुली सरकार का उन्हे मुख्यमत्री बनाया जाए। काशीराम के दूसरे साथी एस बगारप्पा रहे। उनकी भी यही शर्त थी कि उन्हे प्रदेश का मुख्यमत्री बनाया जाए। काशीराम के सामने अनगिनत विकल्प थ। अपनी बगलोर यात्रा के दोरान जयन्त मलहोत्रा की मदद से उन्होने वीरप्पा मोइली से भी मुलाकात की। मूल बात यह है कि काशीराम ने कर्नाटक मे राजनैतिक दस्तक दकर सबके लिए दरवाजे खोलकर बात करने की रणनीति अपनाई।

पी गोपाल लिखते है कि पिछडे समाज के नेताओ की तुलना मे देवगौडा को प्राथमिकता देने के उनके फैसले से कई भौंहे तन गई, क्योकि कर्नाटक मे गौडा जमीदार ही जातीय उत्पीडन की मुख्य शक्ति रही है। हर किसी को ताज्जुब होता हे कि गोडा बहुजन समाज का हिस्सा कैसे हो सकते है। आमतौर पर काशीराम कॉग्रेस की ही तर्ज पर दलित, पिछडो और मुसलमानो के बीच सतुलन बनाने की नीति पर चलते है।

कभी देवराज अस पिछडो, दलितो और अल्पसख्यको को गोलबद करने मे कुल मिलाकर कामयाब रहे थे। इसके अलावा अर्स के भूमि सुधार कार्यक्रमो से सामाजिक शक्ति सतुलन मे कुछ तब्दीली आई थी। वैसे प्रदेश मे काशीराम की यात्रा ने सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन के लिए नए दरवाजे भी खोले थे।

कोची केरल मे काशीराम से एस एन डी पी (श्री नारायन धर्म पाटीपालान यागम) के पिछडे 'इझावा' समुदाय के कार्यकताओ की मुलाकात इस मायने मे महत्त्वपूर्ण कही जा सकनी है कि कॉग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओ से विशेष बातचीत न होकर प्रदेश के पिछडे समुदाय से राजनैतिक समझौते के लिए वार्तालाप चला। वैसे वरिष्ठ कम्युनिस्ट नेता गौरी के माकपा से निष्कासन के बाद काशीराम की बातचीत गौरी से भी हुई। हालॉकि स्वय गौरी अम्मा बसपा के साथ तालमेल की इच्छुक नहीं थी और उन्होने स्पष्ट कर दिया कि उनका प्रयोग उत्तर प्रदेश की तर्ज पर नही होगा। केरल मे इस बीच काशीराम ने **इस्लामिक सेवक सघ** के अब्दुल नासिर माहेलहानी से भी बात चला रखी थी।

हमारी राय मे बसपा के सुप्रीमो काशीराम द्वारा दक्षिण राज्यो को छूकर चले

आने वाली स्थिति उस समय रही। बाद के दौर मे न काशीराम पुन उन राज्यो मे गए ओर न बसपा के कार्यकर्त्ता। इसे स्पर्शीय राजनैतिक आदोलन भी कहा जा सकता हे। तब तक मायावती उत्तर प्रदेश मे साम्राज्ञी बन चुकी थी। इसलिए उस राज्य की राजनैतिक परिदृश्य बदल चुका था। जो इन राज्यो मे पार्टी के प्रत्याशी और कायकर्त्ता थे, वे सब सत्ता की लडाई लडने मे व्यस्त थे न कि बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर दशन के प्रचार-प्रसार मे। उनके सवाल अलग थे और समस्याएँ भी। पर स्वार्थ एक जेसे थे। वे राजनीति की धुरी के चारो तरफ घूमने वाले पहिये थे।

मूलत देखा जाए तो उत्तरी भारत से दक्षिण भारत की दलित राजनीति के साथ आदोलन को जोडने के बिदुओ पर कभी गभीरतापूर्वक चर्चा नही हुई। न आजादी के पूव ओर न बाद मे। बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर ने अवश्य ही इस तरफ प्रयास किया था, जिसे उनके अनुयायियो ने आगे नही बढाया और वही छोडकर अपने-अपने सिरे की तलाश मे लगे रहे। आजादी के बाद रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया ने भी दक्षिण राज्यो की राजनीति को राजनीति से जोडा था और फिर बसपा का परचम काशीराम लेकर गए थे।

दक्षिण भारत की राजनैतिक विषय पर गहरी पैठ रखने वाले बुद्धिजीवियो का मानना था काशीराम ने दक्षिण भारत की राजनीति को प्रभावित करने की अपनी क्षमता को जरूरत से ज्यादा ही ऑका है। वे जिस आक्रामक और भडकाऊ भाषा का प्रयोग करते है, वह दक्षिण के लिए बिलकुल ही नया है। जातीय गुट, जो उत्तर भारत मे काफी स्पष्ट है, तमिलनाडु व आध्र को छोडकर अन्य राज्यो मे लगभग अदृश्य है। हालॉकि अनु जातियो की दक्षिण मे भी कमोबेश वही स्थिति है, जो उत्तर मे है। उत्पीडन वहा भी है और उत्पीडन के वैसे ही औजार भी।

इस तरह आध्र प्रदेश को छोडकर दक्षिण मे बसपा की सभावनाएँ धूमिल रही। बगारप्पा ओर गोरी का स्थानीय साम्राज्य उत्तर के इस 'बादशाह' के ताल पर कदमताल करने को तेयार नही हुए। एक पत्रकार के अनुसार काशीराम को समझना चाहिए कि स्थानीय परिस्थितियो के मुताबिक ठोस काम किए बगैर ऊपर ही ऊपर इस कल्पना को अखिल भारतीय स्वरूप देना हॅसी-खेल नही है। जो काशीराम से ज्यादा उम्मीद लगाए बैठे थे, उन्हे निराश होना पडा। आध्र प्रदेश की सभाओ मे उनके भाषण, उत्तर प्रदेश के चुनावी भाषणो के दोहराव थे।

वैसे देखा जाए तो हैदराबाद मे अपनी प्रेस काफ्रेस मे काशीराम ने अपने राजनीतिक दर्शन की व्याख्या की। आरक्षण पर उनके विचार दलितो और पिछडो के गले किसी तरह नही उतरे। बहुजनो मे उनके समर्थको की बडी सख्या सरकारी कर्मचारियो की है जो वर्तमान आरक्षण नीति के प्रबल समर्थक है और शिक्षा, नौकरी प्रोन्नति ओर चुनावो मे आरक्षण को कायम रखने के पक्षधर है। काशीराम ने यहॉ यह भी कहा है कि इस समय उनके पास दलित महिलाओ की समस्याओ की तरफ

नीचे हम सूची दे रहे है–

उम्मीदवारों की सख्या (1996)*

कॉंग्रेस	78
नेशनल काफ्रेस	77
भारतीय जनता पार्टी	56
अवामी लीग	39
बसपा	24
जनता दल	71
पैथर्स पार्टी	44
निर्दलीय और अन्य	116

(स्थिति चुनाव के तीसरे चरण तक)

इसके बाद लद्दाख मे विधान सभा क्षेत्र दो से बढकर चार हो गए। बहुसख्यक बाद्ध जनता के पिछले वष केद्र सरकार की गठित लद्दाख पवतीय विकास स्वायत्तता परिषद् से हुए मोहभग को भी नेशनल काफ्रेस ने बोद्धो के बीच अपना जनाधार बढाने के लिए भुनाने का प्रयास किया। बोद्ध परपरागत तोर पर कॉंग्रेस को वोट दत रहे है।

सदर्भ एव टिप्पणी

- समकालीन जनमत 302 इलीट हाउस 36 जमरुदपुर कम्युनिटी सटर नइ दिल्ली 16 31 माच 1994 पृष्ठ 16
- सडे आनद बाजार पत्रिका प्रकाशन प्रफुल सरकार स्ट्रीट कलकत्ता 13 19 फरवरी 1994
- माया हिदी मासिक 15 मार्च 1994 पृष्ठ 13
- समकालीन जनमत नइ दिल्ली पृष्ठ 17
- सडे कलकत्ता पृष्ठ 35
- माया पृ 12
- समकालीन जनमत पृ 17
- माया पृष्ठ 13
- वही पृष्ठ 13
- सडे पृष्ठ 25
- वही पृष्ठ 25
- 4 मइ 2000 को जम्मू स्थित भाइ परमानद पूव मत्री जम्मू एण्ड कश्मीर तथा वतमान राज्यपाल हरियाणा के निवास पर बातचीत के आधार पर।

आने वाली स्थिति उस समय रही। बाद के दौर मे न काशीराम पुन उन राज्यो मे गए और न बसपा के कार्यकर्त्ता। इसे स्पर्शीय राजनैतिक आदोलन भी कहा जा सकता हे। तब तक मायावती उत्तर प्रदेश मे साम्राज्ञी बन चुकी थी। इसलिए उस राज्य की राजनैतिक परिदृश्य बदल चुका था। जो इन राज्यो मे पार्टी के प्रत्याशी और कायकर्त्ता थे, वे सब सत्ता की लडाई लडने मे व्यस्त थे न कि बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर दशन के प्रचार-प्रसार मे। उनके सवाल अलग थे और समस्याएँ भी। पर स्वार्थ एक जेसे थे। वे राजनीति की धुरी के चारो तरफ घूमने वाले पहिये थे।

मूलत देखा जाए तो उत्तरी भारत से दक्षिण भारत की दलित राजनीति के साथ आदोलन को जोडने के बिदुओ पर कभी गभीरतापूर्वक चर्चा नही हुई। न आजादी के पूव ओर न बाद मे। बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर ने अवश्य ही इस तरफ प्रयास किया था, जिसे उनके अनुयायियो ने आगे नही बढाया और वही छोडकर अपने-अपने सिरे की तलाश मे लगे रहे। आजादी के बाद रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया ने भी दक्षिण राज्यो की राजनीति को राजनीति से जोडा था और फिर बसपा का परचम काशीराम लेकर गए थे।

दक्षिण भारत की राजनैतिक विषय पर गहरी पैठ रखने वाले बुद्धिजीवियो का मानना था काशीराम ने दक्षिण भारत की राजनीति को प्रभावित करने की अपनी क्षमता को जरूरत से ज्यादा ही ऑका है। वे जिस आक्रामक और भडकाऊ भाषा का प्रयोग करते है, वह दक्षिण के लिए बिलकुल ही नया है। जातीय गुट, जो उत्तर भारत मे काफी स्पष्ट है, तमिलनाडु व आध्र को छोडकर अन्य राज्यो मे लगभग अदृश्य हे। हालॉकि अनु जातियो की दक्षिण मे भी कमोबेश वही स्थिति है, जो उत्तर मे है। उत्पीडन वहा भी है और उत्पीडन के वैसे ही औजार भी।

इस तरह आध्र प्रदेश को छोडकर दक्षिण मे बसपा की सभावनाएँ धूमिल रही। बगारप्पा और गौरी का स्थानीय साम्राज्य उत्तर के इस 'बादशाह' के ताल पर कदमताल करने को तैयार नही हुए। एक पत्रकार के अनुसार काशीराम को समझना चाहिए कि स्थानीय परिस्थितियो के मुताबिक ठोस काम किए बगैर ऊपर ही ऊपर इस कल्पना को अखिल भारतीय स्वरूप देना हॅसी-खेल नही है। जो काशीराम से ज्यादा उम्मीद लगाए बैठे थे, उन्हे निराश होना पडा। आध्र प्रदेश की सभाओ मे उनके भाषण, उत्तर प्रदेश के चुनावी भाषणो के दोहराव थे।

वैसे देखा जाए तो हैदराबाद मे अपनी प्रेस काफ्रेस मे काशीराम ने अपने राजनीतिक दर्शन की व्याख्या की। आरक्षण पर उनके विचार दलितो और पिछडो के गले किसी तरह नही उतरे। बहुजनो मे उनके समर्थको की बडी सख्या सरकारी कर्मचारियो की है जो वर्तमान आरक्षण नीति के प्रबल समर्थक है और शिक्षा, नौकरी प्रोन्नति ओर चुनावो मे आरक्षण को कायम रखने के पक्षधर है। काशीराम ने यहॉ यह भी कहा है कि इस समय उनके पास दलित महिलाओ की समस्याओ की तरफ

ध्यान देने के लिए बिलकुल समय नही है। उन्होने कहा कि इस मुद्दे पर, "मै अम्बेडकर के विचारो का विरोधी हूँ।"

'माया' प्रतिनिधि के एक सवाल के जवाब मे काशीराम ने साफतौर पर ऐलान किया कि देश मे चले कम्युनिस्ट और नक्सलवादी आदालन तथा किसान आदोलन आदि सभी दलित विरोधी ओर ब्राह्मणवादी आदोलन थे। स्पष्ट हे कि उनकी इस घापणा का मकसद सनसनी पेदाकर शीघ्र प्रचार पाना था।

मजलिस-ए-इत्तिहादुल मुस्लिमीन के नेता **सुल्तान सलाउद्‌दीन ओवैसी** ने भी बाबरी मस्जिद मुद्द पर काशीराम की टिप्पणी पर गहरी नाराजगी व्यक्त की। हैदराबाद मे एक सगोष्ठी मे काशीराम ने कहा कि बाबरी मस्जिद का मुद्‌दा अब हमेशा के लिए खत्म हा चुका हे। इस पर ओवैसी ने तीखेपन से कहा कि मस्जिद मुद्‌दा तब तक खत्म नही होगा जब तक बाबरी मस्जिद उसी जगह पर नही बन जाती।

तमिलनाडु की सवाधिक आक्रामक पिछडी जाति है वन्नियार। वन्नियारो का द्रमुक ओर अद्रमुक से मोहभग हो चुका है। उन्होने अपनी पार्टी बना ली है **पत्तलि मक्कल काची** (पीएमके)। अन्य पिछडे वर्ग व अनुसूचित जातियॉ कॉग्रेस, अन्नाद्रमुक, द्रमुक व भाजपा के बीच बॅटी हुई है। काशीराम के साथ कोई नही है। ओर फिर उनकी उत्तर भारतीय पृष्ठभूमि भी उनके खिलाफ जाएगी। माया सवाददाताओ की राज्य मे गयी टीम का यह भी विश्लेषण था कि अगर काशीराम अपने दम पर चुनावी मदान मे उतरना चाहे तो इतनी क्षमता तो उनकी बनी कि बहुजन समाज पार्टी दूसरो का नुकसान कर दे खासतोर से काग्रेस का।

दक्षिण राज्यो से इतर बहुजन समाज पार्टी के सुप्रीमो काशीराम के अन्य राज्यो के राजनेतिक दौरो का इतना प्रभाव अवश्य ही हुआ कि दलितो के हित मे या दलितो से सबधित जो योजनाएँ अभी तक अधर मे थी, वे पूरी होने लगी। उनकी दी गई दस्तक ने अपना प्रभाव अवश्य ही छोडा। वह बात अवश्य है कि किस राज्य मे कौन सी योजना कितने समय मे और कैसे पूरी हुई।

उदाहरण के लिए सडे की रिपोर्ट हमे बतलाती है कि बबई के शिवाजी पाक मे काशीराम के जलसे से 48 घटे पूर्व ही महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमत्री शरद पवार ने दशको से मराठवाडा विश्वविद्यालय के नामातरण की समस्या को सुलझा दिया। हालॉकि इस उपलब्धि के लिए महाराष्ट्र के दलित नेताओ के द्वारा शुरू किए गए सघर्षपूण अभियानो तथा बलिदानो को ही श्रेय दिया जाएगा, पर राजनीति के ऊॅट की किसी को खबर नही होती कि वह किस करवट बैठ जाए।

गुजरात के मुख्यमत्री चिमन भाई फ्टेल ने तो काशीराम को इतना मोका ही नही दिया कि वे राज्य मे आकर आरक्षण के समर्थन मे रैलियॉ करते। उन्होने आनन-फानन मे पहली मई, 1995 से आरक्षण के प्रतिशत बढाने की घोषणा कर दी। हालॉकि पूव स्थिति मे वे आरक्षण विरोधी के रूप मे बदनाम रहे। कुछ लोगो ने इसे काशीराम

आने वाली स्थिति उस समय रही। बाद के दौर मे न काशीराम पुन उन राज्यो मे गए और न बसपा के कार्यकर्त्ता। इसे स्पर्शीय राजनैतिक आदोलन भी कहा जा सकता हे। तब तक मायावती उत्तर प्रदेश मे साम्राज्ञी बन चुकी थी। इसलिए उस राज्य की राजनैतिक परिदृश्य बदल चुका था। जो इन राज्यो मे पार्टी के प्रत्याशी ओर कायकर्त्ता थे, वे सब सत्ता की लडाई लडने मे व्यस्त थे न कि बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर दशन के प्रचार-प्रसार मे। उनके सवाल अलग थे और समस्याएँ भी। पर स्वार्थ एक जैसे थे। वे राजनीति की धुरी के चारो तरफ घूमने वाले पहिये थे।

मूलत देखा जाए तो उत्तरी भारत से दक्षिण भारत की दलित राजनीति के साथ आदोलन को जोडने के बिदुओ पर कभी गभीरतापूर्वक चर्चा नही हुई। न आजादी के पूव ओर न बाद मे। बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर ने अवश्य ही इस तरफ प्रयास किया था, जिसे उनके अनुयायियो ने आगे नही बढाया और वही छोडकर अपने-अपन सिरे की तलाश मे लगे रहे। आजादी के बाद रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया ने भी दक्षिण राज्यो की राजनीति को राजनीति से जोडा था और फिर बसपा का परचम काशीराम लेकर गए थे।

दक्षिण भारत की राजनैतिक विषय पर गहरी पैठ रखने वाले बुद्धिजीवियो का मानना था काशीराम ने दक्षिण भारत की राजनीति को प्रभावित करने की अपनी क्षमता को जरूरत से ज्यादा ही ऑका है। वे जिस आक्रामक और भडकाऊ भाषा का प्रयोग करते है, वह दक्षिण के लिए बिलकुल ही नया है। जातीय गुट, जो उत्तर भारत मे काफी स्पष्ट है, तमिलनाडु व आध्र को छोडकर अन्य राज्यो मे लगभग अदृश्य हे। हालॉकि अनु जातियो की दक्षिण मे भी कमोबेश वही स्थिति है, जो उत्तर मे हे। उत्पीडन वहा भी है और उत्पीडन के वैसे ही औजार भी।

इस तरह आध्र प्रदेश को छोडकर दक्षिण मे बसपा की सभावनाएँ धूमिल रही। बगारप्पा ओर गौरी का स्थानीय साम्राज्य उत्तर के इस 'बादशाह' के ताल पर कदमताल करने को तैयार नही हुए। एक पत्रकार के अनुसार काशीराम को समझना चाहिए कि स्थानीय परिस्थितियो के मुताबिक ठोस काम किए बगैर ऊपर ही ऊपर इस कल्पना को अखिल भारतीय स्वरूप देना हॅसी-खेल नही है। जो काशीराम से ज्यादा उम्मीद लगाए बैठे थे, उन्हे निराश होना पडा। आध्र प्रदेश की सभाओ मे उनके भाषण, उत्तर प्रदेश के चुनावी भाषणो के दोहराव थे।

वैसे देखा जाए तो हैदराबाद मे अपनी प्रेस काफ्रेस मे काशीराम ने अपने राजनीतिक दर्शन की व्याख्या की। आरक्षण पर उनके विचार दलितो और पिछडो के गले किसी तरह नही उतरे। बहुजनो मे उनके समर्थको की बडी सख्या सरकारी कर्मचारियो की है जो वर्तमान आरक्षण नीति के प्रबल समर्थक है और शिक्षा, नौकरी प्रोन्नति और चुनावो मे आरक्षण को कायम रखने के पक्षधर है। काशीराम ने यहॉ यह भी कहा है कि इस समय उनके पास दलित महिलाओ की समस्याओ की तरफ

ध्यान देने के लिए बिलकुल समय नही है। उन्होने कहा कि इस मुद्दे पर, "मे अम्बेडकर के विचारो का विरोधी हूँ।"

'माया' प्रतिनिधि के एक सवाल के जवाब मे काशीराम ने साफतौर पर ऐलान किया कि देश मे चले कम्युनिस्ट और नक्सलवादी आदोलन तथा किसान आदोलन आदि सभी दलित विरोधी ओर ब्राह्मणवादी आदोलन थे। स्पष्ट है कि उनकी इस घाषणा का मकसद सनसनी पैदाकर शीघ्र प्रचार पाना था।

मजलिस-ए-इत्तिहादुल मुस्लिमीन के नेता **सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी** ने भी बाबरी मस्जिद मुद्दे पर काशीराम की टिप्पणी पर गहरी नाराजगी व्यक्त की। हैदराबाद मे एक सगाष्ठी मे काशीराम ने कहा कि बाबरी मस्जिद का मुद्दा अब हमेशा के लिए खत्म हा चुका है। इस पर ओवैसी ने तीखेपन से कहा कि मस्जिद मुद्दा तब तक खत्म नही होगा जब तक बाबरी मस्जिद उसी जगह पर नही बन जाती।

तमिलनाडु की सवाधिक आक्रामक पिछडी जाति है वन्नियार। वन्नियारो का द्रमुक ओर अद्रमुक से मोहभग हो चुका है। उन्होने अपनी पार्टी बना ली हे **पत्तलि मक्कल काची** (पीएमके)। अन्य पिछडे वर्ग व अनुसूचित जातियाँ कॉग्रेस, अन्नाद्रमुक, द्रमुक व भाजपा के बीच बॅटी हुई है। काशीराम के साथ कोई नही हे। ओर फिर उनकी उत्तर भारतीय पृष्ठभूमि भी उनके खिलाफ जाएगी। माया सवाददाताओ की राज्य म गयी टीम का यह भी विश्लेषण था कि अगर काशीराम अपने दम पर चुनावी मदान मे उतरना चाहे तो इतनी क्षमता तो उनकी बनी कि बहुजन समाज पार्टी दूसरो का नुकसान कर दे खासतौर से काग्रेस का।

दक्षिण राज्यो से इतर बहुजन समाज पार्टी के सुप्रीमो काशीराम के अन्य राज्यो के राजनैतिक दोरो का इतना प्रभाव अवश्य ही हुआ कि दलितो के हित मे या दलितो से सबधित जो योजनाएँ अभी तक अधर मे थी, वे पूरी होने लगी। उनकी दी गई दस्तक ने अपना प्रभाव अवश्य ही छोडा। वह बात अवश्य है कि किस राज्य मे कौन सी योजना कितने समय मे और कैसे पूरी हुई।

उदाहरण के लिए सडे की रिपोर्ट हमे बतलाती है कि बबइ के शिवाजी पाक मे काशीराम के जलसे से 48 घटे पूर्व ही महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमत्री शरद पवार ने दशको से मराठवाडा विश्वविद्यालय के नामातरण की समस्या को सुलझा दिया। हालॉकि इस उपलब्धि के लिए महाराष्ट्र के दलित नेताओ के द्वारा शुरू किए गए सघर्षपूर्ण अभियानो तथा बलिदानो को ही श्रेय दिया जाएगा, पर राजनीति के ऊँट की किसी को खबर नही होती कि वह किस करवट बैठ जाए।

गुजरात के मुख्यमत्री चिमन भाई पटेल ने तो काशीराम को इतना मौका ही नही दिया कि वे राज्य मे आकर आरक्षण के समर्थन मे रैलियॉ करते। उन्होने आनन-फानन मे पहली मई, 1995 से आरक्षण के प्रतिशत बढाने की घोषणा कर दी। हालॉकि पूर्व स्थिति मे वे आरक्षण विरोधी के रूप मे बदनाम रहे। कुछ लोगो ने इसे काशीराम

की राजनीति का करिश्मा माना जबकि अन्य ने परिस्थितियो की परिणति।

बिहार मे देखा जाए तो लालू प्रसाद यादव पहले से ही सजग थे। वे किसी भी रूप मे नही चाहते थे कि दलित मत किसी अन्य की झोली मे जाए। उसी दौरान उन्होने तुरता फुरती मे **हरिजन आदिवासी रैली** का आयोजन कर डाला। बाबूजी की प्रतिमा का अनावरण किया, दलितो के बाल काटने मे भी वे पीछे न रहे। कलकत्ता जहॉ काशीराम ने दिसबर, 1994 मे राज्य मे बीएसपी के गठन हेतु गुप्त रूप से दौरा किया था, उसी दोरान पश्चिम बगाल के मुख्यमत्री ज्योति बसु ने कम्युनिस्ट पार्टी (माक्सवादी) स्टेट कमेटी की बेठक की अध्यक्षता की और राज्य मे पिछडो के उत्थान की योजनाओ के साथ अनुसूचित जाति के विद्यार्थियो को इजीनियरिंग और मेडिकल मे प्रवेश के बारे मे भी पूछताछ की। इस फोरी कायक्रम के पीछे कम्युनिस्ट पार्टी का राज्य मे पिछडो के उभरते जोश को दबाने का कागजी प्रयास भर था। हालाकि दलितो के सवाल राज्य मे अभी तक अनछुए ही थे।

जाहिर था कि उत्तर प्रदेश मे बसपा की सरकार बनने से पूरे देश की राजनीति किसी न किसी रूप मे प्रभावित अवश्य हुई थी।

वरिष्ठ राजनीतिज्ञ ओर समाज सेवी भाई परमानद जी का कहना था कि जम्मू और कश्मीर की सामाजिक ओर राजनैतिक परिस्थितिया अन्य राज्यो से अलग रही है। इन्ही सबका ध्यान रखते हुए हमे मौजूदा राजनीति के बारे मे विचार करना चाहिए। बहुजन समाज पार्टी का उद्भव होना महत्वपूर्ण बात रही, पर पार्टी के नेता और कायकर्ता किस सूरत मे दलितो की समस्याए हल कर सकेगे यह परिस्थितियो पर निर्भर हे। दलित नेताओ को राजनीति से बढकर समाज सेवा की ओर ध्यान देना चाहिए। जम्मू ओर कश्मीर मे स्थिति अलग रही। जैसा भाई परमानद जी ने भी बतलाया। दलितो तथा पिछडो के सवाल पर घाटी मे न उतनी उत्तेजना पैदा हुई ओर न गर्मजोशी जिससे कि डॉ अम्बेडकर के सामाजिक और राजनैतिक चितन को स्वीकार किया जाता। फिर भी काशीराम शायद पहले दलित राजनीतिज्ञ रहे, जिन्होने दिल्ली या पजाब से चलकर कश्मीर मे दस्तक दी। उस दस्तक से इतनी खबर तो जम्मू और कश्मीर की पार्टियो मे पहुची कि तत्कालीन सिहासन को हिलाने वाली किसी शख्सियत का उद्भव हो चुका है। और वह शख्सियत मैदानी क्षेत्रो के साथ बर्फीली पहाडियो और घाटियो मे रह रहे कश्मीरी समाज के दरवाजो पर भी दस्तक दे सकती हे।

वैसे बसपा के साथ सीटो का ढीला-ढाला तालमेल करना फारूक की उस रणनीति का हिस्सा था जिसके तहत वे कॉग्रेस के दलित वोट बेक को काटना चाहते थे। जिसमे एक सीमा तक सफल भी हुए। दूसरे नेशनल काफ्रेस बसपा तालमेल बनाने मे फारूक का निहिताथ दलित-मुस्लिम गठबधन बनाना था। जो लगभग सभी सीटो पर प्रभावी ताकत बन सकता था।

नीचे हम सूची दे रहे है–

उम्मीदवारों की सख्या (1996)*

कॉग्रेस	78
नेशनल काफ्रेस	77
भारतीय जनता पार्टी	56
अवामी लीग	39
बसपा	24
जनता दल	71
पैथर्स पार्टी	44
निर्दलीय ओर अन्य	116

(स्थिति चुनाव क तीसरे चरण तक)

इसके बाद लद्दाख मे विधान सभा क्षेत्र दो से बढकर चार हो गए। बहुसख्यक बाद्ध जनता के पिछले वष केद्र सरकार की गठित लद्दाख पवतीय विकास स्वायत्तता परिषद् से हुए मोहभग को भी नेशनल काफ्रेस ने बोद्धो के बीच अपना जनाधार बढाने के लिए भुनाने का प्रयास किया। बोद्ध परपरागत तोर पर कॉग्रेस को वोट देते रहे हे।

सदर्भ एव टिप्पणी

- समकालीन जनमत 302 इलीट हाउस 36 जमरुदपुर कम्युनिटी सटर नइ दिल्ला 16 31 माच 1994 पृष्ठ 16
- सड आनद बाजार पत्रिका प्रकाशन प्रफुल सरकार स्ट्रीट कलकत्ता 13 19 फरवरा 1994
- माया हिदी मासिक 15 माच 1994 पृष्ठ 13
- समकालीन जनमत नइ दिल्ली पृष्ठ 17
- सडे कलकत्ता पृष्ठ 35
- माया पृ 12
- समकालीन जनमत पृ 17
- माया पृष्ठ 13
- वही पृष्ठ 13
- सडे पृष्ठ 25
- वही पृष्ठ 25
- 4 मइ 2000 को जम्मू स्थित भाइ परमानद पूव मत्री जम्मू एण्ड कश्मीर तथा वतमान राज्यपाल हरियाणा के निवास पर बातचीत के आधार पर।

माया मुख्यमत्री

2 जून, 1995 के अँधेर क बाद अगले दिन का सूरज मायावती के लिए उजाले से भरपूर चमक-दमक लेकर उगा था। ऐसा कि मुलायम सिह यादव को भी इस आश्चयजनक घटना का देख / सुनकर हतप्रभ रह जाना पडा था। मात्र चौबीस घटे मे उनकी हेसियत बदल गइ। 2 जून को मायावती लखनऊ के राजकीय अतिथिगृह के कमरा नबर एक मे बदी जसी हालत मे थी ओर 3 जून को वे राज्य की मुख्यमत्री बन गइ। इसस बढकर राजनीति की चमत्कारिक पराकाष्ठा ओर क्या हो सकती थी। एस समय पर सभी तरह के राजनेतिक समीक्षको के प्रयास फेल हो जाया करते ह, पर लागो क बीच यह सवाल ता बार-बार उभरा था कि ऐसा क्यो हुआ। इस एतिहासिक घटना के कुछ समथन म थे ओर कुछ विपक्ष मे।

अखबारा की खबरे हम बताती हे कि 2 जून को जब समाजवादी पार्टी के लोग इस अतिथि-गृह से बसपा के पॉच विधायको को घसीटकर ले गए थे तब मायावती न 40 बसपा विधायको के साथ इस कमरे म पनाह ली थी। उन्होने कमरे का दरवाजा अदर स बद कर लिया था। सपा के लोगो ने इस कमरे का पानी-बिजली काट दिया था। आधी रात क करीब जब बाहर सपा कार्यकत्ता चिल्ला-चिल्लाकर गालियॉ बक रहे थे ओर धमकियॉ दे रहे थे तो मायावती बार-बार गृहमत्री शकर राव चव्हाण, भाजपा ओर जनता दल नेताओ को फोन कर रही थी। उस समय मायावती के सामने अपने बवाच का सवाल था। राजनेतिक अस्तित्व बाद की बात थी। पहले थे उनका उस रात जीवित रहना।

3 जून, 1995 को मायावती को उत्तर प्रदेश की पहली दलित मुख्यमत्री के रूप मे शपथ दिलाइ गइ। बकोल मोहम्मद जमील अख्तर तीन जून, 1995 का दिन शायद कभी भुलाया नही जा सकेगा, क्योकि वह दिन भारत के दलितो एव बहुजन समाज के लिए ऐतिहासिक परिवतन का दिन था जब सुश्री मायावती ने भारत के सबसे महत्वपूण व सवाधिक आबादी वाले सूबे उत्तर प्रदेश की बागडौर सभाली थी। स्वतत्र भारत मे पहली बार एक दलित वग की महिला को राज्य सरकार की बागडोर मुख्यमत्री के रूप मे सभालने का अवसर प्राप्त हुआ था। तब प्रधानमत्री पी वी नरसिह

उत्तर प्रदेश के पिछले मुख्यमत्री

क्र स	नाम	वर्ष (पदस्थापित)
1	प गोविन्द वल्लभ पत	दिसबर, 1952
2	डॉ सपूर्णानद	दिसबर, 1954
3	चन्द्रभानु गुप्त	दिसबर, 1960
4	सुचता कृपलानी	अक्टूबर, 1963
5	चन्द्रभानु गुप्त	मार्च, 1967
6	चो चरण सिह	अप्रेल, 1967
7	चन्द्रभानु गुप्त	फरवरी, 1968
8	चो चरण सिह	फरवरी, 1970
9	त्रिभुवन नारायण सिह	अक्टूबर, 1970
10	कमलापति त्रिपाठी	अप्रैल, 1971
11	हेमवती नदन बहुगुणा	नवबर, 1973
12	हेमवती नदन बहुगुणा	मार्च, 1974
13	नारायण दत्त तिवारी	जनवरी, 1976
14	रामनरेश यादव	जून, 1977
15	बनारसी दास	फरवरी, 1979
16	विश्वनाथ प्रताप सिह	जून, 1980
17	श्रीपति मिश्र	जून, 1982
18	नारायण दत्त तिवारी	अगस्त, 1984
19	वीर बहादुर सिह	सितबर, 1985
20	नारायण दत्त तिवारी	जून, 1988
21	मुलायम सिह यादव	दिसबर, 1989
22	कल्याण सिह	जून, 1991
23	मुलायम सिह यादव	दिसबर, 1993
24	मायावती	3 जून, 1995

25	राष्ट्रपति शासन	27 अक्तूबर 1995-20 मार्च 1997
26	मायावती	20 माच 1997-20 सित 1997
27	कल्याण सिह	21 सित 1997-11 नव 1999
28	रामप्रकाश गुप्त	12 नव 1999-27 अक्तू 2000
29	राजनाथ सिह	28 अक्तू 2000-7 माच 2002
30	राष्ट्रपति शासन	8 माच 2002 से
31	मायावती	मइ, 2002 से

माच 1995 के प्रतियागिता दपण आगरा स साभार

राव यूरोप क दारे पर थे ओर पेरिस मे जब उनसे मायावती के मुख्यमत्री बनने पर प्रतिक्रिया मागी गयी तो उन्होने इसे 'प्रजातत्र का चमत्कार' बताया था। दलित वर्ग तो इस चमत्कार से हक्का-बक्का रह गया था।

तत्कालीन राजनीतिक स्थिति यह थी अल्पमत मुलायम सरकार जबरदस्त अल्पमत मे आ गइ, तब भी तत्कालीन मुख्यमत्री मुलायम सिह यादव ने न तो इस्तीफा दिया, न राज्यपाल से विधानसभा भग कर नया चुनाव कराने की मॉग की। 426 सदस्यीय विधानसभा मे मात्र 69 विधायको वाली पार्टी को वैकल्पिक सरकार बनाने का दावा पेश कर दिया, और प्रमुख विपक्षी पार्टी भाजपा ने, जिसके 177 सदस्य हे, उसका समथन करने की घोपणा कर दी।

अजय सिह लिखत है कि मुलायम सरकार को हटाने / बखास्त करने की मॉग को लेकर भाजपा दिसबर, 1993 से 3 जून, 1995 तक राज्यपाल को लगभग 40 ज्ञापन दे चुकी थी। भाजपा की एकमात्र प्राथमिकता यही रही हे, बसपा व मायावती उसकी प्राथमिकता नही है।

उत्तर प्रदेश विधानसभा मे विभिन्न पार्टियो की स्थिति (03 06 1995) को इस तरह थी–

कुल सीटे 426

भाजपा	177
सपा	131
बसपा	044
बसपा (राजबहादुर)	025
कॉग्रेस (आई)	032
जनता दल	004
भाकपा	001

माकपा	001
उक्राद	001
निदलीय	008
नामाकित	001
रिक्त	001

दरअसल, उत्तर प्रदेश की राजनीति मे इधर दलित चेतना का जो उभार आया, उसने सभी दलो के समीकरण गडबडा दिए थे। मुलायम सिह ने भाजपा को सत्ता से दूर रखने के लिए 1993 मे पिछडो ओर मुसलमानो के साथ दलितो का गठजोड तेयार किया था। बसपा के साथ चूँकि तब काफी मुसलमान ओर दलित जुडे हुए थे, इसलिए मुलायम सिह के समाजवादी दल ने साथ मिलकर चुनाव लडा और सत्ता भी हासिल की। सत्ता मे आकर मुलायम सिह ने जब अपने वोट बेक मे दलितो को जोडने की कोशिशे शुरू की, तो बसपा नेता चोके। काशीराम ने पहले 10 जुलाइ, 1994 को दल-बदल विरोधी रैली करके पहली चेतावनी दी। पचायत चुनावो और निगमो मे मनोनयन के मामलो मे जब उन्हे कही का नही रखा गया, तो काशीराम ने लखनऊ मे 24 अप्रैल, 1995 को अतिम चेतावनी दी। एक जून को काशीराम का हस्ताक्षरित पत्र राज्यपाल को सौपकर मायावती ने गठबधन सरकार को आखिरी रास्ता दिखा दिया। 2 जून, 1995 को राजकीय अतिथि गृह काड मे जो कुछ घटा, उसमे भाजपा ने दो वजहो से बढ-चढकर अपनी अलग भूमिका निभाई थी। एक तो इस बहाने उसे मुलायम सिह को सत्ताच्युत करने का मौका मिल रहा था और दूसरे उसे 'दलित महिला' को मुख्यमत्री बनाकर दलित वोटो पर कब्जा जमाना था।

भाजपाई नेताओ के अनुसार उनका मँतव्य दलितो को साथ लेकर सामाजिक समरसता की भावना को बढा देना था, पर वैसा कुछ भी न था। सीधे-सीधे यह राजनीतिक खेल था, जिसमे एक सीमा तक भाजपा सफल भी हुई थी। मौलाना मुलायम सिह को चुनाव मे भले ही भाजपाई न हरा सके थे, पर विधानसभा मे मायावती के सहयोग से उन्होने सपा प्रमुख को पस्त कर दिया था।

कुछ लोगो का यह भी मानना है कि भाजपा बसपा का नजदीक आने का चितन बहुत पहले से चल रहा था। विशेषरूप मे भाजपा का 'थिक टैक' इस गठबधन के लिए उत्सुक था।

अजय सिह अपने लेख मे लिखते है कि भाजपा गद्‌गद थी—इतनी प्रमुदित वह हाल के दिनो मे नही दिखी। बसपा को बहुत दिनो बाद सुकून की सॉस मिली है। सपा चारो खाने चित है। 'जय श्रीराम' नौ-दो-ग्यारह होते-होते उत्तर प्रदेश के राजनीतिक रग-मच के केंद्र मे लोट आया है। अलबत्ता, इस बार वह 'जय भीम' के साथ लोटा है, उसे आगे करते हुए। तत्कालीन मुख्यमत्री मुलायम सिह यादव

का लोकतत्र-विरोधी व आतककारी करतूतो के कारण सपा-बसपा गठबधन के टूटने ओर मुलायम सिह यादव सरकार के बखास्त होने के बाद, भाजपा के समर्थन से, बसपा की 'अपनी' सरकार बन गई है, जिसे 'दलितो की पहली सरकार' के रूप म प्रचारित किया गया। मायावती राज्य की सबसे कम उम्र की—39 साल की—मुख्यमत्री ह। वह सुचता कृपलानी के बाद उत्तर प्रदेश की दूसरी महिला मुख्यमत्री बनी, आर दश के किसी भी राज्य की पहली दलित महिला मुख्यमत्री हे।

'तिलक (ब्राह्मण), तराजू (बनिया) ओर तलवार (राजपूत)' को 'चार जूते मारन' का नारा देने वाली ओर भाजपा का 'मनुवादियो' व 'ब्राह्मणवादियो' की पार्टी बता कर दिन-रात गाली दने वाली बसपा ने, जिसके विधायको ने 16 दिसबर, 1993 का राज्य विधानसभा के अदर भाजपा विधायको को पीट-पीट कर लहुलुहान कर दिया था, अपनी साझेदारी वाली मुलायम सिह यादव सरकार को अपदस्थ करने के लिए उसी भाजपा से हाथ मिला लिया। बसपा को 'सामाजिक सोहाद्र व सामजस्य को ताडने वाली घनघोर जातिवादी पार्टी' बताने वाली भाजपा ने, जिसने महात्मा गॉधी सबधी बयान के लिए मायावती पर देशद्रोह का मुकदमा चलाने की मॉग की थी, मुलायम सरकार को हटाने के लिए उसी बसपा को गले लगा लिया।

यह घटना हमे निश्चित ही इतिहास की ओर ले जाती है ओर याद दिला दती हे कि कसे एक-दूसर से लडते-लडते राजाओ के सैनक युद्ध मेदान मे सन्धि का परचम लहराते दख अपनी म्यान मे खून से सनी तलवार रख लिया करते थे। मुख्यमत्रियो के उत्थान और पतन के रूप म इस घटना ने राजतत्र की याद दिला दी थी।

श्योराज सिह बेचेन ने मायावती के मुख्यमत्री बनने की घटना को 'स्वणिम इतिहास की रचना' से जोडते हुए कहा हे कि बहुजन समाज पार्टी के अध्यक्ष काशीराम व राष्ट्रीय महासचिव सुश्री मायावती द्वारा देश के सबसे बडे राज्य उत्तर प्रदेश मे सरकार के गठन का निणय से एक बेमिसाल व कल्पनातीत इतिहास की रचना हुई है। इस उपलब्धि से सचमुच बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर का दलित वर्ग का सत्ता प्राप्ति का चिर-प्रतीक्षित स्वप्न साकार हुआ है। उनके अदम्य साहस, त्याग व सूझबूझ से उठाए गए कदमो से न केवल दलितो को सम्मान व समता का दिग्दशन हुआ हे, बल्कि बाहुल्य दलित व पिछडो मे गोरव व साहसिक नवजीवन की चेतना प्रज्जवलित हुई हे। इससे सिद्ध हो गया है कि दलितो-पिछडो के सच्चे शुभचितक मान्यवर काशीराम व बहन कुमारी मायावती जी है तथा दलितो के हितो की सुरक्षा व सरक्षण केवल बहुजन समाज पार्टी मे ही निहित है।

पिछले दिनो की राजनेतिक सशयपूण स्थिति से जो स्थिति बनी थी वह एकाएक नही थी। उसके पीछे समाज मे दलितो-पिछडो के प्रति बने बहुत-से वे सस्कार प्रभावी थे जिनके रहते आज तक दलित-शोपित और उत्पीडित रहे हे। भले ही भाजपा ने

बसपा का सहयाग किया हो, लेकिन वह बसपा अथवा बहुजन समाज के प्रति उसका एकाएक रवैया बदल गया हे, ऐसा सोचना भूल हे। परतु फिर भी उसका बसपा को सहयोग देना समाज मे नये परिवर्तन की ओर सकेत करता हे। बसपा को राजनेतिक दल की भूमिका के साथ-साथ उन सामाजिक मानदडो को स्थापित करना होगा जिनके रहते बहुजन समाज के बीच समता भाइचारा ओर सामाजिक न्याय स्थापित हो सके। इसस बसपा की छवि मे निरतर निखार आ सकता हे।

मूल रूप स दो विरोधी ओर समानातर विचारधारा रखने वाले इन दोनो दलो के इस गठबधन से समाज मे विस्मयकारी स्फूर्ति और तदुपरात आपसी सामजस्य स्थापित होगा। दलितो-पिछडो की आपसी सूझ-बूझ ओर एकता से सरकार के गठन की आशा तो कही न कही झलकती थी, परतु कट्टर हिदूवाद की विचारधारा को लेकर चलने वाली भाजपा के साथ प्रदेश के दलित मुख्यमत्री बनने का सपना वाकई उभरते दलित नेतृत्व का लोहा ही कहा जा सकता हे जिसमे तथाकथित ब्राह्मणवाद बहुत सारी दूरगामी सभावनाएँ खोज रहा हे कि अब इस समाज को और अधिक शोषण और उपेक्षा का शिकार नही बनाया जा सकता।

उनका मानना हे कि आवश्यकता इस बात की हे कि देश के सबसे बडे प्रदेश का दलित मुख्यमत्री होना कइ उन स्थितियो व सभावनाओ की ओर सकेत करता है जहॉ दलितो द्वाग पूरे देश का नेतृत्व करने की आशामयी किरणो की झलक दिखाई पडती हे। नवगठित दलित मुख्यमत्रीत्व के नेतृत्व मे बनी प्रदेशीय सरकार को अपनी कायप्रणाली और सूझबूझ से यह दिखा देना चाहिए कि बाबा साहेब और महात्मा बुद्ध के दशन पर चलकर ही इस देश का भविष्य खुशहाल हो सकता है ओर सपूण समाज मे समता, भाइचारा व स्वतत्रता के मानवपरक मूल्यो की स्थापना हो सकती है।

जनता दल के प्रधान महासचिव एव दलित सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामविलास पासवान ने मई, 1995 को अपने भाषण मे कहा था, बहुजन समाज पार्टी ने कभी भी दलितो के उत्थान या बेहतरी के लिए काम नही किया है। उनकी चिता दलितो को बरगलाकर किसी तरह सत्ता प्राप्त करना रही है। भाजपा जैसी साप्रदायिक पार्टी, जिसे अन्य दलो ने ‘अछूत’ घोषित किया है, से समर्थन लेकर सरकार बनाना यही साबित करता है कि बसपा निहायत ही अवसरवादी लोगो का जमावडा है। डॉ अम्बेडकर साहेब के सिद्धातो मे इनकी कोई आस्था नही। दरअसल, ‘कुर्सी’ के लिए बसपा ने अपने ही आइडियोलॉजी के खिलाफ काम किया है।

उनका कहना था कि अगर बसपा को यह महसूस हो रहा था कि सपा को समर्थन जारी रखना उचित नही है तो वह अपना समर्थन वापस लेकर चुनाव की मॉग कर सकती थी। लेकिन भाजपा के समर्थन से सरकार बनाकर उसने दलितो-अल्पसख्यको के ध्रुवीकरण की उस प्रक्रिया को कमजोर किया है, जिसे जनता

दल ने शुरू किया था।

बकोल सुरेन्द्र मोहन (राष्ट्रीय सहारा मे छपे लेख से) मुलायम सिह यादव को उम्मीद नही थी कि भाजपा के समर्थन से बसपा उत्तर प्रदेश मे सरकार बना लेगी ओर प्रधानमत्री पी वी नरसिह राव भी इस मामले मे उनका साथ न देगे। भाजपा न यह प्रयास पहले भी किया था, ओर सासद सघ प्रिय गौतम खुले तौर पर मायावती का मुख्यमत्री बनान की पेशकश कर चुके थे। सपा-बसपा की सधि टूट, पिछडा-दलित-मुस्लिम एकता भग हा, भाजपा यह श्रेय हासिल कर सक कि उसने दलिता का हित किया हे। इस सभावना को पहले ही समझकर मुलायम सिह यादव को चाहिए था कि वे बसपा को सत्ता मे वास्तविक भागीदारी करात।

जबकि किसी जमान मे 'छोटे लोहिया' उपनाम से सबोधित किए जाने वाले जनश्वर मिश्र ने भाजपा से लडने के लिए सपा-बसपा के बीच हुए गठबधन की घटना का वक्त की जरूरत माना था। साथ ही इस गठबधन के टूटने ओर भाजपा क साथ बसपा के तालमेल से राजनीतिक गलियारो मे हुई प्रतिक्रियाओ के सबध मे उन्हान खुशी जाहिर की थी कि सपा-बसपा के इस गठबधन को तोडने का श्रेय समाजवादिया को नही, बल्कि बसपाइयो को दिया जा रहा है।

समाजवादी पार्टी के तत्कालीन महासचिव रघु ठाकुर की टिप्पणी थी कि मायावती आर उनके चहेता ने काशीराम को गलत सूचनाएँ दी। चूँकि काशीराम अस्पताल मे थे इसलिए उन्होने गलत सूचनाओ के आधार पर निणय ले लिया।

राज्य सभा सदस्य जयत मल्होत्रा, जिन्हे धन-पशु कहा गया है स्वीकार करते ह कि बहुजन समाज पार्टी और समाजवादी पार्टी का गठजोड किसी ठोस सकारात्मक वचारिक धरातल पर खडा नही था। अपने-अपने दलीय एव व्यक्तिगत स्वार्थो क अलावा भाजपा को सत्ता मे वापस आने से रोकने के नकारात्मक मुद्दे ने बसपा ओर सपा को एक दूसरे के करीब लाया। इसलिए इस गठबधन को टूटना ही था।

बकोल मल्होत्रा, बहुजन समाज पार्टी को मुख्यमत्री मुलायम सिह से काफी अपेक्षाए थी। पर मुलायम सिह काशीराम की कसोटियो पर खरे नही उतरे। दलितो पर अत्याचार बढता गया। कानून व्यवस्था की स्थिति खराब होती गई। इतना ही नही मुलायम सिह ने अपनी पार्टी को मजबूत करने के लिए सहयोगी और समान विचारधारा वाली पार्टियो को तोडना शुरू कर दिया। इन छोटे-छोटे मुद्दो के कारण काशीराम ओर मुलायम सिह के रिश्तो मे कडवाहट आनी शुरू हो गई। मुलायम सिह की चालबाजियो से काशीराम को ऐसा लगने लगा था कि यदि उनसे अलग नही हुए तो वह समूची बसपा को ही हडप जाएँगे।

बसपा ने क्या असवरवाद का लाभ उठाया, इस सवाल के बारे मे भाजपा सासद जगदीश प्रसाद माथुर का मानना था कि मुलायम सिह की हिदू विरोधी, क्रूर एव अत्याचारी सरकार को हटाने के लिए बहुजन समाज पार्टी को समथन देकर

पहला कदम उठाया। बसपा का समथन कर हिदू समाज मे पैदा हुइ खाइ को पाटने का प्रयास किया गया हे।

विभाशु दिव्याल के विचार मे उत्तर प्रदेश मे जो कुछ घटित हुआ हे उसका एकमात्र महत्त्व यह हे कि जातीय राजनीति के चेहरे को पढने का इस घटना ने एक दुलभ अध्याय उपलब्ध कराया है। सवण, मनुवादी, अधगॉधीवादी यानी हिदुत्ववादी ताकतो के विरुद्ध पिछडा ओर दलितो का जो सयुक्त मोचा सत्ता म आया था वह बिखर गया। अगर पिछडे ओर दलित हिदुत्ववादी शक्तियो के खिलाफ थे ओर उनका विराध उनकी प्राथमिकता मे सर्वोपरि था तो इस गठबधन को नही टूटना चाहिए था। आर यह गठबधन अगर टूटा ता स्पष्ट है कि इसके नेताआ का युद्ध आर तालमेल दाना ही सत्ताकामी थे न कि हिदुत्ववादी ताकतो की पराजय के लिए प्रेरित। ओर जब काशीराम पिछडो का साथ छोडकर हिदुत्ववादी अगडो की सहायता से सरकार स्थापित कर चुके ह, यानी उन्ही की सहायता से जिनको गरियान से ही उनकी राजनीतिक शक्ति का स्रोत फूटता ह तो काशीराम सर से पॉव तक नगे हो जाते ह। जिस तरह से राम के प्रति कोइ आस्था न होते हुए भी भाजपा राम के नाम का उन्माद जगाकर राजनीतिक शक्ति अर्जित करती हे, उसी तरह से सवण हिदुत्व के विरुद्ध उन्माद जगाकर, उसे मिटाने की वास्तविक चाह न होने के बावजूद, काशीराम राजनीतिक शक्ति अजित करते हे।

वस्तुत जातीय राजनीति का खेल सभी खेल रहे है, चाहे वह मुलायम सिह यादव हो, चाह काशीराम हो या भाजपा। ये तीनो ही जातीय राजनीति का खेल खेलने मे सक्षम हे। गॉधी ओर अम्बेडकर से लेकर लोहिया ओर कॉग्रेसवादी दलित नेताओ से होते हुए मुलायम ओर काशीराम तक की यात्रा मे भारतीय समाज के जातीय चरित्र मे एक गुणात्मक परिवतन आ गया है। और वह है कि सवर्णो का एक बहुत बडा तबका दलित बन चुका है तथा दलितो का और पिछडो का उससे भी बडा तबका सवर्ण बन चुका है। अगर काशीराम और उनके सिपहसालार सवण हिदुओ के आदिनायक मनु से लेकर उनके राम जैसे मिथक नायक और आज के नेतागणो को खुले शब्दो मे गरियाने की शक्ति अर्जित कर चुके है तो जाहिर है कि वे उस दलितत्व की परिधि से बाहर निकल आए है जो गाली सुनने के बाद गाली देन वाले की ओर उॅगली नही उठा सकता था। आज स्थिति काफी कुछ उलट हे—दलितत्व अब शक्ति और वचस्व का प्रतीक होने जा रहा है। जिस तरह 'पिछडत्व' भुजबल के प्रतीक के रूप मे स्थापित हुआ है उसी तरह दलितत्व की भी स्थापना हो रही है। इसी की परिणति है कि सवणतावादी ताकतो पर राजनीतिक दबाव यह पड रहा है कि वे दलितो और पिछडो के हमदर्द के रूप मे दिखे। क्योकि दलितो की 'सवणता' अगडी जातियो को गरियाने की शक्ति अजित कर लेने के मुहावरे से पेदा हुआ है इसलिए अपनी नवअजित सवर्णता को बनाए रखने की खातिर गरियाने

के मुहावरे का भी उनके लिए जिदा रखना जरूरी हे। यही बात पिछडो पर लागू होती ह।

महतराम कपूर के विचार मे सपा-बसपा गठबधन के पीछे सैद्धान्तिक विचार था क्तिु इस न सपा न भली भॉति समझा ओर न बसपा ने। दोनो को सत्ता का स्वाथ ही जोड रहा ओर सत्ता की आपाधापी मे जब बसपा के नेता सपा के नेताआ स मान पर मात खाने लग ता गठबधन का टूटना स्वाभाविक ही था। जबकि मुलायम सिह का कहना था कि मेरी सग्कार अमरीका के इशार पर गिराइ गइ हे जिसकी व्यूह रचना दिल्ली म भाजपा क कायालय मे हुइ। अमरीकी राजदूत फ्रैक वाइजनर न एक जून का भाजपा कायालय म लालकृष्ण आडवाणी अटल बिहारी वाजपेयी नथा दा अन्य नताआ क साथ मरी सरकार गिराने का षड्यत्र रचा। उसी दिन सुश्री मायावता न सरकार स अपना समथन वापस ले लिया। मेने आथिक उदारीकरण क नाम पर अमरीका क बढते प्रभुत्व की हमेशा आलोचना की हे। इसलिए मेरी सरकार गिरा दी गइ।

दलित बुद्धिजीविया क एक बडे वग का कहना है कि मुलायम सिह के इस वक्तव्य म हालॉकि काई विशेष दम नही। आम लोगो की राय म यह इसलिए हुआ कि मुलायम सिह जननायक स खलनायक बन गए थे। इसमे परिस्थितियो का हाथ भी हा सकता हे या फिर सपा कायकताआ का भी।

युवा दलित पत्रकार **कवल भारती** अपने लेख मे लिखते हे कि उत्तर प्रदेश की राजनीति न एक बार फिर धमाका किया। वहॉ सारा राजनीतिक घटनाचक्र अप्रत्याशित ह। कल तक जो राजनीतिक दल—सपा ओर बसपा—एक-दूसरे के मित्र थे, वे एक-दूसरे के शत्रु बन गए हे आर जो राजनीतिक दल भाजपा और बसपा एक-दूसर क शत्रु थे, वे एक-दूसरे के मित्र बन गए हे। मित्रता भी इस स्तर की कि अत्यत अल्पमत वाली बसपा को सबसे बड दल वाली भाजपा ने सत्तारूढ पार्टी बनाने मे दिन-रात एक कर दिया। यह सचमुच भाजपा नेताओ के प्रयासो का ही परिणाम है कि राज्य अतिथि गृह मे सपा के गुडो से मायावती की रक्षा हो सकी और राज्यपाल मोती लाल वोरा ने उन्हे सरकार बनाने का निमत्रण दिया।

जब अठारह महीने पहले उत्तर प्रदेश मे सपा-बसपा गठबधन की सरकार बनी थी तो स्थिति यह थी कि भाजपा के सभी वरिष्ठ नेता, यहॉ तक कि लालकृष्ण आडवाणी तक मुलायम सिह यादव की प्रशसा ओर काशीराम की आलोचना करते थे। लखनऊ से प्रकाशित होने वाली भाजपा की मासिक पत्रिका 'कमल ज्योति' के कइ अको मे मुलायम सिह को उदारवादी, सुधारवादी ओर समरसतावादी लिखा गया है। इसके विपरीत काशीराम ओर मायावती को सदैव जातिवादी और राष्ट्र की एकता का शत्रु बताया गया। पर अब सब-कुछ उलटा-पुलटा हो गया है। आज भाजपा की दृष्टि मे मुलायम सिह जातिवादी और राष्ट्रीय एकता के शत्रु है ओर काशीराम

ओर मायावती राष्ट्रवादी और समरसतावादी है।

गणेश मत्री लिखते है कि उत्तर प्रदेश मे मुलायम सिह गए, मायावती आइ। उन्होने विधानसभा मे अपना बहुमत भी सिद्ध कर दिया। लखनऊ मे हुआ यह सत्ता-परिवर्तन एक तरह से 1981 के अत मे दिल्ली मे राष्ट्रीय स्तर पर हुए सत्ता-परिवतन की पुनरावृत्ति जैसा हे। विश्वनाथ प्रताप सिह की सरकार भी समाजवादी पार्टी ओर बहुजन समाज पार्टी की मिली-जुली सरकार की तरह ही अल्पमत की सरकार थी। लोकसभा मे बहुमत के लिए वह भाजपा ओर वामपथी दलो के समथन पर आश्रित थी। वह नष्ट हुई थी मदिर-मडल विवाद के भवर जाल मे फॅसकर। भाजपा ने उसे अपना समथन देना बद कर दिया था। विश्वनाथ प्रताप सिह से नाराज चद्रशेखर ने इस अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठाया ओर झटपट **'समाजवादी जनता पार्टी'** गठित करके अपनी सरकार बना ली। चद्रशेखर को कॉग्रेस (इ) का खुला और भाजपा का मौन समथन प्राप्त था। मुलायम सिह की सरकार भी विश्वनाथ प्रताप सिह की सरकार की तरह ही अल्पमत की सरकार थी। लेकिन उसको हटाकर बनी नयी सरकार पिछली सरकार से भी छोटे अल्पमत की सरकार है। इसलिए सवाधिक चचा मायावती सरकार के भविष्य की ही है। अब यह पूछा जा रहा है कि बसपा ओर भाजपा का यह गठबधन कब तक टिकेगा?

पहली बार बहुजनो की सरकार

बहुजन सगठक लिखता है, हजारो वर्षो की चुनौती स्वीकारते हुए आजादी के 46 वष बाद देश के सबसे बडे प्रदेश मे पहली बार बहुजन समाज ने अपने बूते सरकार बनाकर समाज के सामने से उस अधकार को हटा दिया है कि देश मे बहुजनो की सरकार नही बन सकेगी। उत्तर प्रदेश मे हुए विधान सभा चुनावो मे एक तरफ मनुवादी शक्तियॉ सगठित होकर इस चुनाव को यह मुद्दा बनाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने मे जुटी हुई थी कि देश का नेतृत्व ब्राह्मणवाद के हाथो ही चल सकेगा, लेकिन उनके सारे सपने चूर होकर रह गए और बहुजन समाज ने परिवर्तन करके रख दिया। भले ही प्रदेश मे 422 सीटो के हुए चुनावो मे बसपा-सपा गठबधन को 176 सीटे मिली हो, लेकिन इस चुनाव मे यह एक बडी उपलब्धि ही है, क्योकि बसपा जिन आदोलनो को लेकर सघर्ष कर रही है वह एक ऐतिहासिक बुनियादी सघर्ष है।

बहुजन समाज पार्टी ने देश के बहुजन समाज मे अपनी पैठ जमाकर यह भी सिद्ध कर दिया है कि दलित, शोषित, पिछडा वर्ग व धामिक अल्पसख्यको का सही नेतृत्व बसपा ही कर सकेगी। आजादी के बाद से ब्राह्मणवादी व्यवस्थापको ने इस समाज का कभी नेतृत्व ही नही उभरने दिया और वे बीच-बीच मे ऐसे चमचे किस्म के नेताओ के मुखौटे दिखा-दिखाकर बहुजनो को दिग्भ्रमित करते रहे जो स्वार्थ व पायलागे नीतियो पर टिकाऊ थे। बसपा ने यह चुनाव साप्रदायिक व सामतवादी ताकतो

के खिलाफ लडा और उन्हे घुटने टिकाकर देश मे सबसे बडी धर्मनिरपेक्ष व लोकतंत्र हिमायती की शक्ति बनकर उभरी, जो कि कॉंग्रेस, जद, जनता पार्टी व कम्युनिस्ट ताकता ने भी इस बात को स्वीकारा है। देश के राजनीतिक पडितो के भी सारे गणित गडबडा गए तथा वे इसे आश्चय ही माने हे, क्योकि वे इस उभरती शक्ति को अपने गुणा-भाग से अलग ही रखते रहे तथा लोगो के सामने रखने से नकारते रहे।

उत्तर प्रदश म बहुजन समाज पार्टी व समाजवादी पार्टी की सरकार बनने से बहुजन समाज का मनाबल बढा हे तथा इस उभरती शक्ति के प्रति आशान्वित होकर अपन गले उतारकर आने वाल समय मे ओर अधिक सहयोग देने की तमन्ना भी बढेगी।

सागली से गल आम्वेट की उनके लेख मे टिप्पणी देखे। वे लिखती है कि विधानसभा चुनावा के परिणाम आए तब मै बैकाक मे थी, **शिवसेना शासित महाराष्ट्र में लोटना बहुत शमनाक ओर पीडादायक** हे। मेरे सारे दोस्त बुरी तरह चुनाव हारे। महाराष्ट्र म जो कुछ हुआ उसकी प्रतिक्रिया मैने अपनी ऑखो से देखी है, लेकिन यूपी म जो कुछ हुआ उसके बारे मे सिफ पढा हे। इसके बारे मे वे आगे लिखती ह कि यह बात मेरे लिए एक बडा धक्का हे कि भारत की पहली दलित महिला मुख्यमत्री **भाजपा की मदद से** सत्ता तक पहुँची। यहॉ हम सभी ने बसपा से अपने सारे सपर्क तोड लिए हे। भरत पाटणकर और मै कभी बसपा मे शामिल नही हुए थे, पर भरत जिस सगठन से जुडे है—**शेतमजूर काश्तकारी शेतकारी सघटना**—उसका सतारा-सागली-कोल्हापुर मे अच्छा आधार है ओर उसके जरिए वे इस दिशा मे काफी सक्रिय थे। उस सगठन के अध्यक्ष नागनाथ नारकुडी ने बसपा की सदस्यता ले रखी थी लेकिन अब उससे इस्तीफा दे दिया।

इससे बसपा की साख की काफी दुगति हुइ है लेकिन इसका मतलब यह नही कि इससे बहुजनवाद का अत हो जाएगा। हमे लगता है कि भारतीय सदर्भ मे बहुजनवाद दलित-शोषित बहुमत का प्रतिनिधित्व करता है। सवाल यह है कि इसे लिया कैसे जा रहा है। महाराष्ट्र मे प्रकाश अम्बेडकर की पार्टी और **बहुजन महासघ** को वामपथ ने सहयोगी के बतोर समर्थन दिया था, लेकिन उन्होने 'बहुजन' का बहुत सकीर्ण अर्थ ग्रहण किया था। प्रकाश ने अपनी **भारतीय रिपब्लिकन पार्टी** की अलग दलित पहचान बरकरार रखी थी ओर बहुजन महासघ अन्य पिछडो—और स्पष्ट रूप से कहे तो मराठा कुनबियो को लाने का मच था। जबकि बसपा ने आधिकारिक रूप से सारे दलितो ओर सारे पिछडो (पूर्व-शूद्र जातियों) और अल्पसख्यको को खुद मे शामिल किया था ओर 'जात तोडो, समाज जोडो' के नारे के तहत आपसी घनिष्ठता पर जोर दिया था।

हम 'ब्राह्मण विरोधी होने' और 'ब्राह्मण विरोधी' होने के बीच फर्क करते हे। यह सही हे कि बहुतेरे दलित-पिछडे ब्राह्मण विरोधी भी होते हे, लेकिन ऐसा जातिवाद

ता सेकुलर पार्टियो मे भी पाया जाता है। 'बहुजन' ओर 'ब्राह्मणवाद' ऐसी अदधारणाएँ ह, जिनका अथ जनवादी आदोलनो के दोरान खोजा जाना है, ओर एक वाजिब आथिक कायक्रम के साथ भी इसे इसी दोरान जोडा जाना हे।

मरी एक राय ओर हे कि 'बाजार' ओर 'समाजवाद' जेसी चीजो का भी एक बार पुनमूल्याकन हो। वामपथ आथिक सुधारो के प्रति पूणतया नकारात्मक रुख केसे रख सक्ता हे जबकि चीन ओर वियतनाम जस देश 'बाजार समाजवाद' ओर भूमडलीकरण' की नीतियो पर अमल कर रहे हे। इन देशो के साथ तमाम परेशानियॉ जुडी हो सकती है, पर चीनी ओर वियतनामी कम्युनिस्ट नेतृत्व को मूख ओर भगोडा नही कहा जा सकता। ज्यादा से ज्यादा यही कहा जा सकता है कि वे 'राष्ट्रीय' (राष्ट्रीय पूँजीवादी) हितो को सुरक्षित रख रहे है। इसके ठीक विपरीत 'स्वदेशी' और वामपथी जोर—भूमडलीकरण ओर विदेशी निवेश आदि का विरोध— आरएसएस ओर अध-राष्ट्रवाद की दूसरी बुनियादपरस्त ताकतो जेसा लगता हे।

क्या भाजपा बसपा का गठबधन अचानक हुआ या इसकी पृष्ठभूमि पहले से ही बन रही थी। असल मे भाजपा के महासचिव गोविदाचार्य ने 'सोशल इजीनियरिग' अर्थात् दलितो ओर पिछडो को ब्राह्मणो ओर बनियो से जोडने की वकालत की थी। इम आकषक पेशकश की व्यावहारिकता को **अभय कुमार दुबे** ने काफी सदिग्ध बताया था, क्योकि आज की राजनीति मे दलित ओर पिछडे राजनीतिक सत्ता ग्रहण करने की सीधी होड मे है। उन्हे रोटी का टुकडा नही सपूर्ण रोटी चाहिए। भाजपा उन्हे यह आश्वासन दे पाने मे हमेशा असमर्थ रहेगी—जब तक वह अपना बुनियादी चरित्र नही बदल लेती।

उनका मानना रहा कि हिदुत्व को एकता का सूत्र बनात हुए भाजपा को एक ऐसी छवि पेश करनी होगी जिसमे वह ब्राह्मणो की पार्टी न लगे, बल्कि हिदुओ की पार्टी लगे। वैसे भी बीबीसी के टिप्पणीकारो ने जब-जब उसे 'बीजेपी, द हिदू पार्टी' कहा है तो भाजपा नेताओ को काफी अच्छा लगा।

घटनाक्रम की पृष्ठभूमि मे देखे, 2 दिसबर, 1993 को काशीराम ने कहा था कि उत्तर प्रदेश मे एक साल बाद फिर चुनाव होगे। सरकार बनने के बाद सपा और बसपा के मत्रियो और विधायको के बीच तनाव उभरकर सामने आने लगे। इस तनाव के पीछे एक कठोर सामाजिक वास्तविकता छिपी हुइ है। मुलायम सिह के शासन काल मे दलितो ओर पिछडो के बीच खूनी सघर्ष की एक के बाद एक घटना का सिलसिला शुरू हुआ, जो अब तक थमता नजर नही आ रहा है। साप्रदायिक दगे भी हुए जिसमे दलितो ओर पिछडो की भागीदारी साफ दिखाई पडी। इनसे कुछ घटनाएँ सचमुच चोकाने वाली है। 21 जनवरी को इलाहाबाद मे धूरपुर थाना क्षेत्र के दोना गॉव मे दलित महिला शिवपति को नगा करके घुमाया गया। अपराधी पिछडी जातियो के थे। काशीराम ने 5 मार्च को इलाहाबाद मे सपा-बसपा की सयुक्त सभा,

जिसमे मुलायम सिह यादव भी उपस्थित थे। कहा था कि मुलायम सिह ने मुख्यमत्री बनने के लिए बसपा से तीन वायदे किए थे। दलितो पर अत्याचार रोकना, मुसलमानो के जान-माल और इमान की रक्षा करना, प्रदेश की जनता को जात-पॉत का ध्यान दिए बिना न्याय दिलवाना, काशीराम ने कहा कि ये वायदे पूरे नही हुए तो सरकार को रफा-दफा करना होगा। मुलायम सिह से बसपा की नाराजगी के और भी कारण है।

इलाहाबाद की सभा मे काशीराम ने कहा कि शिकायते मिल रही हे कि यादव मत्रिमडल मे शामिल मत्रियो की बाते नही सुनी जा रही हे। एक मत्री ने इलाहाबाद मे एक दलित की हत्या के अभियुक्तो के खिलाफ कार्रवाई के लिए लिखा। मुख्यमत्री ने उस पर ध्यान नही दिया। मंत्रियो की पूछ नही हे तो इस सरकार मे विधायको की क्या पूछ होगी। वास्तव मे, बसपा के ज्यादातर विधायको की शिकायत है कि मुख्यमत्री उनकी बातो पर ध्यान नही देते। दौना काड के समय दोना मे पुलिस महानिरीक्षक, उपमहानिरीक्षक और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अनुसूचित जाति के थे। काशीराम ने तीनो के खिलाफ कार्रवाई के लिए दबाव डाला। बाराबकी के ददरोली गॉव मे आठ दलित महिलाओ के साथ सामूहिक बलात्कार, फतेहपुर के कजरडेरा मे दलितो की हत्या, बदायूँ के गोरीपुरा मे जाटवो के घरो की लूटपाट ओर उनके साथ मारपीट, वाराणसी मे स्वास्थ्य राज्यमत्री दीनानाथ भास्कर (बसपा) के एक सहयोगी रामओतार पासवान की हत्या के बाद जातीय दगा। इसमे एक यादव की भी हत्या हुई। ये कुछ ऐसी घटनाएँ हुइ, जिसने बसपा और सपा के गठबधन को झकझोर दिया।

अजय सिह की टिप्पणी हैं कि उत्तर प्रदेश मे क्या 'जाति युद्ध का अगारा' फूट पडा है, जैसा कि प्रचारित किया जा रहा है? या, सब-कुछ ठीक-ठाक व सही-सलामत हे, जेसाकि मुख्यमत्री मुलायम सिह यादव कहते है? तनाव, हिसा व उत्पीडन की घटनाओ का जो दौर-दौरा चलता हुआ दिखाई दे रहा है—जिसके शिकार दलित व महिलाएँ हो रही है, और अल्पसख्यक भी गिरफ्त मे आ जा रहे है—क्या वह मात्र अपराध-मूलक और कानून-व्यवस्था से सबंधित है? राज्य मे सत्तारूढ समाजवादी पार्टी व बहुजन समाज पार्टी गठबधन का हनीमून अब एक-दूसरे पर निगरानी व नियत्रण रखने की दिशा मे बढ रहा है? और एक खास सवाल यह पूछा जा रहा है कि क्या बहुजन समाज पार्टी को अलग-थलग करने व अलगाव मे डालने की कोशिश मुहिम का रूप ले रही है?

राज्य की समाजवादी पार्टी—बहुजन समाज पार्टी गठबधन सरकार अल्पमत मे है। इसे समर्थन देने वाली कॉग्रेस के नेता प्रमोद तिवारी कहते है कि इस सरकार के सत्ता मे आने के तीन महीने के अदर उत्तर प्रदेश मे 'जगल राज स्थापित हो गया है' और इसके लिए सत्ता पक्ष की ओर से 'बसपा मुख्य रूप से दोषी है'।

4 फरवरी को बनारस के पास बसपा कार्यकर्त्ता रामऔतार पासवान की हत्या

कुछ अपराधियो ने कर दी। पासवान स्वास्थ्य व चिकित्सा राज्यमत्री दीनानाथ भास्कर का दायॉ हाथ था। बाद मे ताबड तोड दलित उत्पीडन की घटनाएँ होने लगी थी।

लबे समय से बनारस जिले की चडौली तहसील सामती दबदबे और आतक का मजबूत किला बना हुआ था।

1993 के विधानसभा चुनाव जबरदस्त तनाव ओर तीखे जातीय ध्रुवीकरण क बीच हुए। बसपा प्रत्याशी दीनानाथ भास्कर की जीत जहाँ दलिता के बीच नये उत्साह, आत्मविश्वास ओर आक्रामकता पर आधारित उभार का सकेत थी, वही इस जीत न सामती शक्तियो मे अपनी हार को सामाजिक-व्यवहारिक धरातल पर जीत म बदलने की जिद को जन्म दिया। इसके बाद दस घटो के अदर ही प्रतिक्रिया मे सयद राजा थाने के तीन गॉवो मे एक हथियारबद गिरोह ने दो राजपूतो की ओर एक यादव की राजपूत समझकर उसकी हत्या कर दी।

इन हत्याओ की भी तीखी प्रतिक्रिया हुइ। गॉव से शहर तक लगभग पूण जातीय विभाजन के बीच हजारो लोग चदौली व सेयद राजा मे जीटी रोड पर उतर आए तो दूसरी ओर, ऐतिहासिक तोर पर राजपूत राजे-रजवाडो, सामतो ओर भूस्वामियो के बेटो की शिक्षा-दीक्षा के लिए बने **उदय प्रताप कॉलेज** और पूवाचल के **बडे-बिगडैल घरों के बेटों से भरे काशी विद्यापीठ** के छात्रो ने दलित सहपाठियो से लेकर राहगीरो तक की पिटाइ ओर लूटपाट शुरू कर दी। उदय प्रताप कॉलेज के बगल मे एक दलित कमचारी का घर फूँक दिया गया। प्रशासन मूकदशक बना रहा ओर 14 फरवरी तक स्कूल-कॉलेज बद करने का उसने फेसला-भर किया।

आनद प्रधान लिखते हे कि इस पूरे प्रकरण मे स्थानीय प्रेस ने 'समाचार' और 'तथ्यान्वेषण' के नाम पर निहायत ही एकतरफा और उत्तेजक रिपोट का प्रकाशन किया। तिल की ताड बनाने वाली शैली मे छपी खबरो ओर भडकाने वाले प्रस्तुतीकरण ने जातीय विद्वेष और तनाव मे गॉव-गॉव फैलाने का काम किया। पर सच्चाई क्या थी?

सच्चाई यह थी कि मारे गए बसपा नेता रामऔतार पासवान के खिलाफ उत्तर प्रदेश मे कोई आपराधिक मामला नही था। यह बात आई जी (जोन), राधे मोहन शुक्ल ने स्वीकार की थी। बल्कि 30 जनवरी को ही पासवान ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) और अन्य अधिकारियो को बुलाकर जातीय तनावो के सदर्भ मे 'पुलिस और समाज' विषयक गोष्ठी भी करवाई थी।

इन अठारह महीनो मे मुख्यमत्री के रूप मे एक काम मुलायम सिह यादव ने यह भी किया कि प्राथमिकता के आधार पर पहले यादवो को, फिर सपा समर्थक मुसलमानो को बदूको और रिवाल्वर के लाइसेस देने के आदेश जिलाधिकारियो को दिए। इस आदेश का पालन इस नाजायज तरह से हुआ कि यादव जाति के नाबालिग बच्चो तक को लाइसेस प्राप्त हो गए। इस तरह हथियारो के बल पर मुलायम सिह

न एक ओर अपने पक्षधर समुदाय के लोगो को ओर अधिक मजबूत बनाने मे सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया दूसरी तरफ दलितो को राजनैतिक और आर्थिक आधार पर कमजोर करने का भरसक प्रयास किया।

इस बारे मे यह भी कहना जरूरी हो जाता है कि गॉवो मे जिस जाति क लागा को मजबूत बनाना चाहिए था, वह नही हुआ। उनकी स्थिति मे कोई खास परिवतन नही आया। हा जिन दलितो के भीतर चेतना आइ उन्हे उत्पीडन का शिकार होना पडा।

9 फरवरी को लखनऊ मे मुलायम सिह यादव ने एक सवाददाता सम्मेलन बनारस जिले की हिसा की घटनाओ के सदभ मे बुलाया। उनसे एक सवाल पूछा गया बनारस व राज्य के अन्य हिस्सा म दलितो पर हिसा की घटनाओ के पीछे क्या मुख्य कारण यह नही हे कि भूमि सुधार लागू नही किए गए हे? इस सवाल का गोल करते हुए उन्होने कहा कि इनके पीछे आपसी रजिश व कानून-व्यवस्था का मामला ज्यादा हे। पूवाचल (पूर्वी उत्तर प्रदेश) मे सवण सामती उत्पीडन अरसे सं जड जमाए हुए हे, जो सामाजिक तनाव को लगातार पेदा कर रहा हे, इस असलियत को मानने से उन्होने इनकार कर दिया। उलटे, कुछ गव से उन्होने कहा, **''ऊँची जातियॉ हमलावर नहीं हे, वे मेरा साथ दे रही हे। वे अपने समारोह मे मुझे बुलाकर मेरा भाषण करवाती हे।''** फिर उन्हाने बताया कि कहॉ-कहॉ ऐसी घटनाओ के बाद प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियो के तबादले किए गए हे।

बनारस व कानपुर के अलावा इलाहाबाद, बाराबकी, फतेहपुर, हमीरपुर व बदायूँ मे उत्पीडन की गभीर घटनाएँ हुइ, जिनमे दलितो व महिलाओ को हिसा, अपमान व सामूहिक बलात्कार की यातना से गुजरना पडा है। मुलायम पर भाजपा कॉग्रेस व जनता दल की ओर से लगातार दबाव डाला गया कि वह बसपा से किनारा करे। तीनो पार्टियॉ तनाव व हिसा की घटनाओ के लिए उस समय मुख्य रूप से बसपा को अपना निशाना बना रही थी ओर मुलायम को हिदायत दे रही हे कि वह बसपा को 'दुरुस्त करे' व 'नियत्रण मे रखे'। भाजपा नेता कल्याण सिह कहते थी कि उत्तर प्रदेश मे 'जातीय हिसा का ताडव' मचा हुआ है ओर कॉग्रेस नेता प्रमोद तिवारी कहते हे कि राज्य 'गृह युद्ध' के कगार पर पहुँच रहा है। समाजवादी पार्टी के कुछ नेता भी कसमसाहट महसूस करने लगे थे।

बसपा ऐसी स्थिति मे पहुँचती दिखाई दे रही है, जहॉ उसे अपने सहयोगी नही मिल रहे। उसे सत्ता मे बने रहने के लिए अन्य सामाजिक-जातीय समूहो ओर शक्ति केद्रो की जरूरत महसूस हो रही है? शायद इसी वजह से बसपा नेता काशीराम व मायावती ने कहना शुरू किया कि पार्टी को ऊँची जातियो का सहयोग चाहिए। उद्योगपति जयत को राज्य सभा मे भेजकर ओर प्रधानमत्री राव के सलाहकार जितेन्द्र प्रसाद को राज्य सभा चुनाव जीतने मे मदद पहुँचाकर बसपा ने यही सकेत दिया है।

पिछडो ओर दलितो मे सघर्ष यदि बढता है तो दोनो के राजनीतिक हित उन्हे साथ बने रहना असभव बना सकते है।

काशीराम और मुलायम सिह यादव के बीच राष्ट्रीय स्तर पर एक राजनीतिक प्रतिस्पर्धा भी चल रही थी। मुलायम सिह यादव लोहियावादियो को इकट्ठा करके अपना राष्ट्रीय कद बनाना चाहते थे और काशीराम, अम्बेडकरवाद के सहारे उत्तर से दक्षिण तक बसपा की हवा बनाना चाहते थे। गॉधीवाद के सवाल पर भी दोनो क बीच खुला मतभेद रहा। मायावती जितनी बार गॉधीजी की आलाचना करती, मुलायम सिह यादव उतनी ही बार गॉधीवाद म अपनी आस्था जताते। लोहिया जयती पर लखनऊ मे आयोजित सभा मे मुलायम सिह यादव के प्रमुख सहयोगी जनेश्वर मिश्र (पूव केद्रीय मत्री) ने कहा कि हमारी सहयोगी पार्टी (बसपा) को कुर्सी पर बैठने का शऊर सीखना होगा। पहले यह शऊर समाजवादियो मे कम था।

इस तरह के वक्तव्यो से सपा ओर बसपा के विधायको तथा कार्यकताओ क बीच विशेष रूप से जाति आधारित तनाव उभरता रहा। जिसकी परिणति और परिणाम बाद मे देखने को मिले ही।

दिलीप अवस्थी के विचार मे जिस मायावती की दुनिया 'मान्यवर' (काशीराम का व इसी नाम से पुकारती हैं) के इर्द-गिर्द ही सिमटी रही हो, उनका राजनैतिक दृष्टि से सवेदनशील राज्य की बागडोर सॅभालना कुछ ऐसा ही था, जेसे कोई बच्चा भारी यातायात वाली सडक पर साइकिल सवारी करने निकल जाए, लेकिन मायावती ने जल्दी ही साबित कर दिया कि वे भी कुछ है। अपने 18 हफ्तो के शासन मे उन्होने राज्य मे दलितो को सर्वेसर्वा बनाने की कोशिश की और राज्य की सर्वाधिक विवादास्पद मुख्यमत्री बन गइ, इका विधायक दल के नेता प्रमोद तिवारी कहते है, "उनका दलित राज सवर्णो से प्रतिशोध तक सीमित था, दलितो की भलाई से उसका कोई सरोकार नही था।"

ऊॅची जाति वालो के खिलाफ उनका विषवमन किसी से छिपा नही था। लेकिन अल्पमत सरकार की मुखिया होते हुए भी ऊॅची जाति और राजनैतिक प्रतिद्वद्वियो से विनम्रता से पेश न आने की उनकी ढिठाई आश्चर्यजनक थी। मुख्यमत्री बनने के बाद अपने पहले सवाददाता सम्मेलन मे उन्होने कहा था, "मे उनके (मुलायम के) गुडाराज को खत्म कर दूॅगी।"

बहुजन सगठक अपने सपादकीय मे लिखता है कि बसपा सरकार बनने के बाद बसपा के प्रति भ्रॉति फेलाने के उद्देश्य से मनुवादी अखबारो एव बसपा विरोधी राजनीतिक दलो के लोगो ने यह भी प्रचारित किया कि 'बसपा को भाजपा के मिले समर्थन से दबाव स्वरूप खुलकर निर्णय नही ले पाएगी तथा मनवुादी विचारधारा का विरोध करने मे झिझकेगी।' लेकिन बसपा के ढाइ माह के शासन काल से ही स्पष्ट हो जाता है कि प्रदेश की मुख्यमत्री कु मायावती जी पर किसी भी भाजपा

जेसे समर्थित दलो का कोई दवाब काम नही कर रहा है। यदि ऐसा होता तो बसपा सरकार भाजपा के सहयोगी सगठनो (विश्व हिदू परिषद्, बजरग दल) द्वारा वाराणसी मे 'जलाभिषेक' व मथुरा मे 'विष्णु यज्ञ' किए जाने सबधी कार्यक्रमो के दौरान ढील बरतती तथा सख्ती से कार्यवाही नही करती। इस मौके पर मायावती ने यहॉ तक घोपणा भी कर दी थी कि "भले ही सरकार चली जाए, लेकिन मथुरा मे 'विष्णु यज्ञ' नही होने दिया जाएगा," फिर सरकार द्वारा तय की दूरी (माने गए विवादित स्थान से 3 किमी के दायरे) के बाहर ही विष्णु यज्ञ होने दिया गया।

मायावती ने इधर तीन और ऐसे काम किए, जिससे समथक दल भाजपा का रहा सहा धेय भी जवाब दे गया। उन्होने चुन-चुनकर प्रशासन के महत्त्वपूण पदा स सवर्णो को हटाया ओर दलितो को प्रतिकूल प्रविष्टियो के विरुद्ध प्रोन्नतियॉ दीं। मुख्य सचिव पद से ब्राह्मण होने के नाते टीएसआर सुब्रह्मण्यम को मुलायम काल मे काशीराम ने हटवाया था। अपने शासनकालीन मे मायावती ने मुख्य सचिव बृजेद्र सहाय को हटाया, उनको इससे पूव स्थानातरित कर महत्त्वहीन पद पर भी भेजा गया था। राजस्व परिषद् के अध्यक्ष सुरेद्र मोहन को भी सबक सिखाया गया। बसपा सुप्रीमो काशीराम वेसे यह तक कह गए कि **"वे अपना प्रशासन 135 दलित अफसरों से ही चला लेंगे, सवर्णो की उन्हें जरूरत नहीं।"** इस सदर्भ मे वे मथुरा का उदाहरण देते थे कि वहॉ जन्माष्टमी पर सब-कुछ दलित अफसरो ने सॅभाल रखा था, जिससे अयोध्या की घटना नही दुहराई जा सकी।

137 दिनो के मायावती राज के चलते भाजपा को यह भले सतोष हो कि मुलायम सिह से पिड छूटा रहा, पर सच तो यह है कि इस अवधि मे उसके समर्थको ओर कायकर्ताओ मे ही भारी रोष पैदा हो चला था। ब्राह्मण, ठाकुरो मे तीव्र प्रतिक्रियाएँ थी। यद्यपि कल्याण सिह बराबर अपने लोगो को समझा रहे थे कि यह बसपा की सरकार हे, हमारी नही इसलिए ट्रासफर आदि के मामलो मे हमे नही पडना चाहिए। तथापि विधायको को तो चूँकि अपना क्षेत्र भी ठीक रखना था और अपने समर्थक भी सतुष्ट रखने थे, इसलिए इस सबसे बचना सभव नही था। पर वस्तु स्थिति यह थी कि बसपा सरकार की मुख्यमत्री मायावती ने भाजपा के हिदू ढॉचे मे दरार अवश्य ही डाल दी थी।

सच तो यह था कि काशी के विश्वनाथ मदिर मे शृगारगौरी पर जलाभिषेक तथा मथुरा मे विहिप के यज्ञ को लेकर भी मायावती सरकार ने भाजपा को काफी कुछ झुका लिया था। जब प्रदेश भाजपा अध्यक्ष कलराज मिश्र ने जलाभिषेक को सरकारी स्वीकृति की बात कही, तो तत्काल उसका खडन किया गया। मथुरा मे यज्ञस्थल को लेकर जो विवाद हुआ, उसमे विहिप को मायावती की जिद ही माननी पडी। दोनो ही जगह कोड 'नयी परपरा' नही पडने दी गई। वैसे अब तक मामला बहुत गरमा गया था। लेकिन भाजपा खेमे मे जबर्दस्त सन्नाटा भी देखा जा सकता

था। इसी दोरान कल्याण सिह ने 'माया' को दिये गये साक्षात्कार मे कहा था कि तुलनात्मक दृष्टि से मायावती मुलायम से बदतर थी। मुलायम सिह तो राम मदिर बनने क विरोध मे थे, जबकि मायावती तो भगवान राम के ही विरोध मे थी।

गणश मत्री लिखते हे कि एक बार फिर बहुजन समाज पार्टी के सर्वेसवा काशीराम का गॉधी-निदा का बहाना लखनऊ मे आयोजित 'पेरियार मेले को लेकर उठे वितडावाद से मिला। यह वितडावाद किसी गॉधी भक्त ने नहीं वरन विश्व परिषद् ने खडा किया था। यह बात किसी से छिपी नही है कि विहिप का गॉधी से दूर का भी सबध नही है। देश स्वतत्र होने के तुरत बाद के दोर मे विहिप का जनक राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ उग्र गॉधी विरोधी था। कुछ भोले लोग पूछेगे कि काशीराम विहिप या भाजपा के बजाय गॉधी पर क्यो बरसे? जवाब सीधा हे, उत्तर प्रदेश मे बसपा सरकार का सिहासन भाजपा के ही कधो पर टिका हुआ है। काशीराम चतुर राजनीतिज्ञ हे। सिर पर रखी अडो की जिस टोकरी पर उनके सारे सपनो का दारोमदार है, उसे 'पेरियार मेले' जेसी मामूली बात पर वे क्यो गिरने देगे?

यह अलग बात हे कि अपनी गरज निकलने पर भाजपा उत्तर प्रदेश मे भी वसा भी कुछ करे, जो उसने 1990 मे विश्वनाथ प्रताप सिह की केद्रीय सरकार के साथ किया था। खबरे तो यह भी है कि भाजपा मुख्यमत्री मायावती के माध्यम से बसपा को तोडने ओर उसके एक धडे को जीम जाने की जुगत कर रही है। यह कठिन भी नही है। सघ परिवार का तो दावा है कि दलितो के उद्धारक बाबा साहेब अम्बेडकर की सोच मे एक सशक्त धारा हिदुत्व की भी थी। यह एक तरह से बसपा के कार्यकताओ के लिए खुला आमत्रण है—"आप लोग कहॉ उस छोटे से दडबे मे बेठे है। उससे बाहर आइए, हमारी विशाल पगत मे बैठिए।"

सच बात तो यह थी कि बसपा भाजपा के इस अवसरवादी गठजोड के कारण दोनो ही दल के नेता बेचैनी मे फॅस गए थे। जहॉ अटल-आडवाणी के पक्ष वाला लालजी टडन-कलराज मिश्र का धडा मायावती को समर्थन जारी रखने और धीरे-धीरे उन्हे या बसपा के एक हिस्से को अपनी ओर खीच लाने की रणनीति का हामी था, वही मुरलीमनोहर के पक्ष वाला कल्याण सिह खेमा इस प्रक्रिया को कल्याण की रहनुमाई वाली बैकवड लाबी के खिलाफ चुनौती मान रहा था।

दूसरी ओर बसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष काशीराम को लग रहा था कि मायावती उनकी छाया से आजाद होकर भाजपा के करीब होती जा रही है और उत्तर प्रदेश मे बसपा पर उनकी गिरफ्त ढीली पडती जा रही है। वैसे भाजपा बसपा को निगलने की कोशिश मे कोई कसर नही छोड रही थी। मायावती ने न सिर्फ अपने भाषणो से 'मनुवादी' ठप्पे से लेकर अन्य भाजपा-विरोधी उद्गारो को निकाल दिया था, बल्कि अपने कई निणयो को भाजपा के दबाव मे बदल दिया था और ऐसा वे अत तक करती रही थी। काशीराम को साफ लग रहा था कि मुख्यमत्री बने रहने के चक्कर

म मायावती ऐसी भूले कर रही थी जिनसे बसपा अपनी रही-सही साख खाने के कगार तक पहुँच चुकी थी। इसका भय भी था कि सत्ता के लोभ मे बसपा का एक हिस्सा टूटकर भाजपा को सरकार बनाने मे मदद तक कर सकता था। इस आत्मघाती प्रक्रिया पर राक लगाने के लिए काशीराम ने पहले ही **पेरियर मेला** आयोजित किया। काशीराम न पार्टी क दलित आधार म गिरावट को रोकने के लिए सितबर माह म पूरे राज्य मे जातीय रेलियॉ आयोजित करने का फेसला किया। जिसम दलितो तथा अत्यत पिछडी जातियो को गोलबद करने पर जोर दिया साथ ही भाजपा से सबध विच्छद करन की तेयारी भी की। उन्होने अपने भाषणो मे मनुवाद, राम ओर यहॉ तक कि भाजपा पर भी प्रहार करने की कार्यनीति अपनाई। पर मायावती ने इसमे उत्साह स हिस्सा नही लिया तो अत मे वे इस निणय पर पहुँचे कि जितना जल्द हो, भाजपा स सपक तोडना ही बेहतर है।

इसी कारण जहॉ काशीराम इस गठजोड के टूटने से खुश नजर आए वही मायावती न इसे साप्रदायिक ओर मनुवादी शक्तियो का दलित-महिला विरोधी षड्यत्र वताया। यूँ मायावती की प्रथम दलित महिला मुख्यमत्री बनने की ख्वाहिश तो पूरी हो ही चुकी थी।

पुरुषात्तम अग्रवाल अपने लेख मे मानते है यह निर्विवाद है कि समूचे उत्तर भारत म दलिता क सामाजिक-सास्कृतिक आत्मरेखाकन का राजनीतिक प्रतिनिधित्व इस वक्त मुख्यत बहुजन समाज पार्टी कर रही हे और इसी प्रतिनिधित्व की दावेदारी रामविलास पासवान भी अपनी दलित सेना के जरिए कर रहे हे। बसपा को बढत हासिल ह ता इसलिए कि बसपा बरसो पुराने आत्मरेखाकन कार्यक्रम की राजनीतिक परिणति हे। बामसफ आर डी एस फार से शुरू कर काशीराम दलितो के आत्मरेखाकन को सत्ता की खुली राजनीति तक लाए। इस प्रक्रिया म उन्होने अपना मजबूत जनाधार तेयार किया ह।

यह कहना अनुचित न होगा कि असल मे काशीराम की ताकत का एक बडा स्रात जातिवादी समाज व्यवस्था ओर ब्राह्मण सस्कृति ही है। आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओ से जब शूद्रो मे निरतर ओर सगठित आत्मबोध का उदय हुआ तो उन्होने स्वय को बेवजह उत्पीडित किए गए लोगो के रूप मे पहचाना। इस पहचान की विविध सामाजिक परिणतियो के ही प्रतीक हे फुले, अम्बेडकर और पेरियर। वर्णाश्रम की सस्कृति मे निहित तिरस्कार को नियति मानकर स्वीकार लेना किसी आत्मसजग दलित के लिए सभव नही हे। काशीराम ने बामसेफ के जरिए इन्ही आत्मसजग दलितो क सवाधिक सगठित तबके सरकारी कमचारियो पर ध्यान दिया और धीरे-धीरे अपने प्रभाव का विस्तार अन्य सामाजिक स्तरो पर किया।

तिरस्कार जनित क्षोभ को सगठित स्वर देना उचित भी था ओर जरूरी भी, लेकिन उससे कही ज्यादा जरूरी था इस क्षोभ और असतोष को साथक सामाजिक

परिवतन की विचारधारा और उससे उपजे राजनीतिक एजेडा मे गूँथना। इस सबसे जरूरी काम मे बसपा के नेता न केवल असफल रहे, बल्कि उन्हाने इसकी अक्षम्य उपेक्षा भी की।

बसपा के नेताओ ओर हमदर्दो को 'सामाजिक न्याय की अवधारणा सख्त नापसद ह, स्वभावत विश्वनाथ प्रताप सिह से भी उन्हे गहरी विरक्ति है, लेकिन जिस विडबनापूण स्थिति मे आज बसपा स्वय को पा रही हे, उसका सटीक सकत विश्वनाथ प्रताप सिह ने ही उस समय किया था जब मायावती उत्तर प्रदेश की मुख्यमत्री बनने के बाद विश्वनाथ प्रताप सिह से मिली थी—**'या तो सरकार चला ले या अपना मास बस बचा ले'**।

पुरुषोत्तम अग्रवाल के भीतर कही दलित उभार के प्रति ग्रथि हे जो बार-बार बाहर आती है। उनका कहना यह भी है कि **बहुजन** की बजाए स्वय को **सवजन** का मुख्यमत्री कहते समय, गॉधी जयती के कायक्रम मे हिस्सा लेत समय शायद मायावनी का **'सामाजिक न्याय' की अवधारणा** का महत्त्व समझ आया हो। भाजपा का समथन लेने से लेकर कॉग्रेस, जनता दल पुन भाजपा किसी के भी साथ तालमेल या गठजोड की सभावनाएँ खुली रखना ऐसी ही समझोता परस्ती को सूचित करता हे।

जफर आगा लिखते हे कि वे झटके से मुख्यमत्री बनी। स्कूल टीचर ओर 'बुलद इरादो वाली जाटव जाति की मायावती ने जून 1995 मे उत्तर प्रदेश की पहली दलित मुख्यमत्री हाने का गौरव हासिल किया। जरा उनके कारनामो पर नजर डाले मुलायम सिह यादव की घोर विरोधी भाजपा से हाथ मिलाकर मायावती ने उन्हे अचानक मात दे दी। और जब उन्होने सवर्ण विरोधी तवर तेज कर दिए तो भाजपा परेशानी म पड गइ। फिर, सत्ता मे रहते हुए उन्होने लोकलुभावन कदम उठाकर दलिता ओर पिछडा को खुश करने की कोशिश की। इसी साल अक्तूबर मे सत्ता छिन जाने के बाद भी उनकी महत्त्वाकाक्षा ओर चालबाजी कम नही हुई। उन्होने विरोधी पार्टिया को चुनावी मैदान मे धूल चटाकर सत्ता मे लौटने की कसमे खाइ।

मायावती को समझने के लिए उनके 136 दिन के शासन पर नजर डालना जरूरी हे, जिसमे उनके व्यक्तित्त्व के बदलते रग झलकते है। सत्ता मे आने से ठीक पहले तक वे 'मनुवादियो' के खिलाफ आग उगलने वाली अपरिपक्व नेता मानी जाती थी। लेकिन अब ऐसा नही। भदेसपन की जगह परिष्कृत शैली ने ले ली हे। वे बागी से नायिका बन चुकी है—उनके साथ कारो का काफिला और ब्लैक कैट कमाडो की टोली चलती हे। उनकी हर सभा मे काफी उत्साही भीड जुटती हे। सत्ता से बाहर होने के बावजूद मायावती **दलित राजनीति की रानी** है।

मगर यह सब इतनी आसानी से नही हुआ। अपने कार्यकाल के दौरान मायावती ने हर दलित को यह एहसास दिलाना चाहा कि उसकी जीवन-शैली मे सुधार हो रहा हे। जब उन्हे भरोसा हो गया कि राज्य की आबादी के 11 प्रतिशत दलित बसपा

की जेब मे है तो वे पिछडो और मुसलमानो का दिल जीतने मे लग गई। उनका नजरिया बिलकुल साफ था—सपा के मुस्लिम वोट बेक पर कब्जा करना। मसलन, मुसलमानो को अन्य पिछडी जातियो को मिलने वाले 27 फीसदी आरक्षण मे शामिल कर लिया गया। इसके अलावा निर्धन मुसलमान छात्रो को तत्काल वजीफे मिलने लगे। मसलन राज्य के बुदेलखड के मुसलमान (कुल आबादी का 30-35 फीसदी) मुलायम का साथ छोडकर मायावती की तरफ जा रहे लगते हे। तक सीधा हे। उनमे से बहुत-से लोगो को लगता है कि मायावती सपा से बेहतर विकल्प सिद्ध हो सकती है।

दिलीप अवस्थी लिखते हे कि उत्तर प्रदेश की मुख्यमत्री मायावती को कुर्सी सॅभाले बमुश्किल ढाइ महीने हुए है मगर मुसीबतो से भी फायदा उठा लेने का गुर वे बडी तेजी से सीख रही है। पिछले पखवाडे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के मौके पर विश्व हिदू परिषद् (विहिप) ने मथुरा मे कृष्ण जन्मभूमि की 'मुक्ति' का अभियान नए सिरे से छेडा तो सारे देश का ध्यान उसी नरफ लगा रहा। इससे कुछ ही हफ्ते पहले वाराणसी मे विहिप ने जलाभिषेक कार्यक्रम के दौरान धार्मिक उन्माद भडकाया तो राज्य प्रशासन असहाय दर्शक बना रहा। वाराणसी की इस कामयाबी के साथ ही विहिप के होसले इस वजह से भी और बुलद है कि मायावती की सरकार भाजपा के समथन पर ही टिकी हुई है।

मगर अतत विहिप को भारी हगामा खडा करने के बाद कदम वापस खीच लने की वजहे ढूँढनी पडी। और जिस तरह उसे झुकने के लिए मजबूर होना पडा, उसस मायावती को अपने राजनेतिक प्रतिद्वद्वियो तक की तारीफ मिली। अचानक कदम पीछे हटा लेने पर विहिप कायकर्ता भी दग रह गए। उसके नेताओ ने अपनी बहादुरी दिखाने की कोशिश करते हुए कहा कि वे छोटी लडाई जान-बूझकर हारे हे, ताकि असली 'युद्ध' जीत सके। विहिप के सयुक्त सचिव आचार्य गिरिराज किशोर कहते है, "बडे उद्‌देश्य के लिए हमने अपने छोटे हितो का बलिदान करने का निणय किया। हम ऐसा कुछ नही करना चाहते थे जिससे बसपा की सरकार गिर जाए।"

जबकि यह अद्धसत्य है। जलाभिषेक की सफलता के बाद बसपा सरकार पर भाजपा के दबाव को देखते हुए विहिप के नेता आश्वस्त थे कि मायावती मथुरा के उनके कार्यक्रम को एक बार फिर पूरा होने देगी। मगर मायावती सवा सेर निकली। उन्होने स्पष्ट सकेत दे दिया कि अगर दबाव बढा तो वे अपनी सरकार को कुर्बान कर देगी। 10 अगस्त को उन्होने प्रस्तावित यज्ञ और परिक्रमा पर पाबदी लगाने की घोषणा की। और अगले दिन विहिप-भाजपा के नौ सदस्यीय प्रतिनिधिमडल के साथ हुइ बैठक मे उन्होने अपने फैसले पर पुनर्विचार से मना कर दिया।

हैरत मे पडे भाजपा नेता इन अफवाहो से भी भ्रमित हो गए कि अगर भाजपा समर्थन हटा लेती है तो मुलायम सिह यादव की समाजवादी पार्टी मायावती की सरकार

को 'अस्थायी' समर्थन दे देगी। हालॉकि मुलायम ने बाद मे इस बात से साफ इनकार किया कि उन्होने कभी ऐसे प्रस्ताव पर विचार किया था। उन्होने कहा, "ऐसी बात हम तभी सोच सकते है जब भाजपा सचमुच समथन वापस ले ले।" इसके अलावा भाजपा नेता इस बात से भी वाकिफ थे कि इका ओर सपा की कोशिश भाजपा-बसपा गठबधन मे दरार पेदा करने की हे जो वोट के लिहाज से काफी मजबूत गठजोड ह। सूत्रो का कहना हे कि जहॉ विद्याचरण शुक्ल ओर राजेश पायलट बसपा नता काशीराम से सपक साधे हुए थे, वही मुलायम ने बसपा विधायको को सदेश भिजवाया कि वे विहिप के दबाव के आगे न झुके। बताया जाता हे कि प्रधानमत्री ने अपने दूता के जरिए सदेश भिजवाया कि अगर दबाव ज्यादा हो तो मायावती विधानसभा भग कर दे ओर आगामी चुनाव तक उन्हे कायवाहक मुख्यमत्री बने रहने दिया जाएगा।

तेजी से बदले घटनाक्रम ने सघ परिवार के नेताओ मे खलबली मचा दी। 12 अगस्त को विहिप के महासचिव अशोक सिघल को इका ओर सपा की चालबाजी की खबर लदन मे दी गई। विहिप के अध्यक्ष विष्णु हरि डालमिया हेदराबाद से भागे-भागे दिल्ली आए। अगले दिन मायावती विहिप नेताओ से मिलने दिल्ली आइ। विहिप नता इस शत पर परिक्रमा वापस लेने को तैयार हो गए कि उन्हे पूव-निर्धारित स्थान जवाहर इटर कॉलेज मे यज्ञ करने दिया जाए, जो परिसर से बमुश्किल 500 गज दूर हे। मगर मायावती नही मानी।

इस दोरान विहिप नेतृत्व मे कई बडे मतभेद उजागर हुए। अयोध्या आदोलन मे आग-आगे रहे स्वामी वामदेव ने यज्ञ की तैयारी मे दरकिनार किए जाने के विरोध मे मथुरा के कायक्रम मे शामिल होने से इनकार कर दिया। मथुरा मे आम तोर पर इस वक्त रहने वाले स्वामी वामदेव भीलवाडा चले गए। साध्वी ऋतभरा ने भी उनका अनुसरण किया। मथुरा से भाजपा के सासद महत साक्षी गोपाल भी वहॉ गेरहाजिर थे। वे 18 अगस्त की सुबह ही शहर मे आए और वृदावन के अपने आश्रम मे बेठे रहे। अयोध्या मुहिम के अगुआ महत अवैद्यनाथ, परमहस रामचद्र दास और नृत्यगोपाल दास भी मौजूद नही थे। उन्होने 14 अगस्त को फेक्स सदेश भेजा, "इस समय बसपा से टकराव मे समझदारी नही है।"

इस फूट का फायदा उठाते हुए मायावती ने 14 अगस्त को विहिप नेताओ—डालमिया और विनय कटियार—के साथ बैठक मे समझौते से इनकार कर दिया। ओर वे भी हैरत मे पड गइ जब विहिप नेताओ ने प्रस्तावित स्थल से 3 कि मी दूर यज्ञ आयोजित करने की उनकी सलाह मान ली। इस फैसले की घोषणा करते हुए कटियार ने सवाददाताओ से कहा, "हमने यह फेसला शाति बनाए रखने के लिए किया, क्योकि हमे खबर मिली थी कि उपद्रवी तत्त्व मुश्किल पैदा करने की कोशिश करेगे।" लेकिन उनकी इस दलील मे दम नही दिखता। दरअसल, मायावती कामयाब रही। उन्हे इस बात का अदाजा हो गया था कि बसपा को समर्थन देने

स जा दलित जनाधार भाजपा को मिला है, उसे यह खोना नही चाहती।

बहरहाल, तीन दिन के यज्ञ मे कभी भी एक हजार से ज्यादा भक्त इकट्ठा नही हुए। इसकी वजह सिर्फ विहिप का ठडा पड जाना ही नही है। मथुरा के आसपास बडी तादाद मे पुलिस की तेनाती से जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्ण मदिर पहुँचने वाले आम भक्त भी कम आए। केंद्रीय बलो ओर राज्य पुलिस की 83 कपनियाँ मस्जिद के चारो आर चोकसी कर रही थी।

पूव मेयर तथा वरिष्ठ साहित्यकार दाऊजी गुप्त ने बताया, "लोग कुछ भी कह, मायावती का मुख्यमत्री बनना उन परिस्थितियो पर निर्भर करता है, जिन्हे सामतवाद ने जन्म दिया। हालाकि मायावती के सघष को हम अनदेखी नही कर सकते। उस सघष को किनारे कर केवल अवसरवाद की बात करना उचित नही हे। राजनीति मे कब क्या हो जाए, इसकी कोइ भी कल्पना नही कर सकता। राजनीति भावनाओ के सहारे नही चलती। उसकी जनक ऐसी तमाम परिस्थितिया होती हे, जिनकी परिधि मे आक्रोश होता हे, गलत परपराओ को उलटने की इच्छा शक्ति होनी हे और राजनीतिज्ञो के अपने-अपने द्वद्व होते हे।

सदर्भ एव टिप्पणी

- इंडिया टुड नइ दिल्ला 30 जून 1995 पृष्ठ 30
- माया 15 नवबर 1995
- मो जमाल अख्तर आयरन लडा कु मायावती प्रकाशक बहुजन सगठक 12 गुरुद्वारा रकाबगज रोड नइ दिल्ली 1999 पृ 11
- अजय सिह हाथा बसपा का अकुश भाजपा का समकालीन जनमत 16 30 जून 1995
- स्वर्णिम इतिहास की रचना दलित प्रक्रिया अम्बडकर चोक मुनिरका नइ दिल्ली मइ-जून 1995 पृ 20
- राष्ट्रीय सहारा नाएडा 10 जून 1995 पृ 5
- वही पृ 6
- वही पृ 7
- वही पृ 8
- वही पृ 9
- वही पृ 10
- कवल भारती मायावती की ताजपोशी हम दलित नइ दिल्ली नवबर 1995 पृष्ठ 20
- राष्ट्रीय सहारा 2 जुलाइ 1995
- बहुजन सगठक बामसेफ सस्था और बसपा का मुख पत्र नइ दिल्ली 6 दिसबर 1993 पृ 4
- गेल ओम्वेट यह बसपा का पतन है बहुजनवाद का नही समकालीन जनमत 16-31 अगस्त 95
- वही 1 जनवरी 94 पृष्ठ 14
- वही 16 31 माच 94 पृ 7
- वही पृ 10
- वही पृ 9

- इडिया टुड 15 नवबर 9ɔ पृ 46
- बहुजन सगठक अगस्त 9ɔ पृ 4
- माया 1ɔ नवबर 95 पृ 14
- वहा पृ 1ɔ
- राष्ट्राय सहारा 30 सितबर 9ɔ पृ 6
- क्या यहा ह ब्राह्मवाद का विकल्प पुरुषात्तम अग्रवाल 18 नवबर 9ɔ
- दलित राजनाति का रानी इडिया टुड 15 अप्रेल 1996 पृ 30
- वहा 1ɔ सितबर 9ɔ पृ 23
- 22 जनवरा 2002 म लखनऊ स्थित उनक निवास पर बातचीत के आधार पर

1996 के चुनाव

क्राति साप्ताहिक लिखता हे कि उत्तर प्रदेश की साढे चार माह पुरानी मायावती सरकार को नही बचाया जा सका। भारतीय जनता पार्टी ने 'दलित प्रेम' की बेसाखी हटा ली और समथन वापस होन के साथ ही 'दलित प्रेम' नामक नाटक का पटाक्षेप हो गया। मायावती ने अपनी पार्टी के सिद्धातो के अनुसार पूरे समय सरकार अपनी तरह से सरकार भलाइ हालाकि भारतीय जनता पार्टी के नेताओ ने उन्हे अपनी विचारधारा मे ढालने की कोशिश तो बहुत की थी। लेकिन मायावती अपनी विचारधारा पर मजबूती से टिकी रही। बसपा के अनुसार पूरे शासन काल मे भाजपा के नेताओ ने मायावती को कठपुतली बनाने एव अगुली पर नचाने की पूरी पूरी कोशिश की थी, लेकिन उन्होने अपनी बुद्धिमत्ता से काय लिया पूरे समय भाजपा के नेताओ का कटपुतला बनाकर नचाया।

बीजेपी ने समथन वापसी के जो कारण गिनाए हे, उनम कोई भी ऐसा नही हे, जिसे समथन वापस का ठोस सबूत माना जाए। मायावती सरकार ने दलितो, पिछडे वर्ग के उत्थान के लिए कुछ योजनाएँ बनाइ थी, बीजेपी को यह रास नही आया ओर आरोप लगा दिया कि मायावती सरकार जातिवादी आधार पर काम कर रही है। एक ओर बीजेपी दलितो, शोषित वग के नारे लगा रही है। जब एक दलित सरकार इस उद्‌देश्य के लिए कुछ करना चाहती है तो उसकी टॉग खीच ली जाती हे। अगर बीजेपी वास्तव मे दलितो की हित रक्षक होती तो इस सरकार को अपना समथन जारी रखती। एक तरफ बीजेपी ने बिना शत समथन का ऐलान किया दूसरी ओर बिना उचित कारण समथन वापस ले लिया। जो तकसगत नही था।

बसपा न जब यह नारा दिया था कि—'वोट हमारा, राज तुम्हारा—नही चलेगा, नही चलेगा', तब दूसरे राष्ट्रीय दलो के आका ओर उनके समर्थक बसपा के इस तरह के नारो को हलके तौर पर लिया करते थे, आम लोग भी इसी तरह समझा करते थे कि राजनीतिक पार्टियॉ इसी तरह कोई-न-कोइ अपना नारा देती रहती है ओर कुछ दिन बाद वह नारा लुप्त हो जाता है तथा नया नारा निकल आता है, लोगो को गुमराह करने के लिए, लेकिन एक दशक मे ही बसपा ने अपना इतना

विस्तार कर लिया है कि हर पार्टी बसपा से बिना बात किए जैसे अपने को अधूरा मानती रही थी। उनकी राजनीतिक गोटियो के सारे रास्ते बद हो चुके थे। बसपा ने अपनी सरकार बनाकर मुलायम सिह की धोखाधडी, माफियागर्दी एव भ्रष्टाचार को सबक सिखाने एव बहुजन समाज को मनुवादी भाजपा की दोगली नीतियो को नगा करने के लिए भाजपा से निशर्त समथन भी लिया, जो अस्वाभाविक होते हुए भी राजनीतिक दॉव-पेच करने पडे, यह उस दोरान एक बडा आश्चय भी माना जा रहा था जो सत्य भी था कि दो ठीक विपरीत दिशावाली पार्टियो का इस तरह का समथन कितने दिन चल पायेगा। लेकिन बसपा को निशर्त समथन देने के पीछे मनुवादी भाजपा का एक ही मकसद था, जिसे बसपा समझती ही नही थी, बल्कि अपने मचो से खूब लाउडस्पीकर लगाकर कहती भी रही कि मनुवादी दलो मे हमारे लोगो का कभी भला नही हो सकता, उनका दलित प्रेम मात्र मगरमच्छ के ऑसुओ की तरह ही हे। भाजपा ही अकेले नही, बल्कि मनुवादी अन्य सभी दल बसपा को फूटी ऑख से भी दखना पसद नही करते है, वे सभी इसी दॉव-पेच मे भी रहते है कि बसपा को कॅसे धकियाया जाए इसके बढते प्रभाव को किस तरह से मिटाया जाए, इसी रणनीति के तहत बसपा को भाजपा ने भी समथन दिया फिर बसपा की सरकार भी साढे चार माह मे ही गिरा भी दी, लेकिन इतना कुछ करने के बावजूद बसपा दिन दोगुनी और रात चोगुनी बढती ही गई।

बहुजन सगठक आगे अपने सपादकीय मे लिखता है कि बसपा को राजनीति के आकाशीय मडल मे 'धूमकेतु' समझने वाले आज खुद ॲधियारे मे भटकते नजर आ रहे है और बसपा सूर्य की तरह ॲधियारे को चीरते हुए आगे बढ रही है। इसलिए बहुजन समाज का भला मनुवादी दलो के साथ रहने से नही, बल्कि बसपा के साथ रहने मे है। अब उन्हे पुन युद्ध क्षेत्र मे आना था। चुनाव सर पर थे। राजनेतिक दल अपनी-अपनी तैयार करने मे लगे थे। कहा जाता है कि लोहा लोहे को काटता है। बहुजन राजनीति मे भी इसी दर्शन का प्रचुरता से प्रयोग हुआ।

वही इडिया टुडे का मानना है कि उत्तर प्रदेश मे एक ओर विधानसभा चुनाव जीतने के लिए राजनैतिक दलो का खुलकर जातिकरण हुआ। वही दूसरी ओर चुनावी मुद्दो के प्रचार की बजाए बदूको और ए के 47 का आतक और उससे निबटने के लिए 'लाल, पीली और हरी' सेनाओ के गठन की भी तैयारी हुई। सभी राजनैतिक दलो का मकसद था साम, दाम, दड, भेद नीति से प्रदेश की सत्ता पर काबिज होना। एक तरफ समाजवादी पार्टी ने वोटो की लूट और चुनाव के दौरान गुडागर्दी को रोकने के लिए **'लाल सेना'** के गठन की घोषणा की तो दूसरी तरफ बहुजन समाज पार्टी ने बहुजन सुरक्षा दल या **'ब्लू ब्रिगेड'** गठित किया। बसपा ने बहुजन सुरक्षा दल के लिए नौजवानो की भर्ती कर उनकी ट्रेनिग भी शुरू की।

कोई भी किसी से पीछे नही रहना चाहता था। सभी की राजनैतिक गतिविधियॉ

लगभग एक जैसी थी। ओर सत्ता प्राप्त करने का माध्दम भी। उत्तर प्रदेश विधानसभा के तीन चरणो मे हुए चुनाव के लिए नाम वापसी की अवधि खत्म होने के बाद 4441 उम्मीदवार मेदान मे रह गए थे।

बहुजन समाज पार्टी ने सभी वर्गो को समान प्रतिनिधित्व देते हुए कुल 299 प्रत्याशिया की सूची जारी की। बसपा की राष्ट्रीय महासचिव एव तत्कालीन पूर्व मुख्यमत्री मायावती ने बताया था कि बसपा ने समाज के सभी वर्गो का प्रतिनिधित्व किया ह। बसपा ने पिछडे वर्ग के 102 लोगो, अनुसूचित जातियो के 86, मुसलमाना को 53, ठाकुरो को 25, ब्राह्मणो को 12, वृणिको को 4, जाटो को 5, पजाबियो को 5, कायस्थो को 3, भूमिहारो को 2, ईसाई व बगाली को एक-एक सीट से प्रत्याशी बनाया गया हे। इस तरह बसपा ने लोकतात्रिक चुनावी युद्ध मे समाज के लगभग सभी वर्ग एव जातियो को जोडा।

बहुजन समाज पार्टी की महासचिव मायावती ने अप्रैल, 1996 मे उत्तरी भारत के एक हिदी देनिक को दिए साक्षात्कार मे कहा था, "उत्तर प्रदेश के सदर्भ मे हमने यह फेसला लिया था कि हम किसी पार्टी से कोई तालमेल नही करेगे। हम बहुजन समाज मे तालमेल चाहते है, पार्टियो मे नही। सो मे से पिचासी जब बहुजन समाज के लोग हो ओर उनमे आपसी भाईचारा या तालमेल हो जाए तो पार्टियो से तालमेल की क्या जरूरत हे। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमत्री की यह एक अच्छी बात थी, पर चुनाव के परिणामो ने यह बतला दिया कि बहुजन समाज से तालमेल करने मे बहुजन समाज पार्टी उस तरह सफल नही हो सकी। बहुजन समाज के मतो को जिस तरह बॉटा गया, इसे दुखद आश्चर्यजनक चुनावी रणनीति ही कहा जाएगा। विशेष रूप मे सयुक्त मोर्चा या बसपा की इस खुशफहमी पर उनका मानना रहा कि भाजपा को भले ही बहुमत नही मिल पाया, लेकिन इनकी भी सीमाऍ स्पष्ट हो गइ है। मुलायम सिह यादव यादवो और कुछ पिछडो का वोट लेकर मुख्यमत्री नही बन सकते और काशीराम को सिर्फ दलितो की बदौलत सत्ता नही मिलने वाली। इसलिए एक खास वर्ग के सहारे सत्ता पाने की राजनीति से जिस सामाजिक विखडन का खतरा पैदा हो सकता था, वह भी नही होने वाला। यह दबाव पहले भी स्पष्ट हो गया था, जब बसपा ने पहली बार सवर्णो को भी टिकट दिया और मुलायम सिह ने भी अच्छी खासी कोशिश की कि ब्राह्मण नही तो कम-से-कम राजपूत ही उनके साथ आ जाऍ। भाजपा ने भी इस बार पिछडो को अधिक टिकट दिया। यानी सभी ने अपने-अपने दायरे से बाहर निकलने की कोशिश की। ये दबाव आगे और भी काम करेगे और 'जुडाव' की यह प्रक्रिया लोकतत्र के लिए बेहतर सकेत रही। ऐसा फोरी तौर पर माना गया।

जहॉ तक बसपा-कॉग्रेस गठबधन का सवाल है तो इसका लाभ पूरी तरह कॉग्रेस को मिला। बसपा का समूचा वोट कॉग्रेस के पक्ष मे गया, लेकिन कॉग्रेस का वोट

बॅट गया। कॉंग्रेस का जो **'शेष' दलित वोट** था वह तो बसपा क़ो मिला, लेकिन बाकी वोट अन्य पार्टियो मे विभाजित हो गया।

जहॉ तक सामाजिक न्याय और सामाजिक परिवर्तन का सवाल है तो अगर यह प्रक्रिया एक व्यापक विचारधारा के तहत शुरू होती और जिसमे दलित ही नही सवर्णो की भी भागीदारी होती तो यह परिवतन कही ज्यादा गहरा होता।

पुष्पद्र की टिप्पणी ओर उनके द्वारा किये गये गभीर चुनावी सर्वेक्षण ओर विश्लेपण को अगर हम सही माने तो ग्यारहवी लोकसभा के 1996 मे हुए चुनावो स भारतीय राजनीति मे बहुत बडे परिवर्तन की शुरुआत मानी जा सकती है। इस चुनाव के बाद से एक पार्टी के वर्चस्व की जगह गठजोडो की राजनीति के युग ने ल ली ओर कॉंग्रेस के रुतबे मे धीरे-धीर गिरावट आने लगी। भारतीय जनता पार्टी ससद मे सीटो के मामले मे सबसे आगे निकल गई और उसका सारे देश मे सागठनिक रूप से विस्तार भी हुआ। कई राज्यो म क्षेत्रीय पार्टियो का राजनीतिक महत्त्व बढ गया ओर समाजवादी पार्टी, समता पार्टी, जनता दल, राष्ट्रीय जनता दल, बहुजन समाज पार्टी, जेसी छोटी-छोटी पार्टियो को मजबूती मिली। इन छोटी पार्टियो के पास अपने-अपने खास सामुदायिगत समर्थन आधार थे और इनके प्रभाव क्षेत्र सीमित था। दलगत राजनीति मे हुए इन परिवतनो के पीछे भारतीय समाज मे हुए कही व्यापक परिवर्तनो की भूमिका थी। समाज के विभिन्न तबके राजनीति मे अपनी दावेदारी पेश करने मे लगे हुए थे और पार्टियो की सामाजिक सरचना और उनके द्वारा की जाने वाली समूह-हितो की अभिव्यक्ति भी तेजी से बदल रही थी। चूॅकि राष्ट्रीय पार्टियॉ इन हितो की परवाह कर पाने मे कामयाब नहीं हो पा रही थी। इसलिए भी हित-आधारित छोटी पार्टियो की सख्या बढती जा रही थी। द्विज जातियो ने, खास तोर से उत्तर भारत मे, कॉंग्रेस का दामन छोड दिया था और कमोबेश भाजपा के पीछे गोलबद हो गइ थी। अपने आतरिक विभेदो के बावजूद पिछडी जातियो को समाजवादी पार्टी, समता पार्टी, जनता दल, राष्ट्रीय जनता दल, क्षेत्रीय दलो और वामपथी पार्टियो मे अपने ताकतवर राजनीतिक प्रतिनिधित्व की उपलब्धि हो गई थी। मुसलमान भी कॉंग्रेस का साथ छोडकर अन्य पार्टियो के साथ रणनीतिक गठजोड बनाने लगे थे, ताकि भाजपा और कॉंग्रेस की पराजय सुनिश्चित की जा सके।

यही वह दौर था जब दलित राजनीति ने अपना बेहद मजबूत दावा पेश किया जिसके कारण अनुसूचित जातियो के मतदान सबधी रूझानो का अध्ययन जरूरी हो गया। कॉंग्रेस का पल्लू छोडकर दलित मतदाता अपनी राजनीतिक चेतना के नये चरण का उद्‌घाटन करते दिखे और दलगत होड के जरिए उनकी नयी राजनीतिक अस्मिता बनती हुई प्रतीत हुई। इन वोटरो पर एक गहरी नजर डालने से पता चलता है कि उन्होने अपनी दावेदारी के लिए चुनावी होड को क्यो चुना। राजनीतिक व्यवस्था की वैधता के बारे मे उनकी राय के विश्लेषण से जानकारी मिलती है कि आमतौर

से वाम और वामोन्मुख पार्टियो को पसद करने वाले दलित मतदाता लोकतात्रिक सस्थाओ के बारे मे क्या समझते है। दलितो के अदरूनी विभेदो और उनकी पार्टी बहुजन समाज पार्टी के उभार के कारणो ओर प्रभाव का आकलन करते हुए इस अध्ययन मे यह पता लगाने की काशिश भी की गइ हे कि इस परिघटना के समग्र भारतीय राजनीति के लिए क्या नतीजे निकलेगे।

विकासशील समाज अध्ययन पीठ द्वारा 1996 ओर 1998 के निवाचनो क बाद जमा किए गए ऑकडो पर आधारित यह विश्लेषण क्रमश 1,791 ओर 1,312 दलित मतदाताओ से बातचीत के बाद किया गया है। सर्वेक्षण के दोरान यह भी स्पष्ट हुआ कि दलितो के भीतर विभिन्न कारणो से एक मध्य वग, उच्च-मध्य वग आर एक अभिजन माना जा सकने वाला तबका उभर चुका है। सर्वेक्षण मे कुल 9,614 ओर 8,133 वोटरो से बात की गइ जिनमे दलितो की ऊपर दी गई सख्या के अलावा द्विज मतदाताओ की सख्या क्रमश 3,357 ओर 2,039 थी।

आजादी के बाद किए गए कई अध्ययन बताते हे कि दलित मतदाता वोट डालने मे द्विज मतदाताओ से काफी पीछे रहे है। या तो ऊँची जातियो ने उन्हे वोट डालने से जबरन रोका या फिर वे स्वय राजनीतिक चेतना की कमी या हिसक प्रतिक्रिया के डर से अपने लोकतात्रिक अधिकार का इस्तेमाल करने नही गए। 1996 और 1998 के चुनावो मे यह परिस्थिति पहली बार बदलती हुई दिखाई दी। 1996 मे मतदान के राष्ट्रीय ओसत 87 3 प्रतिशत के मुकाबले द्विज जातियो के मतदान का प्रतिशत 85 6 था। दलितो ने इस चुनाव मे इन दोनो ऑकडो को पार करते हुए 89 2 प्रतिशत दज किया। 1998 मे भी यही रवैया जारी रहा और द्विज जातियो के 91 9 प्रतिशत के मुकाबले दलितो ने 93 प्रतिशत का ऑकडा दर्ज करते हुए बाजी मारी। ध्यान रहे कि 1971 मे दलितो के मतदान का प्रतिशत केवल 78 8 था। पूछने पर 1,791 दलित वोटरो मे से केवल 16 वोटरो ने कहा कि उन्होने लोकतात्रिक अधिकारो के अज्ञान या हिसा के डर से वोट नही डाला। ऑकडे यह भी बताते हे कि द्विज जातियॉ, अनुसूचित जातियो के लिए आरक्षित निर्वाचन क्षेत्रो मे मतदान के प्रति उदासीन दिखाई देती है, क्योकि वहॉ उनके पास अपनी जाति के उम्मीदवारो को वोट देने का मौका नही होता। इसके उलट दलित जातियॉ वोट डालने की कार्रवाई के प्रति खासा उत्साह प्रदर्शित करते हुए लगती है और मतदान के लिए न्यूनतम आयु 21 से घटकर 18 वर्ष होने से भी दलितो को नये अधिक मुखर और ऊर्जावान मतदाता मिले है। शिक्षा के बेहतर अवसरो और अधिकारो के प्रति बढी हुइ चेतना के कारण दलितो के लिए वोट डालना अब एक निष्क्रिय कारवाई के बजाए सामाजिक ऊर्ध्वगामिता का प्रतीक बन गया है। दलितो के मतदान का प्रतिशत इस तथ्य के बावजूद बढा है कि चुनाव आयोग की पाबदियो के कारण उम्मीदवारो के सभी वोटरो तक पहुँचने की सभावनाएँ कम हो गई है।

एक जमाने मे दलित का मतलब ही माना जाता था कि वह कॉग्रेस का वोट होगा। साठ के दशक मे रिपब्लिकन पार्टी ने कॉग्रेस के इस दावे को चुनाती देने की कोशिश की थी कि केवल वही अनुसूचित जातियो के उज्जवल भविष्य की गारटी कर सकती हे। लेकिन इस पार्टी का प्रभाव महाराष्ट्र ओर उत्तर प्रदेश के कुछ जिलो तक ही सीमित रह गया। दशक खत्म होते-होते विभिन्न राजनीतिक कारणो से इस पार्टी की रही-सही आभा भी धूमिल हा गई। 1967 और 1977 वाल चुनावा मे भी दलित मतदाताओ ने कॉग्रेस का साथ नही छोडा। 1967 मे कॉग्रेस को मिले दलित वोटा का प्रतिशत 45 2, 1971 मे 47 8, 1977 मे 35 7 ओर 1980 म 52 8 था। केवल वामपथी शासन वाले राज्यो मे ही दलित कॉग्रेस को कम पसद करते थे। दलितो की पसद मे आए बदलाव का सकेत अस्सी ओर नब्बे के चुनाव परिणामो से मिलना शुरू होता है। 1996 तक आते-आते दलितो ने उत्तर प्रदेश ओर बिहार जंसे महत्त्वपूर्ण राज्यो समेत कइ राज्यो मे कॉग्रेस को त्याग दिया। लोकसभा मे पहली बार सबसे बडी पार्टी बनने मे कॉग्रेस की नाकामी का एक बडा कारण यह भी था।

1996 मे उसे सबसे ज्यादा कुल 31 4 और 1998 मे 29 9 प्रतिशत दलित वोट मिले। इसके मुकाबले कॉग्रेस को मिले कुछ वोटो मे दलित वोटो का हिस्सा दोनो चुनावो मे क्रमश 21 6 और 22 8 प्रतिशत रहा, जबकि 1971 मे कॉग्रेस को मिल इन वोटो का प्रतिशत 47 8 था। 1996 ओर 1998 मे वामपथी पार्टियो को 11 6 ओर 10 4 प्रतिशत दलित वोट मिले, जबकि बसपा को 12 1 और 10 9 प्रतिशत दलित वोट मिले। 1996 मे बसपा दलित वोटो पर सबसे ज्यादा निभर पार्टी साबित हुइ, क्योकि उसके कुल वोटो मे इनकी सख्या 67 प्रतिशत थी ओर 1998 मे यही सख्या 60 6 प्रतिशत थी। बसपा के अलावा और कोइ पार्टी दलित वोटो पर इस कदर निर्भर नही दिखाई देती। भाजपा को इन दोनो चुनावो मे करीब-करीब 13-13 प्रतिशत दलित वोट मिले, जबकि उसे द्विज जातियो ने क्रमश 45 6 ओर 38 4 प्रतिशत वोट दिए। भाजपा के अतिरिक्त वामपथी और वामोन्मुख दलो को दलितो के 60 7 ओर 58 1 प्रतिशत वोट मिलने का ऑकडा बताता है कि दलित वोटर आमतोर पर गेरदक्षिणपथी रूझान रखते हे।

उत्तर प्रदेश मे बसपा ने 1996 मे दलितो के 59 5 प्रतिशत वोट बटोरकर खुद को दलितो की सबसे प्रिय पार्टी साबित कर दिया। कॉग्रेस, भाजपा और समाजवादी पार्टी के साथ हुए जनता दल के गठजोड को क्रमश केवल 9 4, 10 4 और 10 3 प्रतिशत वोट ही मिले। 1998 मे बसपा के दलित मत 9 प्रतिशत कम हो गए ओर भाजपा अपने दलित मत 8 प्रतिशत बढाने मे कामयाब रही। **पश्चिम बगाल** मे 1996 के चुनाव मे दलित मतो के मामले मे वाम मोर्चा 61 6 प्रतिशत वोटो के साथ कॉग्रेस के 24 7 प्रतिशत के मुकाबले बहुत आगे रहा यानी कॉग्रेस का दलित आधार मे 10 7 प्रतिशत की भारी गिरावट देखी गई। इसी तरह **केरल** मे वाम

लोकतान्त्रिक मोर्चे ने कॉग्रेस के 20 5 के मुकाबले 69 2 प्रतिशत दलित वोट हासिल करके बाजी मार ली। 1996 मे **तमिलनाडु** के दलित वोटरो ने द्रविड मुनेत्र कषगम ओर तमिल मनिला कॉग्रेस के गठजोड को 68 1 प्रतिशत वोट देकर पसद किया। कॉग्रेस-अन्ना द्रमुक गठजोड को सिफ 21 3 प्रतिशत वोट ही मिल सके।

1996 मे बिहार, मध्य प्रदेश ओर महाराष्ट्र के बहुकोणीय सघर्ष मे दलित मतदाता भी विभाजित हो गए। **बिहार** मे जनता दल और उसके साथी दला को 24 1 प्रतिशत, भाजपा-समता गठजोड को 18 4, कॉग्रेस को 14 9 और भाकपा (माले) का 14 2 प्रतिशत दलित वोट प्राप्त हुए। आरा ओर ओरगाबाद ससदीय क्षेत्रा म भाकपा (माले) को 37 3 प्रतिशत अथात् अपने कुल वोटो के प्रतिशत से भी अधिक दलित समर्थन हासिल हुआ। **मध्य प्रदेश** मे कॉग्रेस को 28 1, भाजपा को 11 5 ओर बसपा को 22 9 प्रतिशत दलित वोट मिले। **महाराष्ट्र** मे कमाबेश यही रूझान रहा। 1998 मे कॉग्रेस दलित वोटो के लिहाज से मध्य प्रदेश ओर महाराष्ट्र मे काफी फायदे मे रही ओर उसे क्रमश 40 4 और 46 9 प्रतिशत वोट मिले। मध्य प्रदेश मे बसपा की ओर बिहार मे राष्ट्रीय जनता दल की स्थिति दलिता के बीच सुदृढ हुइ।

कनाटक मे 1996 मे जनता दल 25 प्रतिशत वोट पाकर सबसे आगे रहा। अन्य राज्यो मे सबसे ज्यादा दलित वोट पाने वाली पार्टियॉ और गठजोड इस प्रकार थे **आध्र प्रदेश** मे तेलुगु देशम ओर वाम पार्टियो का गठजोड 37 3 प्रतिशत **हरियाणा** मे भाजपा-हरियाणा विकास पार्टी-समता गठजोड 36 6 प्रतिशत, **दिल्ली** मे भाजपा 36 5 प्रतिशत और **पजाब** मे शिरोमणि अकाली दल 21 1 प्रतिशत। 1998 मे कॉग्रेस ने कनाटक मे 58 9 प्रतिशत दलित वोट हासिल किए ओर भाजपा ने भी 14 4 प्रतिशत वोट प्राप्त करके इस क्षेत्र मे अपना प्रदर्शन सुधारा। आध्र के रूझान मे कोई परिवतन नही हुआ। हरियाणा मे कॉग्रेस को अधिकतर भाजपा की कीमत पर 67 9 प्रतिशत दलित वोट मिले। पजाब मे अकाली-भाजपा गठजोड ओर कॉग्रेस दोनो के दलित वोटो मे गिरावट आई, क्योकि बसपा 18 2 प्रतिशत दलित वोट ले गई। **गुजरात** मे उपलब्ध ऑकडे बताते है कि 1996 मे भाजपा को 37 8 ओर कॉग्रेस को 21 6 प्रतिशत वोट मिले थे। 1998 मे कॉग्रेस ने सुधार करके यह ऑकडा 39 1 प्रतिशत कर लिया, पर भाजपा फिर भी 41 3 प्रतिशत दलित वोट लेकर आगे बनी रही। हिमाचल प्रदेश मे 1996 मे 75 प्रतिशत दलित वोट कॉग्रेस के खाते मे गए।

इन तथ्यो से नतीजा निकाला जा सकता है कि कॉग्रेस ने अपना दलित आधार अधिकतर वामपंथियो, बसपा या क्षेत्रीय पार्टियो के हाथो खोया। भाजपा दलितो मे कोई खास घुसपैठ नही कर पाई। क्षेत्रीय दलो का चुनाव करके दलित मतदाताओ ने अपने गैरकॉग्रेसी रूझान का ही परिचय दिया है।

जाहिर है कि दलित राजनीति एक सक्रमणकालीन दौर से गुजर रही है। दलित वोटर अपने मत का महत्त्व समझ गए है और उसका सामूहिक ताकत के दम पर वे चुनावी सौदेबाजी की स्थिति मे आना चाहते है। वामपथी केवल अपने शासन वाले केरल और पश्चिम बगाल मे ही दलितो के बीच स्थायी समथन आधार बना सके है। उत्तर प्रदेश ओर बिहार के रूझान बताते हे कि दलित वोटर अब पहले की तरह दलगत राजनीति के क्षेत्र मे द्विजो की प्राथमिकता के हिसाब से मत नही डालते।

आयु, लिग, स्थानिकता या शहरी बनाम ग्रामीण ओर वर्ग की दृष्टि से भी दलित मतदाताओ पर एक नजर डालनी चाहिए। कॉग्रेस को समथन देने वाले दलितो म इस आधार पर कोई फर्क नही दिखाई देता यानी कहा जा सकता है कि कॉग्रेस को वोट देने वाले दलितो मे हर आयु, लिग और वर्ग के लोग शामिल है। लेकिन दूसरी पार्टियो के साथ ऐसा नही हे। जहॉ तक पार्टियो मे चुनाव का सवाल हे दलित मतदाता आयु के आधार पर खास भेद करते हुए नही दिखते। 26 से 35 साल के मतदाता समान रूप से मुख्य पार्टियो मे बॅटे हुए दिखते है। 25 साल तक के मतदाताओ के बीच बसपा और भाजपा को सबसे ज्यादा पसद किया जाता हे। इसके उलट वाम पार्टियो और जनता दल को पसद करने वाले मतदाताओ मे ज्यादा उम्र के वोटरो की सख्या अधिक है।

वर्ग-विभाजन एक ऐसा सूचकाक जरूर है जो मतदान के निर्णय को प्रभावित करता है। मध्यवर्गीय और धनी दलित भाजपा को काफी पसद करते हुए दिखते हे। बसपा, वामपथी और जनता दल साफ तौर पर गरीब दलितो की पसद हे। इस मामले मे कॉग्रेस एक बार फिर सभी दलित वर्गो मे समान रूप से फेली दिखनी है। चूॅकि दलितो मे मध्य या धनी वग की सख्या बहुत ही छोटी हे इसलि" गरीब और वचित दलितो की मतदान प्राथमिकताओ का पहलू ही दलित राजनीति ा मुख्य धार समझा जाना चाहिए।

दलित वोटो का यह विश्लेषण बसपा के उभार का अध्ययन किए बिना अधूरा ही रहेगा। 1996 मे बसपा के 67 4 और 1998 मे 60 6 प्रतिशत दलितो मे से आए थे। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और पजाब मे इस पार्टी का प्रदशन काफी अच्छा रहा था। 1996 के अखिल भारतीय चुनाव ऑकडे दिखाते है कि बसपा ने कुल 201 सीटो पर चुनाव लडा और 11 पर जीत हासिल करते हुए कुल वैध वोटो का 3 8 प्रतिशत प्राप्त किया। उसे उत्तर प्रदेश मे 6, पजाब मे तीन और मध्य प्रदेश म दो सीटे मिली। इनमे केवल तीन चुनाव क्षेत्र ही आरक्षित थे। इस पार्टी ने उत्तर प्रदेश के कुल वोटो मे से 20 16 प्रतिशत वोट हासिल किए। प्रदेश की 52 सीटो पर इस पार्टी को एक लाख से ज्यादा वोट मिले। वह 17 क्षेत्रो मे दूसरे स्थान पर रही और 46 क्षेत्रो मे उसे कुल मतो का 20 प्रतिशत हासिल हुआ। बसपा को 1985

क विधानसभा चुनाव मे केवल 4 प्रतिशत वोट ही मिले थे। 1989 मे यह प्रतिशत 9 4 हा गया। 1991 के लोकसभा चुनाव मे 9 9 और 1993 के विधानसभा चुनाव मे 10 8 प्रतिशत वोट लेने के बाद 1998 के चुनाव मे उसने अखिल भारतीय स्तर पर 4 68 का कही बेहतर प्रतिशत प्राप्त किया, लेकिन उसकी सीटे घटकर पॉच रह गइ।

बसपा का आधार उत्तर प्रदेश, पजाब हरियाणा और मध्य प्रदश म माना जाता ह। इन चारा राज्या मे उसके वोटो का प्रतिशत लगातार बढा है। इन चारो राज्या म दलिता की आबादी क्रमश 21 05, 28 31, 19 75 और 14 5 प्रतिशत यानी काफी ज्यादा हे। दश-भर मे दलित आबादी का ओसत 16 48 है। इस औसत से ज्यादा दलित आबादी वाले राज्य हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, पश्चिम बगाल ओर दिल्ली ह जिनमे यह प्रतिशत क्रमश 25 3, 17 3, 19 2, 23 6 और 19 1 है। इनम स किसी भी राज्य मे बसपा की राजनीतिक हेसियत अभी तक नही बन पाई हे। आध्र, ओडीसा, त्रिपुरा ओर कनाटक मे दलित आबादी राष्ट्रीय औसत के बराबर ही ह, पर वहॉ भी बसपा का उल्लेखनीय वजूद नही है। लेकिन बसपा के पक्ष मे उत्तर प्रदश के सदभ मे एक सकारात्मक आयाम यह उभरकर आया हे कि 1998 के चुनाव मे उसे पिछडे वर्गो का उल्लेखनीय समर्थन मिला है। उसके दलित वोटो की सख्या कम जरूर हुइ पर कुल वाट बढे ओर यह पिछडे वर्ग के वोटो के कारण सभव हो पाया। बसपा के उम्मीदवारो मे भी दलितो की सख्या घटी ओर पिछडे उम्मीदवारा की सख्या बढी हे। बहुजन गठजोड की दृष्टि से यह स्वागत योग्य तथ्य माना जा सकता है।

बसपा के समथन आधार के बारे मे यह एक गलतफहमी है कि उसकी अपील दलितो क शहरी शिक्षित मध्य वग मे ज्यादा है। हम देख चुके है कि बसपा को ज्यादातर देहाती दलितो ने अपने वोट दिए है। 1996 का चुनाव बताता है कि बसपा क 62 7 प्रतिशत दलित वोटर बिना पढे-लिखे थे, जबकि सर्वेक्षण के लिए चुने गए मतदाताओ मे ऐसे वोटर केवल 44 8 प्रतिशत थे। बसपा को वोट देने वालो मे इसके बाद उन दलितो का नबर आता हे जिन्हे माध्यमिक शिक्षा ही प्राप्त हुई हे। ऐसे 27 4 प्रतिशत वोटरो के मुकाबले स्नातक स्तर तक पढाई करने वाले दलित वोटरो का प्रतिशत सिर्फ दो निकलता है, जबकि भाजपा के लिए यही प्रतिशत 51 3 तक पहुँच जाता हे। पेशे के लिहाज से बसपा के वोटर अकुशल मजदूर, खेतिहर और अन्य सबधित कामो मे लगे हुए मजदूर, कारीगर, छोटे और सीमात किसान है। राष्ट्रीय ही नही उत्तर प्रदेश के स्तर पर भी यही स्थिति है।

दलितो का प्रतिनिधित्व करने के मामले मे महाराष्ट्र मे रिपब्लिकन पार्टी आगे रही है। 1996 मे उसने कोई सीट तो नही जीती, लेकिन जिन 11 निवाचन क्षेत्रो

मे उसने चुनाव लडा उनमे से पॉच मे उसे कुल पडे वोटा का बीस फीसदी ओर चार क्षेत्रो मे दस से बीस फीसदी तक वोट मिले। अकोला निवाचन क्षेत्र म उस पार्टी ने 33 19 प्रतिशत वोट तक हासिल करके दिखाए। 1998 म जेसे ही रिपब्लिकन गठजोड हुआ वेसे ही उसने अपनी चारा सीटे जीत ली। इन क्षेत्रो मे रिपब्लिकन पार्टी का 47 से 50 प्रतिशत तक वोट मिले। महाराष्ट्र म दलितो की आबादी केवल 11 09 प्रतिशत ही हे, इसलिए यहॉ दलित पार्टी क लिए गठजाड बनाना दूसर राज्या क मुकाबले अधिक जरूरी हे।

राजनीतिक व्यवस्था की वेधता के बार म किया गया अध्ययन बताता हे कि अपने वोट की ताकत मे यकीन के लिहाज से दलितो और द्विज जातिया का प्रतिशत एक-सा निकलता है। 60 प्रतिशत दलितो ओर 62 प्रतिशत द्विजो को अपने वोट के प्रभावी होने पर विश्वास निकला। वग के लिहाज से देखने मे भी यह प्रतिशत तकरीबन बराबर था। चुनाव प्रणाली की साख के बारे म पूछने पर 1996 मे 45 4 प्रतिशत दलितो ओर 51 3 प्रतिशत द्विजो ने चुनाव की उपयोगिता मे यकीन जताया था। 1998 मे भी इस ऑकडे मे परिवतन नही हुआ। राजनीतिक दला की उपयोगिता के मामले मे सिफ 41 4 प्रतिशत दलितो ने सकारात्मक राय दी। द्विजो मे यही ऑकडा 46 9 था। यह रवेया 1998 मे भी जारी रहा। 1996 मे केवल 21 8 दलितो और 18 1 द्विजो ने माना कि उनके जाति-समूहो के हितो की नुमाइदगी करने वाली कोइ पार्टी भी हे। 1998 मे इन ऑकडो मे थाडी बढोत्तरी हुइ। जातिगत हितो की परवाह करने वाली किसी पार्टी के न होने का समर्थन करने वाले दलित मतदाताओ का प्रतिशत दलितो ओर द्विजो मे 65-65 था।

विजय बहादुर सिह अपने लेख मे लिखते हे कि उत्तर प्रदेश विधानसभा के चुनाव नतीजो को देखा जाए तो ऐसा लगता हे कि वहॉ की जनता ने सत्ता की दावेदार तीनो प्रमुख पार्टियो को ठुकरा दिया है। किसी भी राजनीतिक दल या गठबधन को 35 प्रतिशत से ज्यादा वोट नही मिले ओर न ही किसी को 176 से ज्यादा सीटे ही मिल पाइ। 425 सदस्यो वाली विधानसभा के लिए नि सदेह यह एक त्रिशकु जनादेश हे। लेकिन गहराई मे जाकर देखा जाए तो पता चलता है कि उत्तर प्रदेश की जनता ने निश्चयात्मक रुख अख्तियार करके मतदान किया है।

इस चुनाव ने प्रदेश की जनता को तीन समूहो मे बॉट दिया है। यदि एक ओर समाज मे अपना दबदबा रखने वाले ऊँची जातियो और विशिष्ट वर्गो के लोगो का झुकाव भाजपा की ओर है तो दूसरी ओर समाज का सबसे अधिक दबा-कुचला वर्ग (अनुसूचित ओर निचले तबके की अन्य जातियॉ) है। मध्यम वर्ग जिसमे यादवो सहित वे सभी जातियॉ शामिल है जिनके पास खेती या जीविकोपार्जन के अन्य साधन उपलब्ध है, वह वग समाजवादी पार्टी या सयुक्त मोर्चा के साथ खडा है। प्रदेश मे

मुसलमान कुल जनसख्या का 17 3 प्रतिशत है। मोटे तौर पर मुसलमान मुलायम सिह यादव के पक्ष मे दिखता है। भारतीय जनता पार्टी को 33 8 प्रतिशत मत मिल हे। यदि इसकी व्याख्या चुनाव सर्वेक्षण के ऑकडो से की जाए तो पता चलता ह कि इसमे से 58 7 प्रतिशत मत ऊँची जातियो के है। इसी ऑकडे को यदि दूसर नजरिेग स देखा जाए तो पता चलता हे कि ऊँची जातियो का 58 7 प्रतिशत वोट पान वाली पार्टी के लिए दलितो का 6 3 प्रानशत ओग मुसलमानो का 2 4 प्रतिशत समथन उसके लिए नगण्य मात्र ही हे। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रदश की 38 4 प्रतिशत जनता (21 1 प्रतिशत दलित और 17 3 प्रतिशत मुसलमान) भाजपा की पहुॅच से बाहर हे। यह सामाजिक तस्वीर भाजपा के सकुचित दायरे को परिलक्षित करती ह।

लगभग यही बात महादेव चोहान लिखते है कि उत्तर प्रदेश के परिणामो ने भाजपा के लिए कइ सवाल खडे किए है। आखिर भाजपा किस तरह की राजनीति कर रही है ओर केसी करना चाहती है। उसकी सोच का आधार साप्रदायिक, हिदुत्ववादी, जातिवादी, धामिक, उन्मादी, आपराधिक हे या फिर क्या है? सवर्णो की पार्टी या फिर पिछडो की? दलितो की सेवा करना चाहती है या फिर समरस समाज बनाना चाहती हे? उसके पास कोई आथिक या सामाजिक दर्शन है क्या?

वही यागेन्द्र यादव दो तरह से अपनी बात रखते है। उनके विचार मे उत्तर प्रदेश इस समय सामाजिक मथन के दौर से गुजर रहा हे और चुनावी राजनीति इस मथन का महज ओजार बन गइ है।

पिछले एक सो वर्षो से यह सामाजिक समीकरण लगभग स्थापित था कि समाज मे सवर्णो का प्रभुत्व होगा, लेकिन समन्वयवादी दृष्टिकोण के साथ। लगभग सभी वर्गो को साथ लेकर प्रभुत्व जमाने का यह फार्मूला साठ के दशक तक चलता रहा। साठ के दशक मे इस समीकरण मे बदलाव की हलकी कोशिशे शुरू हुई। और तब यह समीकरण बना कि प्रभुत्व तो सवर्णो का होगा, लेकिन जो सपन्न अवर्ण है, उन्हे भी एक अच्छा हिस्सा मिलेगा। लेकिन जो दबे हुए अवर्ण थे या दलित थे, उनके हिस्से मे कुछ नही आया। लेकिन पिछले एक दशक मे इस समीकरण पर प्रश्नचिह्न लग गया हे कि सवर्ण राज करेगे या नही और जो अति पिछडे और दलित है उन्हे सत्ता मे हिस्सा मिलेगा या नही? और यह समीकरण अभी भी हल नही हो पाया है। जब तक इस समीकरण मे सतुलन नहीं होगा उत्तर प्रदेश के चुनाव परिणाम इसी तरह दिखाई देगे।

उत्तर प्रदेश विधानसभा के चुनाव के लिए बसपा से तालमेल करके पी वी नरसिह राव ने सकट से उबरने के लिए नई चाल चली थी। इस तरह राव ने एक तीर से दो शिकार किए। पहला यह कि पार्टी मे अपने विरोधियो को कुछ समय

के लिए चक्रव्यूह मे फॅसा लिया। दूसरे बसपा के साथ गठबधन का सयुक्त मोर्चे का प्रयास धरा रह गया।

हालॉकि भाजपा ने भी पहले राउड मे बसपा से बातचीत करने की कोशिश की थी। जुलाइ, 1996 के प्रथम सप्ताह मे अटल बिहारी वाजपेयी काशीराम स मिले थे, पर नतीना कुछ नही निकला।

कॉग्रेस-बसपा गठबधन उत्तर प्रदश तक ही सीमित रहा, लेकिन बसपा प्रमुख काशीराम ने अन्य राज्यो मे भी ऐसे गठबधन की सभावना से इनकार नही किया। जहॉ तक सीटो क तालमेल का सवाल था, राज्य की 425 सीटा मे से कॉग्रस ने केवल 125-130 सीटा पर चुनाव लडा। वेसे भी पिछले सात-आठ सालो म उसका परपरागत वाट बेक उसके हाथ स निकला ओर कॉग्रेस पार्टी को मतदाताओ ने हाशिए पर धकेल दिया। कॉग्रस की इस बेचारगी की स्थिति को ओर अधिक कमजार बनाने म मुख्य भूमिका तो बसपा की ही रही।

जहॉ तक सयुक्त मोर्चा की बात हे वह बसपा स कोइ टकराव माल लेना नही चाहता। पर विवाद का मुद्दा स्वय मुलायम रहे। उनका शरीर तो दिल्ली म रहता था ओर आत्मा लखनऊ मे। वे ऐसे किसी समझोते पर राजी न थ जिसम मायावती को मुख्यमत्री बनाने की बात हो। हालॉकि सयुक्त मोर्चे की सचालन समिति की बठक म जद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने सुझाव दिया था कि मायावती को मुख्यमत्री बनाने की बात मुलायम सिह को मान लेनी चाहिए। उधर काशीराम ने भी इसी भापा का प्रयोग करते हुए कहा था, "मे ऐसे किसी भी समझोते मे शामिल नही हो सकता जिसमे मुलायम हो।" मायावती ने भी पत्रकारो से उसी दोरान कहा था, "राज्य मे शैतान भी अगर कुर्सी पर बैठ जाए तो मुझे दुख नही होगा, लेकिन सपा से बसपा के हाथ मिलाने का कोइ सवाल ही नही उठता।" दूसरी ओर सयुक्त मार्चे की रणनीति के तह प्रधानमत्री देवगौडा ने जद के कायकारी अध्यक्ष शरद यादव ओर केद्रीय नागरिक उड्डयन मत्री सी एम इब्राहीम को काशीराम से बातचीत करने का काम सोपा।

उसी दोरान पासवान ने कहा था कि अब कॉग्रेस के साथ समझौता करने के बाद दलितो का भी बसपा से मोह भग हो सकता हे। उनमे यह सदेश जा सकता हे कि बसपा पर भरोसा नही किया जा सकता। बसपा एक दिशाहीन रेलगाडी है, जो कभी लखनऊ भागती हे तो कभी दिल्ली। वह कब क्या कर बैठे, कुछ नही कहा जा सकता। क्या इस तरह दलित सवाल हल किए जा सकते है?

वर्ष 1996 मे हुए चुनाव मे शामिल बसपा के प्रत्याशियो की हम सूची दे रहे हे, जिससे पाठको को चुनाव सम्बन्धी जानकारी मिलेगी।

विधानसभा चुनावो मे बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी

हरियाणा

क्र स	विधानसभा क्षेत्र	प्रत्याशी का नाम
1	1-कालका	कोर सिह (सिख)
2	2-नारायणगढ	मानसिह गुजर
3	3-सढारा (सु)	सहीराम
4	4-छछराली	अमनकुमार नागरा
5	5-जगाधरी	बिशनलाल सेनी
6	6-युमना नगर	शमशेर सिह कम्बोज
7	7-मुलाना (सु)	अशोक कुमार
8	8-अम्बाला केट	सेवासिह चोहान
9	9-अम्बाला सिटी	पूर्ण प्रकाश सेनी
10	10-नग्गल	राजपाल कश्यप
11	11-इन्द्री	दलबीर सिह सन्धू
12	12-नीलोखेडी	अमरजीत सिह धीमान
13	13-करनाल	सुरेश कुमार सेनी
14	14-जूण्डला (सु)	श्रीमती इश्वर कोर नरवाल
15	15-घरोदा	केशोराम पवार
16	16-असन्ध	रामकुमार
17	17-पानीपत	प्रताप सिह बाल्मीकि
18	18-सम्मालखा	भरत सिह गुज्जर
19	19-नोलथा	श्रीमती राजबाला
20	20-शाहबाद	रघबीर सिह पाल
21	21-रादौर (सु)	नरेश कुमार
22	22-थानेसर	बलदेव सिह सेनी
23	23-पेहवा	सत्पाल सिह कश्यप
24	24-गूहला (सु)	बूटाराम बाजीगर
25	25-कैथल	यशबीर सिह जाट
26	26-पुण्डरी	बलदेव सिह (सिख)
27	27-पाइ	रापा-नह गुज्जर
28	29-किलोइ	दुलोचन्द कश्यप
29	31-मेहम	रामेश्वर दयाल ठाकुर
30	40-केलाना	विनोद कुमार पाल
31	42-राई	धमपाल धीमान

32	44-केलायत (सु)	श्रीमती कमला सिरोही
33	45-नरवाना	ओमप्रकाश धीमान
34	46-उचाना कला	श्रीमती रोशनी देवी
35	47-राजोन्द	जगदीश दलाल
36	48-जीन्द	जयप्रकाश रेडू
37	50-सफीदो	बलराम सेनी
38	51-एनआइटी फरीदाबाद	दोजी
39	52-मेवला महाराजपुर	लियाकत अली
40	53-वल्लभगढ	राजिन्द्र मलिक
41	54-पलवल	सुभाष चौधरी
42	55-हसनपुर (सु)	श्रीचन्द
43	56-हथीन	लियाकत अली
44	57-फिरोजपुर झिरका	इदरीश
45	58-नूह	शमशुद्दीन
46	59-तावडू	टेकचन्द सेनी
47	63-भादरा	अमीर सिह
48	65-मण्डलखुद	श्रीमती फुलबाइ
49	69-भवानी खेडा	सुरेश कुमार
50	70-बरवाला	नर सिह
51	71-नारनौल	वीरेन्द्र दून जाट
52	73-भट्टू कला	सुरजीत कुमार
53	74-हिसार	ओ पी निम्बल
54	75-घिराई	श्रीमती कृष्णा खटीक
55	78-फतेहाबाद	श्रीमती हरबन्स कौर
56	84-डबवाली	लीलूराम आशाखेडा
57	87-अटेली मण्डी	नरेश कुमार यादव

केरल

क्र स	विधानसभा क्षेत्र	प्रत्याशी का नाम
जिला-थीरुवनन्थापुरम		
1	पारास्साला	उदयान्कुलगारा फ्रासी
2	नेमम	पुन्नामुडू श्यामला
3	आर्यानाडू	पी के रवीन्द्रन
4	किलीमानूर	पन्दलम राजेन्द्रन

5	कोवलम	थिरुवलम श्रीकन्दन
जिला-कोल्लाम		
6	चथन्नूरे	गिरीश कुमार
जिला-पथनमथित्ता		
7	कल्लूपाडा	के एस जोस
8	रान्नी	जयदास जोसफ
9	पथनमथित्ता	हबीब मोहम्मद
10	अदूर	सी ए रवि
11	कोन्नी	एन ए राघवन
जिला-अलाप्पुझा		
12	चेन्गानूर	चन्द्रदास
जिला-कोट्टायम		
13	कन्जीराप्पल्ली	कल्लारा सुकुमारन
14	पुथुपल्ली	पाल चिरक्कारोडू
15	वझूर	वी वी राजूमोहन थम्पी
16	पलाई	पी जे सेबास्तीयन
17	चगानाचेरी	जी के राजाप्पन
18	वैकम	पी शकुघन
19	काडूथुरुथी	मैथ्यु डेविड
20	ऐत्तुमनूर	बिनय जोसफ
21	कोट्टायम	शाजी लेवी
जिला-इदुकी		
22	पीरमडे	सी एस जेन्द्रन
23	उदूम्पन्चोला	सुरेश चेम्मान्नार
जिला-एरनाकुलम		
24	अगामली	वी के अय्याप्पन
25	नत्तीका	पी वी अय्याप्पन
26	पिरावम	सलीम चुन्दाक्काडू
जिला-थ्रिस्सूर		
27	चेलाक्कारा	एड सी नारायणन
28	एरिन्जलाक्कुडा	के आर रामाकृष्णन
29	ओल्लूर	भास्करन
30	कोडूगाल्लूर	कुन्हीरमन

जिला-कोझीक्कोडू

31	बीदर	के पी प्रकाशन

जिला-वयानाडू

32	कालपेट्टा	गोपाकुमार

तमिलनाडु

क्र स	विधानसभा क्षेत्र	प्रत्याशी का नाम
जिला-मद्रास		
1	थीगरया नगर	के सुदशन
जिला-चेंगाई नगर		
2	पूनामल्ली	वी रवि
जिला-नोर्थ आरकोट अम्बेडकर		
3	नत्तरामपल्ली	बी सी वज्जीराम
जिला-तिरुवन्नमल्ली सम्बूवरायर		
4	चेगम (सु)	टी चेन्द्रावणी
5	थिरूवनामलइ	के आन्दल
6	थण्ड्रमबट्टू	सी गोविन्दराज
7	पोलूर	आर अरुमुगम
8	कालासापक्कम	समुअल देसीगर
जिला-साउथ आरकोट वेल्लार		
9	मगलौर (सु)	पोन नागप्पन
जिला-विल्लूपुरम रामास्वामी पेदाचियर		
10	वेनूर (सु)	के विजयन
11	जिन्जी	आर जायाबालन
जिला-पुदूक्कोट्टयी		
12	पुदूक्कोट्टयी	ए सीवा
जिला-नेल्लईकट्टापोम्मन		
13	नगूनेरी	चन्द्रशेखर
जिला-थिरुवल्लूर		
14	पेराम्बलूर (सु)	वीरामुत्थु
जिला-त्रिची		
15	त्रिची	उमा महेश्वरा

पश्चिम बगाल

क्र स	विधानसभा क्षेत्र	प्रत्याशी का नाम
1	हाबडा	प्रोनोती विश्वास
2	बारासान	काशीश्वर सरकार
3	अशोक नगर	अशुमली बरइ
4	देगगा	हफीजुल इस्लाम
5	गइघाटा	मनिन्द्रा विश्वास
6	बोनगोन	फनीभूषण सिरदर
7	बगदाह	गौरगा बाला
8	हसखाली	समर राय
9	रानाघाट (ईस्ट)	धीमान विश्वास
10	रानाघाट (वेस्ट)	अमल राय
11	चकदाह	रामानी सरकार
12	हरीन घाटा	श्यामल बोस
13	कृष्णगज	
14	कृष्णनगर	विनोद बिहारी सिकदर
15	नकाशीपाडा	सुधाशू राय
16	पलाशी	अरविद विश्वास
17	चपडा	कुमुद विश्वास
18	डम-डम	विजय मण्डल
19	पानीहाती	निर्मल सरकार
20	खरदाह	कालीदास राय
21	राजरहाट	प्रफुल्ल मलोगी
22	पूरबा बेगचिया	
23	बीजपुर	शिबापादा विश्वास
24	नयी हाती	रामचन्द्र मण्डल
25	जगदल	चपला मजूमदार
26	भाटपाडा	शेफाली सरकार
27	नोयपाडा	नरेन वैद्य
28	पण्डुआ	लक्ष्मी नारायण बोलदास
29	जादवपुर	सध्या मण्डल
30	बालीगज	महेश्वर दास

31	ऐटाली	फिरोज अहमद
32	बिध्या सागर	कमल अन्सारी
33	दिनाजपुर	निताइ मण्डल
34	रायगज	
35	माथा भगा	पपिया बमन
36	मखलइ गज	अनिल राय
37	राजगज	शान्ती सरकार
38	तूफानगज	सचीन बमन
39	सिताइ	सिबानी मण्डल

पश्चिम बगाल

बसपा के लोकसभा प्रत्याशी

क्र स	ससदीय क्षेत्र	प्रत्याशी का नाम
1	बारासात	मनोह हवलादर
2	नवाद्वीप	सतीश विश्वास
3	कृष्णनगर	श्रीमन्त मजूमदार
4	दम दम	सुरेन्द्रनाथ विश्वास

पाण्डिचेरी

क्र स	विधानसभा क्षेत्र	प्रत्याशी का नाम
1	कोचेरी	ऐलागोरन
2	ओसूदू	सुन्दराज
3	उप्पालम	कलईमारान
4	उझवाकरई	अब्दुल हमीद

जिन लोकसभा सीटों पर बसपा प्रत्याशी मैदान में रहे, उनका राज्यवार मतदान कार्यक्रम इस प्रकार था

27 अप्रैल, 1996

पजाब

1-गुरदासपुर
5-फिल्लौर (सु)

6-होशियारपुर
13-फिरोजपुर

चण्डीगढ

1-चण्डीगढ

हरियाणा

1-अम्बाला (सु)
2-कुरुक्षेत्र
3-करनाल
6-फरीदाबाद
7-महेन्द्रगढ
9-हिसार

हिमाचल प्रदेश

3-कागडा
4-हमीरपुर

केरल

12-मुवत्तुपूझा
13-कोटय्याम
19-चिरायीनकील

तमिलनाडु

21-पोल्लाची (सु)

पाण्डिचेरी

1-पाण्डिचेरी

27 अप्रैल, 1996

राजस्थान

1-श्रीगगानगर (सु), 2-बीकानेर, 3-चूरू, 4-झुन्झुनु, 5-सीकर, 12-अजमेर, 19-चित्तोडगढ, 21-पाली, 23-बाडमेर

आध्र प्रदेश

28- नगर कुर्नूल (सु)

कर्नाटक

12-बगलौर नार्थ

2 मई, 1996

राजस्थान

7-दोसा, 8-अलवर, 9-भरतपुर, 10-बयाना (सु), 13-टोक (सु), 14-कोटा

आंध्र प्रदेश

38- पेद्दापल्ली (सु)

कनाटक

1-बीदर (सु), 3-रायचूर, 7-चित्रदुर्गा

2 मई, 1996

महाराष्ट्र

26-चन्द्रपुर, 27-वधा, 28-यवतमाल, 35-लातूर

गुजरात

5-पोरबदर, 6-जूनागढ, 19-खेडा, 20-आनन्द, 21-छोटा उदयपुर, 23-भरूच, 24-सूरत, 25-माण्डवी (सु), 26-बलसाड (सु)

मध्य प्रदेश

16-सारगढ (सु), 17-रायचूर, 18-महासमुन्द 19-काकेर (सु), 21-दुग, 22-राजनन्दगाव, 23-बालाघाट, 24-मण्डला (सु), जबलपुर, 26-सिवनी, 29-होशगाबाद, 32-विदिशा, 34-खण्डवा।

बिहार

1-बगहा (सु), 2-बेतिया, 3-मोतिहारी, 4-गोपालगज, 5-सिवान, 6-महाराजगज, 8 हाजीपुर (सु), 11-सीतामढी, 12-शिवहर, 17-समस्तीपुर, 19-बलिया

पश्चिम बगाल

11-कृष्णानगर, 12-नवाद्वीप, 13-बारासात

7 मई, 1996

महाराष्ट्र

4-बम्बइ साउथ

7-बम्बइ नाथ इस्ट

गुजरात

3-जामनगर, 9-धाधूका (सु), 11-गॉधीनगर, 12-मेहसाना, 15-साबरकठा, 16-कापडवज, 17-दाहोद (सु), 18-गोधरा

मध्य प्रदेश

1-मुरेना (सु), 2-भिण्ड, 3-ग्वालियर, 4-गुना, 5-सागर (सु), 6-खजुराहो, 7-दामोह, 8-सतना, 9-रीवा, 19-सीधी (सु), 11-शहडोल (सु), 14-जाजगीर, 15-बिलासपुर, 32-राजगढ, 38-उज्जेन (सु)

बिहार

22-अररिया (सु), 23-किशनगज, 24-पूणिया, 25-कटिहार, 29-बाका, 30-भागलपुर, 31-खगडिया, 32-मुगेर, 33-बेगूसराय, 35-पटना, 36-आरा, 37-बक्सर,

38-सासाराम (सु), 39-विक्रमगज 40-औरगाबाद, 41-जहानाबाद, 42-नवादा (सु), 43-गया (सु), 44-चतरा, 46-कोडरमा, 57-धनबाद, 48-हजारीबाग 50-जमशेदपुर 54-पलामू (सु)

पश्चिम बगाल

20-दम दम

उत्तर प्रदेश की लोकसभा सीटो के लिए मतदान कार्यक्रम

2 मई, 1996

क्र स	ससदीय क्षेत्र
1	1-टिहरी
2	2-गढवाल
3	3-अल्मोडा
4	4-नेनीताल
5	5-बिजनोर (सु)
6	6-अमरोहा
7	7-मुरादाबाद
8	8-रामपुर
9	9-सभल
10	10-बदायूॅ
11	11-ऑवला
12	12-बरेली
13	13-पीलीभीत
14	14-शाहजहॉपुर
15	15-खीरी
16	16-शाहबाद
17	17-सीतापुर
18	30-केसरगज
19	31-बहराइच
20	32-बलरामपुर
21	33-गोण्डा
22	34-बस्ती (सु)
23	35-झुमरियागज
24	36-खलीलाबाद

25	37-बासगॉव (सु)
26	38-गोरखपुर
27	39-महाराजगज
28	40-पडरौना
29	41-देवरिया
30	42-सलमपुर

7 मई, 1996

क्र स	ससदीय क्षेत्र
31	18-मिसरिख (सु)
32	19-हरदोई (सु)
33	20-लखनऊ
34	21-मोहनलालगज (सु)
35	22-उन्नाव
36	23-रायबरेली
37	24-प्रतापगढ
38	25-अमेठी
39	26-सुल्तानपुर
40	27-अकबरपुर (सु)
41	28-फेजाबाद
42	29-बाराबकी (सु)
43	43-बलिया
44	44-घोषी
45	45-आजमगढ
46	46-लालगज (सु)
47	47-मछलीशहर
48	48-जौनपुर
49	49-सेदपुर (सु)
50	50-गाजीपुर
51	51-चन्दौली
52	52-वाराणसी
53	53-राबर्टगज (सु)
54	54-मिजापुर
55	55-फूलपुर
56	56-इलाहाबाद

57	57-चायल (सु)
58	58-फतेहपुर
59	59-बादा
60	60-हमीरपुर
61	61-झॉसी
62	62-जालोन (सु)
63	63-घाटमपुर (सु)
64	64-बिल्होर
65	65-कानपुर
66	66-इटावा
67	67-कनौज
68	68-फर्रुखाबाद
69	69-मैनपुरी
70	70-जलेसर
71	71-एटा
72	72-फिरोजाबाद (सु)
73	73-आगरा
74	74-मथुरा
75	75-हाथरस (सु)
76	76-अलीगढ
77	77-खुर्जा (सु)
78	78-बुलदशहर
79	79-हापुड (गाजि)
80	80-मेरठ
81	81-बागपत
82	82-मुजफ्फरनगर
83	83-कैराना
84	84-सहारनपुर
85	85-हरिद्वार (सु)

2 मई, 1996

जम्मू और कश्मीर

6-जम्मू

30 मई, 1996

2-उधमपुर

15 अप्रल 1996 क वहुजन सगठक स साभार

आय वर्ग वार मतदान

	भाजपा+समता	बसपा+कॉंग्रेस	सयुक्त मोचा	अन्य
उच्च आय वग	59 3	11 1	23 6	6 0
मध्य आय वग	46 6	16 2	29 6	7 6
निम्न आय वग	34 5	24 8	33 2	7 5
अति निम्न आय वर्ग	19 6	44 5	29 1	6 8

शैक्षिक वर्ग वार मतदान

	भाजपा+समता	बसपा+कॉंग्रेस	सयुक्त मोचा	अन्य
अशिक्षित	24 9	38 2	29 8	7 1
प्राथमिक शिक्षा प्राप्त	29 8	25 0	38 3	6 9
मिडिल शिक्षा प्राप्त	41 8	22 7	30 6	6 3
हाइ स्कूल शिक्षा प्राप्त	41 5	21 0	29 3	8 2
इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त	52 0	15 6	25 0	7 4
ग्रेजुएट शिक्षा प्राप्त	58 1	10 4	24 2	7 3

किसे किस तबके का कितना मत मिला

	भाजपा+समता	बसपा+कॉंग्रेस	सयुक्त मोर्चा	अन्य
महिला	35 9	28 0	29 1	7 0
मुस्लिम	2 4	23 9	68 1	5 6
शहरी	40 8	20 9	34 0	4 3

57	57-चायल (सु)
58	58-फतेहपुर
59	59-बादा
60	60-हमीरपुर
61	61-झाँसी
62	62-जालोन (सु)
63	63-घाटमपुर (सु)
64	64-बिल्होर
65	65-कानपुर
66	66-इटावा
67	67-कनौज
68	68-फर्रुखाबाद
69	69-मैनपुरी
70	70-जलेसर
71	71-एटा
72	72-फिरोजाबाद (सु)
73	73-आगरा
74	74-मथुरा
75	75-हाथरस (सु)
76	76-अलीगढ
77	77-खुर्जा (सु)
78	78-बुलदशहर
79	79-हापुड (गाजि)
80	80-मेरठ
81	81-बागपत
82	82-मुजफ्फरनगर
83	83-कैराना
84	84-सहारनपुर
85	85-हरिद्वार (सु)

2 मई, 1996

जम्मू और कश्मीर

6-जम्मू

30 मई, 1996

2-उधमपुर

15 अप्रल 1996 क बहुजन सगठक स साभार

आय वर्ग वार मतदान

	भाजपा+समता	बसपा+कॉग्रेस	सयुक्त मोचा	अन्य
उच्च आय वग	59 3	11 1	23 6	6 0
मध्य आय वग	46 6	16 2	29 6	7 6
निम्न आय वग	34 5	24 8	33 2	7 5
अति निम्न आय वग	19 6	44 5	29 1	6 8

शैक्षिक वर्ग वार मतदान

	भाजपा+समता	बसपा+कॉग्रेस	सयुक्त मोचा	अन्य
अशिक्षित	24 9	38 2	29 8	7 1
प्राथमिक शिक्षा प्राप्त	29 8	25 0	38 3	6 9
मिडिल शिक्षा प्राप्त	41 8	22 7	30 6	6 3
हाइ स्कूल शिक्षा प्राप्त	41 5	21 0	29 3	8 2
इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त	52 0	15 6	25 0	7 4
ग्रेजुएट शिक्षा प्राप्त	58 1	10 4	24 2	7 3

किसे किस तबके का कितना मत मिला

	भाजपा+समता	बसपा+कॉग्रेस	सयुक्त मोर्चा	अन्य
महिला	35 9	28 0	29 1	7 0
मुस्लिम	2 4	23 9	68 1	5 6
शहरी	40 8	20 9	34 0	4 3

किस जाति का कितना मत किसको

जाति	भाजपा+समता	बसपा+कॉग्रेस	सयुक्त मोर्चा	अन्य
ब्राह्मण	74 4	6 7	8 9	10 0
क्षत्रिय	77 5	8 2	8 6	5 7
कायस्थ	83 7	2 2	9 8	4 3
वैश्य	83 2	7 1	4 3	5 4
जाट	32 8	6 7	36 1	24 4
अन्य सवण जाति	78 0	4 0	13 0	5 0
यादव	6 7	10 5	73 8	9 0
कुर्मी	44 9	10 2	41 5	3 4
लोध	78 2	5 0	11 9	4 9
कोली	49 1	20 8	25 4	4 7
पाल	28 7	22 1	34 4	14 8
अन्य पिछडे	51 8	19 0	24 1	5 1
अन्य अति पिछडे	52 2	26 1	21 7	0 0
अनुसूचित जाति	6 3	77 3	11 6	4 8

लोकसभा और विधानसभा चुनावो के बीच पार्टियो के मतो मे खिसकाव

पार्टी/गठबधन	लोकसभा के मत	विधानसभा मे मिले मत				
		बरकरार रहा	किसकी ओर कितना खिसका			
			भाजपा +समता	कॉग्रेस +बसपा	सयुक्त मोचा	अन्य
भाजपा+समता	100%	92 4	—	3 6	3 2	0 8
कॉग्रेस+बसपा	100%	82 2	4 9	—	12 5	0 4
सयुक्त मोर्चा	100%	82 8	5 6	10 6	—	0 9
अन्य	100%	5 5	39 4	17 3	37 8	—

1996 के राष्ट्रीय सहारा से साभार

सुरक्षित सीटो पर दलगत प्रदर्शन

राज्य	(सुरक्षित सीट)	कॉग्रेस पार्टी		भाजपा		जनता दल		वामपथी दल		क्षेत्रीय पार्टियॉ		अन्य	
		1991	1996	1991	1996	1991	1996	1991	1996	1991	1996	1991	1996
आध्र प्रदेश	(8)	7	6						1	1 (ते दे)	1 (ते दे)		
असम	(3)			1	1					1 (ए एस डी सी)	1 (ए एस डी सी)	1 (निर्दल)	1 (निर्दल)
बिहार	(13)		1	3	6	6	4	1		3 (झामुमो)	1 समता 1 झामुमो		
गुजरात	(6)	5	3	1	3								
हरियाणा	(2)	2	1		1								
हिमाचल प्रदेश	(1)	1	1										
कर्नाटक	(4)	3	1	1	1		2						
केरल	(2)	1	1					1	1				
मध्य प्रदेश	(15)	13	4	2	9						1 काति		1 (मविका)
महाराष्ट्र	(7)	7	3		2						2 (शिसे)		
मणिपुर	(1)	1	1										
मिजोरम	(1)	1	1										
उडीसा	(8)	5	7			3	1						

—

(7)	4	4
(8)	6	–
(1)	1	
(18)	1	
(10)		
(3)	3	
(1)	1	1
(1)		1
(120)	62	36

। र

विभिन्न ज

डी जातियॉ जहॉ अगडी के मतदाता उससे अधिक है)		
ख	ग	%
›9	61	34 66
14	61	3 90
61	61	7 21
44	61	19 69
61	61	20 13
3	61	1 06
57	61	3 93
7	61	1 89

नडे

। 1996 से साभार

3	3								
					1	2 (अन्ना द्रमुक)	3 (द्रमुक)		4 तमाका
					1				
9	14	7				1 (सजपा)	2 (सपा)		2 बसपा
				6	6	1 फा ब्लाक 3 रिसोपा	1 फा ब्लाक 3 रिसोपा		
							2 अकाली		1 बसपा
1									
21	40	16	07	08	10	12	18	01	09

ाति-प्रधान क्षेत्रो मे प्रदर्शन (लोकसभा '96) लेखा-जोखा

मुसलमान (क्षेत्र जहॉ मुसलमान 18% या उससे अधिक है अधिक है)				अनुसूचित जातियॉ (क्षेत्र जहॉ अनुसूचित जाति के मतदाता 25% या उससे अधिक हे)				पिछडी जातियॉ (क्षेत्र जहॉ पिछडी जातियो के मतदाता 25% या उससे अधिक है)			
क	ख	ग	%	क	ख	ग	%	क	ख	ग	%
10	23	23	33 89	15	21	21	33 06	25	43	44	31 19
1	3	23	3 86	0	3	21	2 17	1	8	44	4 94
1	23	23	6 59	0	21	21	6 26	4	44	44	7 63
9	20	23	27 26	2	17	21	22 11	8	33	44	21 14
2	23	23	19 26	4	21	21	27 01	4	44	44	22 09
0	0	23	0 00	0	1	21	0 38	0	2	44	0 73
0	21	23	1 64	0	20	21	1 48	0	38	44	1 52
0	2	23	1 46	0	2	21	0 36	2	8	44	3 29

ग = विभिन्न जाति-प्रधान क्षेत्रो मे कुल सीटो की सख्या
% = विभिन्न जाति-प्रधान क्षेत्रो मे मिले वोटो का प्रतिशत

—

(7)	4	4
(8)	6	–
(1)	1	
(18)	1	
(10)		
(3)	3	
(1)	1	1
(1)		1
(120)	62	36

। र

विभिन्न जा

डी जातियॉ जहॉ अगडी के मतदाता उससे अधिक है)		
ब्र	ग	%
›9	61	34 66
14	61	3 90
51	61	7 21
44	61	19 69
61	61	20 13
3	61	1 06
57	61	3 93
7	61	1 89

नडे

। 1996 से साभार

3	3								
					1	2 (अन्ना द्रमुक)	3 (द्रमुक)		4 तमाका
					1				
9	14	7				1 (सजपा)	2 (सपा)		2 बसपा
				6	6	1 फा ब्लाक 3 रिसोपा	1 फा ब्लाक 3 रिसोपा		
							2 अकाली		1 बसपा
1									
21	40	16	07	08	10	12	18	01	09

ति-प्रधान क्षेत्रो मे प्रदर्शन (लोकसभा '96) लेखा-जोखा

मुसलमान (क्षेत्र जहॉ मुसलमान 18% या उससे अधिक है अधिक है)				अनुसूचित जातियॉ (क्षेत्र जहॉ अनुसूचित जाति के मतदाता 25% या उससे अधिक है)				पिछडी जातियॉ (क्षेत्र जहा पिछडी जातियो के मतदाता 25% या उससे अधिक है)			
क	ख	ग	%	क	ख	ग	%	क	ख	ग	%
10	23	23	33 89	15	21	21	33 06	25	43	44	31 19
1	3	23	3 86	0	3	21	2 17	1	8	44	4 94
1	23	23	6 59	0	21	21	6 26	4	44	44	7 63
9	20	23	27 26	2	17	21	22 11	8	33	44	21 14
2	23	23	19 26	4	21	21	27 01	4	44	44	22 09
0	0	23	0 00	0	1	21	0 38	0	2	44	0 73
0	21	23	1 64	0	20	21	1 48	0	38	44	1 52
0	2	23	1 46	0	2	21	0 36	2	8	44	3 29

ग = विभिन्न जाति-प्रधान क्षेत्रो मे कुल सीटो की सख्या
% = विभिन्न जाति-प्रधान क्षेत्रो मे मिले वोटो का प्रतिशत

इस चुनाव का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रहा। डॉ महीप सि अपन लेख मे सटीक टिप्पणी करते है। उनके अनुसार अकालियो के बहिष्कार क बावजूद पजाब मे चुनाव हुए। मतदान 23 प्रतिशत से भी कम रहा। प्रकाश सि बादल ने इस समय दृढतापूवक जो रुख अपनाया और शातिपूर्ण लोकतात्रिक प्रक्रिया म जो आस्था व्यक्त की, पजाब के सिखो द्वारा उस भरपूर समथन मिला। पजाब की हिदू जनता जो अकाली दल की नीतियो ओर गतिविधिया का सदा हा शका की दृष्टि से देखती रही थी, का भी प्रकाश सिह बादल के रूप मे ऐसी शक्ति उभरना दिखाइ दी जो पजाब म लोकतत्र लाने के साथ ही साप्रदायिक सोमनस्य क प्रति भी वचनबद्ध थी।

वे लिखते हे कि पिछले तीन वष पजाब की सिख राजनीति के लिए बहुत निणायक थे। इस अवधि मे यदि प्रकाश सिह बादल कमजोर पड जात तो वहुत सभावना थी कि सिख राजनीति उन दुगम रास्तो की ओर फिर मुड जाती, जहॉ स उसे वापस लाने मे लबा समय लगता ओर बेहिसाब दुश्वारियॉ होती। सबस बडा बात यह कि सिख जनता ने टकराव की राजनीति को ठुकरा दिया ओर प्रकाश सिह बादल की लाइन को अपनी स्वीकृति दे दी। इसकी पहली परीक्षा गत वष हुए लाकसभा क चुनाव मे हुइ। अमृतसर घोपणा पत्र को अपना आधार मानने वाले सिमरनजात सिह मान के नेतृत्व वाले अकाली दल को भी एक स्थान प्राप्त नही हुआ। वह स्वय सगरूर मे सुरजीत सिह बरनाला के हाथो पराजित हुए। अकाली दल (बादल) का आठ स्थान तथा उससे चुनाव समझोता किए बहुजन समाज पार्टी को तीन स्थान प्राप्त हुए। कॉग्रेस कुल दो स्थानो पर सफल हुइ।

दूसरी परीक्षा कुछ महीने पहले हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबधक कमेटी के चुनाव मे हुइ। 175 सदस्या के सदन मे अकाली दल (बादल) 155 से अधिक स्थाना पर विजयी रहा। अब तीसरी परीक्षा के परिणाम हमारे सामने है।

महीप सिह का मानना रहा हे कि इस चुनाव मे अकाली दल (बादल) ने भारतीय जनता पार्टी के साथ गठबधन किया। पजाब मे इस गठबधन का महत्त्व राजनीतिक दृष्टि से ही नही, वहॉ साप्रदायिक सोमनस्य की दृष्टि से भी इसका बहुत महत्त्व हे। स्वय बादल साहब के कुछ साथी इस गठजोड के प्रति अनेक शकाएँ व्यक्त कर रह थे। उन्हे लगता था कि भारतीय जनता पार्टी के कहने के बावजूद पजाब का (सवण) हिदू किसी अकाली उम्मीदवार को अपना वोट नही देगा।

कितु इस बार यह शका भी निमूल साबित हुइ। हिदुओ ने अकाली दल क उम्मीदवारो को व्यापक रूप से अपना समथन दिया ओर सिखो ने भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवारो को जिताया। इस बार भाजपा को पजाब मे जितनी सीटे मिली हे उतनी इससे पहले कभी नही मिली।

इस चुनाव मे पजाब की जनता ने दो स्पप्ट फैसले दिए। एक, उसे कॉग्रेस

का हर हालत मे हराना था। इस बीच सारे देश मे कॉग्रेस के बडे-छाटे नेताओ का भ्रष्टाचार से भरा घिनौना चेहरा उजागर हुआ है। पजाब मे यह भ्रष्टाचार अपने चरम पर पहुँच गया था। दूसरा, उसने टकरावववादी, अलगाववादी ओर उग्र चेहरे वाली सिख राजनीति को पूरी तरह ठुकरा दिया। 117 के सदन मे मान समथक केवल एक सदस्य चुनकर आया हे। काशीराम की राजनीतिक पत्तेबाजी भी लोगो को पसद नही आइ। कभी अकालया के साथ, कभी कॉग्रेस के साथ आर आखिर मे गरमपथी मान दल क साथ समझोता करने वाले काशीराम की पार्टी को कुल एक स्थान मिला, जबकि बे 25-30 स्थान जीतकर पजाब मे सत्ता-सतुलन की आस लगाए बेठ थे आर वहॉ उत्तर प्रदेश जेसी स्थिति लाना चाहते थे।

बकोल कुलदीप नेयर हालॉकि अकालियो के सामने एक धमनिरपेक्ष पजाबी माचा बनाने का विकल्प था। लेकिन उन्होने **'सिख-हिदू'** मोचा बनाना ज्यादा बेहतर समझा। इसका परिणाम अच्छा ही हुआ।

बकोल अवधेश कुमार आतकवाद के लबे दौर से परेशान पजाब की बहुसख्यक आबादी किसी भी तरह कट्टरवादी राजनीति का समूल नाश चाहती थी ताकि वह शाति से अपना जीवन जी सके। ऐसी मानसिकता मे वे कोई भी वेसा जोखिम नही उठाना चाहते थे जिसमे कट्टरवाद के फिर से सिर उठाने की जरा भी सभावना निहित हा। ठीक इस सामूहिक मनोदशा के विपरीत काशीराम ने हाथ मिलाया तो उन सिमरनजीत सिह मान से जो कि पजाब मे कट्टरवादी राजनीति के प्रतीक बन चुके हे। सो, बसपा की पराजय तो उसी दिन निश्चित हो गई, जब अकाली दल (मान) से उसका चुनावी समझोता हुआ। वैसे यह समझौता न होता तब भी बसपा की हालत बेहतर न होती। कारण, राज्य मे अभी राजनीतिक स्थिरता के पक्ष मे जो माहौल है, बसपा नेतृत्व की छवि भी उसके अनुकूल नही है। काशीराम यदि थोडा लचीला रुख अपनाए होते तो उत्तर प्रदेश का राजनीतिक गतिरोध कब का समाप्त हो गया होता।

वे आगे लिखते है कि पिछले लोकसभा चुनाव मे बहुजन समाज पार्टी की सफलता के पीछे अकाली दल (बादल) से हुए गठजोड का प्रमुख हाथ था। इस सच्चाई को नजरअदाज कर उसे केवल अपने दलित जनाधार का सबूत मान लेना, वास्तव मे मूर्खो के स्वर्ग मे रहने जैसा था। उत्तर प्रदेश मे कॉग्रेस से सधि के साथ ही पजाब मे अकाली दल (बादल) के साथ बसपा का विग्रह प्राय निश्चित हो गया था। कारण, अकाली नेता अपनी कॉग्रेस विरोधी छवि के साथ समझौता करके अपने पैरो पर कुल्हाडी नही मार सकते थे। उनकी तो राजनीति का मूल ही कॉग्रेस विरोध है। यदि इसी पर सवाल खडा हो गया तो फिर उनकी राजनीति का आधार क्या रहेगा? भाजपा ने अकालियो की इस मानसिकता का लाभ उठाकर अकाली-बसपा गठजोड म सेध लगा दी। अकालियो को भी एक ऐसी पार्टी का साथ चाहिए था जिसका

राजस्थान	(7)	4	4	3	3								
तमिलनाडु	(8)	6	–						1	2 (अन्ना द्रमुक)	3 (द्रमुक)		4 तमाका
त्रिपुरा	(1)	1							1				
उत्तर प्रदेश	(18)	1		9	14	7				1 (सजपा)	2 (सपा)		2 बसपा
पश्चिम बगाल	(10)							6	6	1 फा ब्लाक 3 रिसोपा	1 फा ब्लाक 3 रिसोपा		
पजाब	(3)	3									2 अकाली		1 बसपा
दादरा नगर हवेली	(1)	1	1										
दिल्ली	(1)		1	1									
कुल सुरक्षित सीटे	(120)	62	36	21	40	16	07	08	10	12	18	01	09

राष्ट्रीय सहारा से सा ार

इस चुनाव का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रहा। डॉ महीप सिह अपन लख मे सटीक टिप्पणी करते है। उनके अनुसार अकालियो क बहिष्कार क बावजूद पजाब म चुनाव हुए। मतदान 23 प्रतिशत से भी कम रहा। प्रकाश सिह बादल ने इस समय दृढतापूर्वक जो रुख अपनाया ओर शातिपूण लोकतात्रिक प्रक्रिया म जा आस्था व्यक्त की, पजाब के सिखो द्वारा उस भरपूर समथन मिला। पजाब की हिदू जनता जो अकाली दल की नीतियो ओर गतिविधियो को सदा ही शका की दृष्टि स दखती रही थी, का भी प्रकाश सिह बादल के रूप मे एसी शक्ति उभरती दिखाइ दी जा पजाब म लाकतत्र लाने के साथ ही साप्रदायिक सोमनस्य क प्रति भी वचनबद्ध थी।

व लिखत ह कि पिछल तीन वष पजाब की सिख राजनीति के लिए बहुत निणायक थ। इस अवधि म यदि प्रकाश सिह बादल कमजोर पड जात तो बहुत सभावना थी कि सिख राजनीति उन दुगम रास्तो की ओर फिर मुड जाती, जहॉ से उस वापस लाने म लबा समय लगता ओर बेहिसाब दुश्वारियॉ होती। सबसे बडी बात यह कि सिख जनता ने टकराव की राजनीति का ठुकरा दिया ओर प्रकाश सिह बादल की लाइन को अपनी स्वीकृति दे दी। इसकी पहली परीक्षा गत वष हुए लोकसभा क चुनाव म हुइ। अमृतसर घाषणा पत्र को अपना आधार मानने वाले सिमरनजीत सिह मान के नतृत्व वाले अकाली दल को भी एक स्थान प्राप्त नही हुआ। वह स्वय सगरूर म सुरजीत सिह बरनाला के हाथो पराजित हुए। अकाली दल (बादल) का आठ स्थान तथा उससे चुनाव समझोता किए बहुजन समाज पार्टी को तीन स्थान प्राप्त हुए। कॉग्रेस कुल दो स्थानो पर सफल हुइ।

दूसरी परीक्षा कुछ महीने पहले हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबधक कमेटी के चुनाव म हुइ। 175 सदस्यो के सदन मे अकाली दल (बादल) 155 से अधिक स्थानो पर विजयी रहा। अब तीसरी परीक्षा के परिणाम हमारे सामने है।

महीप सिह का मानना रहा हे कि इस चुनाव मे अकाली दल (बादल) ने भारतीय जनता पार्टी के साथ गठबधन किया। पजाब मे इस गठबधन का महत्त्व राजनीतिक दृष्टि स ही नही, वहॉ साप्रदायिक सोमनस्य की दृष्टि से भी इसका बहुत महत्त्व हे। स्वय बादल साहब के कुछ साथी इस गठजोड के प्रति अनेक शकाऍ व्यक्त कर रहे थ। उन्हे लगता था कि भारतीय जनता पार्टी के कहने के बावजूद पजाब का (सवण) हिदू किसी अकाली उम्मीदवार को अपना वोट नही देगा।

किंतु इस बार यह शका भी निमूल साबित हुइ। हिदुओ ने अकाली दल के उम्मीदवारो को व्यापक रूप से अपना समथन दिया ओर सिखो ने भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवारो को जिताया। इस बार भाजपा को पजाब मे जितनी सीटे मिली हे उतनी इससे पहले कभी नही मिली।

इस चुनाव म पजाब की जनता ने दो स्पष्ट फैसले दिए। एक, उसे कॉग्रेस

को हर हालत मे हराना था। इस बीच सारे देश मे कॉग्रेस के बडे-छोटे नेताओ का भ्रष्टाचार से भरा घिनौना चेहरा उजागर हुआ है। पजाब मे यह भ्रष्टाचार अपने चरम पर पहुँच गया था। दूसरा, उसने टकराववादी, अलगाववादी ओर उग्र चहरे वाली सिख राजनीति को पूरी तरह ठुकरा दिया। 117 के सदन मे मान समथक केवल एक सदस्य चुनकर आया है। काशीराम की राजनीतिक पत्तेबाजी भी लोगो का पसद नही आइ। कभी अकालिया के साथ, कभी कॉग्रस क साथ आर आखिर म गरमपथी मान दल के साथ समझोता करने वाले काशीराम की पार्टी को कुल एक स्थान मिला, जबकि बे 25-30 स्थान जीतकर पजाब मे सत्ता-सतुलन की आस लगाए बेठे थ ओर वहॉ उत्तर प्रदेश जेसी स्थिति लाना चाहते थे।

बकौल कुलदीप नेयर हालॉकि अकालियो के सामने एक धमनिरपेक्ष पजाबी मोचा बनाने का विकल्प था। लेकिन उन्होने **'सिख-हिदू'** मोचा बनाना ज्यादा बेहतर समझा। इसका परिणाम अच्छा ही हुआ।

बकौल अवधेश कुमार आतकवाद के लबे दोर से परेशान पजाब की बहुसख्यक आबादी किसी भी तरह कट्टरवादी राजनीति का समूल नाश चाहती थी ताकि वह शाति से अपना जीवन जी सके। ऐसी मानसिकता मे वे कोई भी वेसा जोखिम नही उठाना चाहते थे जिसमे कट्टरवाद के फिर से सिर उठाने की जरा भी सभावना निहित हो। ठीक इस सामूहिक मनोदशा के विपरीत काशीराम ने हाथ मिलाया तो उन सिमरनजीत सिह मान से जो कि पजाब मे कट्टरवादी राजनीति के प्रतीक बन चुक है। सो, बसपा की पराजय तो उसी दिन निश्चित हो गई, जब अकाली दल (मान) से उसका चुनावी समझौता हुआ। वैस यह समझौता न होता तब भी बसपा की हालत बेहतर न होती। कारण, राज्य मे अभी राजनीतिक स्थिरता के पक्ष मे जो माहौल है, बसपा नेतृत्व की छवि भी उसके अनुकूल नही है। काशीराम यदि थोडा लचीला रुख अपनाए होते तो उत्तर प्रदेश का राजनीतिक गतिरोध कब का समाप्त हो गया होता।

वे आगे लिखते है कि पिछले लोकसभा चुनाव मे बहुजन समाज पार्टी की सफलता के पीछे अकाली दल (बादल) से हुए गठजोड का प्रमुख हाथ था। इस सच्चाइ को नजरअदाज कर उसे केवल अपने दलित जनाधार का सबूत मान लेना, वास्तव मे मूर्खो के स्वर्ग मे रहने जैसा था। उत्तर प्रदेश मे कॉग्रेस से सधि के साथ ही पजाब मे अकाली दल (बादल) के साथ बसपा का विग्रह प्राय निश्चित हो गया था। कारण, अकाली नेता अपनी कॉग्रेस विरोधी छवि के साथ समझौता करके अपने पैरो पर कुल्हाडी नही मार सकते थे। उनकी तो राजनीति का मूल ही कॉग्रेस विरोध है। यदि इसी पर सवाल खडा हो गया तो फिर उनकी राजनीति का आधार क्या रहेगा? भाजपा ने अकालियो की इस मानसिकता का लाभ उठाकर अकाली-बसपा गठजोड मे सेध लगा दी। अकालियो को भी एक ऐसी पार्टी का साथ चाहिए था जिसका

- डॉ अम्बेडकर ओर बहुजन सूरतगढ 21 सितबर 1996
- राष्ट्रीय सहारा (हस्तक्षेप) नोएडा 19 राजस्थान अक्तूबर 1996
- वरिष्ठ पत्रकार और चितक पुष्पन्द्र जी के शाध पत्र स
- विजय बहादुर सिह 1996 के चुनाव राष्ट्रीय सहारा 19 अक्तूबर 1996
- रामविलास पासवान स उनके निवास 12 जनपथ नइ दिल्ला पर बातचात क आधाग पर
- बहुजन सगठक 15 अप्रल 1996
- वही पृ 7
- इडिया टुडे 30 जून 1996 पृ 5
- एक फेसला था पजाब का चुनाव महीपसिह काशाराम आत्म मथन क्या नहा करन राष्ट्राय सहारा 22 फरवरी 1997
- कुलदीप सिह नैयर राष्ट्रीय सहारा
- अवधेश कुमार राष्ट्रीय सहारा

दलित-मुस्लिम गठबंधन

बनाड शॉ ने एक बार कहा था, "विश्व म इस्लाम एक अच्छा धम हे, पर उस धर्म क अनुयायी उतने ही खराब। इस्लाम केवल भाईचारे का सन्देश किताबी रूप मे नही देता बल्कि अपने अनुयायियो को इसका व्यवहार मे पालन करना सिखाता है, लेकिन भारत म मुस्लिम नेताओ के द्वारा मुसलमानो को गुमराह किया जाता है।

आजादी के बाद राजनीति के नए समीकरण बने। धम, जाति एव वर्ग के आधार पर कुछ लोगो का देश व समाज को जोडने के नही बल्कि तोडने के सूत्रो की तलाश थी। 1957 म भारतीय रिपब्लिकन पार्टी ने पहला आम चुनाव लडा ओर दलित-मुस्लिम गठबधन का सिलसिला यही से आरम्भ हुआ। 1962 मे अलीगढ के सामान्य ससदीय क्षेत्र से बी पी मौर्य दलित ओर मुस्लिम गठबधन के आधार पर ही जीते। कहा जाता है कि उस समय पहली बार पदानशीन मुस्लिम महिलाओ ने बी पी मोय के हक मे नारे लगाए। डॉ ख्वाजा ने उनकी भरपूर मदद की थी। 1962 मे ही अमरोहा से मुजफ्फर हुसैन कछोछवी भारतीय रिपब्लिकन पार्टी के टिकट पर जीत कर लोकसभा मे आए थे।

1967 मे उ प्र विधानसभा के लिए चुनाव हुए जिसमे असरार अहमद और शमीम अहमद भारतीय रिपब्लिकन पार्टी के टिकट पर विजयी हुए। 1967 मे ही दिल्ली नगर निगम के चुनाव मे रिपब्लिकन पार्टी की ओर से अन्य मुस्लिम प्रत्याशी आए। दिल्ली महानगर परिषद मे इमदाद साबरी आए।

1972 के चुनावो के बाद गुजरात म राजनीतिक ध्रुवीकरण के लिए नए आधार की तलाश हुइ। गुजरात मे जहा एक ओर दलित पर अत्याचार की त्रासदी रही वही हिन्दू-मुस्लिम दगो मे मुस्लिम समाज को भी अथाह पीडा सहनी पडी। अत सवर्णो के प्रभुत्व को समाप्त करने के उद्देश्य से पिछडी जातियो और मुसलमानो ने एक सयुक्त मोर्चा बनाया जिसे 'खाम' के रूप मे जाना गया। इस मोर्चे मे क्षत्रिय, हरिजन, आदिवासी और मुसलमान शामिल थे।

उत्तरी भारत मे बी पी मौर्य के बाद दलित मुस्लिम सयुक्त मोर्चे की शुरुआत काशीराम ने विशेष तोर पर की। 1972 के आसपास काशीराम दलितो के सामाजिक

सगठन 'बामसेफ' के माध्यम से मुस्लिम नेताओ स मिलते एव हाथ मिलात। गजधानी तथा अन्य स्थानो पर काशीराम अपने साथियो के साथ मस्जिद म भी मीटिग लिया करते थे। बाद मे बहुजन समाज पार्टी के टिकट पर कुछ मुस्लिम नेताआ न चुनाव लडा। वह बात अलग हे कि वे हारे। शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी स काशीराम की मुलाकात बहुत बाद मे हुई।

महाराष्ट्र मे दलित मुस्लिम गठबधन का सूत्रपात किया नागपुर क प्राफेसर योगेन्द्र कवाडे ने। 1980 मे दलित मुक्ति सेना बनाइ गइ जिसका खास मक्सद मुसलमानो, बौद्धो तथा दलितो को अत्याचार के खिलाफ एक मच पर लाना था। यह एक गेरसियासी सेना थी। 1984 मे भिवडी मे साप्रदायिक दगे हुए जिसम मुसलमाना को जान-माल की क्षति पहुची। शायद पहली बार मुसलमाना की हिमायत मे महाराष्ट्र विधानसभा के सामने बडी सख्या मे दलितो ने खुलकर प्रदशन किया। 1984 म दलित मुस्लिम मायनारिटीज सुरक्षा महासघ का उद्घाटन अधेरी (बबइ) मे हुआ जिसम मिजा हाजी मस्तान तथा प्रो योगेन्द्र कवाडे के साथ अन्य मुस्लिम तथा दलित नता भी थे। डॉ अम्बेडकर की राम और कृष्ण की आलोचना के पुनमुद्रण पर महाराष्ट्र मे जो तूफान मचा उसमे शिव सेना के खिलाफ दलित मुस्लिम मायनारिटीज सुरक्षा महासघ ने हिस्सा लिया।

27 सितम्बर, 1987 को विट्ठलभाई पटेल हाउस मे सुबह नो बजे से साय 8 बजे तक स्पीकर हॉल मे सावधानीपूवक एक गोष्ठी हुई जिसमे एकीकृत अकाली दल के अध्यक्ष जत्थेदार उजागर सिह के साथ अन्य मुस्लिम ओर दलित कायकर्ता भी शामिल थे। इस गोष्ठी मे उदू अखबारो के कुछ नुमाइदे भी थे। गोष्ठी मे यह तय किया गया कि ब्राह्मण, बनिया और ठाकुरो के खिलाफ सभी को मिलकर मार्चेबदी आरभ करनी चाहिए। सभा म दलित, मुस्लिम, सिख भाइ-भाइ, तीसरी कोम कहा स आइ, के नारे भी लगाए गए। उ प्र के विधायका तथा बाबरी एक्शन कमेटी क सयोजक मोहम्मद आजम खा ने मेरठ मे हुए दगो मे मुस्लिम समाज पर योजनाबद्ध तरीके से हुए हमले की बात उठाई। इसी समय खाकसार पार्टी के नेता डॉ हमीद अहमद खान ने इस बात को दोहराया कि अब समय आ गया है कि हम सभी को सवर्ण हिन्दुओ के खिलाफ एक हो जाना चाहिए।

दलित ओर मुस्लिम समाज के बीच राजनेतिक गठबधन के नारे लोकतात्रिक चुनाव के दौरान बार-बार लगाए गये है। इसके लिए मुसलमानो को उतनी जरूरत महसूस नही हुई, जितनी दलितो ने समझी। इसका मुख्य कारण रहा कि भारत म अग्रेजो से आने से पहले और उनके शासन के दौरान भी मुसलमानो का इस दश के बडे भाग मे साम्राज्य रहा। जबकि उनके उसी दौर मे कुछ अपवादो को छोडकर दलित समाज हाशिये पर रहा। दलितो के साथ जेसा हिदुआ ने व्यवहार किया, लगभग वैसा ही व्यवहार मुसलमानो की ओर से हुआ। बल्कि कही-कही तो बहुत ही गलत

तरीके म व दलितो क साथ पेश आए। आजादी के लगभग तीस वर्षो बाद तक भी दलित मुस्लिमा मे खटास के अलावा कुछ खास मिठास नही रही। गुजरात के प्रसिद्ध दलित साहित्यकार भी यह मानते हे कि दलित और मुसलमानो मे किसी तरह की एक्ता सभव नही इसलिए कि उनकी सास्कृतिक पृष्ठभूमि अलग-अलग है। जबकि तिकंश मकवाना का कहना ह कि दलित-मुस्लिम गठबधन सभव हे, बशर्ते दोनो तरफ स प्रयाम हो। दलित मुस्लिमो के बीच राजनतिक गठबधन की स्थितियो को समझन के लिए सबस पहले ऑकडो का अवलोकन किया जाए।

उत्तर प्रदेश से कितने मुस्लिम ससद मे गए

1952	5
1957	6
1962	5
1967	5
1971	4
1977	9
1980	17
1984	11
1989	10
1991	3
1996	6
1998	6

उत्तर प्रदेश की उन लोकसभा सीटों का विवरण जिन पर मुस्लिम उम्मीदवार दो बार चुने गए

लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र	पार्टी	सन्
अमरोहा	कॉग्रस	1952-1957
बरेली	जनता पार्टी	1980
	कॉग्रेस	1984

बलरामपुर	निर्दलीय	1989
	समाजवादी पार्टी	1998
डुमरिया गज	कॉग्रेस	1980-1984
गाजीपुर	कॉग्रेस	1980-1984
चायल	कॉग्रेस	1962-1967
फतेहपुर	कॉग्रेस	1980
	सी पी एम	1984
फरूखाबाद	कॉग्रेस	1984-1991
एटा	कॉग्रेस	1980
	लोकदल	1984
हापुड	भारतीय लाकदल	1977
	जनता पार्टी	1980

जिन लोकसभा सीटो से दो से अधिक बार मुस्लिम उम्मीदवार विजयी हुए

मुरादाबाद	9 बार
रामपुर	10 बार
बदायूॅ	4 बार
उन्नाव	4 बार
बहराइच	5 बार
मिजापुर	4 बार
बुलदशहर	3 बार
मेरठ	3 बार
मुजफ्फरपुर	4 बार
कैराना	3 बार
सहारनपुर	4 बार

हमारा महानगर साध्य देनिक बबइ अगस्त 1999 से साभार

कुल मुस्लिम मतदाता लगभग 12 प्रतिशत
लोकसभा—कुल स्थान 545 (दो मनोनीत)
मुस्लिम मता से प्रभावित स्थान 262
(10 प्रतिशत या उससे अधिक मुस्लिम मतदाता)

उत्तर भारत

उत्तर प्रदेश	85
बिहार	54
राजस्थान	25
मध्य प्रदेश	40
हिमाचल प्रदेश	4
हरियाणा	10
पजाब	13
दिल्ली	7
योग	238

मुस्लिम मतो से प्रभावित 120

दक्षिण भारत

आध्र	42
कनाटक	28
तमिलनाडु	39
केग्ल	20
योग	129

मुस्लिम मतो से प्रभावित 60

पूव भारत

असम	14
उडीसा	21
पश्चिम बगाल	42
योग	77

77 मे से 52 पर मुस्लिम प्रभाव

पश्चिम भारत	
गुजरात	26
महाराष्ट्र	48
योग	74

74 मे से 30 पर मुस्लिम प्रभाव

माया 30 अप्रल 1991 स साभार

आइये इस बारे मे स्वय मुस्लिम चितका की राय जानी जाए। अल्पसख्यक आयोग के सदस्य **जावेद हबीब** का मानना हे कि जुम्मा रोजा, हज, जकात आदि इस्लाम के सिद्धात ही ऐसे है जो मुसलमानो मे एकजुटता के जज्बात पेदा कर देत हे। फिर धामिक अल्पसख्यक के नाते उनमे ये जज्वात ओर तीव्र ह।

वोट बेक का अथ यह नही होता कि एक समुदाय क सो फीसदी वाट एक ही पार्टी को पडे। अगर किसी समुदाय के 60 फीसदी वोट भी एक जगह गिर, तो यही वोट बेक्र हे। 1967 से पहले तक मुसलमान कॉग्रेस का पारपरिक मतदाता था। उस वष डॉ फरीदी ने मुस्लिम **मजलिसे मुशावरत** का गठन किया ओर **प्रजा सोशलिस्ट पार्टी** से गठबधन किया, जिसके नतीजे काफी उत्साहवधक निकले। इसी कारण 1971 मे श्रीमती गॉधी ने डॉ फरीदी से उनके नो सूत्री कायक्रम पर समझोता किया। यह राष्ट्रीय स्तर पर किसी भी मुस्लिम नेता से आजाद भारत का पहला समझोता था। स्थानीय स्तर पर कॉग्रेस केरल म **मुस्लिम लीग** स ओर आध्र प्रदेश म **इत्तिहादुल मुस्लिमीन** से गठबधन करती आइ थी। अगर वोट बेक नही ह, तो राजनीतिक पार्टियॉ हम लोगो के पास क्यो आती हे? मुसलमानो की सियासी पहचान आर अहमियत उनकी एकजुटता मे हे। असल मे कॉग्रेस की थ्योरी (कि वोट बेक नही हे) का प्रचार करके मुसलमानो की पहचान मिटाने का षड्यत्र चलता है।

माया पत्रिका के पृष्ठो को अगर देखे तो गभीर तरह का विश्लेषण हमारे सामने अपने तर्को के साथ आता है। **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** पर अगर गोर किया जाए ता मुस्लिम वोट बेक की अवधारणा की एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी हे। विभाजन के समय मुस्लिम मध्यवग का अच्छा-खासा भाग पाकिस्तान जाकर बस गया था। **जमायते उलेमा हिद** के नेताओ के प्रयास से जो भारत मे बने रहे, वे शेक्षिक व आथिक रूप से पिछड व बेहाल लोग थ। आरएसएस व अन्य हिदू साप्रदायिक सगठनो के मुस्लिम विरोधी प्रचार से भारत के मुसलमानो का भविष्य खतरे मे पड गया था। जमायत के नेता **मौलाना हफीजुरहमान** व **मौलाना अबुल कलाम आजाद** व काग्रेस ने मुसलमाना के धम व सपत्ति की सुरक्षा की गारटी दी बशर्ते वे अपना वोट कॉग्रेस को द। इस तरह कॉग्रेस के मुस्लिम वोट बेक की अवधारणा बनी।

लकिन उस सूरतें हाल मे मुसलमानो के सामने कम्युनिस्टो को छोडकर कोई विकल्प नहीं था। पर कम्युनिस्ट भी एक तरह से खारिज माने जाते थे, क्योकि मुल्लाओ न जा मजहबी सस्थानो पर काबिज होने के अपने बलबूते अपनी पसद की राजनीतिक पार्टी के समथन मे फतवा जारी करने मे सक्षम थे, उन्हे धर्म विहीन करार दिया था। इसी क चलते यह धारणा बलवती हुइ थी कि **मुसलमान अपने दिल-दिमाग से काम करने के बजाए मुल्लाओ/इमामो के कहने पर वोट देते रहे है**। बकाल आरिफ बग इमाम, मुल्ला आर दूसरे साप्रदायिक मुस्लिम नेता अपने स्वार्थ की खातिर अशिक्षित मुसलमानो का मजहब की आड म अपनी पसद की पार्टी को वोट देने के फतवे जारी करत ह। उनके जज्बात की सोदबाजी करते हे और वह बेचारा अपना भला-बुरा साच बगर एकजुट होकर मत का प्रयोग करता है।

पिछल दशक म आयोजित दलित-मुस्लिम एकता माच म स्वय काशीराम ने अपन भाषण मे कहा था कि मजलूम-मजलूम मिलकर जुल्म का मुकाबला बेहतर कर सकत ह इस बात का ध्यान मे रखकर बहुजन समाज पार्टी ने इस तमाम मजलूमा म भाइचारा बनाने की काशिश लबे अरसे से की हे। लेकिन भाईचारा न बन सके, इस किस्म की काशिशे ब्राह्मणवादी समाज, उनकी पार्टियॉ और मीडिया ने लगातार की हे। पिछले कइ साला से बहुजन समाज पार्टी की कोशिश को तथा बहुजन समाज का गुमराह करके नाकामयाब बनाया गया हे। यह दु ख की बात हे कि बहुजन समाज जल्दी गुमराह होकर दुश्मन की साजिश का शिकार हो जाता हे इसी कारण 1964 स लकर 1984 तक दलित, पिछडे ओर मुसलमानो मे बडे पैमाने पर दगे कराकर उनकी शक्ति को नष्ट किया गया हे। इस बात को समझकर बहुजन समाज पार्टी न **'भाइचारा बनाओ यात्रा'** ओर **'भाइचारा बनाओ सम्मेलन'** पिछले वर्षो मे बडे पमाने पर किए गए हे। जेसे ही इस कोशिश मे ढील हुई तो बहुजन समाज को योजनाबद्ध ढग से फिर से गुमराह किया गया।

बसपा की ओर दलित-मुस्लिम समीकरण के रूझान के बारे मे मुफीज जीलानी लिखते हे कि आम चुनावो की घोषणा के बाद देश मे जेसे राजनीतिक भूचाल-सा आ गया है। दिन-प्रतिदिन विभिन्न दलो मे हो रही टूट-फूट से जहॉ राजनीतिक समीकरण तेजी से करवट ले रह है, वही कॉग्रेस ओर भाजपा के विकल्प के रूप मे धमनिरपेक्ष दलो मे आपसी सहमति न होने से रामो-वामो का सशक्त तीसरी ताकत बनने का सपना पूरी तरह टूट गया हे। हालॉकि सभी राजनीतिक दलो मे विभिन्न राज्यो मे टूट-फूट जारी हे, परतु उत्तर प्रदेश मे तेजी से जनता दल मे हुए घटनाक्रम ने जहॉ सपा-जद गठबधन को आघात पहुँचाया हे, वही बसपा के साथ दलित-मुस्लिम समीकरण प्रभावी ढग से बनते नजर आ रहे है।

चुनाव घोषणा से पूव और बाद मे अनेक दिग्गज मुस्लिम नेता अभी तक अपने दलो को छोडकर बसपा मे शामिल हो चुके थे। इनमे जद के वरिष्ठ नेता इलियास

आजमी, महासचिव राशिद अलवी, प्रातीय महासचिव मुगीस जीलानी अनवार अहमद, पूर्व विधायक फजलुल बारी इजहार आलम आदि प्रमुख हे। इसके अलावा मुस्लिम लीग के प्रभावशाली नेता रहे मुरादाबाद के डॉ शमीम अहमद भी बसपा मे शामिल हो गए।

जद से आने वाले इन मुस्लिम नेताओ मे से इलियास आजमी का शाहबाद, राशिद अलवी को अमरोहा ओर अजित सिह के खिलाफ बागपत स मुगीस जीलानी को बसपा ने अपना प्रत्याशी बनाया हे। उत्तर प्रदेश मे मेरठ, बागपत, मुजफ्फरनगर, बुलदशहर, सहारनपुर, बिजनोर, मुरादाबाद, रामपुर, आजमगढ, शाहबाद, बग्ली, पीलीभीत, मऊ आदि लगभग 25 ऐसे ससदीय क्षेत्र हे, जहॉ मुस्लिम मतदाताओ से ही नतीजो को प्रभावित करने की उम्मीद रही हे। उक्त सीटो पर मुस्लिम ओर दलित मतदाताओ की सख्या भी तकरीबन बराबर-बराबर ही हे।

मेरठ ससदीय क्षेत्र मे जहॉ मुस्लिम मतदाता लगभग 30 प्रतिशत हे, वही दलिता के वोटो का प्रतिशत भी 25 और 30 के बीच हे। बागपत सीट पर मुस्लिम मता का प्रतिशत 25 है तो दलितो के वोट 20 प्रतिशत हे। इसी प्रकार मुरादाबाद म भी मुस्लिम और दलित वोट क्रमश 30 व 25 प्रतिशत हे। रामपुर ससदीय क्षेत्र मे 40 से 45 प्रतिशत के करीब मुस्लिम मतदाता ह। जबकि दलितो के 20 प्रतिशत मत हे। बिजनोर ससदीय क्षेत्र मे मुस्लिम और दलितो के वोट कुल मतो का 65 प्रतिशत हे, बुलदशहर सीट पर भी दोनो के मतो का प्रतिशत लगभग 50 के आसपास है। अन्य सीटो पर भी दलित ओर मुस्लिम मत कुल मतो क 40 से 60 प्रतिशत तक है। बदलते राजनीतिक माहोल मे जिस तरह मुस्लिम नेतागण बसपा के साथ जुड रहे थे उससे स्वाभाविक हे कि मुस्लिम मतदाताओ का रूझान भी बसपा की तरफ होगा। दिल्ली की जामा मस्जिद के नायाब इमाम भी बसपा के प्रति अपने रूझान का इशारा दे चुके थे।

दलित-मुस्लिम समीकरणो के कारण मतो का जो ध्रुवीकरण हुआ उसके नतीजे मे पूर्व स्थिति मे उत्तर प्रदेश मे हुए स्थानीय निकायो के चुनावो मे भी बसपा समर्थित प्रत्याशियो को काफी हद तक सफलता मिली। आगरा और मेरठ नगर निगम के महापौर पद के लिए हुए चुनावो मे उक्त ध्रुवीकरण साफ-साफ देखने को मिला। हालॉकि आगरा मे बसपा चुनाव हार गइ, परतु मेरठ का चुनाव उसने इसी ध्रुवीकरण के बलबूते पर जीता।

इस बारे मे मसूद अहमद के प्रकरण को देना जरूरी है। जिस पर बहुजन सगठक का सपादकीय अच्छी खासी रोशनी डालता है

'बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मान्यवर काशीराम जी ने दावा किया कि उत्तर प्रदेश के शिक्षा मत्री मसूद अहमद को इस्तीफा देने के लिए कहा गया था। इसका कारण यह था कि बसपा से सबंधित विधायक उनके कामकाज से सतुष्ट

नही थे। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन शिक्षा मत्री शाकिर अली (बसपा) ने भी दावा क्रिया कि उनके पूर्ववर्ती डॉक्टर मसूद अहमद को भ्रष्टाचार मे लिप्त होने के कारण मत्री पद से हटना पडा।

काशीराम ने पत्रकारो से बात करते हुए कहा कि उनकी पार्टी ने मुख्यमत्री मुलायम सिह यादव से कहा था कि समाज कल्याण के कदमो पर निश्चित अवधि म ऐसा अमल करे जिससे बसपा को सतोप हो।

'विश्व बेक' ने 850 करोड रुपये उदू और बेसिक शिक्षा के लिए उत्तर प्रदेश सरकार को भेजे, जिसके लिए उत्तर प्रदेश के एक भ्रष्ट अधिकारी श्री कृष्ण अवतार पाडेय को उदू ओर बेसिक शिक्षा का निदेशक बनाया गया जो दलित एव मुस्लिम विराधी अधिकारी ह तथा भ्रष्टाचार के काफी आरोपो मे लिप्त है। इस सबध मे हमारे लोगो ने काफी शिकायत की और इतना ही नही, बल्कि लगभग 30 बी एस पी क विधायको ने लिखित विरोध भी किया कि पाडेय को उर्दू और बेसिक शिक्षा का निदेशक न बनाया जाए और उनके स्थान पर किसी मुसलमान या दलित समाज के अधिकारी को निदेशक पद पर नियुक्त किया जाए। लेकिन डॉ मसूद नही माने, इस तरह खास सूत्रो से यह पता चला हे कि इस भ्रष्ट अधिकारी को उर्दू और बेसिक शिक्षा के पद प रखने के लिए प्रदेश के शिक्षा मत्री डॉ मसूद ने काफी भारी रकम हासिल की हे।

इसी प्रकार डॉ मसूद ने ब्राह्मणवादी ताकतो के इशारा पर चलकर बहुजन समाज पार्टी से मुसलमानो को तोडने के लिए मुसलमानो के नाम पर एक अलग सगठन भी बनाया, जिसके डॉ मसूद स्वय सर्वेसवा बने।

जबकि डॉ मसूद ने अपने 6 पेज के प्रेस नोट मे यह लिखा है कि "मैने मत्रीमडल से इस्तीफा दिया हे," यह बिलकुल गलत है। डॉ मसूद ने अपनी बेईमानी ओर गलत गतिविधियो को छिपाने के लिए त्यागपत्र देने का गलत नाटक किया हे।

इस तरह उत्तर प्रदेश मे बहुजन समाज पार्टी के तमाम विधायक और उत्तर प्रदेश मे बहुजन समाज के लोग इनके इस रवैए से खुश नही थे। इस प्रकार की शिकायत लगभग कई महीनो से काशीराम जी को मिल रही थी। इसलिए काशीराम जी ने पिछले कई महीनो स लगातार डॉ मसूद पर नजर रखी और समय-समय पर उसे इमानदारी से कार्य करने की चेतावनी देते रहे, लेकिन शिक्षा मत्री डॉ मसूद अपने-आपमे सुधार नही लाए और अत मे बहुजन समाज के हितो को ध्यान मे रखकर यह फेसला करना पडा कि डॉ मसूद के स्थान पर पार्टी (बी एस पी) के ही किसी दूसरे मुसलमान विधायक को शिक्षा मत्री बनाया जाए जिसके लिए मुस्लिम समाज के एक विधायक शाकिर अली का नाम आया, जिन्हे बाद मे 21 जून की रात्रि को शपथ दिलाई गई।

बहुजन सगठक आगे लिखता हे, जब उत्तर प्रदेश मे विधानसभा चुनाव हुए थे तब उसमे सपा-बसपा गठबधन के तहत बहुजन समाज पार्टी के हिस्से मे 165 सीटे आइ थी, उसमे से बसपा ने अकेले मुसलमानो को ही 44 सीटे दी थी जबकि कॉग्रेस, जनता दल, भा ज पा व सपा ने भी बहुजन समाज पार्टी के मुकाबले म इतनी ज्यादा सीटे मुसलमानो को अपनी-अपनी पार्टियो मे नही दी थी। इसी प्रकार 1989 म जब उत्तर प्रदेश मे पहली बार बसपा के 16 विधायक चुनकर आए थ तो बहुजन समाज पार्टी ने विधानसभा मे अपने दल का नेता शेख सुलमान उफ पप्पू (मुसलमान) को बनाया था।

डॉ अहमद ने अपने त्याग-पत्र मे मायावती पर और प्रच्छन्न रूप से काशीराम पर मुस्लिम विरोधी होने का गभीर आरोप लगाया हे ओर स्वय को मुस्लिम हिता की रक्षा के लिए शहादत का रास्ता अपनाने का श्रेय दिया है। उन्होने अपने त्यागपत्र की तिथि को मुहर्रम के दसवे दिन से जोडकर कहा हे कि इसी दिन इमाम हुसन ने सिद्धातो के लिए सघष प्रारभ किया था ओर शहादत अपनाइ थी।

त्यागपत्र देने के बाद डॉ अहमद को जो भारी समथन मिला, विभिन्न दलो के मुस्लिम नेता उनके घर पर बधाइयॉ भेजने लगे, अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय छात्र सघ के सचिव असलम बेग ने उन्हे बधाई व समथन दिया, उसस स्पष्ट हे कि डॉ अहमद के त्यागपत्र ने मुस्लिम मानस को स्पदित किया है। तीसरे ही दिन उत्तर प्रदेश बसपा से महासचिव मोहम्मद इस्लाम ने भी अपने पद से त्यागपत्र देते हुए जो पॉच पृष्ठीय वक्तव्य प्रकाशित किया, उसमे मायावती के विरुद्ध डॉ अहमद के आरोपो को दोहराते हुए मुस्लिम नामो की एक लबी सूची दी है।

अगस्त, 94 को मेरठ रैली में काशीराम के भाषण का अश हम दे रहे है, जिससे पाठकों तथा चुनाव विश्लेषकों को सामाजिक, राजनेतिक समीकरण समझ आ सकें।

"यह जरूरत क्यो पड गई कि मुसलमानो के प्रति काशीराम ओर बसपा का रवैया क्या है? आजादी के बाद अनुसूचित जाति, जनजाति की तरह मुसलमानो के साथ भी बडे पैमाने पर धोखा हुआ है। 1968 मे पूना मे दगे हुए, उससे पहले 1964 मे हुए थे। मुझे वहॉ बताया गया कि हर चार साल के बाद मे दगे होते हे। मै उर्दू भाषा जानता था, तो मुसलमानो के एरिए मे एक उर्दू भाषा की किताबो की दुकान थी। उधर से मे उर्दू की मेगजीन वगैरह खरीदकर लाता था। 1968 मे दगे हुए। उसके बाद मै दुकान पर गया तो मुझे वह दुकान नजर न आई। पूना की गली-गली को मै अच्छी तरह से जानता था, लेकिन यह किताबो की दुकान कही नजर न आई। तभी वहॉ उसी का मालिक नजर आ गया। मैने उससे पूछा। इधर तो उदू की किताबो की दुकान होती थी। उर्दू की किताबे बिकती थी। रिसाले बिकते थे। लिटरेचर बिकता था, वह दुकान कहॉ गई? उन्होने कहा वह दुकान यही है जहॉ आप खडे हे। आज

यह कबाडी की दुकान है। आज इसमे लोहा है, तॉबा है और अन्य किस्म का कबाड का सामान हे। जो मैने यही सोचकर रखा है कि यहॉ तो हर चार साल मे दगा हाता है और पहले हमला इसी दुकान पर होता है, अब इसमे आग भी लग जाए तो यह और शुद्ध हो जाएगा।

मेरी तरह से कुछ और लोग उर्दू पडने वाले इधर आते होगे। और लोहा देखकर चले जाते होगे। तो उनक दिमाग मे इल्म घुसने की बजाए लाहा घुसता रहेगा, जो दिमाग इल्म हासिल करने के लिए इधर आता है वह दिमाग मे लोहे की शक्ल लेकर वापस चला जाता हे। मैने उस वक्त सोचा कि मै तो शैड्यूल्ड कास्ट/शेड्यूल्ड ट्राइब्स की दशा से दुखी हूँ। ये तो मुसलमान भी दुखी नजर आते हे। ये उर्दू की किताबे बेचना बद करके एक कबाडी बनकर रह गया।

दो साल बाद देखा कि भिवडी मे दगा हुआ। मै भिवडी गया। देखा, वहॉ लोगो के मरने के साथ उनका सामान भी जला है। स्थानीय लोगो से पता चला कि यहॉ तो दगा होने मे चार साल भी नही लगते। पहले ही हो जाता है।

उसके बाद मे मालेगॉव गया, उधर भी दगे हुए थे। पूना, भिवडी, मालेगॉव ओर जब मै यह सोच रहा था तो पता चला कि नागपुर मे दगा हो गया। हर जगह मैने जा-जाकर देखा कि दलित, आदिवासी और पिछडो को मुसलमानो के खिलाफ इस्तेमाल किया जाता हे।

मै देश-भर म घूमा, रिकार्ड इकट्ठा किया तो मुझे नजर आया कि साल मे 365 दिन होते है। उस वक्त 1972-73 मे मै इस नतीजे पर पहुँचा कि साल के 365 दिन मे मुसलमानो के खिलाफ 400 से ज्यादा दगे कराए जाते है। दगे होते नही, कराए जाते है। और बाद मे वही दगे कराने वाले मरहम, पट्टी भी लेकर पहुँच जाते है।

जो दलित, आदिवासी और पिछडे है, ब्राह्मणवादी समाज व्यवस्था के शिकार है। जो चार हजार सालो से शोषण का शिकार है, लेकिन ये मायनारिटी के लोग, ये 40 साल से अँग्रेजो के जाने के बाद मजलूम बनते नजर आ रहे है।

1986 मे मैने दिल्ली मे जो बुद्धिजीवी लोग है, मुसलमानो के है, सिखो के है, ईसाईयो के है, दलित शोषित समाज के है उनकी एक बैठक बुलाकर उनसे मैने जिक्र किया कि कोई रास्ता ढूँढना चाहिए। हम इस नतीजे पर पहुँचे कि मजलूम लोगो को आपस मे लडना-झगडना नही चाहिए।''

3 मई, 1995 को बसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष काशीराम ने इलाहाबाद के के पी कॉलेज मैदान मे दलित-मुस्लिम एकता रैली को सबोधित करते हुए कहा था कि ब्राह्मणवादी शक्तियॉ देश-भर मे बहुजन समाज के खिलाफ साजिश कर रही है। मेने मुलायम सिह से मुसलमानो की जान-माल और ईमान की रक्षा के लिए समझौता किया था।

इस समय उत्तर प्रदेश मे बहुजन समाज की सरकार है। इसलिए सरकार गिराने के लिए बडे पैमाने पर दगे कराए जा सकते है। ऐसी स्थिति मे मुसलमानो ओर दलितो को एक होकर चौकन्ना रहना है। ब्राह्मणवादी शक्तियॉ उदू अखबारो मे बसपा को मुसलमान विरोधी पार्टी करार देने मे लगी है।

इससे अलग स्थिति देखे उदाहरण के लिए, सैयद शहाबुद्दीन ने 21 अगस्त, 1989 को एक नयी पार्टी यानि 'इसाफ पार्टी' की विधिवत घोषणा कर ही डाली। उस समय उनका कहना था, "राजनीतिक हालात का अध्ययन करने के बाद मन खुद को जनता पार्टी से अलग करने और एक ऐसी नयी पार्टी बनाने का निणय किया है जो लोकतत्र, धर्मनिरपेक्ष और समाजवाद के लिए प्रतिबद्ध हो, जो धम, भाषा, जाति और नस्ल के भेदभाव के बिना सभी के लिए खुली हो। यह नयी पार्टी सभी दलित तबको, धार्मिक और भाषायी अल्पसख्यको, अनुसूचित जाति और जनजाति तथा दूसरे पिछडे वर्गो की एकता का केद्र बनेगी।"

शहाबुद्दीन अपने इस प्रयास की व्याख्या चाहे जेसे करे। दलितो की बात करना तो राजनीति मे अब वैसे ही शिष्टाचार बन गया है। पर एक बात साफ रही कि उन्होने बनाई एक मुस्लिम पार्टी ही। 1906 से लेकर आज तक जितनी भी मुस्लिम नेताओ के द्वारा पार्टियॉ बनी, किसी-न-किसी रूप मे उनका तेवर ओर चरित्र मुस्लिम ही रहा। चाहे वह मुस्लिम लीग रही हो या मुस्लिम मजलिस, जमायते इस्लामी रही हो या अन्य कोई पार्टी।

वही वसीम इलाहबादी दलित मुस्लिम एकता को भ्रम मानते हुए लिखते हे कि सगठन बनाकर मुसलमान दलितो से गठबधन तो कर सकता हे मगर दलित-मुस्लिम एकता एक बैनर के तले नही हो सकती।

इसका परिणाम यह हुआ कि जब-जब भी दलित-मुस्लिम राजनेतिक स्तर पर एक होते महसूस हुए, उनके बीच मतभेद पैदा कर दिए गए। यही दलित-मुस्लिम राजनीति का हस्र भी हुआ। पर कमियॉ इसमे दलित और मुस्लिम नेताओ की भी रही। इस बारे मे उदितराज शिद्दत से इस बात को उठाते है "कि केवल राजनेतिक गठबधन से दलित-मुसलमानो मे एकता नही आ सकती। उसके लिए ईमानदारी से प्रयास करने होगे। इसमे दलित नेताओ से भी चूक हुई है। स्वय मायावती ने कई बार मुसलमानो के प्रति ऐसे भ्रामक भाषण दिये, जिससे मुसलमानो मे अलगाव की भावना आई। सबसे बडी बात तो यह है कि बाबरी मस्जिद के तोडने वालो से मायावती ने मुख्यमत्री पद के लिए कई बार समझौते किये। ऐसी स्थिति मे मुसलमान कब तक भरोसा रखे।"

यहा इसे मुस्लिम समाज की राजनैतिक विवशता कहनी चाहिए या फिर उनके सामने अन्य किसी विकल्प का अभाव। मई 2002 का राष्ट्रीय सहारा का हस्तक्षेप अक देखे तो पूर्व सासद एव मुस्लिम इडिया के सपादक सैयद शहाबुद्दीन, एशियन

ऐज के सपादक एम जे अकबर तथा ऑल इडिया मिल्ली काउसिल के उप-महासचिव असरारुल-हक कासमी आदि मुस्लिम नेताओ, इमामो, मुल्लाओ, मौलवियो के द्वारा मुस्लिमा को बसपा की ओर जाने से रोकने के तमाम तरह के फतवो के बावजूद बसपा को जहा मुसलमानो के अच्छे खासे मत मिले वही स्वय मुस्लिम विधायक उसी पार्टी से जीतकर उत्तरप्रदेश की विधान सभा मे भी पहुचे।

यहा फिर तिकेश मकवाना की यह बात सही मानी जा सकती है कि दलित मुस्लिम दोनो ही सवर्णो द्वारा सताये जाते है। वे दोनो ही अपनी-अपनी आजीविका की तलाश मे रहते हे। बावजूद उनके बीच गठबधन सतही होते है।

सदर्भ

- दलित वायस बेगलोर 16 31 जुलाई 2002 पृ 10
- नीरव पटल दलित वायस 16 जून 2002
- वही 16 31 जुलाइ 2002 पृ 10
- जावद हबीब हमारा महानगर बबई अगस्त 1999
- माया नई दिल्ली 30 अप्रेल 1991 पृष्ठ 38
- वहा पृ 39
- वही पृ 40
- बहुजन सगठक कराल बाग नइ दिल्ली 24 अप्रैल 199ɔ
- मुफाज जीलानी बसपा की ओर दलित मुस्लिम समीकरण का रुझान राष्ट्रीय सहारा नोएडा 1 अप्रैल 1996
- बहुजन सगठक नई दिल्ली 27 जून 1994
- राष्ट्रीय सहारा 9 जुलाई 1994
- वसीम इलाहाबादी फरीदी के सपनो की जमात लोक सरोकार 5/1 अशोका चैम्बर्स बी 5 पूरा रोड नई दिल्ली
- अनु जाति जनजाति सगठनो के अखिल भा परिसघ के चेयरमेन मा उदित राज से 22 फर 2002 को लक्ष्मीबाई नगर नई दिल्ली पर बातचीत के आधार पर
- राष्ट्रीय सहारा 4 मई 2002

रिपब्लिकन पार्टी आफ इडिया और बीएसपी . अपने-अपने तर्क

भारत मे जितनी भी पार्टिया बनी, उनके सस्थापको से लेकर पार्टी कायकताआ के अपने-अपने तर्क रहे। हालाकि पार्टी गठन के उद्देश्य लगभग एक जेसे रह। रिपब्लिकन पार्टी की मूल सरचना बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर ने की थी जबकि बीसपी का गठन काशीराम की ओर से हुआ था। बकौल कवल भारती एक अखबार ने लिखा है कि उत्तर प्रदेश मे बहुजन समाज पार्टी की बढती हुइ ताकत को दखते हुए सभी राजनीतिक दलो ने अपने-अपने दरवाजे बसपा के लिए खोल रखे थे, लेकिन बसपा से चुनावी तालमेल करने मे कॉग्रेस बाजी मार ले गई। लेकिन इस नालमेल के पीछे का सच यह है कि भाजपा का खेल खत्म करने के बाद अब राव ने बसपा को अपना निशाना बनाया है। दलित राजनीति के इतिहास मे यह अभी भी स्मरणीय है कि कॉग्रेस ने किस तरह रिपब्लिकन पार्टी की बढती हुई ताकत को कम करने और उसे समाप्त करने के लिए अपना जाल डाला था। स्वय काशीराम रिपब्लिकन पार्टी से इसलिए निकलकर आए थे कि उसके नेताओ ने उसे कॉग्रेस की झोली मे डाल दिया था। अब काशीराम स्वय ही राव के जाल मे फॅस गए है। और वे तमाम सिद्धात हवा मे उड गए है, जिनके लिए बसपा अस्तित्व मे आइ थी।

यह काशीराम की (बहुजनी नहीं) 'मायावादी' राजनीति का परिणाम है। ब्राह्मणवाद की बी टीम से सहयोग लेकर वह उत्तर प्रदेश मे मायावती को मुख्यमत्री बना चुके है। अब वह ब्राह्मणवाद की 'ए' टीम (कॉग्रेस) के सहयोग से मायावती को उत्तर प्रदेश की मुख्यमत्री बनाना चाहते है। उनकी सारी राजनीति मायावती तक केद्रित है और मायावती के पार की उनकी सारी राजनीतिक दृष्टियो का लोप हो चुका है। इसलिए ऐसा नही है कि अन्य दलो के साथ बसपा के तालमेल की बात ही न हुई हो। बाते हुई है, पर मुख्यमत्री पद के प्रश्न पर उन्हे बसपा की शत स्वीकार नही हुई। स्वीकार हो भी कैसे सकती है, जबकि उनमे भी मुख्यमत्री पद की प्रबल दावेदारी है।

निर्भय पथिक लिखता है कि--बाबा साहेब ने जब शेड्यूलकास्ट फेडरेशन नामक सगठन को बखास्त करके रिपब्लिकन पार्टी आफ इडिया स्थापित की थी, तब केवल दलित ही नही, बल्कि सभी शोषित समाज को एक झडे के नीचे खडा करके आथिक प्रश्न पर सघर्ष करने की व्यापक भूमिका तैयार की गई थी। परतु बाद के दलित ओर रिपब्लिकन नेतृत्व ने पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष के चक्कर मे उस उच्च-उद्देश्य को तिलाजली तो दी ही, साथ ही दलितो को सगठित करने की भूमिका को भी सकुचित करके रिपब्लिकन पार्टी को केवल नवबोद्धो की पार्टी बनाकर रख दिया। इसके अतिरिक्त उस पार्टी के भी चार-छ टुकडे हो गए ओर रिपब्लिकन पार्टी राजनीतिक दृष्टि से नगण्य बन गई।

चार नेताओ के अहकार और आपसी झगडो से दलित आदोलन की दयनीय अवस्था हो गई। उनमे से कई सीधे-सीधे कॉग्रेस मे चले गए। कोई एकाध अन्य पदो के लिए सत्ताधारियो के दरवाजे पर गले मे पट्टा बॉधकर बैठ गए। थोडे ही समय मे शक्ति एव सगठन के बल पर न्याय प्राप्त करने की बाबा साहेब की भूमिका को चार-पॉच दलित नेताओ ने अग-भग कर दिया।

रिपब्लिकन पार्टी मे किस तरह से बदरबॉट हुई, यह इस तालिका मे स्पष्ट हो जाएगा

भारतीय रिपब्लिकन पक्ष	डॉ अम्बेडकर भवन गोकल दास पासता रोड, दादर, बबई-400014
नेशनल रिपब्लिकन पार्टी	टी 42/6 ओल्ड बैरक चैम्बर कैप, बबई-400074
रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया	कमरा न 522 एम एल ए हॉस्टल, बबई-400032
रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया (डैमोक्रेटिक)	सतपुडा मालाबार हिल बबई
रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया (काम्बले ग्रुप)	11/174 आदर्श नगर प्रभादेवी, बबई-400025
रिपब्किलन पार्टी ऑफ इडिया (खोबरागडे)	गीता विला ईस्ट मारेड पल्ली सिकन्द्राबाद, आध्रा प्रदेश
रिपब्किलन पार्टी ऑफ इडिया (सेलवाराज)	10 सोलाई स्टीट आयनावरम मद्रास-600023
रिपब्लिकन प्रेसिडियम पार्टी	उरली कचन, पुणे महाराष्ट्र
रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया	17/69 थानसिह नगर आनद

	पवत न्यू रोहतक राड, नइ दिल्ली-5
उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी	552/2 राजेन्द्र नगर सकेड स्टीट लखनऊ-226004
यूनाइटेड रिपब्लिकन पार्टी	चेम्बर न 345 पटियाला हाउस काटस, नइ दिल्ली
सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी	स्टेट कमटी ऑफिस टयूरस लेन स्टेचू, केरल 69601

डॉ शूरा दारा पुरी लिखते है कि डॉ अम्बेडकर ने सबसे पहले सन् 1936 मे 'इडीपेडेट लेबर पार्टी' बनाई थी तथा उससे 1937 के प्रथम सामान्य चुनाव मे भाग लिया था। इसके बाद उन्होने 1942 मे 'शेड्यूल्डकास्ट्स फेडरेशन' नाम की पार्टी का गठन किया तथा 1946, 1952 व 1956 के सामान्य चुनाव लडे। अत मे उन्होने फेडरेशन को भग करके अक्टूबर, 1956 मे 'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया' बनाने की घोषणा की, जो उनके निर्वाणोपरात 3 अक्टूबर 1957 को अस्तित्व मे आई। इन पार्टियो के झडे तले डॉ अम्बेडकर की चुनावी उपलब्धियो मे काफी उतार-चढाव आए थे। इस अवधि मे कॉंग्रेस की जनता पर जबरदस्त पकड एव दलित राजनीति मे दखल के कारण दलित राजनीति एक बडी ताकत नही बन सकी, परतु इस बीच दलितो मे काफी राजनीतिक चेतना एव स्वतत्र दावेदारी की भावना का विकास हुआ, जिसका प्रतिनिधित्व रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया ने किया। उत्तर भारत मे बहुजन समाज पार्टी का जो विस्तार दिखाई देता है वह आर पी आइ की धरोहर ही है।

जैसा कि ऊपर अकित किया गया है कि डॉ अम्बेडकर दलित राजनीति के प्रणेता थे। उनका एक स्पष्ट राजनीतिक दर्शन था और वे प्रगतिशील समाजवादी लोकतत्र विचारधारा के पक्षधर थे।

शूरा दारा पुरी का कहना है कि डॉ अम्बेडकर ने एक राजनीतिक पार्टी के लिए निम्नलिखित तत्त्वो को परमावश्यक बताया था। (1) पार्टी का प्रबुद्ध नेतृत्व (11) पार्टी सगठन (111) पार्टी के सिद्धात (1v) पार्टी का कायक्रम एव कार्यनीति। डॉ अम्बेडकर ने जो भी राजनीतिक पार्टियॉ बनाई थी, उन्होने उनका लिखित सविधान, सागठनिक ढॉचा, कार्यक्रम तथा कार्य नीति का निर्धारण किया था। वर्तमान मे दलितो का राजनीतिक प्रतिनिधित्व करने वाली दो प्रमुख पार्टियॉ है जिनमे से एक आर पी आई तथा दूसरी बसपा। आलोचको का कहाना है कि बसपा का न कोइ सविधान है न सागठनिक ढॉचा और न ही कोई निश्चित कार्यक्रम एव कायनीति।

दलितो के भीतर से ही अधिकाश विशेष तौर पर आर पी आई के नेता काशीराम

पर यह आरोप लगाते हे कि उन्होने उक्त पार्टी को दफनाने का कार्य किया। यह बात इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि रिपब्लिकन पार्टी न केवल राजनैतिक पार्टी थी, अपितु सामाजिक ओर सास्कृतिक आदोलन को भी आगे बढाने मे इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। राजनीति मे उसका सूर्यास्त होना अलग बात थी, पर उसके नेताओ की मुखर अभिव्यक्ति ओर दलित सवालो के प्रति लबे समय तक प्रतिबद्धता ने भारतीय समाज ओर गजनीति पर अच्छा-खासा प्रभाव तो छोडा ही था। वही दूसरी ओर कुछ लोगो का यह भी मानना रहा हे कि दलित राजनीति की शृखला मे स्वय काशीराम को रिपब्लिकन पार्टी के सबध मे निराशाजनक स्थिति देने वाले अतिम कडी तो नहीं थ उनके पहले भी बहुत से नता हुए। पर उन्होने दलितो की भावनाओ को कुछ समय के लिए झकझोर ता दिया ही था। काशीराम उन दिनो रिपब्लिकन पार्टी मे सक्रिय थे ओर पार्टी के कुछ नेताओ के कॉग्रेस से मेल-जोल के खिलाफ थे। तत्कालीन दलित राजनीति के बारे मे अपने निराशाजनक अनुभव के बारे मे स्वय काशीराम कहते हे—

"करीब चार वर्पो तक इन सगठनो के लिए काम करने के बाद मैने पाया कि यहॉ खुद के झगडे इतने है कि उन्हे निबटाने मे ही वे सगठन अपना मूल काम नही कर पा रहे है। इस बीच पार्टी बुरी तरह टूटना शुरू हो गई। सबसे पहले आर डी भडारे कॉग्रेस मे चले गए। फिर 1978 तक पार्टी टूटने का सिलसिला जारी रहा। पार्टी क जितने मजबूत नेता थे, सबने धीरे-धीरे कॉग्रेस से नाता जोड लिया। टूट से बचान की मेने कइ बार कोशिश की, लेकिन तब हमारी हैसियत ऐसी नही थी कि कोइ हमारी बात मानता ओर जब हमारी स्थिति कुछ मजबूत हुई तब तक रिपब्लिकन पार्टी 12 घटको मे तथा दलित पेथर 6 घटको मे बॅट चुका था। इसके अलावा 'मास मूवमेट' नाम से एक सगठन और बन चुका था। धीरे-धीरे ये सगठन दलित शोषित वर्ग के बीच अपना आधार भी खोते जा रहे थे। ऐसी हालत मे यह सभव नही था कि इनके साथ जुडकर नये सिरे से दलित शोषित समाज को सगठित किया जा सके।"

स्वय काशीराम के शब्दो मे उनकी दिलचस्पी आरपीआई (रिपब्लिकन पार्टी) या दलित आदोलन मे नही थी, वे तो राज सत्ता चाहते थे।

जब उनसे एक पत्रकार ने यह पूछा कि सत्ता के लिए सरकार (Rulıng party) से समझोता करने के कारण क्या आप ऐसा नही मानते कि उत्तर प्रदेश मे आरपीआई की तरह बसपा भी समाप्त हो जाएगी तो काशीराम का जवाब था कि आरपीआई ने कभी भी सोदा नही किया। वह केवल मॉगती रही। सौदा करने की स्थिति मे ही वह नही पहुँच पाई। मुझे याद है 1971 मे आरपीआई ने कॉग्रेस से राजनीतिक सोदा किया था। उस सोदे मे उसे क्या मिला, केवल एक सीट। तब 521 सीटो मे से कॉग्रेस ने 520 पर चुनाव लडा था।

मै आरपीआई को प्यार करता हूँ, लेकिन बीएसपी से तुलना करने के मामले मे उससे नफरत करता हूँ। यह तो एक घटिया वेश्या की तरह रही है जो कम मूल्य पर भी उपलब्ध रही। जब तक मै जीवित हूँ तब तक बीएसपी के बारे मे एसा नही होने दूँगा।

वे कहते है कि हम परिवतन चाहते है। हम समझोत नही चाहते। अगर हमारे सहयोग के बिना सरकार नही बनती हे तो हम परिवतन के लिए अपनी शत रखग। हम मूलभूत ओर रचनात्मक परिवर्तन चाहते है, न कि बनावटी।

हालॉकि अपने इसी साक्षात्कार मे वे यह भी कहते है कि वे पहले आरपाआइ मे थे। उस समय उन्हे ऐसा लगता था जैसे वे डूबते जहाज मे सवार हे।

अभय दुबे लिखते है कि लगभग बीस वर्षो तक काशीराम ने रिपब्लिकन पार्टी से लेकर दलित पेथरो तक हर तरह के दलित आदोलन से सबध बनाए रखा। साथ ही स्वय अपने सगठन भी बनाए। लेकिन शुरुआती चार वर्षो न ही उन्ह स्थापित दलित नेताओ के प्रति निराशा की भावना से भर दिया। उनकी दिलचस्पी जल्दी ही रिपब्लिकन पार्टी मे खत्म हो गई। उन्हे लगा कि ये तमाम दलित नता ब्राह्मण वर्ग के चमचे है। आक्रोश म भरकर उन्होने 'द चमचा एज द एरा ऑफ स्टूनिस' नामक एक आक्रामक पुस्तक ही लिख डाली। इसके लिए काशीराम ने पूना पक्ट का जिम्मेदार माना।

कवल भारती के विचार मे काशीराम जब नोकरी छोडकर दलितो के बीच आए थे, तो उनका भारी स्वागत हुआ था। यह स्वागत इसलिए हुआ था कि रिपब्लिकन पार्टी के नेताओ के सत्ता-मोह ने दलित समाज मे न सिर्फ नेतृत्वहीनता पदा कर दी थी, बल्कि डॉ अम्बेडकर के मिशन के लिए भी सकट उत्पन्न कर दिया था। रिपब्लिकन पार्टी के नेताओ के विश्वासघातो के कारण आई रिक्तता को जब काशीराम ने भरा, तो उनका स्वागत स्वाभाविक ही था। अम्बेडकर-मिशन की जमीन पहले से तैयार ही थी, इसलिए काशीराम ने भी उसका भरपूर उपयोग किया। उन्होने उस जमीन को और भी उवरा बनाने के लिए मेहनत की ओर 'बामसेफ' तथा 'दलित शोषित समाज सघर्ष समिति' के माध्यम से ऐसे कार्यक्रम चलाए कि दलितो को उनके अदर डॉ अम्बेडकर के सच्चे उत्तराधिकारी की छवि नजर आने लगी। यह सही वक्त पर सही चोट थी, जो काशीराम ने की थी। उनके राजनीति मे प्रवेश से नेतृत्व का सकट दूर हुआ और उन्होने नए तेवर भी दलित राजनीति को दिए, जो अब तक किसी ने नही दिए थे। उन्होने डॉ आम्बेडकर से भी ज्यादा उग्र भाषा मे व्यवस्था पर प्रहार किए। उन्होने व्यवस्था के लिए 'मनुवाद' शब्द का प्रयोग किया, जो आज इतना व्यापक हो गया है कि गैर बसपाई दलो ने भी इस शब्द को अपना लिया है। पूना पेक्ट के पचास वर्ष पूरे होने पर 1982 मे उन्होने पूना-पैक्ट धिक्कार दिवस मनाया और देश-भर से रैलियॉ निकाली, जो पूना जाकर समाप्त हुइ। यह

प्रत्यक्ष रूप से 1932 म महात्मा गॉधी के साथ डॉ अम्बेडकर द्वारा किए गए समझौते के खिलाफ प्रदशन था।

1957 वष दलित राजनीति मे एक जबरदम्न मोड का साक्षी रहा है। एन शिपराज के गुजर जाने के बाद बाबा साहब गायक्वाड रिपब्लिकन पार्टी के अध्यक्ष बन, लकिन पार्टी म विभाजन की एक तेज प्रक्रिया शुरू हो गइ। 1956 का अत हात-होत दलिता क जुझारू और उन्हे एक सूत्र मे बॉधकर, सगठित कर सघर्ष के पथ पर आगे ले जाने वाले नेता बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर का निधन हो गया था। बाबा साहेब का महानिवाण होते ही विशषकर महाराष्ट्र मे बहुत ही अजीबोगरीब दृश्य उपस्थित हो गया। बिलकुल ऐसा, जेसा कि पिता की कमाई हुई सपत्ति के लिए भाइयो के बीच खीचातानी होती है।

बाबा साहेब ने जब शेड्यूलकास्ट फेडरेशन के स्थान पर रिपब्लिकन पार्टी की स्थापना की थी तब केवल दलित समाज की कुछ जातियॉ ही नही, बल्कि समूचे शोषित समाज को सघर्ष करने की व्यापक भूमिका तैयार की थी। पर बाद मे दलित नेताओ क अहकार और आपसी झगडो के कारण वह सघष बीच मे ही रह गया। सच तो यह हे कि रिपब्लिकन पार्टी बनने से पूर्व ही दलित राजनीति के समीकरण लडखडाने लगे थे। दलित समाज के दिशा देने वाले बाबा साहेब जैसे-जैसे अस्वस्थ हाते जा रहे थे वेसे-वेसे उनके आसपास कॉग्रेस पार्टी दलित अस्मिता के खिलाफ षड्यत्र के ताने-बाने बुनने मे अधिक सक्रिय हो गई थी।

रिपब्लिकन पार्टी बनाने के पीछे बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर का उद्देश्य दलित एव शोषित समाज के बीच राजनैतिक विचार और विस्तृत करना था। पर वेसा हो नही सका। 1972 मे गायकवाड की मृत्यु हो गइ और आर एस गवई पार्टी के नये अध्यक्ष बने। अब तक पार्टी म विभाजन और भी रेखाकित होने लगे थे। ऐसे अवसर पर बोद्ध चितको की गई टिप्पणी हमे सही लगती है। उन्होने इस तरह की राजनैतिक परिस्थितियो से अम्बेडकरवादियो को जूझते देख कहा था। "लगता है हर एक यहा छोटा अम्बेडकर है। जैसा परिवार मे भाइयो के बीच पिता की छोडी हुई विरासत के लिए झगडा होता हे। वैसा ही इनके बीच हो रहा है।"

यूँ समय-समय पर दलित राजनीति के रास्ते मे अनेक समस्या तथा बाधाए आई हे। पर साथ ही दलित नेताओ के बीच दुविधा भी बढी है। वह दुविधा कभी उनके अपने कारण बढी है तो कभी उनके गलत दृष्टिकोण की वजह से हुई। दलित राजनीति मे कभी सतुलन नही रहा। स्थानीय नेताओ के साथ-साथ राष्ट्रीय नेता भी असतुलन बनाते रहे। दल बदल का रोग दलित नेताओ को भी लगा। सत्ता से जुडने तथा सुविधाएँ बटोरने की प्रवृत्ति इनमे भी रही। राजनीति मे चली आ रही परपराओ से हटकर बहुत ही कम दलित नेता ऐसे रहे जिन्होने कुछ किया। वरना अधिकाश तो पिटी-पिटाई परपराओ को ही आख मीचकर मानते रहे। उनके बीच राजनीति

को लेकर वैचारिक स्तर पर कभी भी खुल रूप से बहस नही हुइ। हा मे हा मिलाने वाले घटिया ओर सस्ते लोगो के उपलब्ध होने की परपरा का विकास हुआ। उसी परपरा ने बुद्धिजीवी वग को भी अलग-थलग रखने म महत्त्वपूण भूमिका निभायी। जिससे अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग की भी शेली बनी।

महाराष्ट्र परिषद् के नाम से रिपब्लिकन पार्टी के बी के गायकवाड व बी डी खोबरागडे एक-दो तथा हरीदास आवड आर डी भडार आदि नेता सन् 1960 म राज्य सभा मे दिखाई पडे पजाब मे एल आर बाली मद्रास मे श्री एन शिवराज आदि ने मिलकर रिपब्लिकन पार्टी आफ इडिया को बनाकर खडा किया। उत्तर प्रदेश म भी सन् 1957-58 मे सवश्री शिवदयालसिह चोरसिया, तिलकचन्द कुरील, दीनानाथ मोदी, अशरफीलाल पासी, छेदीलाल साथी, बी पी मोर्या, सघप्रिय गोतम, राहत मालाइ, गया प्रसाद प्रशान्त, डॉ मुजम्मिल हुसैन, हाजी अब्दुल बकी ओर इसहाक आदि ने उत्तर प्रदेश रिपब्लिकन पार्टी का गठन किया आर सन् 1962 मे समस्त भारत म केवल यू पी मे करीब 12 एम एल ए विधानसभा मे ओर चार सासद लोकसभा मे रिपब्लिकन पार्टी टिकट पर जीतकर प्रथम बार राजनेतिक क्षितिज पर उभरकर आए। 1964 मे उत्तर प्रदेश विधान सभा मे छदीलाल साथी रिपब्लिकन पार्टी के नता क रूप मे चुनाव जीतकर पहुचे। उत्तर प्रदेश विधानसभा मे राहत मोलाइ रिपब्लिकन पार्टी के नेता बने। लेकिन कुछ दिन बाद ही महाराष्ट्र के रिपब्लिकन नताआ ने फूट का ऐसा बीज बोया कि वह 1967 मे ओर फिर 1969 मे बिखरकर रह गइ।

उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र म जनता दल ने जब दस्तक दी तो एक प्रयोग हुआ। हालॉकि उस प्रयोग मे कोइ विशेष सफलता न मिल सकी। यूँ दिखावे के लिए जद मोर्चे के साथ सबसे बडा दलित तबका था बाबा साहब डॉ अम्बेडकर के प्रयोग प्रकाश अम्बेडकर की रिपब्लिकन पार्टी का। लेकिन यह तबका अपने लिए कोइ सीट नही पा सका। इसका एकमात्र कारण था कि प्रकाश अम्बडकर राजनीति मे नौसिखिए थे। वे कभी शिवसेना की ओर हाथ बढाते थे तो कभी आर एस गवइ का स्थान लेने के लिए कॉग्रेस से समझोता करना चाहते थे। उनकी इसी प्रवृत्ति के कारण जनता दल ने उन्हे राज्यसभा मे मनोनीत किया। क्योकि अपनी तमाम कोशिशो के बावजूद वे लोकसभा मे आने के कइ प्रयोग कर चुके थे, लेकिन असफल सिद्ध हुए।

वेसे जद को जहॉ-तहॉ उन्होने थोडी-बहुत मदद अवश्य पहॅुचाइ। पर महाराष्ट्र मे चुनाव के समय कॉग्रेसी तिकडमबाजो ने रिपब्लिकन वोट एक नही होने दिए। उनके बीच घुसपैठ कर वे पार्टी के भीतर असतुलन बनाने मे सफल रहे। यूँ 1979 से ही रिपब्लिकन वोट लगातार बिखरते रहे। जिसका सीधे-सीधे लाभ कॉग्रेस को ही मिला। समय-समय पर काग्रेस पार्टी दलित नेताओ के आगे सत्ता के लिए टुकडे रही। ओर उन टुकडो पर रहने वाला दलित नेतृत्व स्वय टुकडे-टुकडे होने लगा।

परिणामस्वरूप सम्पूर्ण देश मे बिखराव होता गया।

हम कितना भी इतिहास के पृष्ठो को उलट-पुलटकर देखे, हर एक दौर मे परिवर्तन की अनेक धाराएँ मिलेगी। समाज मे सकारात्मक तथा नकारात्मक परिस्थितियो की प्रक्रिया भी मिलेगी। जिनसे जूझते हुए दलित आदोलन फैलता सिकुडता रहा हे। राजनेतिक दलो के प्रचार-प्रसार के साथ उनके भीतर ठहराव भी आता रहा ह। कभी इन राजनेतिक पार्टियो ने आम आदमी को सम्मोहित भी किया हे आर कभी निराश भी।

यह बात अपने-आपमे सही है कि बहुजन समाज पार्टी के पहले जेसी परिस्थितियॉ थी वेसी रिपब्लिकन पार्टी आफ इडिया के गठन के पूव नही थी। और रिपब्लिकन पार्टी के पहले जेसी परिस्थितियॉ रही वैसी शैडयूल्ड कास्ट फैडरेशन के पूव नही थी। साथ ही यह बात भी अपने-आपमे स्पष्ट है कि शैडयूल्ड कास्ट फैडरेशन और स्वतत्र श्रमिक दल की स्थापना की पृष्ठभूमि मे रही परिस्थितियो मे भी असमानताएँ थी। बाबा साहेब डा अम्बेडकर ने स्वतत्र श्रमिक दल तथा आल इडिया शैडयूल्ड कास्ट फैडरेशन की स्थापना क्रमश 1936 और 1942 मे की थी। स्वतत्र श्रमिक दल ओर उसकी गतिविधियो का सिलसिला दस वर्ष तक चला। बाद मे शैडयूल्ड कास्ट फेडरेशन नाम से नया राजनैतिक दल अस्तित्व मे आया। हालाकि कुछ ही वर्षो मे उसका भी समापन कर दिया गया। इसकी जगह उन्होने एक नइ पार्टी का गठन किया, नाम रखा रिपब्लिकन पार्टी आफ इडिया। इस तरह बीस साल की अवधि मे बाबा साहेब डा अम्बेडकर ने तीन राजनीतिक दलो को जन्म दिया ओर उन्हे लेकर समय-समय पर अनेक प्रयोग किए। उनके ये ऐतिहासिक प्रयोग सफल हुए हो या असफल एक बात निर्विवाद है कि डॉ अम्बेडकर ने अपने इन प्रयोगो से दलित राजनीति को एक निश्चित दिशा दी, उसका मार्ग स्पष्ट किया, उसे आवश्यक जुझारूपन दिया ओर उसके कई आयाम प्रकट किए। कुछ समीक्षको का मानना है कि वैसा काशीराम नही कर सके उनकी वरीयता मे सत्ता पर कब्जा करना अधिक रहा।

समता सेनिक दल ओर शैडयूल्ड कास्ट फैडरेशन के पुराने कार्यकर्ता तथा बाबा साहेब के साथी रहे मोहनलाल गौतम का मानना रहा है "कि जब बहुजन समाज पार्टी का गठन हुआ, उस समय रिपब्लिकन पार्टी का एक भी प्रतिनिधि ससद मे नही था।"

वे मानते हे कि राजनीतिज्ञ के रूप मे वे ठीक है, क्योकि राष्ट्रीय स्तर पर उन्होने नइ पार्टी का गठन किया। पर बाद के दौर मे दलित समाज की वे अनदेखी करते गये।

सदर्भ

- कवल भारती काग्रेस के जाल मे बसपा दलित लिबरेशन टुडे लखनऊ जून 1996 पृष्ठ 13
- निर्भय पथिक इडस्ट्रीयल इस्टेट अम्बेडकर मार्ग वडाला बबइ 15 मइ 1988 पृ 9
- आर पी आइ नेता रामसिह से 12 अप्रैल 1990 को उनके निवास आय नगर पहाडगज नइ दिल्ला पर साक्षात्कार के आधार पर तेयार की गई सूची
- डॉ शूरा दारापुरी डॉ अम्बेडकर ओर वतमान दलित राजनीति दलित लिबरशन टुड लखनऊ अगस्त 1996 पृष्ठ 16
- अभय दुबे आज के नेता राजकमल प्रकाशन नइ दिल्ली पृष्ठ 41
- वही पृ 35
- कवल भारती काशीराम के दो चेहरे रामपुर पृ 7
- धमयुग टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन बबई 10 सितबर 1989 पृ 17
- निभय पथिक पृष्ठ 10
- वही धर्मयुग पृ 11
- 21 अगस्त 2002 को डॉ अम्बेडकर भवन नइ दिल्ली पर मोहन लाल गातम जी से बातचीत के आधार पर

डॉ. अम्बेडकर और काशीराम

बहुत लोगो की यह राय रही हे कि बाबा साहेब डा अम्बेडकर एक असफल राजनीतिज्ञ थे। इस बात मे सहमति ओर असहमति हो सकती हे, पर उनके बाद के दलित लेफ्टीनेट्स किस तरह दलितो को सामाजिक न्याय दिलाने मे असफल रहे, इसमे कही बहस की गुजाइश नही है। किस तरह उन्होने राजनीति को स्वय शिखर पुरुष बनाने मे सीढी के रूप मे इस्तेमाल किया, इसमे भी कोई दो राय नही हे। अधिकाश दलित नायको के खलनायको तक बनने के बारे मे मत ओर विचार अलग-अलग हो सकते है, पर सत्ता स्वार्थ के लिए किस तरह डॉ अम्बेडकर के सपनो को तोडा गया, इस पर भी विवाद का कोइ प्रश्न नही उठता हे। राजनेतिक आकाश की स्थिति बिल्कुल साफ है। भले ही उसकी जमीन कितने ही झाड-झगार से भगी हो, सत्ता मे जो भी आना चाहता है, वह समाज सेवा के नजरिये से कम ओर लाभ कमाने के उद्देश्य से अधिक उसमे प्रवेश करता है।

डॉ अम्बेडकर राजनीति शास्त्र के यथाथवादी पक्ष के समर्थक थे। उन्हे प्रजातात्रिक राज्य अधिक प्रिय थे। डॉ अम्बेडकर के प्रजातात्रिक विचारो की अच्छाई हमे उनकी व्यावहारिक देन से नापनी चाहिए। उनकी व्यावहारिक दृष्टि का अर्थ है कि सामाजिक, आथिक, राजनैतिक एव नैतिक मूल्यो के निर्धारण मे समाज के सब सदस्यो का हाथ होना चाहिए। वे इस बात को पूर्णत जानते थे कि भारतीय राजनैतिक क्षेत्र मे जातिवाद का अधिक प्रभाव पडता है। वे इस तथ्य से भी वाकिफ थे कि जातीय बहुमत की सरकार वश-परपरा की बेल को आगे बढाती है। इस तरह राजनीति मे जातीय बहुमत प्रजातत्र, समाजवाद एव मानववाद के विरुद्ध है।

फॉसिज्म एक ऐसा मत है, जो राष्ट्र, राज्य, जाति एव साम्राज्य पर बहुत अधिक बल देता हे। माम्यवाद का बल वर्ग एव राज्य पर है, कितु प्रजातत्र व्यक्ति को अधिक महत्त्व देता है। इसमे व्यक्ति ही राजनीतिक इकाई है।

भारत मे पहले लोकतात्रिक चुनाव के लिए अपनी इडिपेडेट लेबर पार्टी की व्यवस्थित तेयारी के दौरान नवबर, 1936 मे 'टाइम्स आफ इडिया' के सवाददाता को साक्षात्कार देते हुए डॉ अम्बेडकर ने कहा था—कॉग्रेस सस्था शोषण करने वालो

और शोषक समाज का मिला-जुला सगठन है। यह सस्था राष्ट्र के नव निमाण की दृष्टि से उपयोगी नही है। स्वतत्र मजदूर दल जनता का लोकतत्र का तत्र समझाएगी और प्रजातत्र की प्रणाली का प्रशिक्षण देगी।

इस चुनाव मे कॉग्रेस विजयी हुई थी और डॉ अम्बेडकर भी अत्यधिक मतो से विजयी हुए। उनकी पार्टी के 17 मे से 13 उम्मीदवार जीते थे। सरकार निर्माण के समय मत्रिमडल के गठन म काग्रेसियो के बीच मतभेद उभरे। बवइ क मुख्यमत्री बी जी खैर अम्बेडकर से मदद चाहते थे, पर उन्होने साफ इनकार कर दिया था। एक मित्र ने जब उनसे उस समय सवाल किया, ''जोरो से अफवाह हे कि आप कॉग्रेस मत्रिमडल मे वित्तमत्री बन रहे हे।'' अम्बेडकर ने तब स्पष्ट कहा था, ''कॉग्रेस पार्टी मुझे यह जिम्मेदारी सोपने का निश्चय कर भी ले तो भी मे उसको मजूर नही करूगा, क्योकि सयुक्त सरकार के मत्रिमडल पर मेरा विश्वास नही हे। दूसरे मे कॉग्रेस पार्टी मे अपनी पार्टी का विसर्जन नही करूँगा, न स्वय ही उस पार्टी मे शामिल होऊँगा।''

आजादी के बाद देखा जाए तो कॉग्रेस मे ही सबसे अधिक दलित नता गए। यहॉ तक कि रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इडिया' मे टूट ओर बिखराव का कारण भी कॉग्रेस पार्टी ही बनी। ऐसे नेताओ की सूची बहुत लबी हे, पर उत्तरी भारत मे सबस पहले बी पी मौर्य ने इस क्षेत्र मे पहल की। उन्होने धमयुग को दिये गये अपन एक साक्षात्कार मे कहा भी था, ''जब एक बी पी मौय को रगडा दिया जाता है तो काशीराम जेसे नेता पैदा होते है।'' वैसे इसमे कोई सदेह नही कि बहुजन राजनीति क फलक पर काशीराम का उद्भव होना दलित राजनीति की एक महत्त्वपूण घटना रही है। परिणाम भले ही कुछ भी रहे हो। सत्ता के समीकरण केसे भी बदले हा पर लब समय से जगजीवन राम की परपरागत राजनैतिक शैली मे बदलाव लाने वाल काशीराम ही थे, जिन्होने सत्ता पर काबिज जाति विशेष के मठो मे खलबली मचाने का कार्य अवश्य ही किया था।

अस्सी का दशक देश मे जहॉ उपद्रव, प्रदर्शन ओर रैलियो का रहा वही बहुजन समाज के खिलाफ पुलिस, पैरामिलिटरी फोर्स और सेना के इस्तेमाल का भी रहा। दलित उत्पीडन की घटनाओ के साथ नक्सलाईट के विरोध ओर प्रतिरोध का चश्मदीद गवाह भी यह दशक रहा। महिला उत्पीडन से जुडी अमानवीय घटनाए भी इसी दशक मे विस्तृत रूप मे हुई।

बहुजन समाज पार्टी बनने के बाद क्या करना चाहती है? इसका अवलोकन करे तो पार्टी के अलिखित घोषणा पत्र मे सामाजिक न्याय का सवाल सर्वोपरि था, जिसे हल कर दलित, पिछडे और अल्पसख्यक जातियो के साथ उसके रिश्ते बनाने का अभियान पार्टी कार्यकर्ताओ के सामने था। वे जिस तरह की राजनेतिक अफरातफरी भारतीय समाज मे देख और महसूस कर रहे थे, उससे निबटते हुए बहुजन समाज के लिए समता और समानता के दर्शन के विकल्प को जुटाना भी उनके लिए जरूरी था।

26 जनवरी, 1950 को सविधान लागू होने के समय डॉ अम्बेडकर का वह ऐतिहासिक कथन पार्टी प्रमुख को अच्छी तरह याद था। अम्बेडकर ने कहा था, "हम दो तरफी जिदगी मे कदम रखने वाले है। एक तरफ, राजनीति में सबको बराबरी होगी एक आदमी का एक वोट और एक वोट की एक कीमत होगी। दूसरी तरफ, सामाजिक ओर आथिक क्षेत्रो मे, जो गैर-बराबरी हजारो वर्षो से चली आ रही है, वह उसी तरह चलती रहेगी। हमारे लिए यह बहुत जरूरी हो जाता है कि इस गैर बराबरी को बहुत जल्द दूर करे। अगर हम इस दो-तरफी जिदगी मे कदम रखने के बाद दोनो तरफ चलते रहेगे तब उससे जो राजनैतिक बराबरी आई है उसे बराबरी का कोई फायदा नही होगा।"

काशीराम बखूबी इस बात को दोहराते हे कि आजादी के बाद के तीस-चालीस वर्षो मे हमारा अनुभव रहा कि जो भी पार्टी हमारे सामने आई है, जैसे—कॉग्रेस, जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, लोकदल तथा अन्य ब्राह्मणवादी पार्टियॉ, इन सभी राजनेतिक दलो का हित इसमे है कि ब्राह्मणवाद के आधार पर हजारो वर्षो से लाई गइ आथिक ओर सामाजिक गेर बराबरी इसी तरह टिकी रहे। बहुजन समाज पार्टी का यह लक्ष्य होगा कि इस गेर बराबरी को जल्द-से-जल्द दूर करने की कोशिश करे।

काशीराम ने कॉग्रेस (आइ) को सॉपनाथ और दूसरी विपक्षी पार्टियो को नागनाथ के बराबर बतलाते हुए बहुजन समाज को इस **सॉपनाथ** और **नागनाथ** से एक ही जैसे खतरे की ओर सकेत किया है। उन्होने यह भी कहा कि इस खतरे का मुकाबला करने के लिए इस देश का दबा कुचला इसान **नेवलानाथ** की जरूरत महसूस करता है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए उन्होने अपनी बहुजन समाज पार्टी बनाई हे। यानी वे नेवलानाथ बने, पर सॉपनाथ ओर नागनाथ से लडने के स्थान पर समझौता किया ओर गठबधन की दलित राजनीति को एक नया आयाम दिया। जिसके कारण बहुजन राजनीति के दर्शन का विस्तार उस तरह से नही हुआ, जैसे होना चाहिए था।

कवल भारती के विचार मे जहॉ तक कॉग्रेस के सामाजिक सरोकारो की बात है 1895 मे जब तिलक के अनुयायियो ने सामाजिक कुरीतियो का पर्दाफाश करने के परिणामस्वरूप सोशल काफ्रेस के पडाल को फूक देने की धमकी दी थी तब अछूतो ने कॉग्रेस के विरुद्ध प्रदर्शन किया था। कॉग्रेस के विरोध की इस विरासत मे बाद के दो दशक मे डा अम्बेडकर के अनुभव भी जुडे थे। 1917 मे बम्बई मे दलित वर्गो की दो सभाओ मे जो दो प्रस्ताव पारित किए थे, उनसे कॉग्रेस के प्रति दलित वर्गो की विरोधी भावना की पूरी झलक मिलती है। कॉग्रेस के प्रति अम्बेडकर की धारणा शुरू से अत तक एक जैसी ही रही। बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर की राजनैतिक यात्रा के अध्ययन के दौरान हमे कोई ऐसी जानकारी नहीं मिलती, जिससे यह सिद्ध हो सके कि उन्होने कॉग्रेस के अलावा तत्कालीन हिदुत्ववादी राजनैतिक दल हिदू महा सभा, रामराजपार्टी तथा जनसघ आदि से राजनैतिक गठबधन किए हो। वे दलितो

को राजनैतिक सत्ता के पक्षधर तो थे, लेकिन उस तरह मे नही जैसा काशीराम ने एक चमत्कार कर दिखलाया।

बकौल कवल भारती काशीराम की शागिर्द रही मायावती ने उत्तर प्रदेश की प्रथम दलित मुख्यमत्री बनकर इतिहास जरूर बनाया, पर इतिहास से सबक लेना भी जरूरी है। सत्ता के लिए अवसरवादी सघर्ष करके चौधरी चरण सिह ने भी इतिहास बनाया था। वे प्रधानमत्री जरूर बने, पर कितने दिनो के लिए? ओर परिणाम कितना त्रासदी पूर्ण था? क्या मायावती इतिहास को दोहराएँगी? शायद यही हो—भाजपा आगे चलकर समथन वापस ले ले और तब मायावती की वही स्थिति हो जाए, जो आज मुलायम सिह यादव की हुई है। शायद वह न भी हो—मायावती अपनी सूझबूझ और राजनीतिक चातुय से वह नोबत ही न आने दे और विधान सभा भग कराकर मध्यावधि चुनाव करा दे।

पर ऐसा कुछ हुआ नही यानी अम्बेडकरवाद और मनुवाद मे तालमेल नही हो सका। हालॉकि इस तरह के तालमेल जारी रखने के दो बार प्रयास हुए। शायद तीसरी बार भी हो।

मायावती को उस समय मुख्यमत्री बनने के अवसर पर दलित समाज के बहुत-से बुद्धिजीवियो ने भी बधाई दी थी। उनके विचार मे वह हुआ जो अब तक नही हुआ था। उन्होने अवसरवादी राजनीति से ही सही, प्रथम दलित शासक होने का गोरव हासिल करके पूरे दलित समाज का मनोबल बढाया है। बहुजन समाज पार्टी के सस्थापक अध्यक्ष काशीराम ने भी इस राजनीतिक अवसरवाद पर अपनी सहमति की मोहर लगाकर उसे और पक्का कर दिया था।

कुछ अम्बेडकरवादियो के विचार मे यह एक ऐसा राजनेतिक इतिहास था, जिसमे दो विपरीत धाराए—सवर्ण और दलित की चितन की धाराए एक-दूसरे के साथ जुडना चाह रही थी। भले ही उनके अपने-अपने राजनीतिक निहिताथ रहे हो, पर एकता के प्रयासो का स्वागत तो करना ही होगा।

दलित एशिया टुडे लिखता हे कि 80 का दशक भारतीय राजनीति मे काशीराम का दशक रहा है। उन्होने न केवल दलित राजनीति को उसकी अपनी जमीन पर फिर से स्थापित किया, बल्कि सपूर्ण भारतीय राजनीति को भी सामाजिक परिवतन से जोडा। आज कॉग्रेस समेत जो भी पार्टी यदि सामाजिक परिवर्तन या सामाजिक न्याय की बात कर रही है तो इसका सारा श्रेय काशीराम की दलित राजनीति को ही जाता है।

राजनीति के क्षेत्र मे काशीराम की तीन बडी उपलब्धियॉ है। एक, उन्होने दलितो के साथ पिछडे और अल्पसख्यक समुदायो को जोडने का काम किया है, दो, उन्होने दलितो को अपनी दासता को समाप्त करने और स्वतत्रता प्राप्त करने के लिए वोट का प्रयोग कैसे किया जाए, यह सिखाया है और तीन, समाज ओर राजनीति के

क्षेत्र मे ब्राह्मणवाद के खिलाफ एक निर्णायक लडाई का मोर्चा खोल दिया है। बसपा के सामाजिक परिवर्तन के कार्यक्रमो मे सबसे मुख्य मुद्दा पिछडी जातियो के वैधानिक अधिकारो का उभरा, जिसने कॉग्रेस समेत सभी दलो की चिताए बढाई। मडल आयोग की सिफारिशो को बरसो से कॉग्रेस ने रद्दी की टोकरी मे डाल रखा था। केद्र मे 1990 मे जब राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार बनी, तो प्रधानमत्री विश्वनाथ प्रताप सिह ने मडल आयाग की रिर्पोट को लागू करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। भले ही इसके पीछे बसपा के हाथ से पिछडो की राजनीति छीन लेने के निहितार्थ हो, यह सच है कि सवर्ण राजनीतिज्ञो मे विश्ननाथ प्रताप सिह वह प्रथम पुरुष जरूर हे, जिन्हाने राजनीति के भविष्य को गहराई से देखा ओर सामाजिक न्याय की आवश्यकता को पूरी शिद्दत के साथ स्वीकार किया।

रामविलास पासवान के शब्दो मे बसपा की शुरूआत 1970 के दशक मे बामसेफ से हुइ। काशीराम को उसका अध्यक्ष बनाया गया। वे नौकरी से निकाले जाने के बाद बेरोजगार थे। यह दलित आदिवासी, पिछडे ओर अल्पसख्यक कर्मचारियो का अच्छा सगठन था। कर्मचारियो ने जोखिम उठाकर तन, मन, धन से इस सगठन का समर्थन किया। मै 1977 मे पहली बार लोकसभा मे चुनाव जीतकर आया था। बिहार मे बेलछी काड हुआ, मेरी हार्दिक इच्छा थी कि कोई गैर राजनैतिक सगठन बनना चाहिए। मै बिना दल की परवाह किए बामसेफ को मजबूत करने मे लगा रहा। मेरे साथ रामलाल कुरील, राजनाथ सोनकर शास्त्री आदि एम पी देश के कोने-कोने मे जाते थे। 1981-82 मे कर्पूरी ठाकुर को मै बामसेफ के कार्यक्रम मे चडीगढ ले गया था। मायावती का काम नेताओ को लाने ले जाने का था। बामसेफ के देहरादून, मसूरी के कार्यक्रम मे हम किस तकलीफ से पहुँचे आज भी याद है। लेकिन जब बामसेफ की लोकप्रियता बढने लगी तो काशीराम को सत्ता की महत्वाकॉक्षा पैदा हो गई।

इसे ऐतिहासिक दस्तावेज मानना चाहिए कि बाबा साहेब किस तरह से बार-बार दलित समाज के लोगो को काग्रेस से सावधान करते रहे थे। अपने एक भाषण मे उन्होने कहा था

1947 मे मै केद्र सरकार मे शामिल हुआ। मेरे कुछ आलोचको ने मुझ पर यह आरोप लगाया था कि मै कॉग्रेस मे शामिल हो गया हूँ। मेरे आलोचको द्वारा मुझ पर जो आरोप लगाए गए थे, उसका उत्तर मैने लखनऊ मे एक भाषण मे दिया था। उस भाषण मे मैने अपने देशवासियो से कहा था कि मै कोई मिट्टी के लोदे के समान नही जिसे पानी के बहाव के साथ बहाया जा सके। मै एक चट्टान के सदृश हूँ जो गलता नही है, अपितु, नदियो के बहाव को मोड देता है। मै किन्ही लोगो के साथ कही पर रहूँ, मै अपने-आपको विस्मृत नही करता हूँ, मै कभी भी अपनी अलग पहचान नही खो सकता। उचित कार्य के लिए यदि कोई मेरा सहयोग

चाहता है तो उसे प्रदान करने मे मुझे प्रसन्नता होगी।

मैने अपनी सपूर्ण ईमानदारी एव शक्ति से मातृभूमि की सेवा हिताथ कॉग्रेस सरकार से चार वर्षो तक सहयोग किया था। पर इन वर्षो क दारान मेने स्वय को कॉग्रेस सगठन से अलग रखा। मे सहर्ष ऐसे लोगो की सहायता करूँगा ओर उनस सहयोग भी करूगा जो अपने वचन और कर्म से अनुसूचित जाति के व्यक्तियो की सत्यता पूर्वक सेवा करना चाहत ह। मे उनकी कभी सहायता नही करूगा जा मितभाषी है या जो मीठा बोलते है, पर जिनके इरादे एव कार्य हमारे लोगो क विरूद्ध हाते ह।

निश्चित ही काशीराम ने एक ऐसे सगठन की नीव डाली थी जिसका आग चलकर तेजी के साथ प्रचार-प्रसार हुआ। जनसत्ता मे प्रकाशित अपने लख म ओमप्रकाश का कहना है, ''काशीराम मे बुद्धि भी है, मनोविज्ञान की समझ भी ओर राजनतिक दशन को निचोड कर उसे समय के मुताबिक राजनैतिक साचे मे ढालने की क्षमता भी। यह उनके विरोधी भी मानते है। नोकरी मे हालात का धक्का लगा तो इस व्यक्ति ने 1965 से 1971 तक का समय सिर्फ अम्बेडकर के अध्ययन पर लगाया। 85 फीसदी बहुजन की ताकत की बात वहॉ थी पर काशीराम ने जिस बात को नारे का रूप दिया वह थी **'पे बेक टू सोसाइटी'** यानी जिस समाज से आए हो, उसका उत्थान करो, उसके कर्ज को चुकाओ। 1771 मे काशीराम ने एक धुरी बनाइ। यह जॉचने के लिए कि पढे-लिखे पिछडे अपना सामाजिक कज चुकाने के लिए कितना तैयार हे। 1973 मे इस धुरी के इर्द-गिर्द बाम सेफ की विचारधारा पुख्ता हुई।

काशीराम का कहना था कि उन्होने डी एस फोर का निमाण 'कल की लडाइ' के लिए कमजोरो को तैयार करने के लिए किया है। अपनी खास रेली म उन्होने कहा, ''मै अपने प्रतिद्विद्वियो को पूरी आजादी देता हूँ कि वे बहुजन समाज को जितना बॉट सके, बॉटे। लेकिन मेरा अधिकार हे कि मै उन्हे उनका हक दिलाने के लिए सगठित करूँ।''

काशीराम के इस बयान से राजनैतिक सत्ता के प्रति उनकी सोच या दृष्टि सामने आती है। जो यह स्पष्ट करती है कि पहले किसी भी समाज, जाति या वर्गो को विभाजित होने दो या उनके बीच विभाजन की परिस्थितियॉ तैयार होने दो। बाद मे उस विखराव को समेटने के लिए राजनैतिक मुहिम आरभ की जाए। यूँ आरभ से ही उनकी यह सोच रही है। जिसका उन्होने समय-समय पर प्रयोग किया है। व्यक्ति हो या समूह, फिर भले ही जाति, वह विवश होकर उनके पास आए या वे उसे विवश कर दे कि उनके बिना उसका काम ही न चल सके। इसलिए यह सीधे-सीधे कहा जा सकता है कि अगर उनका कोई दर्शन था तो वह केवल सत्ता प्राप्ति।

सत्ता प्राप्ति के ही मामले मे काशीराम बाबा साहेब डा अम्बेडकर से थोडा अलग हो जाते है। डॉ अम्बेडकर ने जिसे राजनीति की चाबी कहा था—वह थी राजसत्ता। बाबा साहेब ने राजसत्ता तक पहुँचने के लिए तीन मत्र दिए थे—पहला था, शिक्षित बनो, आदोलन करो और सगठित हो, तथा दूसरा था, सत्ता का शक्ति

सतुलन अपने हाथ मे रखो। पर काशीराम के लिए इन तीनो के क्रम मे विरोधाभास था।

लेकिन बावजूद इसके काशीराम जी के हक मे हवा बहने लगी। और जैसे-जैसे जगजीवन राम, बी पी मोया नथा अन्य दलित नेताओ से दलितो का मोहभग होता चला गया वही काशीराम के पक्ष मे दलित मतदाताओ का ध्रुवीकरण बनता गया।

कवल भारती लिखते है कि "काशीराम ने जाति के सवाल को जोर-शोर से उठाया। ओर उसे धारदार बनाया। यहॉ तक कि जगजीवन राम भी गरीबी क विरुद्ध आदोलन चाहते हे, जाति के विरुद्ध नही। कितु यह काशीराम ही थे, जो उन्होने कहा था, "गरीब ब्राह्मण भी चमार के हाथ का छुआ पानी नही पीते। दोनो ही गरीब है, लेकिन उनके बीच जाति की खाइ है, जो गरीब-गरीब को एक नही होने देती। इसलिए मे कभी वर्ग-सघर्ष का पक्षधर नही रहा। मै तो जाति-सघर्ष चाहता हू।" काशीराम के इन विचारा मे डॉ अम्बेडकर ही बोलते थे। इसलिए काशीराम दलितो के एकनिष्ठ नेता हो गए।"

वे आगे लिखते है कि 1993 तक काशीराम के आदोलन ने भारतीय राजनीति मे बहुत ही सक्रिय ओर रचनात्मक भूमिका निभाइ। इस भूमिका की कई सशक्त उपलब्धियॉ हे, जिनमे एक है दलितो मे अपने वोट के प्रति जागरुकता। यह कहने की बात नही हे कि काशीराम से पहले दलित अपने वोट की कीमत नही जानते थे। यहॉ तक कि उन्हे मतदान भी करने नही दिया जाता था। काशीराम के राजनीति मे आगमन से काफी हद तक अपने मतो की सुरक्षा करने करने की चेतना दलितो मे विकसित हुइ। इसका श्रेय काशीराम को ही जाता हे।

बकोल काशीराम जिस प्रकार इस देश मे नया सविधान लागू होने के बाद राजनेतिक क्षेत्र मे बराबरी मिली है, उसी प्रकार सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रो मे भी बहुजन समाज पार्टी बराबरी लाना चाहती है। वे कहते है कि 39 वर्षो का हमारा यह अनुभव है कि जो भी पार्टी हमारे सामने आई है, उनका हित इसमे है कि ब्राह्मणवाद के आधार पर हजारो वर्षो से लाई गई आर्थिक और सामाजिक गैर बराबरी इसी तरह टिकी रहे। बहुजन समाज पार्टी का यह लक्ष्य है कि इस गैर बराबरी को जल्द-से-जल्द दूर करने की हर कोशिश करे।

देश मे खासकर 1984 ओर उसके बाद पुलिस, पैरा मिलिटरी फोर्स और सेना का इस्तेमाल, जिस तरह इस देश के बहुजन समाज के खिलाफ किया गया है। उससे ऐसा लगता है कि इस देश मे चल रही लोकशाही को खतरा है। बहुजन समाज पार्टी का काम होगा कि जिस तरह वह अपनी रक्षा करेगा उसी प्रकार जो लोकशाही चल रही है, उसकी भी रक्षा करे।

वे कहते हे कि एक बहुत बडा कार्य जो पार्टी को करना होगा, वह है इस देश मे फैला या फैलाया गया भ्रष्टाचार समाप्त करना होगा। हमारे हिसाब से भ्रष्टाचार पहले राजनैतिक भ्रष्टाचार के रूप मे शुरू होता है। इस भ्रष्टाचार को समाप्त करने

के लिए हमे राजनैतिक भ्रष्टाचार को पहले समाप्त करना होगा। बहुजन समाज पार्टी की तरफ से बहुत से कदम बढाए जा रहे हे और सबसे पहला कदम यह हे कि लोगो को अपने छोटे-छोटे साधनो से ही चुनाव लडाया जाए, क्योकि चुनाव के मोक़े पर ही बडे पैमाने पर राजनैतिक भ्रष्टाचार शुरू होने से पहले ही रोक सकत ह। पार्टी का काम भ्रष्टाचार के हर पहलू को समाप्त करना हे।

उत्तर प्रदेश मे **इटावा ससदीय सीट** से काशीराम की जीत ने उन राजनतिक दलो को तो बेचेन किया ही है, जो दलित वर्गो की वोटो पर राजनीति की राटियॉ सेकते हे, अपितु उन दलित नेताओ को भी एक सबक दिया है, जो आरक्षण क सहारे ही सब-कुछ प्राप्त करना चाहते हे।

काशीराम की सफलता समाज के उत्थान मे लगे व्यक्तियो के लिए इष्या का नही, प्रेरणा का विषय है। इर्ष्या क्रने वालो ने काशीराम को सी आइ ए का एजट कहा, हाजी मस्तान का दलाल बताया ओर कुछ दलित नेताओ ने तो उन्ह डॉ अम्बेडकर का विरोधी तक कहा, कितु जेसी कहावत हे, दृढता विरोधो से विचलित नही हाती, काशीराम भी विचलित नही हुए और पूर्ण समर्पित मन से काय करत रहे।

बहुत से दलितो का मानना है कि काशीराम को यह सफलता अचानक नही मिली, वरन् इसके पीछे उनका दस बारह वर्षो का कठिन परिश्रम और भारतीय समाज तत्त्व का गभीर अध्ययन है। उन्होने अपना राजनीतिक सफर उस समय आरभ किया जब दलित राजनीति मे पूरी तरह शून्य था। दलित वर्ग अपनी मुक्ति के लिए सवर्णो और शासक जातियो की पार्टियो की ओर देखते थे, जो दलित वर्गो का वोट हासिल करने के लिए दलित कल्याण के सिर्फ वायदे करती है, उन पर अमल नही करती। काशीराम ने अपने समुदाय को यह विचार दिया कि उन्हे सवर्णो और शासक जातियो की पार्टियो की ओर देखना बद कर अपनी मुक्ति के लिए अपना अलग राजनेतिक दल बनाना चाहिए।

अगस्त, 1990 मे जनता दल द्वारा सरकारी नोकरियो मे मडल आयोग की सिफारिशो की घोषणा के ततत्पश्चात बहुजन समाज पार्टी मे कुछ नए समीकरण बनने आरभ हो गए थे। यह तो निश्चित ही था कि काशीराम को सबसे बडा झटका मडल आयोग की रपट लागू किए जाने की घोषणा से लगा था। इससे उनके जनाधार पर चोट पडी थी। पिछडी जातियो के जो लोग काशीराम को पैसे ओर बाहुबल से बराबर सहयोग देते रहे थे, वे ही मडल की ऑधी के बाद तेजी से वी पी, शरद, मुलायम तथा लागू प्रसाद की ओर मुड गए। काशीराम पर सीधे-सीधे चोट पडने पर उनका तिलमिलाना तो लाजमी था। दलित तथा पिछडी जातियो का समूह स्वाभाविक रूप से वी पी सिह, शरद यादव और रामविलास पासवान की ओर आशा भरी निगाहो से निहारने और उनके पीछे कतारबद्ध होने लगा था।

उक्त घटनाओ के तुरत बाद ही काशीराम ने दिल्ली मे विशाल सम्मेलन

सतुलन अपने हाथ मे रखो। पर काशीराम के लिए इन तीनो के क्रम मे विरोधाभास था।

लेकिन बावजूद इसके काशीराम जी के हक मे हवा बहने लगी। और जैसे-जेसे जगजीवन राम, बी पी मोया नथा अन्य दलित नेताओ से दलितो का मोहभग होता चला गया वही काशीराम के पक्ष मे दलित मतदाताओ का ध्रुवीकरण बनता गया।

कवल भारती लिखते हे कि "काशीराम ने जाति के सवाल को जोर-शोर से उठाया। ओर उसे धारदार बनाया। यहॉ तक कि जगजीवन राम भी गरीबी क विरुद्ध आदोलन चाहते हे, जाति के विरुद्ध नही। कितु यह काशीराम ही थे, जो उन्होने कहा था, "गरीब ब्राह्मण भी चमार के हाथ का छुआ पानी नही पीते। दोनो ही गरीब है, लेकिन उनक बीच जाति की खाइ है, जो गरीब-गरीब को एक नही होने देती। इसलिए मे कभी वग-सघर्ष का पक्षधर नही रहा। मे तो जाति-सघर्ष चाहता हू।" काशीराम के इन विचारो मे डॉ अम्बेडकर ही बोलते थे। इसलिए काशीराम दलितो के एकनिष्ठ नेता हो गए।"

वे आगे लिखते हे कि 1993 तक काशीराम के आदोलन ने भारतीय राजनीति मे बहुत ही सक्रिय ओर रचनात्मक भूमिका निभाइ। इस भूमिका की कइ सशक्त उपलब्धियॉ है, जिनमे एक है दलितो मे अपने वोट के प्रति जागरुकता। यह कहने की बात नही हे कि काशीराम से पहले दलित अपने वोट की कीमत नही जानते थे। यहॉ तक कि उन्हे मतदान भी करने नही दिया जाता था। काशीराम के राजनीति मे आगमन से काफी हद तक अपने मतो की सुरक्षा करने करने की चेतना दलितो मे विकसित हुइ। इसका श्रेय काशीराम को ही जाता हे।

बकोल काशीराम जिस प्रकार इस देश मे नया सविधान लागू होने के बाद राजनेतिक क्षेत्र मे बराबरी मिली है, उसी प्रकार सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रो मे भी बहुजन समाज पार्टी बराबरी लाना चाहती हे। वे कहते है कि 39 वर्षो का हमारा यह अनुभव है कि जो भी पार्टी हमारे सामने आई है, उनका हित इसमे है कि ब्राह्मणवाद क आधार पर हजारो वर्षो से लाई गई आर्थिक और सामाजिक गैर बराबरी इसी तरह टिकी रहे। बहुजन समाज पार्टी का यह लक्ष्य है कि इस गैर बराबरी को जल्द-से-जल्द दूर करने की हर कोशिश करे।

देश मे खासकर 1984 और उसके बाद पुलिस, पैरा मिलिटरी फोर्स और सेना का इस्तेमाल, जिस तरह इस देश के बहुजन समाज के खिलाफ किया गया है। उससे ऐसा लगता है कि इस देश मे चल रही लोकशाही को खतरा है। बहुजन समाज पार्टी का काम होगा कि जिस तरह वह अपनी रक्षा करेगा उसी प्रकार जो लोकशाही चल रही है, उसकी भी रक्षा करे।

वे कहते हे कि एक बहुत बडा कार्य जो पार्टी को करना होगा, वह है इस देश मे फैला या फैलाया गया भ्रष्टाचार समाप्त करना होगा। हमारे हिसाब से भ्रष्टाचार पहले राजनैतिक भ्रष्टाचार के रूप मे शुरू होता है। इस भ्रष्टाचार को समाप्त करने

के लिए हमे राजनैतिक भ्रष्टाचार को पहले समाप्त करना होगा। बहुजन समाज पार्टी की तरफ से बहुत से कदम बढाए जा रहे है और सबसे पहला कदम यह हे कि लोगो को अपने छोटे-छोटे साधनो से ही चुनाव लडाया जाए, क्याकि चुनाव के मोके पर ही बडे पैमाने पर राजनैतिक भ्रष्टाचार शुरू होने से पहल ही रोक सकते ह। पार्टी का काम भ्रष्टाचार के हर पहलू को समाप्त करना हे।

उत्तर प्रदेश मे **इटावा ससदीय सीट** से काशीराम की जीत ने उन राजनतिक दलो को तो बेचेन किया ही है, जो दलित वर्गो की वोटो पर राजनीति की रोटियॉ सेकते है, अपितु उन दलित नेताओ को भी एक सबक दिया ह, जो आरक्षण क सहारे ही सब-कुछ प्राप्त करना चाहते है।

काशीराम की सफलता समाज के उत्थान मे लगे व्यक्तियो के लिए इष्या का नही, प्रेरणा का विषय है। ईर्ष्या करने वाला ने काशीराम को सी आइ ए का एजट कहा, हाजी मस्तान का दलाल बताया ओर कुछ दलित नेताओ न तो उन्हे डॉ अम्बडकर का विरोधी तक कहा, कितु जेसी कहावत हे, दृढता विरोधो स विचलित नही होती, काशीराम भी विचलित नही हुए और पूर्ण समर्पित मन से काय करत रहे।

बहुत से दलितो का मानना है कि काशीराम को यह सफलता अचानक नही मिली, वरन् इसके पीछे उनका दस बारह वर्षो का कठिन परिश्रम और भारतीय समाज तत्त्व का गभीर अध्ययन है। उन्होने अपना राजनीतिक सफर उस समय आरभ किया जब दलित राजनीति मे पूरी तरह शून्य था। दलित वग अपनी मुक्ति के लिए सवर्णो और शासक जातियो की पार्टियो की ओर देखते थे, जो दलित वर्गो का वोट हासिल करने के लिए दलित कल्याण के सिर्फ वायदे करती है, उन पर अमल नही करती। काशीराम ने अपने समुदाय को यह विचार दिया कि उन्हे सवर्णो और शासक जातियो की पार्टियो की ओर देखना बद कर अपनी मुक्ति के लिए अपना अलग राजनेतिक दल बनाना चाहिए।

अगस्त, 1990 मे जनता दल द्वारा सरकारी नोकरियो मे मडल आयोग की सिफारिशो की घोषणा के ततत्पश्चात बहुजन समाज पार्टी मे कुछ नए समीकरण बनने आरभ हो गए थे। यह तो निश्चित ही था कि काशीराम को सबसे बडा झटका मडल आयोग की रपट लागू किए जाने की घोषणा से लगा था। इससे उनके जनाधार पर चोट पडी थी। पिछडी जातियो के जो लोग काशीराम को पेसे ओर बाहुबल से बराबर सहयोग देते रहे थे, वे ही मडल की ऑधी के बाद तेजी से वी पी, शरद, मुलायम तथा लागू प्रसाद की ओर मुड गए। काशीराम पर सीधे-सीधे चोट पडने पर उनका तिलमिलाना तो लाजमी था। दलित तथा पिछडी जातियो का समूह स्वाभाविक रूप से वी पी सिह, शरद यादव और रामविलास पासवान की ओर आशा भरी निगाहो से निहारने और उनके पीछे कतारबद्ध होने लगा था।

उक्त घटनाओ के तुरत बाद ही काशीराम ने दिल्ली मे विशाल सम्मेलन

आयोजित कर आरक्षण समर्थक आदोलन की कमान अपने हाथ मे लेने की भरपूर कोशिश की। उन्होने सम्मेलन मे कहा भी कि **''मडल के समर्थन में चलाया जा रहा आदोलन सवर्णो के हाथो मे चला गया है।''** उन्ही के शब्दो मे, **''दासपुत्र शरद और पासवान, सवर्णो के एजेट हे। लिहाजा यह आदोलन बसपा के बैनर तले ही हो, इसी मे बेहतरी हे।''** मडल के बवडर मे बहके विशाल जनाधार को वापस पाने के लिए काशीराम ने वताया कि बसपा देश-भर म रलियॉ और सम्मेलन कर मडल समर्थक आदोलन ओर इससे उपजी लहर की सवाहक बनेगी।

कई राजनैतिक विश्लेषको का यह भी मानना है कि मडल आयोग के बारे मे काशीराम ने ऐसे अवसर पर जबकि देश-भर मे लोकतात्रिक सगठन आरक्षण का समथन कर रह थे तब अजीबोगरीब तथा भ्रमित करने वाले भाषण तथा प्रेस वक्तव्य दिए जिसस सीधे-सीधे आरक्षण विरोधियो को हवा मिली। जबकि स्वय काशीराम का कहना था कि माना कि मडल आयोग दलित जमात की प्रशासन मे हिस्सेदारी का एक पूरा तो नही, पर अच्छी शुरुआत का मौका हे। पर इसके लिए उन्होने अपने-आपको ही प्रेरणा स्रोत बताया है।

सार्वजनिक रूप से सवर्णो को लताडना उनके लिए एक आम बात रही है। वे आक्रोशमय स्वर मे कहते भी है कि इन्ही जातियो ने देश का बेडा गर्क किया है। यहॉ तक कि वे मानते हे कि ॲग्रेजो के शासन काल मे कमजोर वर्ग को आज की तुलना मे बेहतर न्याय मिलता था। काशीराम अपनी नायाब राजनीतिक शैली के लिए जाने जाते हे। कभी वह अपने समथको से दुश्मन के मुकाबले पत्थर उठा लेने के लिए कहते हे तो कभी दाशनिक अदाज मे कहते है कि दुश्मन का भी हृदय परिवर्तन करना है। बहरहाल, वह इस बात के वे आरभ से हिमायती रहे कि सुरक्षा की हिसा जायज है।

एक साक्षात्कार मे वे बतलाते हे कि कमजोर वर्ग पर जो अत्याचार होता है, उससे निपटने के लिए अपनी सुरक्षा की लाइन लेनी ही पडेगी। इस सदर्भ मे वे एक उदाहरण रखते है। अमेठी मे उनकी पार्टी का कार्यक्रम रखा गया। वहॉ स्थानीय प्रशासन ने न तो अनुमति दी और न ही प्रशासन की तरफ से कोई इतजाम हुआ। ऐसे समय पर उन्होने (काशीराम) अपने कार्यकर्ताओ से कहा कि कम-से-कम एक हजार स्वय सेवक लाठियो के साथ हो और 50 गन वाले हो, और ये दिखाने के लिए नही इस्तेमाल के लिए हो। जिन्हे लाठियो और बदूको का इस्तेमाल करने का साहस हो वे ही जुटे। इसके बाद कार्यक्रम हुआ। बसो पर कुछ पथराव हुआ तो बहुजन स्वयसेवको ने मोर्चा लिया। बहुजन समाज पार्टी के कार्यकर्त्ता कम सख्या मे घायल हुए ओर सवण जातियो के अधिक। उन्होने कॉलेज मे छुपकर अपने प्राण बचाए। उसके बाद कार्यक्रम ठीक से चला।

वरिष्ठ पत्रकार अभय कुमार दुबे लिखते हे कि काशीराम का स्वभाव इस मामले मे बाल ठाकरे से मिलता जुलता था। ठाकरे की शैली ही बन गई थी कि वे अगर

किसी को दडित करना चाहते तो सरेआम करते। न केवल सबके सामने अपमानित करते वरन् "मार्मिक" मे भी उस व्यक्ति के खिलाफ छाप देते। दरअसल, यह बडी सुचितित रणनीति थी जिसके कारण मतविरोध रखने वाला व्यक्ति बाद मे कोइ भिरतरघात नही कर पाता था और शिवसैनिक उसे विरोधी मानकर उसकी बात का तरजीह देना बद कर देते थे।

ठाकरे अपने प्राधिकार को सर्वोच्च रखना चाहते थ। उनका कहना था, म साफ कहता हू कि अगर कोई मुझसे मतभेद रखता हे और सगठन क बाहर ल जाता है या खुले आम मेरा विरोध करता है ता वह खुशी से सगठन छाड सकता ह। जो सगठन से जाएगा, मे उसे दोबारा कभी वापस नही लूगा। लगभग ऐसा ही काशीराम की राजनेतिक सोच थी। जो एक बार उनसे अलग हुआ, शायद ही बसपा सुप्रीमो ने उसे फिर से गले लगाया हो।

दलित समाज के कुछ लोग यह भी मानने लगे है कि काशीराम बाबा साहेब अम्बेडकर के आमूलचूल समाज परिवर्तन के रास्ते से भटक गए हे। उनका लक्ष्य है सत्ता प्राप्त करना। जैसा वे स्वय भी बार-बार कहते हे।

इस बारे म नागपुर के वरिष्ठ समाज सेवी एन जी काम्बले 10 अक्टूबर, 1998 को कुआलालमपुर मे काशीराम के द्वारा दिए गए भाषण का उल्लेख करते हे। काशीराम ने उस अवसर पर कहा था—हमारे अदर जातिविहीन समाज का निमाण करने की भावना हो सकती है, लेकिन इसके साथ यह भी सत्य हे कि अभी निकट भविष्य मे जाति के विनाश की भावना लगभग नही के बराबर हे। जब तक जाति का पूरी तरह विनाश न हो जाए तब तक हमे क्या करना चाहिए? मेरा यह मानना हे कि जब तक हम 'एक जातिविहीन समाज' की स्थापना करने मे सफल नही हो जाते, तब तक जाति का उपयोग करना होगा।

बकोल काम्बले यदि जाति का इस्तेमाल किया गया तो वह और मजबूत होगी, जिससे ब्राह्मणवाद और भी शक्तिशाली होगा।

इससे इतर देखे काशीराम राजनादगॉव (मध्य प्रदश) मे एक पत्रिका को दिए साक्षात्कार मे कहते है—"जातिवाद को हम बढावा देते हे। जातिवाद जब मजबूत होगा तभी राष्ट्र का हित होगा।" एन जी काम्बले के विचार मे काशीराम का यह वक्तव्य यानी **'जात से जात मिटाना, मैले कपडों को कीचड के साथ साफ करने जैसा है।'** दूसरी तरफ बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर का महत्वपूण वक्तव्य देखे। वे कहते हे—"यदि जातिवाद को खत्म नही किया गया तो वह भारत को तबाह कर देगा।" इसके लिए डॉ अम्बेडकर ने एकमात्र कारगर और परिणामकारी जाति विनाश के लिए शस्त्र ढूँढ निकाला है और वह है समूचे भारत को बौद्धमय करना। यही उनकी मजिल है, एन जी काम्बले के विचार मे लेकिन काशीराम अपने उपयुक्त वक्तव्य के तहत् बौद्ध धम्म अपनाने के विकल्प को जानबूझकर निष्प्रभ कर रहे हे। उनके

विचार मे भारत मे जातियो का अस्तित्व रहा है और रहेगा कुछ विशेष जातियो के वचस्व को अगर समाप्त करना हो तो अपनी-अपनी जातियो को मजबूत बनाना होगा।

बुद्धिस्ट नही बनने दूँगा—काशीराम

काशीराम पूना मे दिए उक्त भाषण मे कहते हे—"मे तब तक अपने लोगो को बुद्धिस्ट नही बनन दूँगा, जब तक वो आरक्षण देने लायक नही बन जात।"

डॉ अम्बडकर को वणविहीन, वगविहीन जातिविहीन, शोषण रहित समाज व्यवस्था, समानता, स्वतत्रता, भातृत्वभाव, न्याय ओर नैतिक्ता इन मूल्यो की नीव पर निमाण करक भारत को एक समृद्ध 'राष्ट्र का दर्जा प्राप्त कर देना था। इसलिए उन्होने एकमात्र विकल्प के रूप मे बहुजना के पूवजो के बौद्ध धम्म को केवल स्वीकार ही नही किया अपितु सपूण भारत बोद्धमय करने की शपथ ली थी। यही बाबा साहेब अम्बेडकर की मजिल रही। डॉ अम्बेडकर अपने 31 मइ, 1936 के भाषण म कहते हे—"क्षणिक हिता की ओर देखकर शाश्वत ओर सतत् मिलने वाले हित का विचार न करना—वडे दु ख की बात होगी। शाश्वत सुख के लिए धर्म परिवतन ही एक उपाय हे—इसके लिए राजकीय अधिकारो का बलिदान करना पडे—तो भी उसकी परवाह नही करना चाहिए।" काम्बले इस वारे म क्षोभ के साथ लिखते हे कि काशीराम का उपयुक्त वक्तव्य यानी उनका स्पष्ट रूप से बहुजनो को बौद्ध धम्म स्वीकार करने से वचित करने के लिए भ्राति फलाने का प्रयास है। यही नही, यह डॉ अम्बेडकर की धम्म क्राति ध्वस करने की गहरी साजिश हे।"

अम्बेडकरवाद की जगह नए वाद की आवश्यकता—काशीराम

काशीराम कुआलालमपुर म दिए गए भाषण मे कहते है—"हमारे बुद्धिजीवी अक्सर ऐसा सोचते हे कि हमारी सभी समस्याओ का हल मार्क्सवाद, समाजवाद, साम्यवाद मे हे। मरा मानना हे कि जिस देश मे मनुवाद मौजूद है, उस देश मे कोई अन्य वाद (ISM) सफल नही हो सकता है, क्योकि कोई भी अन्यवाद जाति की सच्चाई को स्वीकार करने के लिए तेयार नही है। इसलिए यह बुद्धिजीवियो का फर्ज है और मेरा भी फर्ज है कि हम मनुवाद और जाति के अस्तित्व को ध्यान मे रखते हुए अपने लिए स्वय किसी अन्य वाद की रचना करे।"

बाबा साहेब अम्बेडकर ने मनुवाद और जाति व्यवस्था का अस्तित्व एव उनकी सच्चाइ स्वीकार करते हुए उनके निमूलन हेतु जीवन भर अपना सघष जारी रखा था। ऐसा कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नही होगा, लेकिन काशीराम यह वास्तव मे स्वीकार करने को तेयार नही है। इसी कारण वे नए वाद की आवश्यकता महसूस कर रहे है। फिर प्रश्न उपस्थिति होता है कि क्या काशीराम अम्बेडकरवाद का पूरा अध्ययन करने के बाद वे इस निर्णय पर पहुचे है? इसका जवाब उनके ही शब्दो मे यह है—"न

मैने डॉ अम्बेडकर की कोई किताब पढी है, न मुझे पढने की आवश्यकता हे।'' बकौल काम्बले इसमे महत्त्वपूर्ण ओर आश्चर्यजनक यह बात है कि काशीराम को अम्बेडकरवाद क्या है और उसकी मजिल कहॉ है यही मालूम नही हे। फिर भी वे चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे है कि वे बाबा साहेब अम्बेडकर के मिशन का काम कर रहे है और उनका कारवा जहॉ बाबा साहेब की मजिल हे वहॉ ही ले जा रहे ह। इस तरह काशीराम लागो को गुमराह कर रहे है काशीराम कूआलालमपुर क भाषण मे कहते है कि—''राजनैतिक सत्ता वह मास्टर चाबी हे, जिससे आप अपनी तरक्की और सम्मान के सभी दरवाजे खोल सकते है।'' एन जी काम्बले के विचार मे काशीराम ने अपने निहित स्वार्थ हेतु यह वाक्य गोबेल के कपटनीति के तहत् इस कदर उछाला कि 'अम्बेडकरवाद यानी राजनीति' यही समीकरण हो गया हे। इससे सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, धामिक, सास्कृतिक आदि सारी जीवनस्पर्शी क्षेत्र निष्प्रभ हो गए है।'' इसके विपरीत डॉ अम्बेडकर कहते है—''दलित वर्ग के सभी रोगो पर राजनीतिक सत्ता यह औषध लागू नही हो सकता, यह मै आपको बताना परमावश्यक समझता हू। उनकी मुक्ति सामाजिक उत्थान मे ही है।'' डॉ अम्बेडकर स्पष्ट रूप से कहते हे—''**इतिहास सामान्यत इस प्रस्ताव को बल देता है कि राजनीतिक क्रातियॉ हमेशा सामाजिक और धार्मिक क्रातियो के बाद हुई है।''**

राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ और बसपा

डॉ अम्बेडकर ने 7 अक्टूबर, 1951 को जारी किए चुनाव घाषणा पत्र मे कहा था ''राजनीतिक पार्टी के दृष्टि से शेडयूल्डकास्टस् फेडरेशन की नीति बहुत ही स्पष्ट है। हिदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ से फेडरेशन कभी भी सहयोग नही करगा।'' लेकिन काशीराम ने सघ के द्वारा भाजपा के साथ एक बार नही दा बार गठबधन किये है। इससे दलित समाज की किसी भी तरह उन्नति नही हुई। लेकिन दलितो मे ब्राह्मणो के प्रति सहानुभूति की भावना निमाण हुइ, जो सामाजिक आदोलन की दृष्टि से नुकसानदेह है।'' डॉ अम्बेडकर पुन कहते है—''ब्राह्मणो के सामने सभी समाज के कल्याण हेतु कोई प्रस्ताव पेश कीजिए। उक्त प्रस्ताव से यदि ब्राह्मणो के वचस्व को धक्का पहुँचता नही होगा तो वे शीघ्र ही मान्यता देगे, लेकिन यदि उसके तहत् ब्राह्मणो को थोडा भी धक्का पहुँचता होगा यद्यपि उससे राष्ट्र को कितना भी बडा फायदा होता होगा, ब्राह्मण समाज उसे कभी भी स्वीकार नही करेगा।'' सघ ने इस गठबधन का फायदा अपनी रणनीति के तहत् कर लिया है। उसने न केवल उत्तर प्रदेश मे बल्कि केद्र मे अपनी सत्ता प्रस्थापित करने के रास्ते प्रशस्त किए, जिसके लिए काशीराम जिम्मेदार है। डॉ अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक के पहले पृष्ठ पर टॉलस्टाय का एक वाक्य उद्धृत किया है—**आपने कितना मार्ग तय किया है, इसका ज्यादा महत्त्व नहीं है। इससे अधिक महत्त्व इस बात का है कि आप किस दिशा में जा रहे है।''**

काम्बले के विचार मे काशीराम राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ का ही काम प्रतिक्रातिकारी के रूप मे कर रहे हे। कारण, उनके कार्य करने का ढग अम्बेडकर विचारधारा के बिल्कुल विरुद्ध दिशा की ओर हे। इसके विपरीत स्वय काशीराम महाराष्ट्र के लोगा को दोष देते हुए कहते है–**"महाराष्ट्र मे, धधा करने वाले लोग ज्यादा होशियारी दिखाते हे। वे नागपुर मे बाबा साहब को अगरबती, मोमबत्ती चढाते है और इसी से वो उतने बडे अम्बेडकरवादी हो गए हे।"** काशीराम ने जो वक्तव्य दिए पृष्ठभूमि म भ्रमित भाषा का प्रयोग करते हुए वे कहते है–"महार जाति जब तक अम्बेडकर को घसीटती रहेगी, तब तक अपना विकास नही कर सकती। महार जाति हमसे तभी जुड सकती हे जब अम्बेडकर का पीछा छोडेगी अच्छा काम करेगी तो हमसे जुडेगी।" एन जी काम्बले उन पर आरोप लगाते हुए कहते है। इस तरह काशीराम डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर को निष्प्रभ करने की कोशिशे कर रहे है। महार समाज ने डा बाबा साहेब अम्बेडकर को उनके कार्य मे जो सहयोग दिया, उसके लिए बाबा साहेब अम्बेडकर ने अपने 28 अक्टूबर, 1954 के भाषण मे उनके शौर्य, त्याग आदि की प्रशसा करते हुए कृतज्ञता व्यक्त की हे। महाराष्ट्र के करीब 8 लाख महारो ने बाबा साहेब अम्बेडकर के द्वारा 14 अक्टूबर, 1956 को बौद्ध धम्म की दीक्षा ली थी। लेक्नि काशीराम उन्हे बोद्ध कहकर सबोधित न करते उन्हे 'महार' कहते हे। जिस तरह रजनीश डॉ अम्बडकर ओर उनके द्वारा हुए बोद्धो को बौद्ध होने से इनकार करते ह, वही रणनीनि काशीराम ने जानबूझकर अपनायी है। यही नही, काशीराम ने बारबार बाबा साहेब अम्बडकर की अवमानना करने की कोशिश की है।

शुरुआती दौर म देखा जाए तो काशीराम के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ उनके सघष की शैली परपरा से हटकर थी, जो दलितो को प्रभावित करने के साथ प्रेरित भी करती थी। उन्होने देश भर मे समय-समय पर दौरे किये। लोगो को सघर्ष करने के लिए उद्वेलित भी किया। उन्हे बामसेफ के बेनर तले सगठित किया सघर्ष करना भी सिखाया। लेकिन कुछ राजनेतिक विश्लेषको का ऐसा मानना है कि जैसे-जैसे बहुजन समाज पार्टी सत्ता के नजदीक आती गई वैसे-वैसे स्वय बसपा के सुप्रीमो काशीराम का दलित समाज और उसके स्वाभिमान से सम्बन्धित सघर्ष का दर्शन राजनेतिक विवशता मे बदलता गया। 15 अप्रैल, 1996 को राजस्थान मे एक बसपा प्रत्याशी के समर्थन मे चुनावी सभा को सबोधित करते हुए काशीराम ने कहा था कि पूरा मीडिया मनुवादी हाथो मे हे। मनुवादी अखबार उलटा-सीधा लिखते है। मनुवादी मीडिया को मत पढो ओर पढो तो इस पर विश्वास मत करो। उन्होने बहुजन समाज को आवाह्न किया वह अपना मीडिया बनाने की कोशिश करे। काशीराम ने कहा कि साइकल पर घूमने वाला काशीराम हैलीकाप्टर पर आ सकता है तो मीडिया भी बन जाएगा। इसमे वक्त जरूर लगेगा। पर उत्तर प्रदेश मे तीन बार बसपा की सरकार बन जाने के बाद भी बसपा प्रमुख दलित मीडिया नही बना सके है। जबकि पत्रकारिता

के क्षेत्र मे बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर ने अनेक पत्र-पत्रिकाआ का सपादन/प्रकाशन कर अभूतपूर्व कार्य किया है।

असल मे, बुद्धिजीवी जमात से काशीराम परहेज करते रहे है। दलित इतिहास, अस्मिता, साहित्य, सस्कृति और पहचान से उन्हे कुछ लेना-देना नही रहा। वे सीधे-सीधे सत्ता की बात करते है ओर कहते है कि राजनैतिक सत्ता के बाद सब-कुछ अपने-आप बदल जाएगा। कुछ बुद्धिजीवियो का कथन है कि ऐसा होता नही हे। सत्ता स बुद्धिजीवी वर्ग प्रभावित जरूरत होता है, पर वह प्रेरणा नही लेता।

इस बारे मे बाबा साहेब की भूमिका का अध्ययन करे ता हमे पता चलता है कि उन्होने पत्रकारिता का महत्त्व समझकर साहित्य ओर पत्रकारिता के क्षेत्र मे गभीरतापूर्वक अपना उत्तरदायित्व निभाया। वैसा काशीराम जी ने नही किया। इसलिए राजनैतिक व्यवस्था बदल जाने के बाद भी समाज मे आमूल मूल परिवतन नही हुआ। इसके लिए अगर हम द्रविड मुनेत्र कडगम के नेता रामास्वामी नायकर तथा अन्य द्रविड कार्यकर्ताओ की कायशैली का अध्ययन करे तो उनके द्वारा सामाजिक सरोकारो की पूरी सूची हमे मिलेगी। हालाकि उत्तरी भारत म इस तरह के प्रयास हुए पर राजनेतिक गठबधन हर बार आडे आया।

सदर्भ

- बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर काग्रेस और गाधी ने अछूता के लिए क्या किया?
- जनसत्ता 3 अप्रेल 2002 नोएडा
- धमयुग टाइम्स ऑफ इडिया प्रकाशन बबइ
- दलित एशिया टुडे लखनऊ अप्रेल 1995
- रामविलास पासवान न्याय चक्र जनपथ नइ दिल्ली दिस 1995
- भारत मे हुए प्रथम आम चुनाव की पूव सध्या पर (27 अक्तूबर 1952) जालधर की बस्ती रामदास पुरा (बूटा मडी) मे दिये गय भाषण से
- बहुजन सगठक नई दिल्ली
- अभय कुमार दुबे आज के नेता काशीराम राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1997
- एन जी काम्बले काशीराम का अम्बेडकर मिशन किस दिशा की ओर? हम दलित नइ दिल्ली अक्टूबर 1999 पृ 14
- अमृत सदेश 27 मई 1993
- 10 अक्टूबर 1998 को कूआलालमपुर मे दिए गए भाषण से।
- 8 अगस्त 1930 को नागपुर मे आयोजित अखिल भारतीय दलित वग परिषद् के भाषण से
- हम दलित पृष्ठ 15 अक्टूबर 99
- फेडरेशन वर्सेस फ्रीडम भाषण के प्रसिद्ध पुस्तक स—The dıstance you have gone ıs less ımportant than the dırectıon ın whıch you are goıng today
- हम दलित पृष्ठ 16
- बहुजन अधिकार नइ दिल्ली

काम्बले के विचार मे काशीराम राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ का ही काम प्रतिक्रातिकारी के रूप मे कर रहे है। कारण, उनके कार्य करने का ढग अम्बेडकर विचारधारा के बिल्कुल विरुद्ध दिशा की ओर हे। इसके विपरीत स्वय काशीराम महाराष्ट्र के लोगो को दोष देते हुए कहते है—**''महाराष्ट्र मे, धधा करने वाले लोग ज्यादा होशियारी दिखाते है। वे नागपुर मे बाबा साहब को अगरबती, मोमबत्ती चढाते है ओर इसी से वो उतने बडे अम्बेडकरवादी हो गए हे।''** काशीराम ने जो वक्तव्य दिए पृष्ठभूमि मे भ्रमित भाषा का प्रयोग करते हुए वे कहते है—''महार जाति जब तक अम्बेडकर को घसीटती रहंगी, तब तक अपना विकास नही कर सकती। महार जाति हमसे तभी जुड सकती हे जब अम्बेडकर का पीछा छोडेगी अच्छा काम करेगी तो हमसे जुडेगी।'' एन जी काम्बले उन पर आरोप लगाते हुए कहते है। इस तरह काशीराम डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर को निष्प्रभ करने की कोशिशे कर रहे है। महार समाज ने डा बाबा साहेब अम्बेडकर को उनके कार्य मे जो सहयोग दिया, उसके लिए बाबा साहेब अम्बेडकर ने अपने 28 अक्टूबर, 1954 के भाषण मे उनके शौर्य, त्याग आदि की प्रशसा करते हुए कृतज्ञता व्यक्त की हे। महाराष्ट्र के करीब 8 लाख महारो ने बाबा साहेब अम्बेडकर के द्वारा 14 अक्टूबर, 1956 को बौद्ध धम्म की दीक्षा ली थी। लेक्नि काशीराम उन्ह बोद्ध कहकर सबोधित न करते उन्हे 'महार' कहते हे। जिस तरह रजनीश डॉ अम्वेडकर ओर उनके द्वारा हुए बौद्धो को बौद्ध होने से इनकार करते ह, वही रणनीति काशीराम ने जानबूझकर अपनायी है। यही नही, काशीराम ने बारबार बाबा साहेब अम्बडकर की अवमानना करने की कोशिश की है।

शुरुआती दौर मे देखा जाए तो काशीराम के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ उनके सघर्ष की शैली परपरा से हटकर थी, जो दलितो को प्रभावित करने के साथ प्रेरित भी करती थी। उन्होने देश भर मे समय-समय पर दौरे किये। लोगो को सघर्ष करने के लिए उद्वेलित भी किया। उन्हे बामसेफ के बेनर तले सगठित किया सघर्ष करना भी सिखाया। लेकिन कुछ राजनैतिक विश्लेषको का ऐसा मानना है कि जेसे-जैसे बहुजन समाज पार्टी सत्ता के नजदीक आती गई वैसे-वैसे स्वय बसपा के सुप्रीमो काशीराम का दलित समाज और उसके स्वाभिमान से सम्बन्धित सघर्ष का दर्शन राजनेतिक विवशता मे बदलता गया। 15 अप्रैल, 1996 को राजस्थान मे एक बसपा प्रत्याशी के समर्थन मे चुनावी सभा को सबोधित करते हुए काशीराम ने कहा था कि पूरा मीडिया मनुवादी हाथो मे हे। मनुवादी अखबार उलटा-सीधा लिखते है। मनुवादी मीडिया को मत पढो और पढो तो इस पर विश्वास मत करो। उन्होने बहुजन समाज को आवाह्न किया वह अपना मीडिया बनाने की कोशिश करे। काशीराम ने कहा कि साइकल पर घूमने वाला काशीराम हैलीकाप्टर पर आ सकता है तो मीडिया भी बन जाएगा। इसमे वक्त जरूर लगेगा। पर उत्तर प्रदेश मे तीन बार बसपा की सरकार बन जाने के बाद भी बसपा प्रमुख दलित मीडिया नही बना सके हे। जबकि पत्रकारिता

के क्षेत्र मे बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर ने अनेक पत्र-पत्रिकाओ का सपादन/प्रकाशन कर अभूतपूर्व कार्य किया है।

असल मे, बुद्धिजीवी जमात से काशीराम परहेज करते रहे हे। दलित इतिहास, अस्मिता, साहित्य, सस्कृति और पहचान से उन्हे कुछ लेना-देना नही रहा। व सीधे-सीधे सत्ता की बात करते है और कहते है कि राजनेतिक सत्ता के बाद सब-कुछ अपने-आप बदल जाएगा। कुछ बुद्धिजीवियो का कथन है कि ऐसा होता नही हे। सत्ता से बुद्धिजीवी वर्ग प्रभावित जरूरत होता है, पर वह प्रेरणा नही लेता।

इस बारे मे बाबा साहेब की भूमिका का अध्ययन करे ता हमे पता चलता है कि उन्होने पत्रकारिता का महत्त्व समझकर साहित्य ओर पत्रकारिता के क्षेत्र मे गभीरतापूर्वक अपना उत्तरदायित्व निभाया। वैसा काशीराम जी ने नही किया। इसलिए राजनैतिक व्यवस्था बदल जाने के बाद भी समाज मे आमूल मूल परिवतन नही हुआ। इसके लिए अगर हम द्रविड मुनेत्र कडगम के नेता रामास्वामी नायकर तथा अन्य द्रविड कार्यकर्ताओ की कायशैली का अध्ययन करे तो उनके द्वारा सामाजिक सरोकारो की पूरी सूची हमे मिलेगी। हालाकि उत्तरी भारत मे इस तरह के प्रयास हुए पर राजनेतिक गठबधन हर बार आडे आया।

सदर्भ

- बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर काग्रेस ओर गाधी ने अछूता के लिए क्या किया?
- जनसत्ता 3 अप्रेल 2002 नोएडा
- धमयुग टाइम्स ऑफ इडिया प्रकाशन बबई
- दलित एशिया टुडे लखनऊ अप्रेल 1995
- रामविलास पासवान न्याय चक्र जनपथ नइ दिल्ली दिस 1995
- भारत मे हुए प्रथम आम चुनाव की पूव सध्या पर (27 अक्तूबर 1952) जालधर की बस्ती रामदास पुरा (बूटा मडी) मे दिये गय भाषण से
- बहुजन सगठक नई दिल्ली
- अभय कुमार दुबे आज के नेता काशीराम राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1997
- एन जी काम्बले काशीराम का अम्बेडकर मिशन किस दिशा की ओर? हम दलित नइ दिल्ली अक्टूबर 1999 पृ 14
- अमृत सदेश 27 मई 1993
- 10 अक्टूबर 1998 को कूआलालमपुर मे दिए गए भाषण से।
- 8 अगस्त 1930 को नागपुर मे आयाजित अखिल भारतीय दलित वर्ग परिषद् क भाषण से
- हम दलित पृष्ठ 15 अक्टूबर 99
- फेडरेशन वर्सेस फ्रीडम भाषण के प्रसिद्ध पुस्तक से—The distance you have gone is less important than the direction in which you are going today
- हम दलित पृष्ठ 16
- बहुजन अधिकार नइ दिल्ली

पार्टी में बिखराव

मुलायम सिह यादव ने मुख्यमत्री की कुरसी 5 दिसबर, 1993 को बसपा के सहयोग से सॅभाली थी, लेकिन ततपश्चात ही काशीराम के बयानो, सपा-बसपा मत्रियो के बीच तालमेल के अभाव और दलितो-पिछडो के बीच बढते तनाव के कारण सपा-बसपा की सरकार डावाडोल होने लगी थी।

वेसे इस सरकार के कार्यकाल के प्रति कयासबाजी की शुरुआत तो सरकार गठित होने के दिन से ही शुरू हो गई थी। सबसे पहले काशीराम के बयान से ही परेशानी हुई। काशीराम ने तब यह कहकर तत्कालीन सरकार के कार्यकाल की मियाद तय कर दी कि नवबर–दिसबर, 1994 तक फिर से वे चुनाव चाहते हे। उनका कहना था, "हम चाहते हे कि लोकसभा चुनाव के साथ ही विधानसभा के घुनाव भी हो जाए। तब तक बसपा की ओर मतदाताओ के ध्रुवीकरण की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। तब हमारी पार्टी न केवल प्रदेश बल्कि केद्र मे भी विजेता के रूप मे अपना अस्तित्व जमा लेगी।"

वरिष्ठ पत्रकार राजकिशोर के अनुसार निर्वाह की समस्या तो बसपा के साथ भी थी। बसपा और सपा का गठबधन शायद सबसे सहज और स्वाभाविक गठबधन था। लेकिन जब उनकी सरकार बनी, तो उसमे पहले दिन से ही तनाव उपस्थित था। उनके मतानुसार बसपा के नेता काशीराम महत्वाकॉक्षा की मार से परेशान रहे और है। वह न खुद चैन से रहते है न किसी और को चैन से रहने देते है। बेशक सपा के मुख्यमत्री मुलायम सिह यादव ने भी बाद मे उनके साथ अच्छा व्यवहार नही किया और उनके दल (बसपा) को क्षति पहुॅचाने की धूर्ततापूर्ण कोशिशे की, लेकिन इसके लिए प्रेरणा बसपा ने ही मुहैया कराई थी।

जैसा स्वय काशीराम ने अपने एक भाषण मे बतलाया कि 1984 के बाद बसपा मुस्लिम और अनुसूचित जाति के लोगो तक ही अपनी पहुॅच बना सकी। अन्य पिछडे वर्ग मे पाल-कश्यप, गुर्जर, बघेल व सैनी आदि बिरादरियो तक नही पहुॅच सकी। 1984 से 1994 तक हमने बहुत बडा कार्य किया। देश मे सचमुच यह महत्वपूर्ण कार्य था, पूरे देश मे दलित व पिछडो तथा अकलियत के लोगो को बहुजन होने

का मतलब समझाया। 1952 से 1988 तक किसी भी गडरिये व कुम्हार ने असम्बली का मुह नही देखा था 1989 मे हमने टिकट देकर पाल समाज के श्रीराम पाल का असेम्बली (विधानसभा) मे भेजा। 1991 मे अति पिछडा वग क दो तथा 1993 म 11 लोगो ने उत्तर प्रदेश की विधान सभा मे दस्तक दे दी। हमने मायावती के शासन मे उन सभी 11 विधायको को मन्त्री बनाकर दलित-पिछडा को सम्मान दिया। गुजरा का खयाल कर चो जगबीर सिह गुजर का बिना एम एल ए बन छह माह क लिए मत्री बनाया।

राष्ट्रीय गुजर प्रतिनिधि सम्मेलन मे बसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष काशीराम न कहा था, "दश-भर मे घूमते हुए बहुत लोगो के ख्यालात सुनता रहा हूँ। उनका क्या दुख-तकलीफ हे, उन्हे क्या मिलना चाहिए ओर क्या मिला ह, इस बारे म भी सुनन को मिला। देश-भर मे जब ऐसे लोगो की दुख-तकलीफ की बाते सुनना हूँ ता साचता हूँ कि ये कितने लोग हे। चाहे गुर्जर समाज हे या गडरिया समाज, पाल बघल समाज के लोग मुझे बार-बार कहते थे कि 1952 से चुनाव हो रहा हे लकिन आज तक किसी गडरिए को असेम्बली का मुँह दखने को नही मिला हे। इसी तरह स मुझे बहुत सी जातियो के बारे मे सुनने को मिला तो मैने उन सबको इकट्ठा करके दखन की कोशिश की तो मुझे ऐसे लगा कि ये तो बहुत ज्यादा लोग हे, इन सबको मिला दिया जाए। मेने इनको गिनना शुरू किया तो देखा कि ये तो 100 म से 85 लोग है। यानी इस देश की आबादी का 100 मे से 85 जिनकी दुख-तकलीफ एक जसी ही हे।"

शासन-प्रशासन मे भागीदारी के लिए तैयार हो

बसपा के सुप्रीमो काशीराम कहते है, "1984 मे पार्टी बनाने के बाद हमने 1985 मे पहला चुनाव लडा ओर दूसरा 1989 मे, तो दूसरे चुनाव मे ऐसे बिरादरी क (पाल-बघेल व कुम्हार) उम्मीदवार जीतकर आए, जिनको कभी असेम्बली का मुँह देखने को नही मिला। 1993 मे जब चुनाव हुआ तो ऐसे लोग जिनको कोइ पार्टी टिकट नही देती थी या बहुत कम टिकट देती थी, ऐसे लोगो के 11 विधायक बहुजन समाज पार्टी की तरफ से चुनकर आए। ऐसे लोगो की पार्टी का नाम हमने बहुजन समाज पार्टी नाम रखा। बहुजन समाज पार्टी अकेले कोइ काशीराम (अपने बारे मे कहते हुए) की पार्टी नही है, यह ऐसे लोगो की पार्टी हे जिनको किसी ने नही पूछा।"

इसी अवसर पर बहुजन समाज पार्टी के सुप्रीमो काशीराम ने कहा था कि देश-भर मे ऐसी 6 हजार जातियाँ है, जिनमे हम लोगो को बाँटा गया। बँटे रहने के कारण हम लोग हजारो साल से कमजोर रहे। हम लोगो ने इन सबको इकट्ठा करना शुरू किया। इकट्ठा करने के बाद सोचने को मिला कि पिछडो को तो अनुसूचित जाति/जनजाति की तुलना मे भी बहुत कम और न के बराबर ही शासन-प्रशासन

मे हिस्सा मिला है। बाबा साहेब के सघर्षो के कारण अनुसूचित जाति/जनजाति के लोगो को अँग्रेजो के राज मे ही अधिकार हासिल हुए, लेकिन इनके अलावा दूसरे अन्य पिछडे वर्ग के लोगो (ओ बी सी) को उनके अधिकार आज तक नही मिल पाए। शासन ओर प्रशासन मे पिछडो का हिस्सा नगण्य हे।

उन्होने अपने भाषण मे कहा था, "जिन लोगो की शासन ओर प्रशासन मे भागीदारी नही होती हे वे जिदगी के हर पहलू मे पिछडकर रह जाते है, क्योकि शासन ओर प्रशासन हुकूमत के दो अग हे, जिनका हुकूमत मे हिस्सा नही होता है वैसी बिरादरिया जिदगी के दूसरे पहलू मे भी अपना हक हासिल नही कर मकते।"

इस बारे मे हम आम आदमी की स्थिति का भी जायजा ले। आम आदमी की धारणा यह थी कि दलित समाज के अधिकाश नेता उजाले ओर चेतना के प्रतीक और प्रेरक थे। उनकी राजनतिक कार्यवाहियो, रैली, जलसो मे दिए गए भाषणो पर अम्बेडकरवादियो के बीच बहस हुआ करती थी। उनके सघर्षपूण आदोलनो की प्रशसा की जाती थी। नई सदी ने उन पर शोध और विश्लेषण करने की सामग्री उपलब्ध कराई। मिथक, अस्मिता ओर पहचान के सवालो से अलग हटकर उन पर नए सिरे से बहसे शुरू हुइ। नए तरह के सवाल खडे हुए। राजनीति की परिभाषा बदलने लगी। शायद आजादी से पूर्व विकट और विषम परिस्थितियो मे वेसा नही था। इस तरह की सोच आजादी के बाद दलित नेताओ की बनती चली गई। इसका कारण यह भी हो सकता है कि तब पाने के लिए बहुत-कुछ उपलब्ध नही था और बाद के दिनो मे सत्ता से प्राप्ति ही प्राप्ति थी। सुविधाओ और अवसरो की उपलब्धता ने अधिकाश दलित नेताओ के सामाजिक ओर राजनैतिक दर्शन मे बदलाव किया। उनके भीतर महत्त्वाकॉक्षाओ के उभरने का परिणाम था कि अपने ही समाज और जातियो के आथिक सकट से जूझते हुए लोगो को गरियाते हुए वही हाशिए पर ही पडे रहने दिया जाए और स्वय को सत्ता के केद्र मे रखने या रहने के लिए प्रयासरत रहा जाए। दलित राजनीति की यात्रा के सूत्र तो लगभग यही कहते है।

वैसे दलित राजनीति की एक खास स्थिति भी रही। बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के नेतृत्व मे स्वतत्रता सघर्ष के दौर मे और बाद मे भी दलित राजनीति की एक अलग पहचान ओर रणनीति बनी थी। आजादी के बाद जो बराबर विकसित भी होती रही थी—भले ही इस सफर मे उसने कई रास्ते बदले हो और कई सूरते धारण की हो। पूरे देश मे दलित राजनीति का दबदबा रहा। इसका खास कारण यह रहा कि उन दिनो दलित राजनीति पर अम्बेडकरी आदोलन का प्रभाव अधिक रहा। तब तक आदोलन प्रमुख था और राजनीति दूसरे नबर पर। दलित समाज के लोगो के बीच चेतना लाना तथा उन्हे उनके मूलभूत अधिकार दिलाना मकसद था।

डॉ अम्बेडकर ने एक अलग तरह की राजनीतिक व्यवस्था का सपना देखा था। एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था, जहॉ हमे केवल वोट डालने का ही अधिकार

न हो, बल्कि ससद और विधि मडलो मे अपने समाज के प्रतिनिधिया को भेजने का अधिकार भी हो। और उन प्रतिनिधियो को केवल वहॉ की चर्चा मे भाग लेने का ही अधिकार नही होना चाहिए, उन्हे वहॉ निर्णय लेने का भी अधिकार हो।

उन्होने 12 जून, 1951 को बम्बई मे अपने भाषण के दौरान कहा भी था "कि सारी सामाजिक प्रगति राजनीतिक सत्ता पर निभर करती हे। राजनीतिक सत्ता सामाजिक प्रगति का द्वार ह। यदि अनुसूचित जातियॉ अपने-आपका एक तीसरी पार्टी के रूप मे सगठित कर ले और कॉग्रेस तथा सोशलिस्ट दोनो विरोधी पार्टिया के बीच एक तीसरी ताकत बन जाएँ तो वे इस राजनीतिक सत्ता को प्राप्त कर अपनी मुक्ति का द्वार खोल सकती है।"

इस के लिए योग्य नेताओ की जरूरत थी। हालॉकि योग्य नेता हुए भी ओर उन्होने समाज की बेहतरी के लिए प्रतिबद्धता से कुछ किया भी पर बहुत कम समय तक यह स्थिति रही। फिर तो मौसम के जैसे नेता बदलते गये, जिनमे अधिकाश अयोग्य हुए और चाटूकार भी। उन्होने सुविधाओ से रिश्ते बनाए न कि सामाजिक न्याय के पवित्र दर्शन से। राजनीति मे ऐसे ही नेताओ की घुसपैठ अधिक हुइ। जिन्होने अपने जैसे और अपने से भी गये बीते लोगो को राजनीति मे आने के लिए प्रेरित किया।

एक बार अपने साक्षात्कार में बुद्धप्रिय मौर्य ने कहा था, इदिरा जी की हत्या के बाद राजनीति में काशीराम फैक्टर उभरा है और बुद्धप्रिय मोर्य को हरेक ने रगडा है। जब बुद्धप्रिय मौर्य रगडा जाएगा तो काशीराम जैसे लोग पैदा होंगे। इस बात से उनकी वेदना प्रकट होती हे और उनके भीतर का आक्रोश भी उभरता हे। ऐसे व्यक्ति का आक्रोश फूटना लाजमी है जो साठ के दशक मे जुझारू नेता के रूप मे जाना जाता था। बल्कि सत्तर के दशक तक उनका वही तेवर बरकरार रहा था। पर बी पी मोर्य न अलादीन का चिराग थे और न काशीराम जिन। यह बात अपने आप मे सही है कि बुद्धप्रिय मौर्य को रगडने से काशीराम पैदा हुए, लेकिन देखने वाली बात यह है कि काशीराम ने मौर्य जी को या कॉग्रेस के आलाकमान को अपनी राजनीति के शुरुआती दिनो मे यह नही कहा, 'मेरे आका क्या हुक्म ह?' बल्कि उन्होने मौर्य जी की थकी हुई और ठहरी हुई राजनीति को अपनी नई शली मे ऊर्जा देने के लिए सघर्ष आरभ किया। काशीराम के पास अपना अलग चितन था और पुराने नेताओ की हार के सबक या अनुभव भी। उन्होने सपूर्ण देश मे दलित को बहुजन से जोडा और बहुजन राजनीति की नए सिरे से शुरुआत की। इसे राजनीति का आविष्कार भी कहा जा सकता है। दलित से बहुजन के गजनैतिक दशन को लोगो ने अपनाया।

बकौल बुद्धप्रिय मौर्य बाबा साहेब अम्बेडकर हम लोगो के बीच ऐसे ही थे जिस तरह से एक जमाने मे तथागत गौतम बुद्ध थे। हम अपने को उनके अनुयायी

मे हिस्सा मिला है। बाबा साहेब के सघर्षो के कारण अनुसूचित जाति/जनजाति के लोगो को अँग्रेजो के राज मे ही अधिकार हासिल हुए, लेकिन इनके अलावा दूसरे अन्य पिछडे वग के लोगो (ओ बी सी) को उनके अधिकार आज तक नही मिल पाए। शासन ओर प्रशासन मे पिछडो का हिस्सा नगण्य है।

उन्होने अपने भाषण मे कहा था, ''जिन लोगो की शासन और प्रशासन मे भागीदारी नही होती हे वे जिदगी के हर पहलू मे पिछडकर रह जाते हे, क्योकि शासन ओर प्रशासन हुकूमत के दो अग हे, जिनका हुकूमत मे हिस्सा नही होता है वैसी बिरादरिया जिदगी के दूसरे पहलू मे भी अपना हक हासिल नही कर मकते।''

इस बारे मे हम आम आदमी की स्थिति का भी जायजा ले। आम आदमी की धारणा यह थी कि दलित समाज के अधिकाश नेता उजाले और चेतना के प्रतीक और प्रेरक थे। उनकी राजनेतिक कार्यवाहियो रैली, जलसो मे दिए गए भाषणो पर अम्बेड्करवादियो के बीच बहसे हुआ करती थी। उनके सघर्षपूण आदोलनो की प्रशसा की जाती थी। नई सदी ने उन पर शोध और विश्लेषण करने की सामग्री उपलब्ध कराइ। मिथक, अस्मिता और पहचान के सवालो से अलग हटकर उन पर नए सिरे से बहसे शुरू हुइ। नए तरह के सवाल खडे हुए। राजनीति की परिभाषा बदलने लगी। शायद आजादी से पूर्व विकट और विषम परिस्थितियो मे वैसा नही था। इस तरह की साच आजादी के बाद दलित नेताओ की बनती चली गई। इसका कारण यह भी हो सकता है कि तब पाने के लिए बहुत-कुछ उपलब्ध नही था और बाद के दिनो मे सत्ता से प्राप्ति ही प्राप्ति थी। सुविधाओ और अवसरो की उपलब्धता ने अधिकाश दलित नेताओ के सामाजिक ओर राजनैतिक दर्शन मे बदलाव किया। उनके भीतर महत्त्वाकॉक्षाओ के उभरने का परिणाम था कि अपने ही समाज और जातियो के आथिक सकट से जूझते हुए लोगो को गरियाते हुए वही हाशिए पर ही पडे रहने दिया जाए और स्वय को सत्ता के केद्र मे रखने या रहने के लिए प्रयासरत रहा जाए। दलित राजनीति की यात्रा के सूत्र तो लगभग यही कहते है।

वैसे दलित राजनीति की एक खास स्थिति भी रही। बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के नेतृत्व मे स्वतत्रता सघष के दौर मे और बाद मे भी दलित राजनीति की एक अलग पहचान ओर रणनीति बनी थी। आजादी के बाद जो बराबर विकसित भी होती रही थी—भले ही इस सफर मे उसने कई रास्ते बदले हो और कई सूरते धारण की हो। पूरे देश मे दलित राजनीति का दबदबा रहा। इसका खास कारण यह रहा कि उन दिनो दलित राजनीति पर अम्बेडकरी आदोलन का प्रभाव अधिक रहा। तब तक आदोलन प्रमुख था ओर राजनीति दूसरे नबर पर। दलित समाज के लोगो के बीच चेतना लाना तथा उन्हे उनके मूलभूत अधिकार दिलाना मकसद था।

डॉ अम्बेडकर ने एक अलग तरह की राजनीतिक व्यवस्था का सपना देखा था। एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था, जहॉ हमे केवल वोट डालने का ही अधिकार

न हो, बल्कि ससद और विधि मडलो मे अपने समाज के प्रतिनिधियो को भेजने का अधिकार भी हो। और उन प्रतिनिधियो को केवल वहॉ की चर्चा मे भाग लेने का ही अधिकार नही होना चाहिए, उन्हे वहॉ निर्णय लेने का भी अधिकार हो।

उन्होने 12 जून, 1951 को बम्बई मे अपने भाषण के दौरान कहा भी था "कि सारी सामाजिक प्रगति राजनीतिक सत्ता पर निभर करती हे। राजनीतिक सत्ता सामाजिक प्रगति का द्वार ह। यदि अनुसूचित जातियॉ अपने-आपका एक तीसरी पार्टी के रूप मे सगठित कर ले और कॉग्रेस तथा सोशलिस्ट दोनो विरोधी पार्टिया के बीच एक तीसरी ताकत बन जाएँ तो वे इस राजनीतिक सत्ता को प्राप्त कर अपनी मुक्ति का द्वार खोल सकती है।"

इस के लिए योग्य नेताओ की जरूरत थी। हालॉकि योग्य नेता हुए भी ओर उन्होने समाज की बेहतरी के लिए प्रतिबद्धता से कुछ किया भी पर बहुत कम समय तक यह स्थिति रही। फिर तो मौसम के जैसे नेता बदलते गये, जिनमे अधिकाश अयोग्य हुए और चाटूकार भी। उन्होने सुविधाओ से रिश्ते बनाए न कि सामाजिक न्याय के पवित्र दर्शन से। राजनीति मे ऐसे ही नेताओ की घुसपैठ अधिक हुइ। जिन्हाने अपने जैसे और अपने से भी गये बीते लोगो को राजनीति मे आने के लिए प्रेरित किया।

एक बार अपने साक्षात्कार में बुद्धप्रिय मौर्य ने कहा था, इदिरा जी की हत्या के बाद राजनीति में काशीराम फैक्टर उभरा है और बुद्धप्रिय मौर्य को हरेक ने रगडा है। जब बुद्धप्रिय मौर्य रगडा जाएगा तो काशीराम जैसे लोग पैदा होंगे। इस बात से उनकी वेदना प्रकट होती है और उनके भीतर का आक्रोश भी उभरता हे। ऐसे व्यक्ति का आक्रोश फूटना लाजमी है जो साठ के दशक मे जुझारू नेता के रूप मे जाना जाता था। बल्कि सत्तर के दशक तक उनका वही तेवर बरकरार रहा था। पर बी पी मौर्य न अलादीन का चिराग थे और न काशीराम जिन। यह बात अपने आप मे सही है कि बुद्धप्रिय मौर्य को रगडने से काशीराम पैदा हुए, लेकिन देखने वाली बात यह है कि काशीराम ने मौर्य जी को या कॉग्रेस के आलाकमान को अपनी राजनीति के शुरुआती दिनो मे यह नही कहा, 'मेरे आका क्या हुक्म हे?' बल्कि उन्होने मौर्य जी की थकी हुई और ठहरी हुई राजनीति को अपनी नई शेली मे ऊजा देने के लिए सघर्ष आरभ किया। काशीराम के पास अपना अलग चितन था और पुराने नेताओ की हार के सबक या अनुभव भी। उन्होने सपूर्ण देश मे दलित को बहुजन से जोडा और बहुजन राजनीति की नए सिरे से शुरुआत की। इसे राजनीति का आविष्कार भी कहा जा सकता है। दलित से बहुजन के गजनैतिक दर्शन को लोगो ने अपनाया।

बकोल बुद्धप्रिय मौर्य बाबा साहेब अम्बेडकर हम लोगो के बीच ऐसे ही थे जिस तरह से एक जमाने मे तथागत गौतम बुद्ध थे। हम अपने को उनके अनुयायी

कहते ह। हमने बाबा साहेब अम्बेडकर तो बनना चाहा, लेकिन उस तरह की क्षमता, योग्यता, चितन हम लोग अपने मे पैदा नही कर पाए। इसका नतीजा यह निकला कि हममे स कोइ दबा, हममे से कोई बिका, कोई टूटा और कोई गलत रास्ते पर चला गया। जो नेतृत्व बाबा साहेब अम्बेडकर के द्वारा शोषित, पीडित, दलितो को मिल रहा था, उनके चले जान के बाद वह नेतृत्व छिन्न-भिन्न हो गया। हममे से एक बी सी काबले थ। वे 1957 मे जनरल सीट पर सासद चुने गए थ। बाबा साहेब की तरह उठन लगे, बठने लगे और उन्ही की तरह बात करने लगे। बाद मे उन्होने अपनी अलग रिपब्लिकन पार्टी ही बना डाली। बाबा साहेब के बाद हम लोगो मे इतनी क्षमता नही थी कि उनकी दी हुइ अमानत को हम ठीक नेतृत्व दे सके।

वमे दलित राजनीति मे बी पी मोर्य के सामाजिक सरोकारो का अध्ययन और विश्लेपण किया जाए तो सत्तर के दशक के शुरुआती वर्षो मे वे स्वय सघर्षपूर्ण आदोलन स अलग हाकर कॉग्रेस के साथ सत्ता की राजनीति से जुड गए थे। यह उनके विराट चितन से फिसलने का युग था। बावजूद उनके भीतर दमखम अभी शेष था। वे दलित राजनीति के ऊजावान बडे कद के स्वाभिमानी नेता थे। दलित समाज से होते हुए भी व सामान्य चुनाव क्षेत्र से चुनाव लडते रह, यह उनकी राजनैतिक विशेषता थी। जो इस बात को साबित करता हे कि राजनीति मे आरक्षण जैसी बैसाखी के वे बिल्कुल भी समथक नही थे।

बुद्धप्रिय मोय का जीवन राजनैतिक घटनाओ से ओतप्रोत रहा है। हम उन घटनाओ या दुघटनाओ की चर्चा इस अध्याय मे नही करेगे, पर उन तत्कालीन राजनेतिक परिस्थितियो का जिक्र अवश्य ही करना चाहेगे, जिनके कारण मोर्य जी को कॉग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव पद से नवाजा गया। उनमे पहला कारण तो रहा। डायलिसिस' पर पडी राव सरकार को उबारना ओर दूसरा उद्देश्य उत्तर प्रदेश मे बहुजन समाज पार्टी के बढते वचस्व को कम करना। राजनेतिक दृष्टि से देखा जाए तो दोनो ही मतव्य महत्त्वपूर्ण थे। मौर्य जी के महासचिव बनने से कॉग्रेस मजबूत होगी, ऐसे कयास उन दिनो राजनैतिक गलियारो मे लगाए जा रहे थे। काग्रेस हाईकमान उनकी नियुक्ति से पूणत सतुष्ट थी। हालॉकि दलित वर्ग से ही महाराष्ट्र के सुशील कुमार शिन्दे भी कॉग्रेस की राष्ट्रीय कार्यकारिणी मे थे, पर उनका वजूद कुछ खास नही था। उत्तर प्रदेश की राजनीति पर उनका कोई विशेष प्रभाव नही था। महाराष्ट्र की दलित राजनीतिक से बतौर उन्हे 'शो पीस' के रूप मे रखा हुआ था। वे दिखावटी दलित नेता रहे है और दलितो को खुश रखने मे माहिर भी थे। ऐसा महाराष्ट्र के ही कुछ राजनेतिक चितको का मानना था।

मोर्य जी ने स्वीकार किया कि दलित-पिछडो का विश्वास कॉग्रेस के प्रति कम हुआ हे। इसके दो प्रमुख कारण रहे है। पहला यह कि कॉग्रेस हाइकमान आजादी के बाद दलितो को नेतृत्व देने मे सफल नही हो सका है। साथ ही दूसरा और प्रमुख

कारण यह रहा कि काग्रेस जब दलित और हरिजन उम्मीदवार का चुनाव करती हे तो लडाकू और जुझारू दलित नेताओ को मोका नही दिया जाता, बल्कि उम्मीदवार के रूप मे 'जी हा, 'जी बास' और 'यस सर' वालो को प्राथमिकता देती हे। उत्तर प्रदेश और बिहार इसके जीते जागते उदाहरण है। मोय जी ने अन्य राज्यो क दलित नेताओ और उनसे कॉग्रेस हाईकमान के राजनेतिक रिश्ते की बात नही की। हा सकता है वहाॅ भी स्थिति एसी ही हो।

मोर्य जी को कॉग्रेस हाइकमान ने दोबारा 90 क दशक क मध्य मे जब लिया था तब उत्तर प्रदेश मे भाजपा और बसपा का हनीमून खत्म हा गया था आर उसके दु खद परिणाम आने लगे थे। हालॉकि अन्य दलित नेताओ महावीर प्रसाद आर मीरा कुमार को आरभ मे बीएसपी को डाउन करने के उद्देश्य से ही इस मुहिम पर लगाया गया था, लेकिन वे अपने इस काय मे असफल हुए ओर उस अभियान को वसा अजाम नही दे सके जेसा कॉग्रेस के आला नेताओ ने सोचा था। फिर एक नए सेनापति की खोज की और मोय जी को यह काय सोपा गया।

इसी काय को अजाम देने के लिए नम्बर, 1995 म ग्वालियर क मोरखी प्रागण मे दलित एकता एव सद्भावना सम्मेलन भी आयोजित किया गया। कुछ लोगा का मानना था कि कॉग्रेस द्वारा आयोजित यह सम्मेलन कुछ दिनो पूव ही बहुजन समाज पार्टी द्वारा किए गए 'ज्योतिबा फुले मेला' का जवाब था। इसमे बीपी मोय को विशेप अतिथि के रूप मे आमत्रित किया गया था। ग्वालियर मे ही इसस पूव हरियाणा के पूर्व मत्री और सिधिया खेमे के कॉग्रेसी नेता डा कृपाराम पूनिया को भी बुलाया गया था। 1962 मे पूनिया जी जब एयरफोस सिलेक्शन बोड मे थे ता उनकी पास्टिग ग्वालियर मे थी। बाद मे उन्होने आइ ए एस किया ओर पजाब, हरियाणा मे विभिन्न पदो पर रहे। 1987 मे देवीलाल के बेटं ओमप्रकाश चोटाला से उनका विवाद हुआ ओर इस्तीफा देकर वे कॉग्रेस मे आ गए। हरियाणा मे वे चॉदराम के बाद के दलित नेता रहे है। चॉदराम 1977 मे केद्र सरकार मे मत्री भी रहे।

वष 1995 उत्तर प्रदेश मे चुनाव की तयारी का था ओर वष 1996 चुनाव का। कॉग्रेस हाईकमान के द्वारा तमाम तरह के सेनापति तथा सना नायको को इकट्ठा करने के बावजूद बी एस पी का कुछ विशेष नही बिगडा था। हालॉकि चुनाव से पूर्व शासकीय तथा प्रशासकीय स्तर पर बहुत तेयारी की गइ थी।

कॉग्रेस की इसमे महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उसके क्षत्रपो ने कोइ कोर कसर नही छोडी थी। इसे बहुजन समाज की राजनीति का द्वद्व ही कहा जाएगा कि दो सप्ताह की अनिश्चितता के बाद प्रदेश मे आखिरकार राष्ट्रपति शासन लागू हो गया तो कॉग्रेस हाइकमान के निर्देश पर कॉग्रेस कायकर्ताओ ने बसपा के खिसकते जनाधार को समेटने के लिए अपनी गतिविधियॉ तेज कर दी।

तत्कालीन कॉग्रेस महासचिव बी पी मोय के लिए यह परीक्षा की घडी थी।

बसपा सुप्रीमो काशीराम की नरसिहा राव से बढती नजदीकी से वे परेशान थे। वे किसी भी स्थिति मे काशीराम से समझौता नही करना चाहते थे। यही वजह थी कि जब केद्रीय समाज कल्याण मत्री सीताराम केसरी ने बसपा सुप्रीमो को हीरो करार दिया तो उन्होने दिल्ली मे रहने के लिए प्रशिक्षण स्कूल खोलने की सलाह दे डाली।

राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद गाजियाबाद जिले मे होने वाली जनसभा के लिए भीड जुटाने मे मशीनरी को जुटाया गया। यहॉ तक कि तत्कालीन जिलाधिकारी बी पी नीलरत्न को निर्देश दिया गया कि वह भीड जुटाने मे कॉग्रेस नेताओ की मदद करे।

बी पी मोय ने अति उत्साह मे एक सवाददाता से टेलीफोन पर बातचीत मे कहा "कि बसपा सिफ एक पुरुष व महिला की पार्टी थी, जो अब नही रही। उसका अस्तित्व खत्म हो गया।"

उधर जहॉ एक ओर काग्रेस नेता बसपा का जनाधार खिसकाने मे लगे थे, वहॉ बसपाइ 5 नवबर को होने वाली अपनी रैली को सफल बनाने मे जुटे थे। देखा गया कि तब रामविलास पासवान भी इस राजनैतिक अवसर को छोडना नही चाहते थे। उसी दिन उन्होने भी दिल्ली मे जनता दल की रैली का आयोजन किया था। बसपाईयो न अपनी रेली का नाम रखा था बहुजन समाज सावधान।

यूॅ बहुजन समाज सावधान था ओर किकत्तत्यविमूढ भी। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि वह किससे सावधान रहे और किससे हाथ मिलाए। और अपने तमाम प्रयासो के बाद भी इनके विरोध म नरसिहराव सरकार को काशीराम से समझौता करना पडा था। यह इतिहास के सुखद ओर दु खद दोनो ही तरह के परिणाम थे।

यह बात गोर करने लायक है कि काशीराम से पहले के दलित नेताओ के जीवन और उनमे कुछ बाते समान दिखती है। काशीराम की ही भॉति कई दलित नेता परिस्थितिवश कही न कही और कुछ न कुछ आम दलित से कुछ बेहतर हालात मे दिखाइ दते है। इसका अध्ययन करना जरूरी है। उदाहरण के लिए, बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के पिता परपरागत काम के बजाय फौज मे सूबेदार थे। जगजीवन राम के पिता और चाचा दोनो ही भारतीय सेना मे थे। तनख्वाह से होने वाली बचत के जरिए उन्होने जमीन खरीदी और जब बाबूजी के बचपन मे पिता का देहात हुआ तो उनके पास 17 एकड जमीन थी। जबकि बी पी मौर्य के पिता मजदूरी करते थे।

बकौल अभय कुमार दुबे यद्यपि दलितो से सिख बने परिवारो को जाट सिखो ने पजाब मे अपने बराबर महत्त्व कभी नही दिया, फिर भी काशीराम को सामाजिक तौर पर दमनकारी माहौल नहीं झेलना पडा।

ओलीवर मेडलसन ने दलित नेताओ के एक अध्ययन मे पाया कि अनुसूचित जातियो से होने वाले 20 सासदो और 12 विधायको मे से अधिकाश को जीवन

के शुरुआती दौर मे दूसरे दलितो की तुलना मे सयोग से यह फायदा मिलता दिखाइ देता है। मेडलसन का दिलचस्प अध्ययन बताता है कि एक दुधारू गाय स लेकर जमीन के मामूली टुकडे ओर फोज की नोकरी तक ने इन दलित नेताओ के शुरुआती जीवन मे निणायक भूमिका निभाई। इन जरियो से हुई मामूली सी अतिरिक्त आमदनी से उन्हे शिक्षित होने का मोका मिला, जिससे वे आगे चलकर लोक जीवन मे भागीदारी करने की परिस्थितियो का लाभ उठा सके।

निश्चित रूप से काशीराम के बचपन और युवावस्था के बीच का अतर दलिता द्वारा धर्म परिवतन के जरिए सामाजिक हैसियत बेहतर करने के नितात सीमित परिणामो की ओर इशारा करता है। काशीराम का बचपन सामान्य था, पर युवावस्था मे उनके भीतर अनेक तरह के उद्वेलन जन्मे थे। टकराव और सघष की आदोलनकारी प्रवृत्ति की शुरूआत यही से हुइ। जिसने बाद के दोर मे स्वय उनके जीवन ओर दलितो के जीवन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बसपा मे कहे या दलित राजनीति मे काशीराम की उपस्थिति निश्चित ही दबदबे के रूप मे रही। वे अन्य दलित नेताओ से भिन्न थे। परपराओ ओर राजनेतिक शेली का अतर था। 1994 आते-आते पत्रकारो को ही नही उत्तर प्रदेश के मुख्यमत्री मुलायम सिह यादव तक को यह पीडा सालती रही कि उनसे मिलने के लिए एक मुख्यमत्री को भी समय लेना पडता हे। भारत के सबसे बडे सूबे के सदर के ये शब्द काशीराम की बढती हुई ताकत और महत्त्व के सबूत रहे है।

बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओर उत्तर प्रदेश क इटावा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से सासद काशीराम को प्रेस ही नही राजनीतिक गलियारो मे भी उत्तर प्रदेश का सुपर सी एम माना जाता था। खुद काशीराम कहते थे कि **मुलायम मुझसे पूछकर ही कोई बडा कदम उठाता है ओर किसी भी नेता के सामने न झुकने वाले लोहियावादी अक्खड मुलायम सिह कहते है, "सिर पर उनके बरदहस्त की जरूरत है। हम सदियो से दबे-कुचले समाज की काया पलट कर देगे।"**

केवल एक दशक की राजनीति मे ही काशीराम की गिनती देश के पहली कतार के शीर्ष नेताओ मे होने लगी थी। 60 वर्षीय विज्ञान से स्नातक दलितो के इस 'नए मसीहा' को अपनी बढती ताकत का खुद भी अहसास था और इस ताकत का खुमार भी। उन पर दिसबर, 1994 तक 120 आवरण कथाएँ छप चुकी थी। पत्रकारिता जगत मे यह एक नया कीर्तिमान था।

एक बार उन्होने कहा था, "यहॉ से (12 गुरुद्वारा रकाबगज रोड नइ दिल्ली) साउथ ब्लाक (प्रधान मत्री कायालय) महज एक किलोमीटर हे। अगले झटके मे यह नीला परचम (बसपा का झडा) साउथ ब्लाक मे ही फहरेगा।" उन्होने यह भी कहा था, "हाथो से (कॉग्रेसी चुनाव चिह्न), फूलो से (भाजपाई चुनाव चिह्न) हाथी (बसपा की चुनाव चिह्न) को नही रोका जा सकता। वह अपनी मजिल पर जाकर ही दम

लेगा और वह मजिल अब बेहद नजदीक है।" काशीराम का आकलन था, 'वह अगर 1995 तक नही तो 1998-99 तक देश के प्रधानमत्री होगे।" इनका आकलन सही सिद्ध न हो सका। हालाकि केन्द्र की पिछली एक सरकार मे उन्हे उपप्रधान मत्री का पद देने की बात की गइ थी, जिसे उन्होने ठुकरा दिया था।

अभय दुबे लिखते है कि 1978 मे बामसेफ की स्थापना से लेकर 1991 म बसपा द्वारा लोकसभा चुनाव लडे जाने तक काशीराम के राजनीतिक जीवन मे सब कुछ नियोजित विधि से चलता रहा। न उनके सगठन मे कोई फूट पडी, न उसक नेतृत्व के खिलाफ कोई खास आवाज उठी और न ही गुजरे जमाने के दलित नेता उन्हे चुनोती दे पाए। उनके ऊपर सीआइए का ऐजेट होने और बडी पार्टियो से खुफिया समझोते करने के आरोप जरूर लगे लेकिन काशीराम ने उनका सामना अपने चुनाव चिह्न हाथी के समान धेय से ही किया। इस समय तक उनका मुख्य कार्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश ओर पजाब था। चुनावो से ठीक पहले काशीराम ने अपने कार्यक्षेत्र को इस प्रकार परिभाषित किया कि वे " उत्तर प्रदेश और बिहार व मध्य प्रदेश के सीमाई इलाको मे सक्रिय हे। पजाब अपने आप विकसित हुआ और उसका असर लगे हुए हरियाणा के इलाको पर पडा। हमने दिल्ली और उसके आसपास सौ किमी के दायरे मे जानबूझकर नीची प्राथमिकता दी। हम दिल्ली आधारित पार्टी नही बनाना चाहते थे।"

वह सब वेसा ही चलता रहा जैसा पार्टी सुप्रीमो चाहते थे। पार्टी पर उनकी पकड पहले जैसी ही थी। सगठन और नीतियो के सवालो से अधिक पार्टी कार्यकताओ के भीतर आदोलन रचा बसा था। वे केवल आगे बढना चाहते थे। ठहराव मे उनकी रुचि न थी। इस प्रकार 1991 तक काशीराम दलित, पिछडो और अल्पसख्यको के बीच जमकर काम करने ओर अपनी राष्ट्रीय पहलकदमियो के बीच उचित सतुलन कायम रख पाए। लेकिन 1989 और 1991 के बीच देश का राजनीतिक माहौल काफी बदल गया।

अब तक मुलायम सिह स चुनावी समझौते के सवाल पर बसपा के कुछ साथियो मे असतोष की सुगबुगाहट होने लगी थी। वैसे यह असतोष दोनो ही तरफ था। स्पष्ट शब्दो मे कहा जाए तो बसपा और सपा के राजनैतिक कार्यकर्ताओ के बीच घात प्रतिघात होने लगे थे।

युवा चितक कवल भारती के विचार मे बसपा का विभाजन सत्ता की महत्वाकॉक्षाओ का परिणाम नही है और न इसके मूल मे मायावती से असतोष का कारण है। सच्चाई यह हे कि यह विभाजन जातिवाद की बुनियाद पर हुआ है। भारत के नीतिशास्त्र पर जाति का दुखद प्रभाव है। इसे डॉ अम्बेडकर ने बहुत नजदीक से अनुभव किया था। इसलिए उनका यह कथन आज भी व्यावहारिक सत्य है कि सारी करुणा, सारी मैत्री और सारी सवेदनाएँ जाति से आरभ होती है और जाति पर समाप्त होती है। सहानुभूति है, पर अपनी ही जाति के प्रति। ब्राह्मण ब्राह्मण

को ही नेता मानेगा, कायस्थ कायस्थ का ही नेतृत्व स्वीकार करेगा। यही जातिवाद काशीराम के मार्ग मे सबसे बडी बाधा रही। बसपा का विभाजन पिछडो ओर मुसलमान सदस्यो की 'चमार-सत्ता' के खिलाफ ऐसी मुखर अभिव्यक्ति रही, जिससे इनकार नही किया जा सकता।

जगजीवन राम अपने लक्ष्य मे सफल नही हो सके, क्योकि वे दलितो का नेता बनने के लिए तेयार नही थे, जबकि सवण उन्हे अपना नेता मानना नही चाहता था। इसलिए कि वण व्यवस्था मे दलित का चौथा पॉचवा नबर आता हे। वेसा मुमकिन नही था ओर जो मुमकिन हुआ भी नही। काशीराम के साथ भी यही त्रासदी जुड गइ कि वे पिछडो ओर मुसलमानो का नेतृत्व करना चाहते थे। मायावती ने तो मुख्यमत्री बनने के बाद स्वय को सवजन समाज का नेता घोषित भी कर दिया था। पर सत्ता की पहली सीढी चढकर ही वह लक्ष्य उनकी ऑखो से ओझल हो गया। पिछडा आर मुसलमानो का नेता बनना या सर्वजन का नेतृत्व करना अलोकतात्रिक नही हे, पर जिस लोकतत्र मे जातितत्र हावी हो, वहा काशीराम ओर मायावती ज्यादा दूर नही जा सकते थे। जगजीवन राम इसका बेहतर ओर सटीक उदाहरण है। जब सवजन मे सवर्ण नेता मौजूद है, तो काशीराम या मायावती को मान्यता कैसे मिल सकती हे?

बहुजन समाज पार्टी मे बिखराव का यह महत्वपूर्ण कारण रहा। जाति आधारित मानसिकता के चलते हुए दलित नेतृत्व को किसी भी स्थिति मे स्वीकार नही किया जा सकता। जेसा इस देश मे हुआ भी। अगली कतार मे रह रहे लोगो के प्रति एक खास विचार पहले से ही रहा।

दिलीप अवस्थी की रपट बतलाती है कि मायावती के थोडे दिन सत्ता मे रहने से बहुजन समाज पार्टी (बसपा) को लोकसभा और उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावो मे निर्णायक ताकत बनाने का काशीराम का सपना क्या चूरचूर हो गया है? पर बसपा के सुप्रीमो ऐसा नही मानते। महज एक वर्ष मे पार्टी मे तीसरे विभाजन के बाद उन्होने बहादुरी का मुखौटा ओढते हुए काशीराम ने घोषणा की, "**जबरदस्ती एका बनाए रखने से कोई फायदा नहीं। पार्टी को मजबूत बनाने के लिए विभाजन जरूरी है।**"

विभाजन के सूत्रधार बने राज्य बसपा अध्यक्ष जग बहादुर पटेल ओर पूर्व केबिनेट मत्री रामलखन वर्मा दोनो नेता पिछडी कुर्मी जाति से है, जिन्हे बसपा मे अच्छा-खासा समर्थन मिलता रहा था। भग राज्य विधानसभा के 59 बसपा विधायको मे से 50 के समर्थन का दावा करने वाले इन नेताओ ने बहुजन समाज दल (बसद) बनाया। लेकिन मायावती का कहना था कि चार या पॉच 'पागल' विधायक ही बसद मे गए है और यह भी कि बसपा के 39 पूर्व विधायक 31 अक्टूबर को काशीराम की बैठक मे शामिल हुए थे।

विशेप रूप मे दलितो को आकर्षित करने वाली एकमात्र ताकत समझी जाती रही पार्टी के बिखराव ने राज्य के राजनैतिक माहौल को एकदम बदल दिया। पर

मुलायम की समाजवादी पार्टी (सपा) की अगुआई मे दूसरी पार्टियॉ जहॉ दलितो को लुभाने की रणनीतियॉ गढने मे लगी रही, वही काशीराम इससे विचलित नही हुए। 31 अक्टूबर को लखनऊ मे यह घोषणा करते हुए उन्होने कहा कि मायावती पार्टी की राज्य इकाई का सचालन करती रहेगी, उन्होने कहा, "पार्टी मे कुछ नाकारा लोग जमा हो गए थे। उनकी छटाई जरूरी थी।" इस पर जग बहादुर का जवाब था, "यही लोग उनकी चिता का बदाबस्त करने के लिए काफी है।"

जून, 1994 के बाद बसपा से कई बडे नेता अलग हुए है, शुरुआत तत्कालीन शिक्षा मत्री मसूद अहमद से हुई, जिन्हे काशीराम के कहने पर तत्कालीन मुख्यमत्री मुलायम सिह यादव ने मंत्रिमडल से हटा दिया था। मसूद ने दो विधायको और बसपा के कइ जिला स्तर के नेताओ के साथ पार्टी छोडी थी। फिर, 2 जून को जब मायावती ने सपा सरकार से समर्थन वापस लिया तो बसपा के कैबिनेट मत्री राजबहादुर ने नौ विधायको के साथ पार्टी का विभाजन कर दिया। राजबहादुर महत्त्वपूर्ण चमार नेता है, गौरतलब हे कि जिन दलितो का बसपा को समर्थन प्राप्त है, उनमे चमार-पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे उन्हे जाटव कहा जाता है, प्रमुख है। इस गुट को बसपा (राजबहादुर) नाम से मान्यता भी मिल गई। जुलाई मे बसपा के राज्य महासचिव और कुर्मी नेता सोनेलाल पटेल ने, जिनकी बदौलत कानपुर मे पार्टी का जनाधार था, इस्तीफा दे दिया। एक अन्य कुर्मी नेता रामदेव पटेल पिछले पखवाडे अलग हो गए।

लेकिन पार्टी का तत्कालीन विभाजन अच्छा खासा भ्रम पैदा करने वाला था, क्योकि दोनो ही पक्ष पूर्व विधायको मे बहुमत के समर्थन का दावा कर रहे थे। और सच इन दोनो दावो के बीच कहा था? इस बारे मे पार्टी के आकाओ का मुगालता था। ज्यादातर विधायक अगला कदम उठाने से पहले देखना चाहते थे कि हालात कोन-सा मोड लेते हे। इतना स्पष्ट है कि बसपा कुमियो का समर्थन खो चुकी है। पार्टी को कडे अनुशासन से चलाने वाले काशीराम के लिए विभाजनो का यह सिलसिला व्यक्तिगत आघात है। बताया जाता है कि उन्होने एक अधिकारी से कहा, "इस तरह तो इन विभाजनो का कोई अत ही नही होगा। कल मुझे हटाने की माग भी उठ सकती है।"

इस तरह बसपा मे विभाजन की जितनी रेखाए उभरी, उतने ही वैसे नेताओ के बयान भी आए। जिन्होने एक-दूसरे पर पलट वार किये। यह काफी दिनो चलता रहा।

बसपा से अलग हुए बागियो को विकल्प की तलाश

राजनैतिक जोड-तोड का विश्लेषण हमे बतलाता है कि सबसे पहले असतोष फूटा राजबहादुर के नेतृत्व मे। राजबहादुर के नेतृत्व मे दस विधायको ने पार्टी से अलग होकर बसपा (रा) गठित कर लिया। फिर बसपा सरकार के 137 दिनो के कार्यकाल मे मायावती एव उनके एकाध कृपापात्र मत्रियो के आचरण से मत्रिमडल के करीब

एक दर्जन मत्रियो मे असतोष तेजी से पनपा। बाद मे सोनेलाल पटेल को इस्तीफा देना पडा। रामलखन वर्मा बनाम आर के चौधरी, बहुजन समाज पार्टी के निष्कासित नेताओ ने बहुजन समाज दल (बसद) के नाम से एक नई पार्टी के गठन की घोषणा की। चार अन्य साथियो के साथ बसपा से निष्कासित किए गए प्रदेश अध्यक्ष जगबहादुर पटेल ने सवाददाताओ को बताया कि वह नई पार्टी के सयोजक होगे। उन्होने कहा कि फोजदार प्रसाद और सफदर रजा बसद के सह सयोजक होगे। उन्होने कहा कि बसद की कार्यकारिणी और अध्यक्ष की घोषणा 3 नवम्बर को की जाएगी।

श्री पटेल ने कहा "कि बसपा केवल मायावती की पार्टी बनकर रह गइ हे और बिना हमारा पक्ष सुने हुए काशीराम ने हमे पार्टी से निकाल दिया है। ऐसे मे हमारे सामने नया दल बनाने के अलावा कोई चारा नही था। उन्होने कहा कि हम बसपा के सिद्धातो को नही छोडेगे और अपना हर फैसला लोकतात्रिक तरीके से कार्यकर्ताओ की राय लेकर करेगे।" उन्होने दावा किया कि उनके दल मे कोई फेसला तानाशाही से नही होगा। जग बहादुर पटेल के साथ मायावती सरकार मे नबर दो की हैसियत वाले रामलखन वर्मा सहित फौजदार प्रसाद, शफदर रजा ओर अन्य नेता भी उपस्थित थे।

इस तरह बहुजन समाज पार्टी से अलग हुए घटग (राजबहादुर जगबहादुर सिह पटेल, डा मसूद अहमद एव डॉ सोने लाल पटेल) आदि मे हालाकि 'बहुजन समाज मोर्चा' बनाने के सयुक्त प्रयास की सभावना थी, पर वैसा हुआ नही। वैसे उनमे बार-बार प्रेस काफ्रेस बुलाकर चित्र खिचाने की चाहत अवश्य थी और वे वैसा ही करते रहे। पर अलग से कुछ विशेष बात हुई नही।

पूर्व मत्री फौजदार प्रसाद के दारुलसफा स्थित आवास पर कई घटे तक चली बैठक मे बसपा (आर) के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजबहादुर, बसद के राष्ट्रीय सयोजक जग बहादुर सिह पटेल, उप सयोजक सफदर रजा खा, श्रीराम यादव, लालजी यादव, नन्दलाल पटेल, फौजदार प्रसाद, उमाशकर यादव, शाकिर अली आदि प्रमुख रूप से मौजूद थे।

बैठक मे मौजूद पूर्व विधायको का कहना था कि महात्मा फुले, डा भीमराव अम्बेडकर एव शाहू जी महाराज के मिशन को बचाने तथा दलित और पिछडे वग के लोगो मे एकता के लिए सभी को एकजुट होने की जरूरत है, क्योकि आपसी एकता के बूते ही देश मे साप्रदायिक शक्तियो एव मनुवादी ताकतो से निपटा जा सकता है।

पर देखा गया कि मनुवादी ताकतो से निपटने के स्थान पर वे आपस मे ही निपटने की तैयारी करने लगे। अतत सयुक्त मोर्चा नही बन सका। बसपा से अलग हुए दलो डा मसूद अहमद (भारतीय लोकतात्रिक मोर्चा), जगबहादुर सिह पटेल (बहुजन समाज दल) एव डॉ सोने लाल पटेल (अपना दल) का अलग-अलग अस्तित्व और

मुलायम की समाजवादी पार्टी (सपा) की अगुआई मे दूसरी पार्टियाँ जहाँ दलितो को लुभाने की रणनीतियाँ गढने मे लगी रही, वही काशीराम इससे विचलित नही हुए। 31 अक्टूबर को लखनऊ मे यह घोषणा करते हुए उन्होने कहा कि मायावती पार्टी की राज्य इकाइ का सचालन करती रहेगी, उन्होने कहा, ''पार्टी मे कुछ नाकारा लोग जमा हो गए थे। उनकी छटाई जरूरी थी।'' इस पर जग बहादुर का जवाब था, ''यही लोग उनकी चिता का बदोबस्त करने के लिए काफी है।''

जून, 1994 के बाद बसपा से कई बडे नेता अलग हुए है, शुरुआत तत्कालीन शिक्षा मत्री मसूद अहमद से हुइ, जिन्हे काशीराम के कहने पर तत्कालीन मुख्यमत्री मुलायम सिह यादव ने मंत्रिमडल से हटा दिया था। मसूद ने दो विधायको और बसपा के कइ जिला स्तर के नेताओ के साथ पार्टी छोडी थी। फिर, 2 जून को जब मायावती ने सपा सरकार से समर्थन वापस लिया तो बसपा के कैबिनेट मत्री राजबहादुर ने नौ विधायको के साथ पार्टी का विभाजन कर दिया। राजबहादुर महत्त्वपूर्ण चमार नेता है, गौरतलब हे कि जिन दलितो का बसपा को समर्थन प्राप्त है, उनमे चमार-पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे उन्हे जाटव कहा जाता है, प्रमुख है। इस गुट को बसपा (राजबहादुर) नाम से मान्यता भी मिल गई। जुलाई मे बसपा के राज्य महासचिव ओर कुर्मी नेता सानेलाल पटेल ने, जिनकी बदौलत कानपुर मे पार्टी का जनाधार था, इस्तीफा दे दिया। एक अन्य कुर्मी नेता रामदेव पटेल पिछले पखवाडे अलग हो गए।

लेकिन पार्टी का तत्कालीन विभाजन अच्छा खासा भ्रम पैदा करने वाला था, क्याकि दोनो ही पक्ष पूर्व विधायको मे बहुमत के समर्थन का दावा कर रहे थे। और सच इन दोना दावो के बीच कहा था? इस बारे मे पार्टी के आकाओ का मुगालता था। ज्यादातर विधायक अगला कदम उठाने से पहले देखना चाहते थे कि हालात कोन-सा मोड लेते हे। इतना स्पष्ट है कि बसपा कुर्मियो का समर्थन खो चुकी है। पार्टी को कडे अनुशासन से चलाने वाले काशीराम के लिए विभाजनो का यह सिलसिला व्यक्तिगत आघात है। बताया जाता है कि उन्होने एक अधिकारी से कहा, ''इस तरह तो इन विभाजनो का कोई अत ही नही होगा। कल मुझे हटाने की माग भी उठ सकती है।''

इस तरह बसपा मे विभाजन की जितनी रेखाए उभरी, उतने ही वैसे नेताओ के बयान भी आए। जिन्होने एक-दूसरे पर पलट वार किये। यह काफी दिनो चलता रहा।

बसपा से अलग हुए बागियो को विकल्प की तलाश

राजनैतिक जोड-तोड का विश्लेषण हमे बतलाता है कि सबसे पहले असतोष फूटा राजबहादुर के नेतृत्व मे। राजबहादुर के नेतृत्व मे दस विधायको ने पार्टी से अलग होकर बसपा (रा) गठित कर लिया। फिर बसपा सरकार के 137 दिनो के कार्यकाल मे मायावती एव उनके एकाध कृपापात्र मत्रियो के आचरण से मत्रिमडल के करीब

एक दर्जन मत्रियो मे असतोष तेजी से पनपा। बाद मे सोनेलाल पटेल को इस्तीफा देना पडा। रामलखन वर्मा बनाम आर के चौधरी, बहुजन समाज पार्टी के निष्कासित नेताओ ने बहुजन समाज दल (बसद) के नाम से एक नई पार्टी के गठन की घोषणा की। चार अन्य साथियो के साथ बसपा से निष्कासित किए गए प्रदेश अध्यक्ष जगबहादुर पटेल ने सवाददाताओ को बताया कि वह नई पार्टी के सयोजक होगे। उन्होने कहा कि फौजदार प्रसाद और सफदर रजा बसद के सह सयोजक होगे। उन्होने कहा कि बसद की कार्यकारिणी और अध्यक्ष की घोषणा 3 नवम्बर को की जाएगी।

श्री पटेल ने कहा "कि बसपा केवल मायावती की पार्टी बनकर रह गइ है और बिना हमारा पक्ष सुने हुए काशीराम ने हमे पार्टी से निकाल दिया हे। ऐसे मे हमारे सामने नया दल बनाने के अलावा कोई चारा नही था। उन्होने कहा कि हम बसपा के सिद्धातो को नही छोडेगे और अपना हर फैसला लोकतात्रिक तरीके से कार्यकर्ताओ की राय लेकर करेगे।" उन्होने दावा किया कि उनके दल मे कोइ फेसला तानाशाही से नही होगा। जग बहादुर पटेल के साथ मायावती सरकार मे नबर दो की हैसियत वाले रामलखन वर्मा सहित फौजदार प्रसाद, शफदर रजा ओर अन्य नेता भी उपस्थित थे।

इस तरह बहुजन समाज पार्टी से अलग हुए घटग (राजबहादुर, जगबहादुर सिह पटेल, डा मसूद अहमद एव डॉ सोने लाल पटेल) आदि मे हालाकि 'बहुजन समाज मोर्चा' बनाने के सयुक्त प्रयास की सभावना थी, पर वैसा हुआ नही। वैसे उनमे बार-बार प्रेस काफ्रेस बुलाकर चित्र खिचाने की चाहत अवश्य थी और वे वैसा ही करते रहे। पर अलग से कुछ विशेष बात हुई नही।

पूर्व मत्री फौजदार प्रसाद के दारुलसफा स्थित आवास पर कई घटे तक चली बैठक मे बसपा (आर) के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजबहादुर, बसद के राष्ट्रीय सयोजक जग बहादुर सिह पटेल, उप सयोजक सफदर रजा खा, श्रीराम यादव, लालजी यादव, नन्दलाल पटेल, फौजदार प्रसाद, उमाशकर यादव, शाकिर अली आदि प्रमुख रूप से मौजूद थे।

बैठक मे मौजूद पूर्व विधायको का कहना था कि महात्मा फुले, डा भीमराव अम्बेडकर एव शाहू जी महाराज के मिशन को बचाने तथा दलित और पिछडे वर्ग के लोगो मे एकता के लिए सभी को एकजुट होने की जरूरत है, क्योकि आपसी एकता के बूते ही देश मे साप्रदायिक शक्तियो एव मनुवादी ताकतो से निपटा जा सकता है।

पर देखा गया कि मनुवादी ताकतो से निपटने के स्थान पर वे आपस मे ही निपटने की तैयारी करने लगे। अतत सयुक्त मोर्चा नही बन सका। बसपा से अलग हुए दलो डा मसूद अहमद (भारतीय लोकतात्रिक मोर्चा), जगबहादुर सिह पटेल (बहुजन समाज दल) एव डॉ सोने लाल पटेल (अपना दल) का अलग-अलग अस्तित्व और

पहचान कायम रही। जिनके रग बाद के दौर मे फीके पडते गये।

राष्ट्रीय सहारा की रपट बतलाती है कि जगबहादुर पटेल महज इसलिए चर्चा मे नही आए कि वे उत्तर प्रदेश के फूलपुर ससदीय क्षेत्र से पहली बार समाजवादी पार्टी के टिकट पर निर्वाचित हुए बल्कि मीडिया मे इस वजह से चर्चित हुए कि उन्हान एक समय के अपने राजनीतिक गुरु बसपा के सुप्रीमो काशीराम को पराजित किया हे। एक अगस्त, 1947 को राजापुर (इलाहाबाद) मे जन्मे श्री पटेल की पूरी शिक्षा इलाहाबाद मे हुइ। उन्होने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से विधि स्नातक की शिक्षा प्राप्त कर सशन कोट मे वकालत शुरू की और कुछ दिनो तक इलाहाबाद उच्च न्यायालय मे भी वकालत किया। डॉ अम्बेडकर के विचारो से प्रभावित **श्री पटेल 1967 से 1975 तक रिपब्लिकन पार्टी में सक्रिय रहे** 1979 मे उनकी मुलाकात काशीराम से हुइ ओर वह 'बामसेफ' नामक सामाजिक सस्था से जुड गए। इसी सस्था से आगे चलकर 6 दिसम्बर, 1982 को 'डी एस फोर' के नाम से नया फ्रट बना। 14 अप्रैल, 1984 मे बहुजन समाज पार्टी के गठन के बाद जगबहादुर पटेल को पार्टी की इलाहाबाद इकाइ का अध्यक्ष बनाया गया। इस पद पर वह 15 दिसम्बर, 1993 तक रहे। 1993 के विधानसभा चुनावा मे प्रदेश मे बसपा ने सपा के साथ तालमेल कर चुनाव लडा। इस चुनाव मे पार्टी ने इलाहाबाद की 14 मे से नौ सीटे जीती। इस जीत से प्रभावित होकर काशीराम ने उन्हे पार्टी की उत्तर प्रदेश इकाई का अध्यक्ष बनाया। लेकिन सपा-बसपा गठबधन टूटने से काशीराम और पटेल के बीच मनमुटाव पैदा हो गया ओर वह काशीराम से अलग हो गए। श्री पटेल कहते है, "जब मायावती सरकार सत्ता मे आइ तो मुझे केबिनेट मत्री का ऑफर मिला था, क्तिु मैने इनकार कर दिया, क्योकि शुरू से ही इस बात की आशका थी कि भाजपा मायावती सरकार को गिरा देगी ओर हुआ भी वही।" लोकसभा चुनावो मे मुलायम सिह यादव ने उन्हे फूलपुर से समाजवादी पार्टी का टिकट दिया और यही से वह लोकसभा चुनाव जीतकर ससद पहुँचे है। उनका मानना है कि काशीराम दलित राजनीति मे खत्म हो चुके हे और अब रामविलास पासवान ही दलितो के निर्विवाद नेता हो सकते है।

इस तरह के बयान उन दिनो बराबर आ रहे थे, जो अपने-अपने तर्क प्रस्तुत करना चाहते थे। वैचारिक स्तर पर वे बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के कितना नजदीक थे, इस बारे मे कुछ विशेष नही कहा जा सकता, पर इतना तो लिखा जा सकता है कि उनके बीच नेतृत्व के लिए भारी मारकाट थी। वे दलितो के हमदर्द कम थे और उनके नाम पर वोट हथिया कर अपनी धाक अधिक जमाना चाहते थे।

पिछले विधानसभा चुनाव मे पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बुदेलखड मे अपनी धाक जमाने वाली बहुजन समाज पार्टी को स्थानीय निकाय चुनाव मे भारी शिकस्त मिली। इसके विपरीत बसपा ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे कुछ हद तक सफलता हासिल की है।

इस उतार-चढाव के लिए पार्टी का तीन बार विभाजन तथा राष्ट्रीय नेतृत्व

को लेकर नेताओ मे मतभेद मुख्य कारण माना गया। पार्टी प्रमुख काशीराम के ससदीय क्षेत्र इटावा मे भी बसपा बुरी तरह पराजित हुई।

बहुजन समाज पार्टी ने स्थानीय निकाय चुनाव मे मेयर से लेकर नगर पचायत सदस्यो तक अपने प्रत्याशी उतारे थे। पार्टी नेतृत्व ने इस प्रकार का निणय प्रदश म सत्ताशीन रहते हुए लिया था, लेकिन चुनाव होते-होते बसपा के हाथ से सत्ता निकल चुकी थी।

समाजवादी पार्टी से गठबधन कर गत विधानसभा चुनाव मे बसपा ने गज्य मे 69 सीटे जीती थी। इनमे फेजाबाद से पाच, गोरखपुर से दो, आजमगढ स 6, बनारस से 5, जोनपुर से 7, देवरिया से 2 और इलाहाबाद से सवाधिक 9 सीटें शामिल थी। बलिया से दो, गाजीपुर से चार, मऊ मे चार, मिजापुर मे 3, बस्ती म एक बहराइच मे एक, सुलतानपुर मे दो, हमीरपुर मे दो, हरदोइ मे 1, सीतापुर मे 1, कानपुर (नगर) मे 1, कानपुर (देहात) मे 1, फतेहपुर मे 1, इटावा मे 1, उन्नाव मे 1, जालान मे 4 तथा बादा मे 2 स्थानो पर उसे सफलता मिली थी।

1 जून को मुलायम सरकार से समर्थन वापसी के साथ ही बसपा मे फूट की नीव पडी। अगले दिन बसपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष तथा सपा-बसपा गठबधन सरकार मे मत्री रहे राजबहादुर के नेतृत्व मे 10 विधायको ने विद्रोह कर नए दल बसपा (आर) का गठन कर किया। नए दल ने बाद मे सपा से तालमेल किया।

राजबहादुर के नेतृत्व मे हुई इस टूट ने बसपा के प्रमुख गढ पूर्वी उत्तर प्रदेश मे पार्टी के जनाधार को कमजोर किया। रही-सही कसर को बसपा के पूर्व प्रातीय अध्यक्ष जगबहादुर सिह पटेल ने अपने समर्थक करीब तीन दजन विधायको के साथ अलग होकर पूरी कर दी। पटेल स्थानीय निकाय चुनाव के लिए टिकट वितरण के दरम्यान ही बसपा से अलग हुए।

बसपा को स्थानीय निकाय चुनाव मे नगर निगम की 11 सीटो मे से एक (मेरठ) पर सफलता प्राप्त हुई है, जबकि बसपा के गोरखपुर एव वाराणसी जेसे गढा मे मेयर के अलावा ज्यादातर उम्मीदवार सभासद भाजपा के रहे। इलाहाबाद मे बसपा ने अपना प्रत्याशी उतारा था, लेकिन वह जीत नही सका। अलीगढ, मुरादाबाद, बरेली एव गाजियाबाद मे भी बसपा को पराजय मिली। आगरा मे 30 सभासदो की जीत के बावजूद बसपा अपना मेयर नही जितवा सकी। लखनऊ मे बसपा प्रत्याशी दाऊजी गुप्त तीसरे स्थान पर रहे।

इन नगर निगमो के लिए हुए सभासद (पार्षद) चुनाव मे बसपा को लखनऊ मे एक, कानपुर मे 5, इलाहाबाद मे एक, वाराणसी मे एक, गोरखपुर में दो, गाजियाबाद मे 7, अलीगढ मे 11, मुरादाबाद मे 3 स्थानो पर सफलता मिली। मेरठ मे मेयर पद पाने के बावजूद बसपा अपना कोई पार्षद (सभासद) नही जिता सकी। बरेली मे भी बसपा का एक भी सभासद नही जीता।

नगर पचायत चुनाव मे बसपा को इलाहाबाद, मऊ, बादा, कानपुर (देहात) एव जालौन मे एक-एक स्थान पर ही सतोष करना पडा। नगरपालिका परिषद् चुनाव म मिजापुर एव हरदोइ की एक-एक सीट पर बसपा को विजय मिल सकी।

फेजाबाद, गोरखपुर, आजमगढ जोनपुर, वाराणसी, गाजीपुर, देवरिया बलिया, हमीरपुर इटावा, फतेहपुर एव सुलतानपुर जनपदो मे बसपा को एक भी नगरपालिका परिषद् एव नगर पचायत अध्यक्ष सीट नही मिल सकी, जबकि इन जनपदो मे बसपा क 39 व्यक्ति पिछली विधानसभा के लिए चुने गए थे। स्वय बसपा प्रमुख काशीराम इटावा से पार्टी के सासद रहे थे।

इसके विपरीत पार्टी ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे अपने जनाधार को बढाने मे सफलता प्राप्त की हे।

बसपा न पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे बरेली, बिजनोर, आगरा, एटा, रामपुर, बुलदशहर जनपदा की एक-एक नगरपालिका परिषद् पर कब्जा किया।

इसके साथ ही मुरादाबाद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बुलदशहर, अलीगढ, मथुरा, एटा जनपदो की एक-एक नगर पचायत पर भी बसपा को सफलता मिली है।

स्थानीय निकाया के ये चुनाव किसी भी राजनेतिक पार्टी की भीतरी और बाहरी सगठन तथा बिखराव दोनो को ही रेखाकित करते हे। पाठक और शोधार्थी इसे भलीभाति समझ सकते हे। जीत ओर हार तथा इन दोनो के बीच की कश्मकस बहुजन समाज पार्टी मे भी रही। गाव आधार पर जहा दलितो को बल मिला, पार्टी से नइ ऊजा मिली वही उनके भीतर सवाल-दर-सवाल भी उभरे।

सदर्भ

- अभय कुमार दुबे आज के नता काशीराम राजकमल प्रकाशन नइ दिल्ली 1997 पृष्ठ 78
- वही पृष्ठ 79
- बहुजन सगठक नई दिल्ली 5 फरवरी 1996
- मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) के पास—कश्यप समाज सम्मेलन मे दिये गये भाषण से
- कवल भारती से रामपुर स्थित उनके निवास पर हुई बातचीत के आधार पर।
- धमयुग के विशेष अक मे दिय गये साक्षात्कार से
- राष्ट्रीय सहारा नाएडा 30 अक्टूबर 1995
- इंडिया टुडे नई दिल्ली 30 नवबर 1995 पृष्ठ 25
- वही पृष्ठ 26
- बहुजन सघष नई दिल्ली
- राष्ट्राय सहारा नोएडा 18 अक्टूबर 1995
- वही 1 नवबर 1995
- वही 5 नवबर 1995
- वही 22 जून 1995
- वही 1 दिसम्बर 199ɔ

बसपा पर बाहरी दबाव

विश्व मे प्रत्येक राजनेतिक दल का गठन लोकतात्रिक परपरा का आगे बढान के लिए हुआ हे। हालाकि अपवाद भी बहुतेरे है, लेकिन किसी विशेप पार्टी क गठन के बाद उसकी सफलता की परिस्थितियो पर जब हम विश्लेषण करत हे ता कुछ बातो का अवश्य ही ध्यान रखना पडता हे बसपा मे दूसरी पार्टिया से आने वाले दल बदलू राजनीतिज्ञो की अगर कोइ सूची तेयार की जाए, साथ ही उनक चरित्र, व्यवहार कुशलता तथा दलित समाज ओर दलित आदोलन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का जायजा लिया जाए तो यह बात निश्चित रूप मे कही जा सकती हे कि उनमे से कुछ को छोडकर अधिकाश पेशेवर नेताआ को न बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर मे कोई रुचि थी ओर न ही सामाजिक न्याय के दशन मे। वे सत्ता के दावेदार थ। उन सभी का मकसद बसपा मे आकर सत्ता हथियाना था और सत्ता हथियाने के बाद दलितो पर अत्याचार करना भी।

इस बारे मे दलित लिबरेशन टुडे का सपादकीय देखे तो इस बारे मे एक सटीक टिप्पणी मिलेगी। "यह सोचने की बात हे कि उनका (गेर दलित नेता) बसपा या दलितो से कितना लगाव हो सकता है और दलित उनसे क्या आशा रख सकते हे। राजनीति का यह एक दुखद और विरोधाभास से भरा इतिहास रहा है। सत्ता के करीब आते-आते पुराने सारे मिथक टूट जाते है और सत्ता प्राप्ति के बाद नए तरह के आविष्कार किए जाते है किसी जाति या कुछ जातियो की दुखती रग कैसी भी हो, उससे कोई सरोकार नही रखा जाता। जातियो की अस्मिता तथा पहचान के खिलाफ गठबधन हुआ करते है। जो राजनैतिक और सामाजिक चितक हमे ऐसी सभी घटनाओ ओर दुघटनाओ को भूल जाने की बात किया करते हे, राजनीतिज्ञ फिर से उन्हे याद दिलाते है और दलित अस्मिता को लगभग रोदते हुए समझोते किया करते है।

बसपा की राजनीति के सूत्रधारो ने भी लगभग वही सब किया जैसा उनसे पूर्व अधिकाश दलित नेताओ ने। कुल मिलाकर वही समझौते, गठबधन और दल बदल की गलत परपरा को आगे बढाया। नतीजा चाहे कुछ भी हो।"

लोकतात्रिक समाजवादी मोर्चे के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओर समाजवादी पार्टी के पूर्व

नेता डी पी यादव एव बालेश्वर यादव ने 30 दिसम्बर, 1995 को लखनऊ स्थित रवीन्द्रालय मे एक समारोह क अवसर पर अपने अन्य समर्थको सहित बहुजन समाज पार्टी मे विधिवत् विलय होन की घोषणा की।

डी पी यादव पिछले काफी दिना से राजनेतिक पाला बदलकर बहुजन समाज पार्टी मे जाने की तेयारी कर रह थे। मुलायम सिह यादव की सपा से अलग होकर प्रदश म बसपा की मायावती सरकार के कायकाल म ही लोकतात्रिक समाजवादी मोचा बना लिया था। जिसमे उनका साथ चार विधायको (बालेश्वर यादव, श्रीमती सुशीला सराज, हृदयनारायण दीक्षित व प्रवीण सिह ऐरन) ने देकर अपनी सदस्यता बचाइ थी। हृदयनारायण दीक्षित एव सुशीला सरोज पहले ही भाजपा मे चले गए थे इसक बाद डी पी यादव और बालेश्वर यादव बसपा मे विलय हो गए।

30 दिसम्बर, 1995 को ही समता पार्टी के वाराणसी मडल के अध्यक्ष हेमत कुमार कुशवाहा भी कुछ साथिया सहित बसपा मे शामिल हो गए। बसपा की राष्ट्रीय महासचिव एव पूव मुख्यमत्री कु मायावती ने माल एवेन्यू (लखनऊ स्थित आवास) म यह घोषणा की थी। उसी दिन युवा समता पार्टी के प्रदेश महासचिव ब्रजेश सिह कुशवाहा ने भी बसपा मे आने की घोपणा की।

डी पी यादव आदि क नेतृत्व मे बसपा मे शामिल होने की घोषणा के बाद बसपा म शामिल हाने वाले अन्य दलो के पार्टी नेता व कायकताओ की बडी लाइन लग गई जिसे राजनेतिक क्षेत्र मे लखनऊ मे बसपा की हुइ सावधान रैली का ही जबदस्त प्रभाव माना गया।

लखनऊ स्थित उसी रवीन्द्रालय मे 2 जनवरी, 1996 को एक ओर समारोह हुआ जिसमे जनता दल पिछडा वग महासघ क पूर्व महासचिव स्वामी प्रसाद मोर्य की अगुवाइ मे राजनेतिक तथा सामाजिक कार्यकताओ ने बसपा मे जाने की घोषणा की।

इस मोके पर भाकपा के पूर्व विधायक रामजी कुशवाहा, पूर्व विधायक गया प्रसाद सराज, समता पार्टी के महासचिव परशुराम सिह कुशवाहा, जनता दल के पार्टी प्रवक्ता बोध लाल शुक्ला के अलावा अशोक सिह, प्रदेश अध्यक्ष शत्रुघ्न सिह, महासचिव अमरनाथ मोर्य आदि भी बसपा मे शामिल हुए।

यही नही पूव मुख्यमत्री रामनरेश यादव के पुत्र कमलेश यादव कॉग्रेस छोडकर बसपा मे शामिल हुए ओर उन्होने 21 जनवरी, 1996 का पत्र सम्मेलन मे पढा। साथ ही बबइ महिला कॉग्रेस की उपाध्यक्ष कला तिवारी, बिहार काग्रेस सेवा दल के महामत्री रामदेव यादव, गुजरात के काग्रेस नेता मनुभाई पटेल आदि भी शामिल हुए।

राजनेतिक उठा पटक के चलते व जनता दल की नीतियो से क्षुब्ध जनता दल के राष्ट्रीय महासचिव राशिद अल्वी, राष्ट्रीय कार्य समिति के सदस्य अलीमुद्दीन

अन्सारी, उत्तर प्रदेश जनता दल के उपाध्यक्ष आलम खान व जनता दल के वरिष्ठ नेता एव पूर्व सासद हर्षवर्धन ने एक प्रेस काफ्रेस आयोजित कर जनता दल की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देकर 30 मार्च, 1995 को बसपा मे शामिल होने की घोषणा की।

इस मौके पर आयोजित सवाददाता सम्मेलन को सबोधित करते हुए काशीराम न कहा कि **''सामाजिक न्याय व दलितों के हित की बात करने वाले हर व्यक्ति को एक न एक दिन बसपा मे आना पडेगा, चाहे वह लालू हो या शरद यादव।''** उन्होने कहा कि ''उत्तर प्रदेश मे उनकी इच्छा तालमेल करने की थी, पर राष्ट्रीय स्तर पर जनता दल नेतृत्व मे उच्च वग के लोग्र भरे पडे हे। वे नही चाहत थे कि जनता दल बसपा से तालमेल करे।''

स्वाभिमान चेतना रथयात्रा के दौरान कटरा मे सत्यपाल सासद के बड भाई व पूर्व जद प्रत्याशी महेन्द्र सिह यादव तथा ब्लाक प्रमुख सत्येन्द्र सिह यादव ने अपने समर्थको सहित बसपा मे शामिल होकर आस्था जताई। इस मोके पर 'अजुमन सस्था' के अध्यक्ष हाजी मकबूल असारी भी बसपा मे शामिल हुए।

फरवरी माह मे ही जब यह रथयात्रा फरीदपुर होते हुए बरेली पहुँची, तब वहॉ के कई नए पुराने लोगो मे जिनमे मुख्यत रामसिह यादव (लोकदल), सुभाष यादव एडवोकेट (जनता दल) के साथ आर्शीद अहमद आदि भी बसपा मे शामिल हुए।

समाजवादी पार्टी को जब एक करारा झटका और लगा तब 20 जनवरी, 1996 को बाराबकी के नगर परिषद् प्रागण मे कोमी जनसघर्ष मोर्चा के तत्वावधान मे मुस्लिम कार्यकताओ के एक विशाल सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमे सपा के दो विधान परिषद सदस्य गयासुद्दीन किदवई व रामचन्द्र बख्श सहित मुस्लिम समाज के 12 हजार कार्यकर्ता सपा छोडकर बसपा मे शामिल हुए तथा पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। जिनमे टाउन एरिया के नवनिर्वाचित सभासद व चैयरमेन, नगर परिषद् सदस्य के साथ बी डी सी सदस्य, वकील, ग्राम प्रधान और सपा अल्पसख्यक प्रकोष्ठ के कई नेता भी शामिल थे।

अप्रैल, 1996 मे कानपुर की जन सभा मे मायावती के समक्ष भाजपा के राजेन्द्र कटियार अपने सैकडो कार्यकर्ता सहित, युवा जनता दल (अल्पसख्यक प्रकोष्ठ) के प्रदेश महामत्री राजकुमार गौतम भी अपने सैकडो कार्यकता सहित तथा सपा के डॉ नियाज, अब्दुल बसी ओर भारतीय लोकतान्त्रिक मोर्या के भी काफी लोगो ने बसपा मे शामिल होने की घोषणा की। इसके अलावा जनता दल के पूर्व विधायक बलवान सिह यादव, पूर्व नगर सपा अध्यक्ष सैयद महमूद के पुत्र फैसल महमूद, पूर्व सभासद असलम असारी, आशा गफ्फार समेत दो दर्जन से अधिक नेताओ ने बसपा की सदस्यता स्वीकार की।

दल बदलने और दल-बदलुओ को किसी विशेष पार्टी मे शामिल करने की

ऐतिहासिक घटनाए इस बात को साफ करती है कि एक समय के बाद विचार और व्यवहार मे अतर आ ही जाता है। यह बात अपने आप मे पूर्ण सच नही है। आधा सच है। अधिकाश रूप मे देखा गया है कि दल बदल सत्ता के लिए किया जाना है। जैसा कि मायावनी ने स्वय अपनी पुस्तक की प्रस्तावना मे भी लिखा है, "सामाजिक परिवर्तन एव आथिक मुक्ति आदोलन के माध्यम से बहुजन समाज मे राजनीतिक जागरूकता पेदा करके उन्हे केन्द्र और प्रदशा की राजनीतिक सत्ता पर काबिज कराना हे।

दुनिया के किसी भी समाज का इतिहास सघर्ष का रहा है। वह बात अलग है कि प्रत्येक जाति, वग तथा नस्ल का सामाजिक तथा राजनेतिक सघष परस्पर विरोधाभास का प्रतीक रहा हो, पर इतिहास हो या राजनीति उन सबके अपने-अपने सामाजिक सरोकार रहे है। सघर्ष के स्वरूप अलग-अलग तरह के हो सकते है, लेकिन सघष के बिना समाज का विकास सभव नही है। सघर्ष समाज को गति प्रदान करता है ओर सघर्ष से प्राप्त गति के परिणामस्वरूप सनातनी मूल्यो की जगह नए जीवन मूल्य विकसित होते है। समाज मे इसी सघर्ष के कारण नए राजनैतिक दलो का उद्भव भी होता है।

भारत मे समाजवादी और लोकतात्रिक समाज का निर्माण करना ही डॉ अम्बेडकर का उद्देश्य था। उनका सारा सघर्ष का दर्शन और चितन तथा आदोलन इसी का दिग्दशक था। इसी लोकतात्रिक मूल्य के आधार पर उन्होने भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण भी किया था। उनके समय मे जो राजनैतिक परिवतन हो रहे थे, उस पर भी हमे अम्बेडकर का अध्ययन और विश्लेषण मिलता है।

बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर भारतीय समाज के इतिहास को क्राति और प्रतिक्राति का इतिहास मानते है। और इसमे भी अधिकाश प्रतिक्रियावादी तत्व ही हावी होते रहे, ऐसा उनका निष्कर्ष रहा। आधुनिक भारत मे सामाजिक सुधार ओर राजनेतिक सुधार के सवाल को लेकर जो सघर्ष शुरू हुआ, उसमे प्रारभ मे सामाजिक और राजनेतिक सवालो की चर्चा एक ही मच से शुरू हुई। लेकिन बाद मे सामाजिक सुधार और राजनैतिक सुधार चाहने वाले दो अलग-अलग प्रवाह बन गए और सघर्ष का परिणाम यह हुआ कि समाज सुधारको की पराजय हुई। समाज सुधार, समाज परिवर्तन और समाजिक क्राति का महत्त्वपूर्ण विचार पीछे रह गया। जबकि प्रति क्रातिकारी ताकते मजबूत होकर आगे आई। यह उनकी बडी विजय थी और समाज बदलने वालो की करारी हार। समय-समय पर लगभग ऐसा ही इतिहास हमारे सामने आता रहा है। अधिकाश राजनीतिज्ञ जिसे और अधिक पुख्ता करते रहे है।

बकौल कवल भारती काशीराम ने निस्सदेह दलित राजनीति को एक नया आयाम देने मे सफलता हासिल की। उन्होने दलितो को उनके अपने मतो का अर्थ समझाया। न केवल वोट के महत्त्व को बताया बल्कि दलित समाज मे एक ऐसी भावना को

भी विकसित किया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी प्रवृत्ति आक्रामक बनी। मायावती के मुख्यमत्री बनने से राज्य के दलितो को इस बात का अहसास हुआ कि उत्तर प्रदेश मे उनकी सरकार हे। यह भावना तो बिहार मे लालू प्रसाद यादव भी बनाने मे सफल हुए, पर कोरी भावना से शासन और प्रसाशन के सूत्र आग नही बढते। उत्तर प्रदेश मे मायावती की सरकार बनने से जाहिर बात है, दलितो को खुशी होती, पर क्या उनकी खुशी अत तक कायम रही। उत्तर प्रदेश मे विजय की महारत क्या अपने बलबूते पर हुई। इसके लिए बहुजन समाज पार्टी ने कोन सी कीमत नही चुकाइ। जिसका खमियाजा बाद मे प्रदेश के दलितो को भुगतना पडा। वे अपने ही गॉव ओर कस्बे मे अभिशप्त हो गए है। उनकी जीवनचया तथा जीविकापाजन की परिस्थितियॉ प्रभावित हुई है। क्या दलित नेताओ को इन सबका अहसास नही होता।

एक तरह से देखा जाए तो राजनीति मे ऊपर से हस्तक्षेप करने के लिए प्रधानमत्री स्तर के नेताओ के खिलाफ प्रतीकात्मक ढग से चुनाव मे उतरना और राष्ट्रीय छवि का निर्माण करना। दूसरी ओर राजनीति मे अपने आधार क्षेत्र यानी दलित, अति पिछडे ओर मुसलमानो के साथ निरतर सपर्क मे रहना यह दूसरी बात हे। उन्ह राजनीतिक रूप से सचेत और सक्रिय बनाए रखने के लिए निरतर प्रचार यात्राऍ धरने और प्रदर्शन इत्यादि चलाते रहना किसी भी तरह के खुले गठजोड अथवा सीटो के तालमेल से इनकार करना ओर इस तरह बसपा के बाहरी आदोलन से लागो को प्रभावित करते रहना यह सोची समझी योजना होती हे, जिसका प्रयोग अब दलित नेता भी करने लगे है। इस बारे मे कुछ भी विश्लेपण किया जाए उत्तर प्रदेश मे बसपा की बाद की राजनैतिक सरगर्मियो ने तो यह सिद्ध कर ही दिया कि काशीराम और मायावती दोनो की सत्ता मे आने की यह सब रिहर्सल मात्र थी। उन्होने आम आदमी के दुख-दर्दो से रिश्ते बनाए, पर राजनेतिक शैली म।

कुछ समय पूर्व काशीराम का राजनीति मे जब शुरुआती दोर था तब उन्हे लगा था कि ये तमाम दलित नेता ब्राह्मण वर्ग के चमचे है। आक्रोश मे भरकर उन्होने 'द चमचा एज द एरा आफ स्ट्रजिस' नामक एक आक्रामक पुस्तक ही लिख डाली थी। पर स्वय जब वे राजनीति की भूलभुलैया मे फसे तो उनकी कैसी भूमिका रही, यह बहस का विषय है। उदित राज अपने लेख मे इस बात का सकेत देते हे कि "बहुजन समाज पार्टी के आदोलन की शुरुआत ही राजनीतिक सत्ता हासिल करने के लिए थी।" वही डॉ विवेक कुमार इसे स्पष्ट करते है कि दलितोत्थान के लिए सत्ता जरूरी है। मायावती के मुख्यमत्री बनने को उन्होने सुखद क्षण कहा है।

3 जून, 1995 की घटना ने इस देश की दलित राजनीति को बहुत कुछ दिया। विशेष रूप मे सत्ता प्रतिष्ठान पर कैसे कब्जा किया जाए इस बारे मे दलितो को बखूबी ज्ञान कराया। बहुजन राजनीति को एक बडे राज्य की सत्ता से जुडने का अवसर भी दिया। विभाशु दिव्याल के विचार मे, "**जिस तरह से राम के प्रति कोई**

आस्था न होते हुए भी भाजपा राम के नाम का उन्माद जगाकर राजनीतिक शक्ति अजित करती है, उसी तरह से सवर्ण हिदुत्व के विरूद्ध उन्माद जगाकर उसे मिटाने की वास्तविक चाह न होने के बावजूद, काशीराम राजनीतिक शक्ति अर्जित करते है।"

इस तरह के नताओ के युद्ध ओर तालमेल दोनो को ही उन्होने सत्ताकामी बतलाया ह। बहुत-स बुद्धिजीविया ने जहॉ काशीराम ओर मायावती दोनो की सहमति से भाजपा के साथ मिलकर सरकार बनाने के बार मे अवसरवाद कहा था वही जनता दल के तत्कालीन प्रधान महासचिव रामविलास पासवान ने, 1995 के अपने भाषण मे कहा था कि बहुजन समाज पार्टी ने कभी भी दलितो के उत्थान या बेहतरी क लिए काम नही किया हे। उनकी चिता दलितो को बरगलाकर किसी तरह सत्ता प्राप्त करना रही हे। भाजपा जेसी साप्रदायिक पार्टी, जिसे अन्य दलो ने अछूत घोषित किया था, से समथन लेकर सरकार बनाना यही साबित करता है कि बसपा निहायत ही अवसरवादी लोगो का जमावडा हे। बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के सिद्धातो मे इनकी काइ आस्था नही। दरअसल, 'कुर्सी' के लिए बसपा ने अपनी ही 'आइडियोलॉजी' के खिलाफ काम किया है।

वे आगे कहते है कि अगर बसपा को यह महसूस हो रहा था कि सपा को समथन जारी रखना उचित नही हे, तो वह अपना समर्थन वापस लेकर चुनाव की मॉग कर सकती थी। लेकिन भाजपा के समर्थन से सरकार बनाकर उसने दलित-अल्पसख्यका क ध्रुर्वीकरण की उस प्रक्रिया को कमजोर किया है, जिसे जनता दल ने मजबूत करने का काम शुरू किया था।

उत्तर प्रदेश मे जिस तरह और जिन परिस्थितियो मे सरकार बनी थी, उसे निश्चित ही हादसो से उबरकर सत्ता तक पहुँचने का एक अलोकतात्रिक माध्यम भी कहा जा सकता हे। मायावती के पहली बार मुख्यमत्री बनने के साढे चार माह के शासन तत्र मे भी वैसे ही हादसो की सभावना रही थी। यह दो विरोधी परपरा और सस्कृति क सगम का राजनैतिक कथानक था, जो अधिक दिनो तक नही चल सका। राजनेतिक गलियारो मे ऐसे कयास भी लगाए जा रहे थे। सरकार स्थिर नही थी इसलिए शासन प्रणाली से लेकर काय प्रणाली भी स्थिर नही रहेगी। मुलायम नायक से खलनायक बन गए थे ओर मायावती महारानी। उनका डका चारो ओर बजने लगा था, पर अलग-अलग स्वर मे। वे स्वर समन्वय के भी थे और खिलाफत के भी।

दलित समाज का अम्बेडकरवादी चितक हतप्रभ था। पर राजनीतिज्ञो ने कब इसकी चिता की हे। कवल भारती लिखते है कि शासक वर्ग इस साजिश मे सफल हुए। इस साजिश को सफल बनाने मे सबसे ज्यादा भूमिका मायावती की राजनैतिक महत्वाकाक्षाओ ने निभाई। सारा करा-धरा मिट्टी मे मिल गया और गठबधन टूट गया।

भाजपा के समर्थन से मायावती मुख्यमत्री बन गई। बसपा अपने ही सिद्धान्ता के खिलाफ चली गई।

सदर्भ

- दलित लिबरशन टुडे जून 1996
- सचेतना पजाबा बाग नइ दिल्ली
- मायावती बहुजन समाज ओर उसकी राजनीति नइ दिल्ला 2000
- उदित राज अम्बेडकर के विचारो की भ्रामक व्याख्या राष्ट्रीय सहारा 8 अगस्त 2002
- राष्ट्रीय सहारा 4 मइ 2002
- राष्ट्रीय सहारा 2002
- नवभारत टाइम्स नइ दिल्ली 30 जनवरी 2002
- कवल भारती दलित विमश की भूमिका इतिहास बोध प्रकाशन इलाहाबाद

बहुजन समाज पार्टी के सामाजिक सरोकार

बहुजन समाज पार्टी का गठन ऐसी परपरागत नीतियो के खिलाफ हुआ था, जिनके बीच दलित समाज पिस रहा था, उसे मुक्ति दिलाना बहुजन समाज पार्टी का उद्देश्य था। स्वय बसपा का जन्म 'बामसेफ' के गर्भ से हुआ था। बामसेफ ऐसी सस्था थी, जिसके माध्यम से ज्योतिबा फुले ओर डॉ अम्बेडकर के महत्वपूर्ण कार्यो तथा योजनाओ को पूरा करने के लिए पन्द्रह-बीस वर्षो तक देशभर मे अभियान छेडा गया था। बहुजन समाज पार्टी उन्ही प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओ की मेहनत ओर लगन का प्रतिफल थी, जो 1995 मे पहली बार सत्ता मे आई।

'बहुजन समाज और उसकी राजनीति' नाम से स्वय मायावती के द्वारा लिखी गइ पुस्तक वष 2000 मे छपी थी। 1995 और 1997 मे उत्तर प्रदेश की मुख्यमत्री बनने के दौरान दलित एजेडे के रूप मे सामाजिक न्याय से सम्बन्धित योजनाओ को आगे बढाने तथा उन पर अमल करने ओर उनका शहर तथा गावो मे रह रहे आम आदमी तक लाभ पहुचाने के बारे मे इस पुस्तक का अवलोकन करना जरूरी हे। इस पुस्तक की प्रस्तावना मे वे लिखती है, " 'बहुजन समाज और उसकी राजनीति' के नाम से लिखी गई इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य, बहुजन समाज पार्टी द्वारा छेडे गये सामाजिक परिवर्तन एव आर्थिक मुक्ति आदोलन के माध्यम से 'बहुजन समाज' मे राजनीतिक जागरूकता पैदा करके इन्हे केन्द्र और प्रदेशो की राजनीतिक सत्ता पर काबिज करना है, क्योकि राजनीति मे प्रवेश करने के बाद, मैने यह महसूस किया है कि यहा राजनीतिक सत्ता एक ऐसी ताकत है, जो हर क्षेत्र मे सबके ऊपर हावी है, चाहे नोकरशाही हे, व्यापार है या अन्य कोई क्षेत्र अर्थात् राजनीतिक सत्ता पर काबिज हुए बिना आज कोई भी समाज आगे नही बढ सकता, इसलिए बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर ने भी इस देश की राजनीतिक सत्ता के महत्व को समझते हुए ठीक ही कहा था कि राजनीतिक सत्ता वह मास्टर चाबी है, जिससे बहुजन समाज के लोग अपनी तरक्की और सम्मान के सभी दरवाजे खोल सकते है।"

सामाजिक न्याय का दर्शन तो भगवान बुद्ध के समय का है, जिन्होने बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की बात की थी वह बात अलग है कि राजनीति के बाजार मे आरक्षण को लेकर नये-नये शब्द गढ लिये गये हो तथा उनका आविष्कारक भी कुछ नेता स्वय को बताने लगे हो। दलित एजेडा के लिए आरक्षण सबसे पहली सीढी है। बिना इसके सामाजिक न्याय सभव नही हे। लेकिन देश मे पचास साल बाद भी आरक्षण पूरा न हो सका। इसके पीछे क्या रणनीति रही है, इसकी अब परत-दरे-परत उतरने लगी है। कुछ बरस पूर्व आरक्षण के पालन मे आन्ध्र-प्रदेश म माला मादिगा की राजनीति हडपने के लिए ए बी सी फार्मूला अपनाया गया था। उत्तर प्रदश मे भी लगभग ऐसा ही फार्मूला अपनाया गया। यानी पिछडो मे अति पिछडे ओर दलिता मे अति दलित को आरक्षण लाभ देने का फार्मूला। पर सोचना यह चाहिए कि इस तरह का फार्मूला अपनाने की नौबत केसे आई। मुलायम सिह यादव वर्पो से पिछडो की राजनीति करते रहे। वे उत्तर-प्रदेश के मुख्यमत्री भी रहे। बावजूद पिछडा म अति पिछडा वग लगातार पिछडता गया। उस वग की किसी ने सुध नही ली। सिवाय इसके कि बहुजन समाज पार्टी ने उन्हे उनके वोट की कीमत बताई, उनक बीच राजनतिक जागरण से लेकर सामाजिक चेतना लाने का प्रयास किया। यह भी इतिहास मे दज होना चाहिए कि इन तथाकथित अति पिछडो की कुछ जातियो के नेताओ ने पहली बार विधान सभा देखी। न केवल देखी बल्कि उसमे प्रवेश भी किया ओर सामाजिक न्याय तथा दलितो, पिछडो और अल्पसख्यको के अधिकारो के लिए सघष भी किया।

बसपा की आरभ की राजनीति का अगर अध्ययन करे तो पार्टी का कोइ चुनावी घोषणा पत्र न होता था। जैसा स्वय काशीराम जी का भी कहना था कि वे अन्य पार्टियो की तरह मतदाताओ को रिझाने का कार्य नही करते। जैसे ही उन्हे सत्ता मिलेगी, वे खुद-ब-खुद दलित एजेडा को ध्यान मे रखकर आम आदमी के हक मे कार्य करने लगेगे। उनकी सरकार इस बारे मे कभी पीछे नही रहेगी। हालाकि बाद मे बसपा का चुनावी घोषणा पत्र भी जारी हुआ।

पहली बार 1995 मे साढे चार माह के लिए तथा फिर 1997 मे छह माह के लिए तथा वर्ष 2002 मे तीसरी बार प्रदेश की मुख्यमत्री के रूप मे मायावती ने दलित एजेडे को वरीयता दी। विपक्ष का इस बारे मे कहना रहा कि मायावती ने दलितो के हक मे घोषणाओ की बयानबाजी अधिक की और यथाथ मे उस वग के लिए कार्य कम हुआ। जमीन के पट्टे दलितो को मिले लेकिन बाहुबली लोगो के द्वारा छीन लिये गये। गावो मे दलित उत्पीडन की घटनाए भी हुइ। पर इतना तो हुआ कि बसपा ने दलित एजेडे को लागू कराने का निणय तो लिया। यही नही मायावती ने दलितो की पचायत से ससद तक भागीदारी भी निश्चित की। उनके भीतर चेतना जगाई। महिलाओ की ग्राम पचायत के चुनावो मे भागीदारी हुई।

निष्पक्ष रूप मे देखा जाए तो दलितो के विकास के लिए कुछ काय तो ऐतिहासिक

हुए। उनमे कक्षा एक से आठ तक की कक्षाओ मे पढने वाले अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रो की छात्रवृत्ति की दर बढाकर दोगुनी कर दी गयी। दलितो की लडकियो की शादी के लिए प्रदान की जाने वाली सहायता राशि पाच हजार से बढाकर दस हजार रुपये की गयी। प्रदेश म कई स्थानो पर आई ए एस तथा पी सी एस परीक्षाओ के लिए कोचिग सेण्टर की स्थापना स्पेशल कम्पोनेट योजना के तहत पहली बार 21 57 प्रतिशत धनराशि का स्पष्ट प्रावधान, लखनऊ मे डॉ अम्बेडकर उद्यान एव स्मारक की स्थापना, वाल्मीकि जाति के बच्चो के लिए सचालित आश्रम पद्धति विद्यालयो के लिए 70 करोड का प्रावधान। राज्य के सभी जिलो मे दलितो के लिए विशेष अदालत खोलने का निणय, डॉ अम्बेडकर गोरव पुरस्कार की स्थापना। अम्बेडकर ग्राम विकास याजना। यही नही उन्होने पिछड और अल्पसख्यक समुदायो के लिए भी कल्याणकारी योजनाओ की शुरुआत की। दलितो के महापुरुषो के नाम पर स्कूल, कॉलेज तथा जिलो के नाम रख उन जातियो मे गौरव की भावना को जगाया।

राजनाथ सिह लिखते हे कि समाजवादी पार्टी और बहुजन समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश मे 1993 का विधानसभा चुनाव जब पूर्ण सामजस्य और तालमेल तथा काशीराम और मुलायम सिह यादव सयुक्त अभियान के तहत लडा तो दोनो को मिलाकर कुल 28 प्रतिशत मत मिले थे लेकिन सीट उन्हे 35 प्रतिशत मत प्राप्त करने वाली भारतीय जनता पार्टी से केवल एक ही प्रतिशत कम प्राप्त हुई थी ओर कॉग्रेस, जनता दल तथा साम्यवादी दलो के समर्थन से मुलायम सिह यादव के नेतृत्व मे साझा सरकार का गठन हुआ था। उत्तर प्रदेश की राजनीति मे भारतीय जनता पार्टी ने 1991के चुनाव मे अपना जो प्रखर स्वरूप प्राप्त किया था उसको रोकने के लिए 1993 के बाद बनी एकजुटता ने भविष्य मे इस राज्य मे भाजपा के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया था।

पर किसे मालूम था कि भाजपा के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगाने वाली वही एकजुटता ताश के पत्तो की तरह बिखर जाएगी। ओर समाजवादी पार्टी तथा बहुजन समाज पार्टी के नेता अपना-अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए जोड तोड की राजनीति करने लगेगे।

पार्टी के कायक्रमो मे देखा गया कि मायावती तथा काशीराम दोनो को सोने-चादी से सजाने-सॅवारने के बढ-चढकर प्रयास हुए। इसी शृखला मे देखा जाए तो 23 सितबर, 1995 को बसपा की कि नौर इकाई द्वारा प्रदेश की मुख्यमत्री कु मायावती व राष्ट्रीय अध्यक्ष काशीराम के स्वागत मे क्षेत्र के खोखरा मैदान मे रैली का आयोजन किया गया था। जिसमे काशीराम को एक स्वर्ण मुकुट व दो चॉदी के हाथी भेट किए गए थे। साथ ही मायावती को 20 लाख रुपए की थैली भी भेट की गई। इस रैली मे बसपा की यह जोडी हेलीकॉप्टर से पहुॅची थी।

1 मार्च, 1996 को बसपा के तत्वावधान मे अकबरपुर (कानपुर) मे आयोजित

स्वाभिमान रैली मे सपा से बसपा मे शामिल हुए लायक सिह यादव ने काशीराम को स्वर्ण मुकुट पहनाकर स्वागत किया तथा अन्य लोगो ने मायावती को चॉदी क मुकुट पहनाकर चॉदी का हाथी भेट किया।

इस क्षेत्र मे कार्यकर्ता भी पीछे न रहे। 10 सितबर, 1195 को नारायणगढ (अबाला) मे आयोजित गुर्जर सम्मेलन मे अमन कुमार नागरा को क्षेत्र की जनता की ओर से इनके वजन के बराबर सिक्को से तोला गया।

29 जनवरी, 1996 को बसपा का पाल-कश्यप समाज सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर काशीराम तथा मायावती को चौ इलमसिह ने लोकसभा क्षेत्र मुजफ्फर नगर की तरफ से स्वर्ण मुकुट भेट किए। इका नेता वेदपाल ठेकेदार ने बसपा म शामिल होने की घोषणा के साथ काशीराम तथा मायावती को स्वर्ण मुकुट भेट किए। काधला निवासी हाजी इस्लाम ने मायावती को चॉदी का मुकुट भट किया।

12 फरवरी, 1996 को बहुजन समाज पार्टी के तत्वावधान मे मेरठ से 25 कि मी दूर सरधना मे सैनी समाज सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस माके पर सेनी समाज की ओर से काशीराम ओर मायावती के साथ पर स्वर्ण मुकुट बॉधकर स्वागत किया।

माथे पर सोने का मुकुट पहन काशीराम ने सामाजिक परिवतन की बात की। वेसे ही हरिद्वार से 30 कि मी दूर एक बडे कस्बे लक्सर मे 4 फरवरी को रविदास जयन्ती पर मायावती ने सोने का मुकुट बधवाकर सामाजिक न्याय की बाते की थी। उन्होने कहा था कि समतामूलक समाज बनाना हमारा मुख्य ध्येय हे। पर उनकी परपरा उन्हे राजतत्र की ओर ले जा रही थी। जिसका अहसास न काशीराम को था और न मायावती को। वे सत्ता के रथ पर सवार थे और राजा रानी की तरह व्यवहार कर रहे थे।

नवभारत टाइम्स के किसी सवाददाता ने मायावती से जब यह पूछा कि क्या उन्हे गहने पहनना बहुत पसद है तो उन्होने जवाब मे कहा था, **"मै अपने मॉ-बाप की बहुत लाडली रही हू, क्योंकि पढने में बहुत तेज थी। बचपन मे ही मेरी मॉ छोटे-छोटे गहने पहनाकर रखती थी। जब मै बडी होकर राजनीति मे आई तो मेरे समाज के लोगों ने मुझे गहनों से लाद दिया।"**

वे आगे कहती है, अब सभाओ मे जिधर भी जाती हूॅ श्रद्धावश कोई सोने की चेन देता है तो कोई कडे और गिन्नियॉ। कही मेरे वजन के हिसाब से चॉदी भी दी जाती है अब लोगो को यही अच्छा लगता है कि उनकी बहन जी टीपटाप रहे। इसलिए उनकी भावनाओ का खयाल करके गहने पहनती हूॅ। वरना मै तो सिपल रहना चाहती हूॅ।

दलित लिबरेशन टुडे का सपादकीय लिखता है–"मान लीजिए, मे किसी विचारधारा का समर्थक बन जाता हूॅ, फिर उस विचारधारा की पार्टी का भी समर्थक बन जाता हूॅ, और वह पार्टी अगर मेरे इलाके से किसी माफिया को खडा कर दे,

हुए। उनमे कक्षा एक से आठ तक की कक्षाओ मे पढने वाले अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रो की छात्रवृत्ति की दर बढाकर दोगुनी कर दी गयी। दलितो की लडकियो की शादी के लिए प्रदान की जाने वाली सहायता राशि पाच हजार से बढाकर दस हजार रुपये की गयी। प्रदेश मे कई स्थानो पर आई ए एस तथा पी सी एस परीक्षाओ के लिए कोचिग सेण्टर की स्थापना स्पेशल कम्पोनेट योजना के तहत पहली बार 21 57 प्रतिशत धनराशि का स्पष्ट प्रावधान, लखनऊ मे डॉ अम्बेडकर उद्यान एव स्मारक की स्थापना, वाल्मीकि जाति के बच्चो के लिए सचालित आश्रम पद्धति विद्यालयो के लिए 70 करोड का प्रावधान। राज्य के सभी जिलो मे दलितो के लिए विशेष अदालत खालने का निर्णय, डॉ अम्बेडकर गौरव पुरस्कार की स्थापना। अम्बेडकर ग्राम विकास योजना। यही नही उन्होने पिछड और अल्पसख्यक समुदायो के लिए भी कल्याणकारी योजनाओ की शुरुआत की। दलितो के महापुरुषो के नाम पर स्कूल, कॉलेज तथा जिलो के नाम रख उन जातियो मे गौरव की भावना को जगाया।

राजनाथ सिह लिखते है कि समाजवादी पार्टी और बहुजन समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश मे 1993 का विधानसभा चुनाव जब पूर्ण सामजस्य और तालमेल तथा काशीराम ओर मुलायम सिह यादव सयुक्त अभियान के तहत लडा तो दोनो को मिलाकर कुल 28 प्रतिशत मत मिले थे लेकिन सीट उन्हे 35 प्रतिशत मत प्राप्त करने वाली भारतीय जनता पार्टी से केवल एक ही प्रतिशत कम प्राप्त हुई थी और कॉग्रेस, जनता दल तथा साम्यवादी दलो के समर्थन से मुलायम सिह यादव के नेतृत्व मे साझा सरकार का गठन हुआ था। उत्तर प्रदेश की राजनीति मे भारतीय जनता पार्टी ने 1991के चुनाव मे अपना जो प्रखर स्वरूप प्राप्त किया था उसको रोकने के लिए 1993 के बाद बनी एकजुटता ने भविष्य मे इस राज्य मे भाजपा के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया था।

पर किसे मालूम था कि भाजपा के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगाने वाली वही एकजुटता ताश के पत्तो की तरह बिखर जाएगी। ओर समाजवादी पार्टी तथा बहुजन समाज पार्टी के नेता अपना-अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए जोड तोड की राजनीति करने लगेगे।

पार्टी के कायक्रमो मे देखा गया कि मायावती तथा काशीराम दोनो को सोने-चादी से सजाने-सॅवारने के बढ-चढकर प्रयास हुए। इसी शृखला मे देखा जाए तो 23 सितबर, 1995 को बसपा की बिजनौर इकाई द्वारा प्रदेश की मुख्यमत्री कु मायावती व राष्ट्रीय अध्यक्ष काशीराम के स्वागत मे क्षेत्र के खोखरा मैदान मे रैली का आयोजन किया गया था। जिसमे काशीराम को एक स्वर्ण मुकुट व दो चॉदी के हाथी भेट किए गए थे। साथ ही मायावती को 20 लाख रुपए की थैली भी भेट की गई। इस रैली मे बसपा की यह जोडी हेलीकॉप्टर से पहुँची थी।

1 मार्च, 1996 को बसपा के तत्वावधान मे अकबरपुर (कानपुर) मे आयोजित

स्वाभिमान रैली मे सपा से बसपा मे शामिल हुए लायक सिह यादव ने काशीराम को स्वर्ण मुकुट पहनाकर स्वागत किया तथा अन्य लोगो ने मायावती को चॉदी के मुकुट पहनाकर चॉदी का हाथी भेट किया।

इस क्षेत्र मे कायकर्ता भी पीछे न रहे। 10 सितबर, 1195 को नारायणगढ (अबाला) मे आयोजित गुजर सम्मेलन मे अमन कुमार नागरा को क्षेत्र की जनता की ओर से इनके वजन के बराबर सिक्को से तोला गया।

29 जनवरी, 1996 को बसपा का पाल-कश्यप समाज सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर काशीराम तथा मायावती को चौ इलमसिह ने लोकसभा क्षेत्र मुजफ्फर नगर की तरफ से स्वर्ण मुकुट भेट किए। इका नेता वेदपाल ठेकेदार ने बसपा मे शामिल होने की घोषणा के साथ काशीराम तथा मायावती को स्वण मुकुट भेट किए। काधला निवासी हाजी इस्लाम ने मायावती को चॉदी का मुकुट भेट किया।

12 फरवरी, 1996 को बहुजन समाज पार्टी के तत्वावधान मे मेरठ से 25 कि मी दूर सरधना मे सेनी समाज सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस मोके पर सेनी समाज की ओर से काशीराम और मायावती के साथ पर स्वर्ण मुकुट बॉधकर स्वागत किया।

माथे पर सोने का मुकुट पहन काशीराम ने सामाजिक परिवतन की बात की। वेसे ही हरिद्वार से 30 कि मी दूर एक बडे कस्बे लक्सर मे 4 फरवरी को रविदास जयन्ती पर मायावती ने सोने का मुकुट बधवाकर सामाजिक न्याय की बाते की थी। उन्होने कहा था कि समतामूलक समाज बनाना हमारा मुख्य ध्येय हे। पर उनकी परपरा उन्हे राजतत्र की ओर ले जा रही थी। जिसका अहसास न काशीराम को था और न मायावती को। वे सत्ता के रथ पर सवार थे और राजा रानी की तरह व्यवहार कर रहे थे।

नवभारत टाइम्स के किसी सवाददाता ने मायावती से जब यह पूछा कि क्या उन्हे गहने पहनना बहुत पसद है तो उन्होने जवाब मे कहा था, **"मै अपने मॉ-बाप की बहुत लाडली रही हू, क्योंकि पढने में बहुत तेज थी। बचपन मे ही मेरी मॉ छोटे-छोटे गहने पहनाकर रखती थी। जब मै बडी होकर राजनीति मे आई तो मेरे समाज के लोगों ने मुझे गहनों से लाद दिया।"**

वे आगे कहती है, अब सभाओ मे जिधर भी जाती हूँ श्रद्धावश काइ साने की चेन देता है तो कोई कडे और गिन्नियॉ। कही मेरे वजन के हिसाब से चॉदी भी दी जाती है अब लोगो को यही अच्छा लगता है कि उनकी बहन जी टीपटाप रहे। इसलिए उनकी भावनाओ का खयाल करके गहने पहनती हूँ। वरना मै तो सिपल रहना चाहती हूँ।

दलित लिबरेशन टुडे का सपादकीय लिखता है–"मान लीजिए, मै किसी विचारधारा का समर्थक बन जाता हूँ, फिर उस विचारधारा की पार्टी का भी समथक बन जाता हूँ, और वह पार्टी अगर मेरे इलाके से किसी माफिया को खडा कर दे,

तो हम क्या करना चाहिए?" उपरोक्त सवाल दलित समुदाय के एक सामान्य व्यक्ति का हे, जो दलित विचार धारा की एक पार्टी की चुनावी बेठक मे उपस्थित थे। लेकिन इसस आम दलितो की राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति नही होती। जनता की चतना का उन्नत करने का काम पार्टियो का होता है। लेकिन महत्त्वहीन अपवादो का छाडकर, पार्टियॉ जनता की चतना को पीछे ले जाने मे ही मशगूल हाती हे।

दलित लिबरशन टुडे ने यह पक्तियॉ अपरोक्ष रूप से बहुजन समाज पार्टी के बार म ही लिखी ह। क्योकि अन्य राजनेतिक दलो के साथ इस गभीरता से देखा आर महमूस किया गया कि बहुजन समाज पार्टी मे भी माफिया ने घुसपेठ की हे। बाद म पार्टी आलाकमान ने उसी माफिया को आश्रय भी दिया। बसपा के सत्ता चरण के दागन यह बात अखबारो की सुखियो मे रही कि बसपा ने अपना सामाजिक एजेडा भुला दिया ह ओर वह राजनेतिक सत्ता पर ओर अधिक पकड बनाने को लालायित हे।

इस सबध मे कवल भारती लिखते है कि "इसमे सदेह नही कि काशीराम न डी एस के माध्यम से सामाजिक परिवतन ओर आथिक मुक्ति के जो कायक्रम चलाए थ, वे दलित मुद्दो पर काफी रचनात्मक कार्यक्रम थे। उनमे विशेष था शराब बदी आदालन, जिसस स्वय दलिता के बीच नई जागृति पेदा हुई थी। इस नए सामाजिक मगठन के कारण ही बहुजन समाज पार्टी को राजनीति मे व्यापक सफलता मिली थी। लेकिन काशीराम ने बसपा की राजनेतिक सफलता के बाद अपने इस सामाजिक एजडे का भुला दिया। यदि ऐसा उन्होने किसी सोच के तहत किया, तो क्या सामाजिक कायक्रम पूरे हो गए? क्या अब उसकी आवश्यकता नही है।"

इसी सबध मे कॉग्रेस का समूचा इतिहास हमारे सामने हे। वे परिस्थितियॉ तथा व्यक्ति भी हमारे सामने हे जिनके कारण सामाजिक सुधार के कार्यक्रमो राजनीति से पीछ छूट गए थे। 1892 मे तो कॉग्रेस के आठवे अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए डब्ल्यू सी बनर्जी ने कहा भी था—**"मै ऐसे लोगों से कोइ सहानुभूति नहीं रखता, जो हमारे बारे मे यह कहते है कि हम तब तक राजनैतिक सुधारो के योग्य नहीं है, जब तक हम सामाजिक व्यवस्थाओ मे सुधार नहीं कर लेते।"**

बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक **'एनीहिलेशन आफ कास्ट'** मे विस्तार से इस विषय पर प्रकाश डाला है। सवाल यह हे कि समाज सुधारो को तिलाजलि देकर कॉग्रेस ने राजनेतिक सत्ता हासिल करने का प्रयास किया। जिसमे कॉग्रेस को सफलता मिली ओर लगभग अर्द्धशताब्दी तक कॉग्रेस भारत की शासक पार्टी बन कर रही।

पर प्रश्न यह है कि क्या राजनीतिक सत्ता आने पर सभी सामाजिक सवाल या समस्याऍ अपने-आप सुलझते चले जाते है और समाज मे सुधारो की प्रक्रिया अपने-आप आगे बढने लगती है।

स्वय भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता इन्द्रजीत गुप्त ने खुलेआम स्वीकार

किया कि भारत के कम्युनिस्ट दलितो और शोषितो के सामाजिक उत्थान की लडाइ लडने मे विफल रही हे। बबई मे आयोजित **जाति तोडो समाज जोडो सम्मेलन** म काशीराम ने कहा था कि राजनीतिक दल लोगो को तोडते है, बाटते है, उनका सामाजिक आदोलन लोगो को जोडेगा।

भारत मे पहली बार शुद्ध रूप से दलितो को केद्र मे रखकर राजनीति करने वाली काशीराम की बहुजन समाज पार्टी की 25 नवम्बर, 1997 को भारत के चुनाव आयोग ने राष्ट्रीय पार्टी घोषित कर दिया। बी एस पी के अतिरिक्त उस दोर म सी पी आई , सी पी आई (एम), भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस, जनता दल तथा भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय पार्टिया थी। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पजाब तथा जम्मू आर कश्मीर मे चार प्रतिशत से अधिक वोट पाने के कारण बी एस पी को राष्ट्रीय पार्टी घोषित किया गया था। कानूनन किसी भी पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी बनने के लिए भारत के किन्ही चार राज्यो मे चार-चार प्रतिशत वोट पाना आवश्यक होता हे। अगर ऐसा न हो तो 25 लोकसभा सीटो मे से एक या 30 विधानसभा सीटो मे से एक के हिसाब से देश-भर मे जीतना आवश्यक होता है।

भारत अश्वघोष लिखता है कि बी एस पी एक राष्ट्रीय पार्टी तो बन गई ह, कितु इसके साथ ही इसके नेताओ की जिम्मेदारी और भी बढ गई, क्योकि इस राष्ट्रीय दर्जे को हमेशा कायम रखना आवश्यक है। ऐसा तभी सभव है, जब दलित एकता को कायम रखते हुए उसका उपयोग सकारात्मक दिशा मे किया जाए।

बकौल चितरजन सिह भाजपा-बसपा की बारी-बारी की सरकार का छह माह पूरा हो गया। पहला छह माह बसपा की नेता सुश्री मायावती के मुख्यमत्रित्व मे चला। काशीराम ओर मायावती ने अम्बेडकर का भाष्य अपने तौर-तरीके से किया है और उसी के अनुरूप उत्तर प्रदेश मे सरकार चलाई गई। इस पूरे काल मे दलितो के हक मे क्या किया गया, अगर इसकी फेहरिस्त तैयार की जाए तो उसका सूत्रीकरण होगा 'अम्बेडकर को गली-कूचो तक पहुचाना'। वस्तुत मायावती की यही एकमात्र सबसे बडी उपलब्धि दिखाई देती है।

अम्बेडकर को प्रदेश की गली-कूचो तक पहुँचाने मे सरकारी राजस्व का डेढ अरब रुपया पानी की तरह बहाया गया, परतु 'भूमि सुधार' जो दलितो के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की आवश्यक शर्त है, के बारे मे कुछ नही किया गया। समूचे प्रदेश मे 29 लाख 56 हजार पट्टाधारक भूमिहीन मजदूर है। इन्हे 10 जुलाइ, 1997 तक भूमि पर कब्जा दिलाए जाने के लिए विशेष अभियान चलाया जाना था, परतु ऐसा कुछ नही हुआ। इसका मुख्य कारण यह हे कि भूस्वामियो के पास सीलिग से जो अतिरिक्त भूमि है उसको निकालने मे कोताही बरती गई।

मुख्यमत्री की शपथ लेने के बाद मायावती ने कहा था कि अम्बेडकर गॉवो के विकास हेतु 700 करोड रुपए की धनराशि दी जाएगी, परतु कुल 64 करोड इस

मद म रखे गए। कुल 1250 अम्बेडकर गॉवो का इस योजना के तहत चयन किया गया, जिसम गॉव की न्यूनतम आवश्यकता-सिचाई, स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा, पानी, बिजली, सडक आदि का कार्य होना था परतु 21 मार्च, 97 से सितबर, 1997 तक यह काय नही किया जा सका।

विगत पॉच-छह वर्षो के अदर भारतीय राजनीति मे व्यापक बदलाव आया ह तथा सत्ता की गजनीति गठबधन पर आश्रित होती गइ हे। कइ बार तो यह गठबधन आश्चयजनक लगता हे जब दो विरोधी पार्टियॉ अचानक गठबधन कर सत्ता मे आ जाती हे।

उत्तर प्रदश मे जब पहली बार भारतीय जनता पार्टी ओर बहुजन समाज पार्टी का गठबधन हुआ था, तब किसी का उतना अटपटा नही लगा था, जेसा कि दूसरी बार लगा। वसे यह गठबधन कतई स्वाभाविक नही है, बल्कि एक प्रकार से मजबूरी मे किया गया गठबधन था। यह गठबधन जिस तरह से हुआ, वह भी कम अटपटा न था। गठबधन के पूव बसपा, भाजपा को हिदुत्ववादी पार्टी कहकर गालियॉ देती रही थी। लकिन राजनीति मे सब-कुछ सभव होता हे।

उत्तर प्रदेश मे भाजपा-बसपा के गठबधन के बाद वहॉ जो स्थितिया बननी शुरू हुइ, वह बहुत ही अजीब प्रकार की थी। गठबधन के पूर्व दोनो मे से किसी पार्टी न भी कोइ साझा कायक्रम बनान पर विचार तक नही किया।

मायावती के कायकाल का मूल्याकन और विश्लेषण करे तो दो-तीन बाते उभरकर आती हे। सबसे पहली बात तो यह है कि उत्तर प्रदेश का जो दलित समाज ह उसके अदर एक नइ प्रकार की चेतना आई है। मायावती के मुख्यमत्री बनने स दलिता को इस बात का अहसास हुआ कि उत्तर प्रदेश मे उनकी सरकार हे। यह बहस का अलग मुद्दा है कि दलितो के इस अहसास को सवण जातियो ने किस हद तक स्वीकार किया।

जहा तक बसपा के सुप्रीमो काशीराम के विचार या चितन की बात है, उन्होने पहली बात यह मानी कि शीर्ष पदो पर दलित अधिकारियो की नियुक्ति मात्र से ही दलितो पर अत्याचार व उत्पीडन नही बद हो सकता, और इसके लिए जरूरी हे कि राज्य मे नीचे के स्तर तक तथा गॉव के थाने तक दलित पुलिस इस्पेक्टर व सब-इस्पेक्टर नियुक्त किए जाएँ। दूसरी बात यह कि भूमि सुधार सबधी सवाल को उठाना चाहे दिखावे के लिए ही सही, जरूरी है। इसके लिए काशीराम ने दो कायक्रमो की घोषणा की थी (1) उनकी सरकार दो साल के भीतर राज्य के गॉवो मे सभी दलितो (भूमिहीन किसानो) को जमीन का पट्टा ओर उस पर वास्तविक कब्जा दिला देगी, ओर दो साल के बाद जो व्यक्ति यह जानकारी देगा कि उसे जमीन पर कब्जा नही मिला, उसे इनाम दिया जाएगा (जेसे, चेचक के बारे मे जानकारी देने पर इनाम देने की सरकारी घोषणा होती है), और (2) उत्तर प्रदेश मे 64 लाख

ग्रामीण दलित औरतो को, जो 'सवर्णो' के खेतो मे व ईट भट्टो पर काम करती है और उत्पीडन की शिकार होती है, सरकार उन्हे स्व-रोजगार देगी, ताकि वे खेतो मे व ईट भट्टो पर काम करने न जाएँ। इस तरह 1995-96 मे ऐसी छह लाख औरतो को स्व-रोजगार देने का लक्ष्य रखा गया है।

दिक्कत यह है कि जो लोग काशीराम तथा राज्य की सपा-बसपा सरकार के रग-ढग को करीब से जानते है, वे इन घोषणाओ को गभीरता से नही ले रहे थ। ग्रामीण दलित महिलाओ के लिए स्व-रोजगार की योजना किस हद तक व्यावहारिक है और क्या यह जवाहर रोजगार योजना मे फेले जबर्दस्त भ्रष्टाचार की तरह समानातर भ्रष्टाचार को जन्म नही देगी। इस विषय पर अजय सिह ने कइ गभीर सवाल उठाये है, जिन पर गभीरतापूर्वक ही विचार होना चाहिए।

बहरहाल, इस स्वीकारोक्ति से यह तो पता चलता ही हे कि उत्तर प्रदेश मे भूमि सुधार का सवाल अभी भी अहम् सवाल बना हुआ है।

मायावती सरकार ने प्रदेश की राजधानी मे एक भव्य सास्कृतिक कायक्रम आयोजित कराया था। शायद पहली बार लखनऊ मे इस तरह का सास्कृतिक कायक्रम हुआ। आदिवासी मेले मे मध्य प्रदेश के आदिवासियो ने ही नही, बल्कि उडीसा, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार आदि कई अन्य दूसरे प्रदेशो से भी लाखो आदिवासियो ने भाग लेकर मेले को ऐतिहासिक बना दिया। बहुजन सगठक लिखता है कि अन्य प्रदेशो से आए सेकडो सास्कृतिक तथा नाट्य कलाकारो ने भी अपनी-अपनी भाषा-शेली मे कायक्रम प्रस्तुत कर अपनी आदिवासी सस्कृति को याद कराने के साथ-साथ आदिवासी कलाकारो द्वारा मेले मे प्रस्तुत गीत व नृत्य (कर्मा नृत्य, पथी नृत्य, शैला नृत्य, गरबा नृत्य, गेडी नृत्य, मुण्डा आदिवासी नृत्य) आदि कार्यक्रमो मे मनोरजन का नही, बल्कि मनुवादी व्यवस्था के विरूद्ध हजारो वर्षो से चल रहे सघर्ष का सदेश दिया।

इस तीन दिवसीय आदिवासी मेले का 26 जनवरी (गणतत्र दिवस) को मुख्य अतिथि बसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष काशीराम ने उद्घाटन कर शुभारभ किया। मेले मे मध्य प्रदेश के सभी तत्कालीन बसपा विधायक दाऊराम रत्नाकर (प्रदेशाध्यक्ष), जयकरण साकेत (प्रदेश महासचिव), रामलखन सिह पटेल, बुद्धसेन पटेल, सोने राम कुशवाह, चतुरी लाल बराहदिया, डॉ नरेश सिह गुर्जर, आई एम पी वर्मा, गणेश बारी, इन्दल सिह कन्साना, सासद भीमसिह पटेल (रीवा) के अलावा महाराष्ट्र के प्रदेश प्रभारी श्रीकृष्ण उबाले व उडीसा, गुजरात, बिहार, आध्र प्रदेश आदि राज्यो के बसपा नेता भी उपस्थित थे।

जबलपुर मे बसपा द्वारा आयोजित इन तीन दिवसीय मेले मे आए लाखो उपस्थित बहुजन समाज के लोगो को सबोधित करते हुए काशीराम ने कहा कि अगले पॉच वर्षो मे हुक्मरान और देश के सच्चे उत्तराधिकारी बनने के लिए मनुवादियो से सत्ता छीननी होगी। देश के मौजूदा हालातो पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जब तक

मद मे रखे गए। कुल 1250 अम्बेडकर गॉवो का इस योजना के तहत चयन किया गया, जिसम गॉव की न्यूनतम आवश्यकता-सिचाई, स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा, पानी, बिजली, सडक आदि का काय होना था परतु 21 मार्च, 97 से सितबर, 1997 तक यह कार्य नही किया जा सका।

विगत पॉच-छह वर्षो के अदर भारतीय राजनीति मे व्यापक बदलाव आया ह तथा सत्ता की गजनीति गठबधन पर आश्रित होती गइ है। कइ बार तो यह गठबधन आश्चयजनक लगता हे जब दा विरोधी पार्टियॉ अचानक गठबधन कर सत्ता मे आ जाती ह।

उत्तर प्रदेश मे जब पहली बार भारतीय जनता पार्टी ओर बहुजन समाज पार्टी का गठबधन हुआ था, तब किसी को उतना अटपटा नही लगा था, जैसा कि दूसरी वार लगा। वस यह गठबधन कतई स्वाभाविक नही है, बल्कि एक प्रकार से मजबूरी म किया गया गठबधन था। यह गठबधन जिस तरह से हुआ, वह भी कम अटपटा न था। गठबधन के पूत्र बसपा, भाजपा को हिदुत्ववादी पार्टी कहकर गालियॉ देती रही थी। लेकिन राजनीति मे सव-कुछ सभव होता है।

उत्तर प्रदेश मे भाजपा-बसपा के गठबधन के बाद वहॉ जो स्थितिया बननी शुरू हुइ, वह बहुत ही अजीब प्रकार की थी। गठबधन के पूर्व दोनो मे से किसी पार्टी न भी कोइ साझा कायक्रम बनाने पर विचार तक नही किया।

मायावती के कायकाल का मूल्याकन ओर विश्लेषण करे तो दो-तीन बाते उभरकर आती ह। सबसे पहली बात तो यह है कि उत्तर प्रदश का जो दलित समाज हे, उसके अदर एक नई प्रकार की चेतना आई है। मायावती के मुख्यमत्री बनने स दलितो को इस बात का अहसास हुआ कि उत्तर प्रदेश मे उनकी सरकार है। यह बहस का अलग मुद्दा है कि दलितो के इस अहसास को सवण जातियो ने किस हद तक स्वीकार किया।

जहा तक बसपा के सुप्रीमो काशीराम के विचार या चितन की बात है, उन्होने पहली बात यह मानी कि शीर्ष पदो पर दलित अधिकारियो की नियुक्ति मात्र से ही दलितो पर अत्याचार व उत्पीडन नही बद हो सकता, और इसके लिए जरूरी हे कि राज्य मे नीचे के स्तर तक तथा गॉव के थाने तक दलित पुलिस इस्पेक्टर व सब-इस्पेक्टर नियुक्त किए जाऍ। दूसरी बात यह कि भूमि सुधार सबधी सवाल को उठाना चाहे दिखावे के लिए ही सही, जरूरी है। इसके लिए काशीराम ने दो कायक्रमो की घोषणा की थी (1) उनकी सरकार दो साल के भीतर राज्य के गॉवो मे सभी दलितो (भूमिहीन किसानो) को जमीन का पट्टा और उस पर वास्तविक कब्जा दिला देगी, और दो साल के बाद जो व्यक्ति यह जानकारी देगा कि उसे जमीन पर कब्जा नही मिला, उसे इनाम दिया जाएगा (जेसे, चेचक के बारे मे जानकारी देने पर इनाम देने की सरकारी घोषणा होती है), ओर (2) उत्तर प्रदेश मे 64 लाख

ग्रामीण दलित औरतो को, जो 'सवर्णो' के खेतो मे व ईट भट्टो पर काम करती है और उत्पीडन की शिकार होती है, सरकार उन्हे स्व-रोजगार देगी, ताकि वे खेतो मे व ईट भट्टो पर काम करने न जाएँ। इस तरह 1995-96 मे ऐसी छह लाख औरतो को स्व-रोजगार देने का लक्ष्य रखा गया है।

दिक्कत यह है कि जो लोग काशीराम तथा राज्य की सपा-बसपा सरकार के रग-ढग को करीब से जानत हे, वे इन घोषणाओ को गभीरता से नही ले रहे थे। ग्रामीण दलित महिलाओ के लिए स्व-रोजगार की योजना किस हद तक व्यावहारिक है और क्या यह जवाहर रोजगार योजना मे फेले जबदस्त भ्रष्टाचार की तरह समानातर भ्रष्टाचार को जन्म नही देगी। इस विषय पर अजय सिह ने कइ गभीर सवाल उठाय है, जिन पर गभीरतापूर्वक ही विचार होना चाहिए।

बहरहाल, इस स्वीकारोक्ति से यह तो पता चलता ही है कि उत्तर प्रदेश मे भूमि सुधार का सवाल अभी भी अहम् सवाल बना हुआ है।

मायावती सरकार ने प्रदेश की राजधानी मे एक भव्य सास्कृतिक कायक्रम आयोजित कराया था। शायद पहली बार लखनऊ मे इस तरह का सास्कृतिक कायक्रम हुआ। आदिवासी मेले मे मध्य प्रदेश के आदिवासियो ने ही नही, बल्कि उडीसा, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार आदि कई अन्य दूसरे प्रदेशो से भी लाखो आदिवासियो ने भाग लेकर मेले को ऐतिहासिक बना दिया। बहुजन सगठक लिखता है कि अन्य प्रदेशो से आए सैकडो सास्कृतिक तथा नाट्य कलाकारो ने भी अपनी-अपनी भाषा-शेली मे कायक्रम प्रस्तुत कर अपनी आदिवासी सस्कृति को याद कराने के साथ-साथ आदिवासी कलाकारो द्वारा मेले मे प्रस्तुत गीत व नृत्य (कर्मा नृत्य, पथी नृत्य, शैला नृत्य, गरबा नृत्य, गेडी नृत्य, मुण्डा आदिवासी नृत्य) आदि कार्यक्रमो मे मनोरजन का नही, बल्कि मनुवादी व्यवस्था के विरूद्ध हजारो वर्षो से चल रहे सघर्ष का सदेश दिया।

इस तीन दिवसीय आदिवासी मेले का 26 जनवरी (गणतत्र दिवस) को मुख्य अतिथि बसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष काशीराम ने उद्घाटन कर शुभारभ किया। मेले मे मध्य प्रदेश के सभी तत्कालीन बसपा विधायक दाऊराम रत्नाकर (प्रदेशाध्यक्ष), जयकरण साकेत (प्रदेश महासचिव), रामलखन सिह पटेल, बुद्धसेन पटेल, सोने राम कुशवाह, चतुरी लाल बराहदिया, डॉ नरेश सिह गुर्जर, आई एम पी वर्मा, गणेश बारी, इन्दल सिह कन्साना, सासद भीमसिह पटेल (रीवा) के अलावा महाराष्ट्र के प्रदेश प्रभारी श्रीकृष्ण उबाले व उडीसा, गुजरात, बिहार, आध्र प्रदेश आदि राज्यो के बसपा नेता भी उपस्थित थे।

जबलपुर मे बसपा द्वारा आयोजित इन तीन दिवसीय मेले मे आए लाखो उपस्थित बहुजन समाज के लोगो को सबोधित करते हुए काशीराम ने कहा कि अगले पॉच वर्षो मे हुक्मरान और देश के सच्चे उत्तराधिकारी बनने के लिए मनुवादियो से सत्ता छीननी होगी। देश के मौजूदा हालातो पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जब तक

राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था नही बदलती तब तक बहुजन समाज का न तो कल्याण हो सकता है और न ही, उन्हे जायज अधिकार मिल सकते है।

1994 मे शिवाजी पाक बबई मे आयोजित बसपा की रैली मे पार्टी के सस्थापक अध्यक्ष ने कहा था हमे सिर्फ सत्ता चाहिए सत्ता से कम उन्हे कुछ नही चाहिए, यही कारण था कि वह मराठवाडा विश्वविद्यालय के नामातरण के मसले पर खामोश रहे। उनकी खामोशी पर महाराष्ट्र तथा उत्तरी भारत के अनेक पत्रकारो तथा समीक्षको ने टिप्पणी करते हुए कहा था कि जब समूचे महाराष्ट्र मे नामातरण के विरोधियो के द्वारा दलितो को मारने पीटने के साथ उनके घर जलाये जा रहे थे तब काशीराम कौनसी गुत्थी सुलझाने मे लगे थे। इस सबध मे वे कहते है **"काशीराम इस तरह का आदोलन नहीं करता। यदि मै विश्वविद्यालय बनाने के लिए आदोलन करता, तो 17 वर्ष तक आदोलन ही करता रहता ओर कुछ भी न कर पाता। हमने आदोलन किया सरकार बनाने के लिए। आज उत्तर प्रदेश मे हमारी सरकार है। अब हमें आदोलन नहीं करना हे। अब हमें वह काम करना है, जो नहीं हुआ है।"** यानी, वह सत्ता के लिए ही सघर्ष करना चाहते हे। ओर यह सघष तब तक जारी रखना चाहते, जब तक महाराष्ट्र मे बसपा की सरकार न बन जाए। काशीराम का यह भी कहना था कि "सामाजिक परिवर्तन के लिए लबा समय लग सकता है। आर्थिक परिवर्तन के लिए उससे थोडा कम समय लगेगा। लेकिन हम राजनीतिक परिवर्तन बहुत जल्दी ला सकते है।"

लखनऊ मे वे अपने एक बयान मे कहते है कि, "हम यहाँ किसी दूसरे के राजनैतिक लाभ की खातिर सरकार नही चला रहे है, अब हमे दिल्ली पर कब्जा करना है।"

बसपा की घोषणा पत्र के बारे मे अलग राय रही है। हम राष्ट्रीय सहारा मे प्रकाशित टिप्पणी को छाप रहे है

बहुजन समाज पार्टी के राजनीतिक तोर-तरीक बडे निराले है। काशीराम मानते है कि घोषणा पत्र एक छलावा है और राजनीतिक पार्टियाँ चुनावी घोषणा पत्र जारी करके जनता को बेवकूफ बनाती है। घोषणा पत्र जारी करने वाली पार्टियाँ दबी कुचली जनता को अपने चुनावी वायदो मे फसाकर उनका वोट हासिल करती है और फिर दूध की मक्खी की तरह उन्हे निकालकर बाहर फेक देती है। इसलिए काशीराम की बहुजन समाज पाटी किसी भी चुनाव मे घोषणा पत्र जारी नही करती है। वैसे बहुजन समाज पार्टी का प्रमुख उद्‌देश्य है दलितो को सत्ता मे भागीदार बनाना, ब्राह्मणवादी व्यवस्था का उन्मूलन करना। उसकी आस्था सामाजिक न्याय मे नही सामाजिक परिवर्तन मे है। वह मौजूदा सामाजिक ढाँचे मे जातियो के लिए निर्धारित स्थान को उलट देना चाहती है। यानी आज जहाँ दलित खडे है वह स्थान सवर्णो को दे दी जानी चाहिए।

आशुतोष मिश्र लिखते हे कि शुद्ध जातिवादी आधार पर आज तक कोई आदोलन स्थाई सगठन मे नही बदल पाया है। अम्बेडकर को भी शेडयूल्य कास्ट

फेडरेशन की जगह रिपब्लिक पार्टी की राजनीति पर आना पडा। आखिर मे उतना मजबूत आदोलन भी बिक गया और 1972 मे तो थोक भाव स खरीद लिया गया। बुद्ध प्रिय मौर्य जैसे निर्विवाद नेता तो चरण सिह के पास चले गए। कोइ कारण नही दिखता कि काशीराम अपने परपरागत नेतृन्व से बहुत अलग राजनीति करेगे। आखिर मे उन्हे इसी व्यवस्था मे एडजस्ट किया जाएगा। उनका महत्त्व बहुत ऊँचे ऑका जाएगा, लेकिन उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि पूरे समुदाय की सामुहिक पराजय भी होगी। फिलहाल तो उन्हे अपनी शक्ति का नकारात्मक प्रदशन करना हे। वे जानते है ही, शायद चाहते भी है कि उनके सगठन को कोई दृढ दीर्घकालिक आधार न बने। अपनी तात्कालिक ताकत से वे एक-दो चुनावो मे चमत्कार दिखाएँगे। फिर व्यवस्था उन्हे एडजस्ट कर लेगी और अपनी वर्तुल विकास यात्रा म पुराने बिदु पर पहुचकर उमी अदाज मे दूसरे की शुरुआत करेगी।

पुष्पेद्र के विचार मे चुनाव और राजनीतिक सत्ता के जरिए अपने सामाजिक ओर आर्थिक अधिकारो को हासिल करने की दलितो द्वारा की जा रही इस कोशिश का वर्चस्वशाली वर्गो द्वारा विरोध होना स्वाभाविक ही है। भारतीय समाज हे ही इसी तरह का। दलित इसका जवाब शिक्षित होकर, सगठित होकर, चुनावी और गेरचुनावी सघर्षो मे उत्साह से भागीदारी करके दे रहे हे। खास बात यह है कि पार्टिया को चुनने और छोडने का उनका पैमाना सकीण न होकर उनके जाति-धर्मनिरपेक्ष सरोकारो का प्रतीक है। उन्होने बता दिया है कि वे अपने हितो की रोशनी मे काफी सोच-समझ कर चुनावी निर्णय लेने लगे हे।

राजनीति मे दलितो के उभार का सबसे ज्यादा फायदा दलितो की अपनी पार्टी बहुजन समाज पार्टी, वामपथी दलो और वामोन्मुख दलो को ही हुआ हे। दलितो के अदरूनी विभेदो की अभिव्यक्ति आमतौर से उनके बीच मे बढ रहे वर्ग विभेदों के रूप मे हो रही है। पार्टियो के चुनाव की दृष्टि से दलितो के उच्च वर्ग और निम्न वर्ग बदलाव के दौर से गुजर रहे है। उनका बहुसख्यक गरीब तबका वामपथी रुझान रखता है और छोटा सा अपेक्षाकृत समृद्ध हिस्सा भाजपा की तरफ झुकता हुआ दिखाई देता है। भारतीय लोकतत्र की राजनीतिक सस्थाओ मे दलितो को उम्मीद लगती है, लेकिन उसके राजनीतिक कानूनो यानी नेताओ और पार्टियो से वे कुछ निराश है। जाहिर है कि इन नतीजो को एक चेतावनी की तरह लिया जाना चाहिए।

गठबधन की कीमत

नरेद्र कुमार सिह लिखते है कि एक-दूसरे के खिलाफ सार्वजनिक बयानो के बाबजूद 'राजनैतिक अछूत' भाजपा और 'सामाजिक अछूत' बसपा ने राजनैतिक सौदेबाजी कर ली। देश मे अपनी तरह के अनूठे इस सौदे की शर्तो के मुताबिक, मायावती शपथ लेने के छह माह बाद भाजपा के लिए मुख्यमत्री की कुर्सी खाली कर देगी

जो अगले छह माह तक सरकार चलाएगी। सरकार के कामकाज की निगरानी सचालन समिति के हाथ मे रहेगी, जिसके सदस्य है भाजपा के अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी ओर बसपा सुप्रीमो काशीराम"ऐसी एक योजना बनी। यह एक प्रस्तावित राजनेतिक एजेडा था।

मुख्यमत्री बनने का मौका पहले मिलने की वजह से स्वाभाविक है कि आलाचनाआ का सामना मायावती को ही पहले करना पडा। इसका मोका उन्होने अपने फसला स दे भी दिया हे। मुख्यमत्री पद की शपथ लेते ही उन्होने आइ ए एस आर आइ पी एस अधिकारियो के थोक तबादलो का आदेश दे दिया। ऐसा आरोप भी उन पर लगाया गया।

काशीराम से यह पूछे जाने पर कि क्या भाजपा सत्ता मे आने पर मायावती के फेसलो को उलट नही देगी, उनका जवाब था, "भाजपा अपनी विचारधारा के मुताबिक सरकार चलाने को स्वतत्र हे। हर छह माह मे प्रमुख सचिव और दूसरे सचिव बदल दिए जाएँगे। आखिर इसमे गलत क्या है? छह माह हमारी सरकार रहेगी। उसके बाद भाजपा का राज आएगा। मै इस व्यवस्था से खुश हूँ।"

काशीराम की इस टिप्पणी मे सामाजिक सरोकार की गुजाईश नही दिखाई देती। महसूस होता है केवल अवसर की राजनीति करने की लालसा। उन्हे सत्ता चाहिए। भले ही छह-छह माह के लिए। ऐसी परिस्थितियो मे दलितो की बेहतरी के लिए मायावती सरकार मे क्या कुछ हुआ होगा।

राजनेतिक चुनावी रग हो या सामाजिक या फिर धार्मिक, तब तक दलित मतदाताओ ने यह अच्छी तरह से समझ लिया था कि काशीराम ओर मायावती दोनो पर ही भगवा रग चढे बिना नही रह सका। या फिर बसपा की यह सत्ता मे बने रहने की विवशता भी कही जा सकती है। भारत अश्वघोष लिखता है कि "जून, 1997 मे फरूखाबाद के विधानसभा तथा पूर्वी दिल्ली के ससदीय चुनावो मे सघपरिवार के दो टीकाधारी उम्मीदवारो को जिताने के लिए काशीराम तथा मायावती ने अपनी इज्जत का सवाल बना लिया था तथा इन्होने दोनो को जिताया भी।"

देश मे ऐसा पहली बार हुआ था कि भारत के दो सबसे प्रभावशाली दलित नेताओ ने सीधे हिदुत्व के नाम पर लडने वाली सघी उम्मीदवारो को जिताने के लिए न सिर्फ दलितो से अपील की, बल्कि उनकी चुनाव सभाओ मे भाषण भी दिया। इतना ही नही, मायावती ने कई बार प्रेस सम्मेलनो मे जोर देकर कहा **"बी जे पी साप्रदायिक पार्टी नहीं हे।" उनके ऐसे बयान सघपरिवार के लिए एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन चुके है।** इस राजनीतिक विकास से नागपुर से सचालित सघ नीति की सफलता के बादल बडी तेजी से छाने लगे थे। सघ परिवार की इस नई दोस्ती ने मायावती को विशेष रूप से ऐसा भावुक बना दिया था कि उन्होने सघ नेता मुरली मनोहर जोशी तथा लालजी टन्डन को राखियॉ तक बॉधी।

जब पहली बार मुलायम को लुढकाकर काशीराम ने बी जे पी के समर्थन से मायावती को जून, 1995 मे उत्तर प्रदेश का मुख्यमत्री बनाया, तो उन्होने कहा था "मै मायावती को भविष्य मे प्रधानमत्री बनवाने का अभी रिहर्सल करवा रहा हूँ।" किंतु बी जे पी का कहना था कि उसने सघपरिवार-विरोधी मुसलमानो के कट्टर समर्थक मुलायम सिह यादव से छुटकारा पाने के लिए मायावती का समथन किया था। इस सदभ मे यह उल्लखनीय हे कि मुलायम की समाजवादी पार्टी तथा काशीराम की बी एस पी के गठबधन को 1993 के चुनावो मे बहुमत प्राप्त था, जिसके कारण बी जे पी उत्तर प्रदेश मे ध्वस्त होने लगी थी। उस समय 'दलित-पिछडा वग तथा मुस्लिम' एकता देखते ही बनती थी। ऐसा लगता था कि मानो 'बहुजन समाज'की अवधारणा साकार होने लगी थी। अततोगत्वा वह एकता टूट गई, जिसका सबसे ज्यादा फायदा सघपरिवार को पहुँचा।

जैसा कि लोकसभा (1996) चुनावो ने सिद्ध कर दिया, जिसमे बी ज पी को 55 सीटे मिली थी। राजनीतिक विश्लेषको का मानना है कि यदि बी एस पी का पूर्व गठबधन किसी भी तरह कायम रहता, तो बी जे पी से लोकसभा के उस चुनाव मे पॉच सीट से ज्यादा नही मिल पाती। बाद मे जब विधानसभा का चुनाव हुआ तो मुलायम सयुक्त मोर्चा के साथ मिलकर चुनाव लडे, काशीराम की बी एस पी कॉग्रेस से मिलकर तथा बी जे पी अपने 'छोट भइया' समता पार्टी से मिलकर चुनाव लडी। इस चुनाव मे एक स्वागत् योग्य विकास क्रम यह था कि दिल्ली के जामा मस्जिद के इमाम मौलाना अब्दुल्ला बुखारी ने बी एस पी का खुलेआम समर्थन किया। बुखारी ने इस समर्थन के बदले काशीराम से यह वायदा कराया था कि वे आगे भविष्य मे बी जे पी से कभी हाथ नही मिलाएँगे। काशीराम ने खुलेआम लाखो की उपस्थिति मे कई आम सभाओ मे बुखारी से इसे निभाने की बात दोहराई थी। यही कारण था कि मुसलमानो के एक बडे हिस्से का समर्थन बी एस पी को उस चुनाव मे मिला था तथा उसके 67 विजयी उम्मीदवारो मे आठ मुस्लिम जीत कर आए।

इससे ऐसा लगने लगा था कि मुसलमान धीरे-धीरे दलितो के साथ राजनीतिक गठबधन मे भविष्य मे आ सकेगे। किंतु काशीराम द्वारा मौलाना बुखारी से किया गया वह वायदा उस समय टूट गया, जब बी जे पी से उन्होने एक बार फिर हाथ मिलाकर 21 मार्च, 1997 को मायावती को दोबारा मुख्यमत्री बना दिया। इस बार सरकार मे बी जे पी शामिल हुई, जबकि पहली बार वह सरकार मे नही थी। इस तरह धीरे-धीरे पनप रही दलित-मुस्लिम एकता भी भग हो गई।

इस सदर्भ मे उल्लेखनीय तथ्य यह है कि मायावती के पहली बार बी जे पी की सहायता से मुख्यमत्री बनने के साथ ही दलित-पिछडा वर्ग एकता उसी समय भग हो गई थी तथा अधिकाश पिछडा वर्ग मुलायम के साथ हो गया था। 18 अक्टूबर को बी एस पी के मत्रियो के बहिष्कार के बीच बी जे पी ने मायावती सरकार द्वारा

दिए गए तीन फैसलो को बदल दिया। इनमे से एक फैसला था लाटरी पर पुन प्रतिबध लगाना, दूसरा था चित्रकूट धाम को एक नया मडल बनाना तथा तीसरा था नया जिला सत रविदास नगर के मुख्यालय को पुन ज्ञानपुर ले जाना, जिसे मायावती ने सुदर वन मुसीलाट पुर कर दिया था। लाटरी के सदर्भ मे एक उल्लेखनीय तथ्य यह हे कि जब मायावती पहली बार मुख्यमत्री बनी थी, तो उन्होने गरीबो की विरोधी कहकर जून, 1995 मे लाटरी पर प्रतिबध लगा दिया था, कितु जब दूसरी बार मुख्यमत्री बनी तो उस पर 20 प्रतिशत का टैक्स लगाकर फिर से लाटरी को शुरू करा दिया था। जाहिर है मुख्यमत्री कल्याण सिह के उक्त सारे फेसलो के विरोध मे बी एस पी के मत्रियो ने मत्रिमडल की बैठक का बहिष्कार किया था। इन्ही फैसलो के कारण दोनो पार्टियो के बीच मे 18 अक्टूबर को ही कबड्डी-रेखा खिच गई। लखनऊ मे उस दिन मायावती ने राज्यपाल से मुलाकात की और अफवाहे उडी कि बी एस पी सरकार से समथन वापस लेने वाली है। यद्यपि उस दिन मायावती ने ऐसी अफवाहो का खडन किया कितु 19 अक्टूबर को उन्होने ही राज्यपाल को एक पत्र सौपकर समथन वापस लेने के साथ ही विधानसभा भग करके कल्याण सिह सरकार को बर्खास्त करने की मॉग की तथा कल्याण सिह को राज्यपाल भडारी ने दो दिन का समय, अर्थात् 21 अक्टूबर को अपना बहुमत सिद्ध करने का मौका दिया। इस बीच मायावती ने अपने सभी 67 विधायको को पार्टी दफ्तर मे रखा, ताकि उन्हे दल बदल से बचाया जा सके, लेकिन इस बार मायावती चूक गई और उनकी पार्टी के 12 विधायक सदन मे भाग कर मार्कन्डे चन्द के नेतृत्व मे बी जे पी खेमे मे जा मिले। उधर 22 कॉग्रेसी विधायक नरेश अग्रवाल के नेतृत्व मे कल्याण के साथ हो गए। इनके अतिरिक्त जनता दल के कुछ विधायको के साथ निर्दलीयो ने भी कल्याण सिह का साथ दिया। परिणामस्वरूप 222 के बहुमत से विश्वास प्राप्त हो गया।

किसी राजनीतिक दल के जीवन मे पद्रह वर्ष कोई खास नही होते। क्षेत्रीय दलो को छोडकर राष्ट्रीय महत्त्वाकाक्षाओ वाली पार्टियॉ आम तौर पर इतनी छोटी अवधि मे अपने पॉव जमाने के लिए ही सघर्ष करती रहती है। बसपा तो एक वैकल्पिक राजनीतिक समुदाय बनाने के इरादे से चली थी इसलिए उसकी खामियो-खूबियो का विश्लेषण एक दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य और उसके तात्कालिक परिस्थिति के साथ सबध के आधार पर ही किया जाना चाहिए।

बसपा की बुनियाद डालने वाले सगठन बामसेफ की परिकल्पना जिन दिनो की गई थी, वे दलित राजनीति के लिए उतार के दिन थे। अम्बेडकर 1956 मे अपनी मृत्यु के बाद धर्मातरण, रिपब्लिकन पार्टी और सविधान द्वारा प्रदत्त आरक्षण की तीन विरासते छोड गए थे। धर्मातरण का सिलसिला शुरुआती उछाल के बाद मद पड गया और धीरे-धीरे दलितो के बीच नवबौद्धीकरण की प्रक्रिया थम गई। रिपब्लिकन पार्टी साठ के दशक मे महाराष्ट्र के कॉग्रेसी सूबेदार यशवतराव चव्हाण के राजनीतिक

दॉव पर चढ गई। आर डी भडारे, दादा साहेब रुपवते ओर काबले जेसे नेता कॉग्रेस मे चले गए। धीरे-धीरे यह पार्टी 12 घटको मे ओर उससे जुडे जुझारू दलित पेथर तरह-तरह के मतभेदो और गुटबाजी के कारण छह टुकडो मे टूट गए, लेकिन जल्दी ही उलटे-सीधे गठजोडो और इदिरा गॉधी की **फर्जी रेडिकल राजनीति** ने इस सभावना को भी निरस्त कर दिया। वे लिखते हे कि दलितो को मजदूर वग के रूप म राजनीतिक गोलबदी करने का अम्बेडकर प्रयास इडिपेडेण्ट लबर पार्टी के रूप मे उतना साथक नही हुआ था। क्योकि मजदूर वर्ग के स्थापित नेता मजदूर आदोलन म दलित प्रश्न को बिखराव के स्रोत के अलावा कुछ और मानने के लिए तेयार नही थे। अम्बडकरवादी राजनीति की सीमाऍ स्पष्ट थी। वह आदोलन दलितो म शिक्षा आर सगठन क लिए तडप पैदा करने मे सफल रहा था। साथ ही उसने धीरे-धीर आरक्षण के जरिए अपेक्षाकृत अधिक साधन सपन्न दलितो का एक बडा तबका भी तैयार कर दिया था।

दलितो मे मध्यवर्ग के उभार की इस परिघटना का पूरा श्रेय अम्बेडकर ओर उनके युग को दिया जा सकता है। यदि काका कालेलकर रपट मे दज अम्बेडकर के साक्ष्य को देखा जाए तो पता लगता हे कि अम्बेडकर की प्राथमिकताऍ राजनीति से ज्यादा सामाजिक अधिक थी। अस्सी के दशक मे किए गए एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि दलितो का मध्यम वर्ग किसी मजबूत और टिकाऊ राजनीतिक प्रतिनिधि के अभाव मे कितना असहाय महसूस कर रहा था। एक तरह से उसने गेर राजनीतिक मुद्रा अखित्यार कर रखी थी। वह सामुदायिक मोक्ष के बजाए तालमेल ओर बीच के रास्ते के जरिए निजी मोक्ष की खोज कर रहा था। बसपा के उभार ने इस मध्य वर्ग की राजनीतिक जरूरत को पूरा किया और उसे अपन समाज के विकास मे ठोस योगदान देने का मौका दिया।

बसपा के मतदाताओ का एक विश्लेषण बताता है कि सरकारी कमचारियो द्वारा सचालित इस पार्टी ने शहर आधारित अभिजनो के माध्यम से देहाती गरीबो को गोलबद करने का अनूठा उदाहरण पेश किया है। बसपा के अधिकाश मतदाता अकुशल मजदूर, खेती और उससे जुडे धधो मे लगे मजदूर, कारीगर ओर छोटे और सीमात किसान है। इनमे बेहतर आर्थिक स्थिति वाले मतदाता तो केवल 2 6 (व्यवसायरत) और 1 6 (नौकरीपेशा) फीसद ही थे। काशीराम ने जिस समय बसपा का गठन किया, उस समय के राजनीतिक हालात पर भी एक नजर डाल लेना विषयानुकूल होगा। वे कॉग्रेसी वचस्व के आखिरी दिन थे और कॉग्रेस के पास बाबू जगजीवनराम जैसे किसी प्रतिष्ठित दलित नेता की सेवाऍ उपलब्ध नही थी। दलीय प्रणाली लगातार एक पार्टी को बहुमत मिलने के बावजूद राजनीतिक स्थायित्व की गारटी नही कर पा रही थी। आपातकाल की नसबदी मुहिम और तुर्कमान गेट जैसे काडो के साथ-साथ इदिरा गॉधी के हिदू कार्ड ने कॉग्रेस के परपरागत समर्थन आधार के टूटने की परिस्थितिया पैदा कर दी थी। इस हालात मे बामसेफ के बुनियादी काम

ओर डी एस फोर के प्रचारात्मक काम के आधार पर दलितो के स्वतत्र हस्तक्षेप क लिए प्रतिबद्ध पार्टी की सभावनाएँ काफी थी। सारे देश मे ही दलितो के मतदान का प्रतिशत बढ रहा था जो 1996 और 1998 के ससदीय निर्वाचनो राष्ट्रीय ओसत ओर ऊँची जातियो के मतदान प्रतिशत से भी आगे निकल गया। बसपा को इस पृष्ठभूमि का काफी लाभ मिला।

बसपा की सागठनिक समस्याओ की जड मे उसके अनोपचारिक चरित्र की भूमिका भी लगती हे। काशीराम जिस शैली मे बामसेफ को चलाते थे, उन्होने बसपा को भी उसी तरह खडा किया। उसका औपचारिक ढॉचा बहुत बाद मे, मायावती क दो बार मुख्यमत्री बनने के बाद बनाया गया। अधिकारी तत्र के दलित हिस्से के बसपा के निमाण मे अभूतपूव योगदान के जरिए उन्होन सत्ता और नौकरशाही की एक अनूठी धुरी तो बना डाली, लकिन वे यह भी मान बेठे कि गैर सरकारी लाकतान्त्रिक प्रक्रियाओ मे जाए बिना वे सिर्फ दलित अधिकारियो के दम पर गुरु किल्ली का प्रयोग कर लेगे। इसलिए उन्होने सगठन को मजबूत करने या पचायतो व स्थानीय निकायो के चुनावो पर कम ध्यान दिया। पार्टी निमाण की उनकी गेर पारपरिक विधि के शुरू मे अच्छे परिणाम निकले, लेकिन बाद मे मतभेद ओर सकट का सामना करना पडा।

लाकतान्त्रिक राजनीति मे दलीय होड के जरिए बहुजन एकता का कमोबश टिकाऊ लक्ष्य हासिल करने के लिए बसपा को चाहिए कि वह कुछ बुनियादी मसला पर विचार करे। हरित क्राति के बाद आर्थिक रूप से ताकतवर हुइ भूमिधर पिछडी जातियॉ 60 70 ओर 80 के दशक मे दो तरह के सामाजिक-राजनीतिक अनुभवो से गुजरी थी। एक तरफ उनमे नवब्राह्मणीकरण की प्रवृत्तियॉ मजबूत हुई थी ओर दूसरी तरफ वे समाजवादियो क प्रभाव के कारण बाएँ बाजू की राजनीति के आस पास गोलबद हुइ थी। नवब्राह्मणीकरण की प्रवृत्ति ने इन जातियो को सामाजिक और आथिक स्तर पर बेहद गरीब ओर कमजोर दलितो के अतर्विरोध मे खडा कर दिया, लेकिन राजनीतिक स्तर पर उनकी दलितो से एकता के दो तरफा प्रयास होते रहे। सपा-बसपा गठजोड के रूप मे राजनीतिक एकता हो जाने के बाद आर्थिक और सामाजिक अतर्विरोधो को नरम करने के लिए स्पष्ट कायक्रम बनाए जाने की जरूरत थी। इसमे भूमि सुधारा के जरिए दलित वर्गो की पिछडी जातियो के मुकाबले तुलनात्मक ताकत बढाने से लेकर कृषि आधारित उद्योग-धधो के माध्यम से दलितो को आगे बढाने के कार्यक्रम पर यादवो, आदि को ज्यादा आपत्ति भी नही हो सकती थी। लेकिन सपा-बसपा गठजोड ने इस पहलू को पूरी तरह नजरअदाज कर दिया। मुलायम सिह ने तो इधर ध्यान दिया ही नही, काशीराम ने भी अपने दलित आधार की खुशहाली के लिए आवश्यक इस मुद्दे को नही उठाया।

जहॉ तक दलितो और मुसलमानो के आपसी रिश्तो का सवाल था—काशीराम

को दरअसल कुशलतापूर्वक उत्तर भारतीय दलितो के उस हिस्स की मुसलमान विराधी भावनाओ को धमनिरपेक्ष स्पर्श देना चाहिए था जो आर्य समाज के प्रभाव म आकर राजनीतिक हिदुत्व का स्वाद चख चुका था। उत्तर भारत के चूड हलालखार महतर ओर भगी खुद को वाल्मीकि कहते हे। आय समाज क प्रचारको न लबे अरम से उनक दिमाग म कूट-कूटकर भर रखा हे कि उनकी मोजूदा हालत का जिम्मदार मुसलमान शासन था। य दलित जातियॉ वाल्मीकि की एक महषि क रूप म पूजा करती ह। 40 के दशक मे पजाब के दारे मे अम्बडकर को इस समस्या की नीखी अनुभूति हुई थी ओर उन्हाने वाल्मीकि भक्ति क सप्रदाय का आलाचना करत हुए वाल्मीकि को 'राम राज्य की एक सदस्यीय विज्ञान एजसी' करार दिया था। 1936 मे जात-पॉत तोडक मडल के लिए लिखे गए अपने भाषण मे अम्बडकर न सभवन इसीलिए जानबूझकर राम द्वारा शबूक (शूद्र) की हत्या का प्रकरण उठाया था। काशीराम ने इस तथ्य का ध्यान रखना भी मुनासिब नही समझा कि कार सवा के दारान सघपरिवार ने बडे पैमाने पर वाल्मीकियो को कार सवक क रूप म गोलवद करने की काशिश की थी। सघपरिवार ने इन वाल्मीकिया स राम मदिर के साथ-साथ वाल्मीकि का मदिर बनाने का वायदा भी कर दिया था।

काशीराम को यह श्रेय दिया जाना चाहिए कि उन्होन पजाब के रमदसिया चमारो का नेता बनने के आसान रास्ते का छाडकर राष्ट्रीय पमाने पर प्रयास किया।

पजाब आर उत्तर प्रदेश दाना जगहो पर बसपा वण व्यवस्था की विपमता क जिस तर्क के आधार पर अनुसूचित जातिया तथा पिछडो का कॉग्रस के दायर से निकालकर अपने साथ ला पाइ उसी तक के आधार पर उसे अन्य दलित जातिया का भी अपने साथ लाने की काशिश करनी चाहिए थी। लेकिन व्यावहारिक रूप से उस ऐसा करते हुए नही देखा गया। ऑकड बतात ह कि उत्तर प्रदेश म बसपा न दलित मतदाताओ के बहुलाश (तकरीबन साठ फीसद) को कॉग्रेस की झोली से निकाल लिया है लेकिन पजाब, हरियाणा ओर मध्य प्रदेश मे उसकी सफलता (44 4 फीसद से 22 4 फीसद तक) इस मामले मे कुछ मझाले स्तर की ही मानी जाएगी। बाकी सभी राज्यो म बसपा के हाथ कुछ खास नही लगा हे। जिन राज्यो मे अधिकतर दलित उसके साथ गए भी है वहॉ भी वह अम्बेडकर कालीन बफ की कुछ परतो को अभी नही तोड पाइ हे।

पजाब मे बसपा की राजनीति ने दो तरह स एकजुट कर दिया। आद-धर्मी ओर रमदसिया का ध्रुवीकरण हो गया, लेकिन मध्य प्रदेश मे छत्तीसगढ के सतनामिया का उसका समथन आधार मालवा क्षेत्र के चमारो तक विस्तृत नही हो पाया।

देश मे उत्तरप्रदेश सबस बडा राज्य हे। उसकी प्रगति सपूण राष्ट्र की प्रगति बन सकती है। साथ ही एक आदर्श राज्य का सदश भी दूर-दूर जा सकता हे। प्रदश की मोजूदा मुख्यमत्री के पास यह सुनहरा अवसर हे। दलितो की साहित्य, सस्कृति से लेकर उद्योग तक मे भागीदारी दी जा सक्ती हे। बशर्ते मुख्यमत्री के पास एक एसी टीम हो

जो वास्तव मे ही समाज मे क्रातिकारी बदलाव लाने मे विश्वास करती हो। दूसरे प दीनदयाल उपाध्याय के 'अन्त्योदय' और बसपा के 'सवजन हिताय' मे कोई टकराव होना भी नही चाहिए। भाजपा के प्रदेशीय सिपहसालार अगर दलित एजेडे से मतभेद रखगे तो जरूर ही मायावती के सामने सकट आएगा, क्योकि सरकार रहेगी तो दलितो के लिए कुछ सभव होगा, पर अपनी सरकार बनाए रखने के लिए तो क्या कोई अन्य समझोता नही करना पडेगा। इस बारे मे मुलायम सिह का बैकवर्ड कार्ड भी चुनोती बनेगा। उत्तरप्रदश मे कानूनी व्यवस्था कायम रखना सरकार का पहला कर्तव्य है। गाव मे उसी स्थिति मे दलितो की सुरक्षा हो सकेगी। बिहार मे दलितो की सुरक्षा प्रदान करने मे विफल रहने के कारण राबडी देवी सरकार से बसपा का समर्थन वापस लेना एक अच्छा कदम हे, काश स्वय अपने राज्य म दलितो को सुरक्षा की गारटी मिल सके।

उ प्र मे सामाजिक रूप से पिछडे दलित समुदायो के युवा वकीलो को सामाजिक सुरक्षा के रूप मे मासिक वजीफा देने का अच्छा कदम है। इससे वे गरीब दलितो के मुकदमो को आसानी से लड सकेगे। देखना हे कि अति सवेदनशील परिस्थितियो मे दलित एजेडा को आगे बढाने मे उ प्र की मुख्यमत्री भाजपा तथा अन्य पार्टियो से केसे ओर कब तक तालमेल रखने मे सफल हो सकेगी?

सदर्भ

- अमर उजाला उ प्र 2002
- राष्ट्राय सहारा नाएडा 22 अप्रेल 1996
- दलित लिबरेशन टुड लखनऊ अगस्त 1996
- अश्वघोष नागपु॰ जनवरी फरवरी 1998
- राष्ट्रीय सहारा (हस्तक्षप) 27 सितबर 1997
- अजय सिह काशीराम का आत्म समपण समकालीन जनमत दिल्ली 16 30 अप्रेल 1995 पृष्ठ 13
- बहुजन सगठक नई दिल्ली 12 फरवरी 1996
- राष्ट्रीय सहारा 27 अक्टूबर 1995
- ब्लिट्ज हिदी साप्ताहिक सपादक आर के करजिया बबई 22 जनवरी 1994
- राष्ट्रीय सहारा (हस्तक्षेप) 13 अप्रेल 1996
- इंडिया टुडे नइ दिल्ली 6 20 अप्रैल 1997
- अश्वघाष नागपुर नव दिस 1997 पृष्ठ 3
- वहा पृ 4
- काशाराम चमचा युग दि एरा ऑव स्टूजिस अनुवाद रामगोपाल आजाद समता प्रकाशन नागपुर 1998
- रामाश्रय राय ओर वी बी सिह हरिजन इलीट अजता दिल्ली 1986
- पुष्पद्र दलित एसशन थ्रू इलेक्ट्रोरल पॉलिटिक्स इपीडब्ल्यू, 4 सितम्बर 1999
- काचन चद्रा ट्रासफार्मेशन ऑव इथनिक पॉलिटिक्स इन इडिया दि डिक्लाइन ऑव काग्रस एड गद्य आव बहुजन समाज पार्टी इन हाशियारपुर दि जनरल एशियन स्टडीज 59 अक 1 फरवरा 2000 पृ 35 36



मोहनदास नैमिशराय

5 सितबर 1949 को मेरठ (उ प्र) मे जन्म आर वही से उन्होने एम ए बी एड किया। मेरठ दलित राजनीति आर आदोलन की जमीन रहा जिससे उनके रिश्ते बने। विद्यार्थी जीवन म वही से छपने वाले 'भीम सनिक हिंदी पाक्षिक न उन्हे आर अधिक जागरुक बनाने मे मदद की। जब वे बी ए के विद्यार्थी थे उन दिनो समता शक्ति हिंदी साप्ताहिक क सपादक बने।

दिल्ली मे आने पर बाबा साहब डॉ अम्बेडकर क व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व को गभीरता पूवक पढन के साथ समझने का अवसर प्राप्त हुआ। अनेक पत्र पत्रिकाआ म लेख आदि लिखते रहे। बहुजन समाज पार्टी से पूव माननीय काशीराम ओर उत्तर प्रदेश की वतमान मुख्यमत्री सुश्री मायावती जिस समय 'बामसेफ सस्था म थे उन्ही दिना नैमिशराय जी मेरठ के एक स्थानीय कालेज मे पढाते थे। वे नौकरी छोड कर समाज सेवा मे लग गए। बहुजन सगठक हिंदी साप्ताहिक का सपादन भी साथ-साथ किया। यह साप्ताहिक बामसेफ का था।

तब से वे सामाजिक, धामिक तथा राजनैतिक विषयो पर राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओ मे कइ सौ लेख लिख चुके ह। बाद मे 'बहुजन अधिकार' पत्र का भी सपादन किया। रेडियो के लिए स्क्रिप्ट लिखने के साथ-साथ दूरदशन फिल्म तथा रगमच के लिए भी लिखा। लगभग चौबीस पुस्तके प्रकाशित। रेलवे मत्रालय मे हिन्दी सलाहकार होने से सपूण भारत का दोरा किया। अनुभव और अनुभूतियो के साथ लेखन से जुडाव। अग्रेजी और मराठी से अनेक पुस्तके अनुवाद भी की। इनकी मुख्य पुस्तको मे अपने-अपने पिजरे, मुक्तिपर्व हैलो कामरेड बाबा साहेब ने कहा था झलकारी बाइ, स्वतत्रता सग्राम क दलित क्रांतिकारी, आवाजे आदि है। देश-विदेश के विश्वविद्यालयो मे उनकी पुस्तके पाठ्यक्रम मे पढाइ जा रही है।

सप्रति मुख्य सपादक 'सामाजिक न्याय सदेश (डॉ अम्बेडकर प्रतिष्ठान) 15 जनपथ नयी दिल्ली

सपर्क बी-जी 5ए/30-बी पश्चिम विहार नयी दिल्ली-110063